देवरिया जनपद के विकास में सेवा-केन्द्रों की भूमिका

THE ROLE OF SERVICE CENTRES IN THE DEVELOPMENT OF DEORIA DISTRICT

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, की डी०फिल्० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

शोधकर्ता
सतीश कुमार सिंह

निर्देशक
डॉ० बी०एन० सिंह
रीडर
भूगोल विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

भूगोल विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद
2002

प्राक्कथन

किसी भी क्षेत्र मे सामाजिक–आर्थिक गतिविधियो के प्रादुर्भाव एव इनकी बढती गहनता के साथ कुछ एसे बिन्दु अस्तित्व लेने लगते है, जिनपर क्रमश विकास की प्रेरक इकाइयॉ स्थापित होती जाती है। कालान्तर मे वह बिन्दु क्षेत्र के विकास का केन्द्र बन जाता है और क्षेत्रीय विकास मे नियामक भूमिका निभाने लगता है। परिवहन के विभिन्न माध्यम इसी बिन्दु से प्रसरित होकर क्षेत्र मे फैले होते है, जिनके सहारे वह अपने क्षेत्र को कार्य एव सेवाऍ प्रदान करता है। इसी विशेषता के कारण इसे *'सेवाकेन्द्र'* कहते है। क्षेत्र की ऐतिहासिक एव भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा प्रशासकीय कारक इसके स्वरूप को तय करते है। इस प्रकार सेवाकेन्द्र मानवीय रचना है। इसका उद्भव–विकास मानव अधिवास की स्थापना से सम्बन्धित है, जिसका यह अभिन्न अग है। चूॅकि क्षेत्र मे विकास का सचार इसी से होता है, अत किसी भी क्षेत्र के विकास मे इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सेवाकेन्द्र पर स्थापित विकास के विभिन्न प्राचलो (कृषि, उद्योग, परिवहन, सचार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि) की इकाइयो की गहनता एव क्षेत्रीय सम्बद्धता का सेवाक्षेत्र के आकार तथा विकास से प्रत्यक्ष एव आनुपातिक सम्बन्ध होता है। अत किसी पिछड़े क्षेत्र के विकास के लिए सेवाकेन्द्रो पर विकासात्मक इकाइयो की स्थापना से विकास प्रोत्साहित होगा। इसलिए क्षेत्र के समन्वित विकास के आयोजन के लिए प्रथमत सेवाकेन्द्र एव विकास के सम्बन्ध का विश्लेषण एव विकास में इसकी भूमिका का विवेचन आवश्यक है।

शोध का उद्देश्य

उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य मे ही प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय *'देवरिया जनपद के विकास मे सेवा केन्द्रों की भूमिका'*, का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य जनपद के सेवाकेन्द्रो के उद्भव एवं विकास का अध्ययन, सेवाकेन्द्रो का पदानुक्रम, सेवाकेन्द्रो का क्षेत्रीय वितरण, सेवाकेन्द्रों की क्षेत्रीय अन्तर्प्रक्रिया एव विकास ध्रुव के रूप में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है। इस हेतु वर्णित परिकल्पनाओ का अपने क्षेत्र के सन्दर्भ मे परीक्षण करना है, जिससे नियोजको को सेवाकेन्द्र एवं विकास के पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात हो सके तथा क्षेत्र के समन्वित विकास हेतु वे उन सेवाकेन्द्रों का चयन कर सकें जिनपर विकास के आधारभूत अवस्थापनाओ की स्थापना कर क्षेत्र का समन्वित विकास किया जा सकता है।

विकासोन्मुख क्षेत्रीय संरचना की यह रूप रेखा अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक, ऐतिहासिक स्वरूप विवेचन, उनमें सेवाकेन्द्रों का उद्भव विकास उनका क्षेत्रीय वितरण, क्षेत्रीय अंतर्प्रक्रिया

तथा क्षेत्रीय विकास प्रक्रिया मे उनकी भूमिका के अवलोकन के उपरान्त ही प्रस्तुत किया जा सकता है। स्पष्ट है कि सामाजिक—आर्थिक रूप से पिछडे क्षेत्र के विकास हेतु सेवाकेन्द्रो की भूमिका का विश्लेषण करना ही शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

अध्ययन क्षेत्र का चयन

उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग मे मध्यगगा मैदान मे स्थित देवरिया जनपद का अध्ययन क्षेत्र के रूप मे चयन के पीछे प्रधान कारण विकास के लिए आवश्यक ससाधनो की उपलब्धता के बावजूद इसका पिछडापन रहा है। समतल भूमि एव उर्वर मृदायुक्त श्रमबहुल यह क्षेत्र कृषि कार्य के लिए सर्वाधिक अनुकूल है, परन्तु ससाधन, प्रशिक्षण, तकनीकी—ज्ञान के अभाव एव अशिक्षा के कारण कृषि प्रधान इस क्षेत्र मे कृषि कार्य परम्परागत एव जीवन निर्वाहन स्तर का है।

कृषि आधारित उद्योगो की पर्याप्त सभावनाएँ है, कुछ उद्योगो (चीनी उद्योग) का विकास हुआ भी पर अब इनकी बीमार स्थिति के कारण ये क्षेत्रीय विकास के प्रेरक न होकर, लागो के शोषक सिद्ध होते जा रहे है। लघु एव कुटीर उद्योग के विकास की पर्याप्त सभावनाएँ है, परन्तु लोगो की आर्थिक बदहाली, वित्तीय सेवाओ की अपर्याप्तता एव सरकार की दोषपूर्ण नियोजन प्रणाली इसके विकास मे गतिरोध बने हुए है। समतल भूमि के बावजूद परिवहन मार्ग की सम्बद्धता मात्र 52 13 प्रतिशत तक ही सीमित है, जिससे अध्ययन क्षेत्र के 47 87 प्रतिशत क्षेत्रो तक विकास का प्रवाह नही हो पा रहा है। प्रतिवर्ष बाढ की आवृत्ति के कारण बरसात मे सम्बद्धता और कम हो जाती है।

ज्ञान—विज्ञान के प्रति लोगों की अभिरुचि है तथा वे नवीनतम् सूचना तकनीको को जानने को जिज्ञासु एव अपनाने को उत्सुक हैं, परन्तु अशिक्षा इसमे बाधक बन रही है। शिक्षण सस्थाएँ, ससाधन अपूर्ण हैं तथा इस दिशा मे सार्थक प्रयास का भी अभाव है।

ऊर्जा की उपलब्धता एव खपत विकास की प्रतीक मानी जाती है। 90 प्रतिशत आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्र में, राष्ट्रीय स्तर पर नियोजन प्रणाली अपनाने के आधी शताब्दी के बाद भी 29 प्रतिशत गाँव अभी भी अधेरे मे हैं, बिजली नही पहुँची है। शेष मे उपलब्धता भी मात्र 11 घटे औसत दैनिक ही है। ये स्थिति तब है जब विकास के लिए ऊर्जा की प्रत्येक क्षेत्र मे मॉग है और गैरपरम्परागत ऊर्जा संभाव्यता की दृष्टि से जनपद सम्पन्न है, पर इस दिशा मे कोई प्रयास नही हो रहा है।

आवास एव पेयजल सुविधा की अपर्याप्तता वाली घनी आबादी युक्त इस क्षेत्र मे स्वास्थ्य की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध नही हैं, तथा जो हैं भी उनमे उचित प्रबन्धन का अभाव है।

अशिक्षा एव पर्यावरण—बोध के अभाव मे वनो की अधाधुँध कटाई के कारण यह क्षेत्र *'देवारण्य'* से *'देवरिया'* हो गया, पर जनता इसके होने वाले दुष्प्रभाव के प्रति अनभिज्ञ है। अनपढ़ किसान सिंचाई की अनियोजित प्रणाली, रासायनिक उर्वरक एव कीटनाशकों का मनमाना अधाधुध

प्रयोग इस बात को जाने बिना ही कर रहा है कि इससे न सिर्फ उसकी लागत बढ रही है, बल्कि *जलप्रदूषण, मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण* के रूप मे वह पर्यावरण को भारी क्षति पहुँचा रहा है और खुद शिकार हो रहा है।

इस प्रकार आर्थिक एव सामाजिक रूप से पिछडे इस क्षेत्र का चयन इसके सर्वांगीण विकास हेतु सेवाकेन्द्रो की भूमिका के परीक्षण करने के उद्देश्य से प्रेरित होकर ही किया गया। इस अध्ययन से *पूर्वी उत्तरप्रदेश* की आर्थिक, सामाजिक समस्याओ के निराकरण हेतु सेवाकेन्द्रो की उनमे भूमिका का आकलन किया जा सकता है।

शोध छात्र का इस क्षेत्र से निकटतम सम्बन्ध है तथा यहॉ की विभिन्न समस्याओ को निकटता से महसूस किया है। अत उक्त विषय पर शोध के लिए प्रस्तुत क्षेत्र का चयन स्वाभाविक था।

अध्ययन की परिकल्पना

सकल्पनात्मक स्तर पर सेवाकेन्द्र एव विकास की निम्न परिकल्पनाओ पर वर्तमान अध्ययन आधारित है।

1 सेवाकेन्द्र एक मानवीय रचना है, परन्तु इसके उद्भव एव विकास मे प्राकृतिक एव मानवीय कारक एव प्रक्रियाएँ कार्य करती है।

2 किसी क्षेत्र के आर्थिक–सामाजिक विकास मे सेवाकेन्द्र *विकास–ध्रुव* का कार्य करता है।

3 क्षेत्रीय विकास हेतु ऊर्जा का घनीभवन सेवाकेन्द्रो पर ही होता है। अत· विकास के लिए यह संरचनात्मक आधार प्रस्तुत करता है।

4. प्रत्येक क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का एक पदानुक्रमिक तत्र होता है, जिनपर कार्यों एव सेवाओ का संकेन्द्रण रहता है।

5. सेवाकेन्द्रों पर स्थापित विकासात्मक इकाइयो की सघनता तथा क्षेत्र से इसकी परिवहनीय सम्बद्धता का विकास के स्तर एव सेवाक्षेत्र से प्रत्यक्ष एव आनुपातिक सम्बन्ध होता है।

6. क्षेत्र विशेष से परिवहन जाल द्वारा सेवाकेन्द्र सर्वाधिक सम्बद्ध होता है, सेवाकेन्द्र से विकास इन्ही माध्यमों द्वारा सचरित होता है। अतः सेवाकेन्द्रो पर अतिरिक्त विकासात्मक इकाइयों की स्थापना से क्षेत्रीय विकास प्रोत्साहित होगा।

7. सम्पूरक क्षेत्र की सेवावृत्ति ही सेवाकेन्द्रो का आधार होता है, अतः यह अपने सम्पूरक क्षेत्र में वाह्यातित अभिज्ञानो *(Innovations)* एवं उसकी आंतरिक प्रक्रियाओं का नियामक एवं संचालक होता है।

8. विकास की भौगोलिक संकल्पना–*आर्थिक विकास, आर्थिक संवृद्धि* और *आर्थिक प्रगति* से भिन्न एक समन्वित संकल्पना है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एव

पर्यावरणीय दृष्टिकोण समाहित है। विकास की यही परिकल्पना सेवाकेन्द्र की क्षेत्रीय अतर्प्रक्रिया का आधार है।

ऑकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं प्रयुक्त विधितंत्र

अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्र एव विकास आव्यूह का विश्लेषण सकल्पनात्मक एव व्यावहारिक दोनो ही दृष्टियो से किया गया है। सकल्पनात्मक विश्लेषण मे यथा सभव उपलब्ध साहित्यो के अनुशीलन से प्राप्त विचारो को प्रस्तुत किया गया है। व्यावहारिक विश्लेषण ऑकडो एव क्षेत्रीय अनुभवो पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के सूक्ष्म–स्तरीय स्वरूप होने के कारण प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनो प्रकार के ऑकडो का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक ऑकड़े–जिला उद्योग केन्द्र, देवरिया, औद्योगिक प्रतिष्ठान केन्द्रो, जिला कृषि कार्यालय, देवरिया, लोक–निर्माण विभाग, देवरिया, तहसील मुख्यालय, देवरिया, रुद्रपुर, बरहज, सलेमपुर, भाटपाररानी, सभी विकासखण्ड मुख्यालयो, जिला प्रबन्धक–दूरभाष, देवरिया कार्यालय, जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय, जिला स्वास्थ्य केन्द्र, देवरिया और पशु चिकित्सालय, देवरिया, जिला समाज कल्याण विभाग, देवरिया से प्राप्त किये गये है। *द्वितीयक ऑकडो* के मुख्य स्रोत जनगणना हस्तपुस्तिका, जनपद देवरिया, 1971 तथा 1981, गजेटियर, जनपद देवरिया, 1988, सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद देवरिया–2000 एव 2001, सामाजार्थिक समीक्षा, जनपद देवरिया–2001, देवरिया जनपद के अग्रणी बैक–सेन्ट्रल बैंक ऑफ इडिया, पचायतन, जिला पचायती राज विभाग, देवरिया–2000, खरीफ फसलो की सघन पद्धतियाँ–2001, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, उद्योग निर्देशिका, जिला देवरिया 1996–97 एवं 1999–2000, रबी एव खरीफ उत्पादन कार्यक्रम–2000–01, एव सूचना एव जनसम्पर्क विभाग, देवरिया; 1991, से प्रकाशित पुस्तिकाओं; भारत की जनसंख्या–2001, ऑकड़े एवं तथ्य, उपकार प्रकाशन, भारत–1991, 1999, 2000 एवं 2001; योजना एव कुरुक्षेत्र वर्ष 2002 के अंक है। उपर्युक्त ऑंकड़ो के अतिरिक्त यथा स्थान व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं अनुभव का भी आश्रय लिया गया है।

ऑंकड़ों के विश्लेषण मे दुरुह सांख्यिकीय विधियो का उपयोग नहीं किया गया है, किन्तु सेवाकेन्द्रों के निर्धारण, सेवाक्षेत्रो का सीमाकन, जनसंख्या घनत्व, वितरण, वृद्धि का आंकलन, शस्य गहनता, शस्य साहचर्य, शस्य प्रतिरूप मे परिवर्तन, सेवाकेन्द्र सम्बद्धता, परिवहन जाल सम्बद्धता आदि में यथा आवश्यक सामान्य सांख्यिकीय सूत्रों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन को सुस्पष्ट एव बोधगम्य बनाने के लिए यथा–स्थान विश्लेषित एव सश्लेषित ऑकड़ों को आरेखो, डायग्रामो मानचित्रो एव सारणियो द्वारा प्रभावोत्पादक बनाने का प्रयास हुआ है।

सेवाकेन्द्रों का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समय एव ससाधनो के अभाव में, समन्वित क्षेत्र–विकास में सेवा

केन्द्रो की भूमिका के अध्ययनार्थ केवल कृषि, उद्योग, परिवहन, सचार, शिक्षा, स्वास्थ्य एव ऊर्जा विकास मे सेवाकेन्द्रो की भूमिका का विश्लेषण, विवेचन एव नियोजन प्रस्तुत है। इस सन्दर्भ मे सबसे बडी कठिनाई सेवाकेन्द्रो के चयन की है। सिद्धान्तत किसी भी क्षेत्र मे किसी भी प्रकार की सेवा अथवा सुविधा न्यूनतम स्तर पर भी प्रदान करने वाले केन्द्र को शामिल करना चाहिए, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से ऐसे सभी केन्द्रो को अध्ययन मे सम्मिलित करना सम्भव नही है। अतएव सेवाकेन्द्रो का किसी न किसी आधार पर चयन अपरिहार्य हो जाता है।

सेवाकेन्द्रो के निर्धारण की प्रक्रिया सर्वथा व्यक्तिनिष्ठ प्रक्रिया है। अध्ययन क्षेत्र के अतर्गत सेवाकेन्द्रो के निर्धारण के लिए उपलब्ध साहित्यो के अनुशीलन तथा क्षेत्रीय अनुभव के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के 2004 बस्तियो मे से *डा बी एन मिश्र (1980)* द्वारा प्रयुक्त विधि का उपयोग करते हुए कार्यों की *औसत कार्याधार जनसख्या, उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* और *बस्तियो की सम्बद्धता* के माध्यम से 47 सेवाकेन्द्रो का अभिनिर्धारण किया गया है। इसके लिए सर्वप्रथम कार्यों के क्षेत्रीय महत्व, औसत कार्याधार मूल्य और उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप के आधार पर 51 आधारभूत कार्यों / सेवाओ का चयन किया गया है, जो अध्ययन क्षेत्र मे वितरित बस्तियो द्वारा सम्पादित होते हैं।तत्पश्चात् कम से कम 5 केन्द्रीय कार्यों को सम्पादित करने वाले तथा 2 58 से अधिक केन्दीयता मान एव 3 0 से अधिक परिवहनीय सम्बद्धता वाले बस्तियो को अध्ययन हेतु सेवाकेन्द्र की मान्यता प्रदान की गयी है।

सेवाकेन्द्रों के मूल्य अभिनिर्धारण मे *चतुर्थ क्रम* के कार्यों (औद्योगिक क्षेत्र, बस स्टेशन, साप्ताहिक बाजार, पशुसेवा केन्द्र, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, डाकघर) को छोड़कर शेष को शामिल नही किया गया है, क्योंकि इनकी सख्या अधिक है तथा अधिकाश बस्तियॉ ऐसे कार्य सम्पादित करती हैं। इसी प्रकार *तृतीय क्रम* के कार्य– पी सी ओ का उच्च मूल्य होने के बावजूद अत्यधिक सख्या के कारण अभिनिर्धारण में सम्मिलित नही किया गया है।

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सयोजन निम्न प्रकार से ***आठ अध्यायों*** में किया गया है।

अध्याय–एक में संकल्पनात्मक पृष्ठभूमि के अतर्गत सेवाकेन्द्र की संकल्पना, सेवाकेन्द्र का संकल्पनात्मक क्रम विकास तथा 'विकास' की संकल्पना, विकास की आर्थिक, पर्यावरणीय एवं भौगोलिक अवधारणा एवं विकास के सिद्धान्तो का सकल्पनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय–दो मे क्षेत्र की *भौगोलिक पृष्ठभूमि* के अतर्गत भौतिक पृष्ठभूमि मे उच्चावच, अपवाह, सरचना, जलवायु, मृदा एव प्राकृतिक वनस्पति आदि का विश्लेषण; *सामाजिक–सास्कृतिक पृष्ठभूमि के* अंतर्गत जनसख्या, अधिवास आदि का विवेचन तथा *आर्थिक एवं वाणिज्यिक पृष्ठभूमि* के अंतर्गत कृषि, ऊर्जा, परिवहन, उद्योग, सचार आदि का विश्लेषण किया गया है।

अध्याय–तीन में सेवाकेन्द्रों का ऐतिहासिक क्रम में उद्भव–विकास प्रस्तुत है। इसमें सेवाकेन्द्रों के उद्भव–विकास को प्रोत्साहित करने वाले कारक, सेवाकेन्द्रों के पुरातात्विक स्थल,

क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक क्रम मे सेवाकेन्द्रो का उद्‌भव–विकास तथा सेवाकेन्द्रो के प्रकार का विवेचन है।

अध्याय–चार मे सेवाकेन्द्रो के स्थानिक कार्यात्मक सगठन के अतर्गत क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का निर्धारण–औसत कार्याधार जनसख्या, उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप एव परिवहनीय सम्बद्धता के आधार पर किया गया है। पुन सेवाकेन्द्रो की केन्द्रीयता, उनका पदानुक्रम एव सेवाक्षेत्रो को निर्धारित किया गया है।

अध्याय–पॉच मे सेवाकेन्द्र और कृषि–औद्योगिक विकास के अन्तर्गत *प्रथम* भाग मे कृषि विकास के आकलन क्रम मे कृषि के आधारभूत सघटक, विकास के सहायक तत्व, विकास की प्रवृत्तियॉ एव कृषि के वर्तमान प्रतिरूप के मूल्याकन के उपरान्त कृषि विकास नीति की व्याख्या की गयी है। *द्वितीय* भाग मे औद्योगिक पृष्ठभूमि एव विकास का वर्णन कर स्थानीय ससाधनो पर आधारित उद्योगो की अवस्थापना एव विकास की नीति निर्धारित की गयी है।

अध्याय–छः मे सेवाकेन्द्र तथा परिवहन सचार एव विकास के अन्तर्गत *प्रथम* भाग मे परिवहन सम्बद्धता एव विकास, परिवहन माध्यम प्रतिरूप, घनत्व, अभिगम्यता, सम्बद्धता, तथा परिवहनीय सम्बद्धता, सेवाकेन्द्र सम्बद्धता और मार्ग–जाल सम्बद्धता की गणना *अल्फा, बीटा* एव *गामा निर्देशाक* के माध्यम से की गयी है। पुन वर्तमान पिछडे स्वरूप के सन्दर्भ मे तीव्र विकास नियोजन का प्रस्ताव है। *द्वितीय* भाग मे सचार और सूचना प्रसार के महत्व एव विकास का विश्लेषण तथा क्षेत्र विकास हेतु सचार तंत्र के नियोजन का प्रस्ताव है।

अध्याय–सात के अंतर्गत सेवाकेन्द्र तथा सामाजिक सुविधाओ के विकास का विवेचन है। इसके *प्रथम* भाग मे शिक्षा के विकास एवं वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण, कर वांछित विकास हेतु उनका नियोजन प्रस्तुत है। *द्वितीय* भाग मे जनस्वास्थ्य एव विकास का विश्लेषण उपलब्ध ससाधनों के सन्दर्भ में किया गया है। जनस्वास्थ्य प्रणाली का मूल्याकन कर स्वास्थ्य सुविधाओ के विकास हेतु समुचित नियोजन का प्रस्ताव है।

अध्याय–आठ मे ऊर्जा एवं समन्वित क्षेत्र विकास के अंतर्गत ऊर्जा की विकास मे भूमिका का विश्लेषण कर, क्षेत्र मे गैर पारम्परिक ऊर्जा सभाव्यता का आकलन कर ऊर्जा विकास हेतु नियोजन प्रस्तावित है। इस अध्याय मे समन्वित क्षेत्र विकास हेतु उन पक्षों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है, जिनका समन्वित क्षेत्र–विकास मे महत्वपूर्ण योगदान है; किन्तु अनेक कारणो से शोध अध्ययन में सम्मिलित नहीं किये जा सके हैं।

सेवाकेन्द्र, विकास तथा नियोजन से सम्बन्धित साहित्य अनेक सामाजिक विज्ञानो में उपलब्ध हैं। उन सभी का विवरण देना दुरुह कार्य है। यथा स्थान उल्लिखित सन्दर्भों को प्रत्येक अध्याय के अंत में संख्या क्रम में प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबन्ध के अन्त में तीन परिशिष्ट दिए गए हैं। *प्रथम* में शब्दावली, *द्वितीय* में शब्द संक्षेप तथा *तृतीय* में प्रस्तुत शोध विषय एवं क्षेत्र से सम्बन्धित ग्रन्थों एवं लेखों का उल्लेख किया गया है।

आभारोक्ति

एक भूगोलवेत्ता के लिए शोधकार्य- क्षेत्रीय भ्रमण, आँकड़ों के सग्रहण, उपयुक्त साख्यिकीय विधियो द्वारा सूक्ष्म विश्लेषण- सश्लेषण, आरेखो, मानचित्रो आदि के द्वारा उनका प्रदर्शन आदि के रूप मे विविध जटिलताओ से भरा चुनौतीपूर्ण कार्य है। शोध के दौरान क्षेत्र मे यत्र-तत्र बिखरे प्राप्य एव सभाव्य ससाधनो का अन्वेषण एव मंथन कर विकास में उनकी भूमिका आकलित करना तथा समन्वित और सतुलित विकास हेतु एक उपयुक्त नियोजन प्रणाली प्रस्तुत करते हुए उसमे इनकी भूमिका निर्धारित करना, एक जटिल कार्य था। इस पूरी प्रक्रिया मे अनेक व्यक्तियो एव सस्थाओ द्वारा प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप मे सहयोग प्राप्त हुआ, जिनके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है।

इस क्रम मे सर्वप्रथम शोध प्रबन्ध निर्देशक गुरुप्रवर **डा. बी.एन. सिंह, 'रीडर' भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद** के प्रति कृतज्ञतापूर्वक हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने शैक्षणिक, अकादमिक एवं लेखन सम्बन्धी व्यस्तताओ के बावजूद अपने उत्कृष्ट एव कुशलतम निर्देशन मे न सिर्फ शोध प्रबन्ध को यथाशीघ्र पूर्ण कराया, बल्कि आपके विराट, सघर्षशील, ऊर्जावान और उत्साही व्यक्ति की प्रेरणा सदैव मेरा पथ-प्रदर्शन भी करती रही। आपका असीम स्नेह और आशीर्वाद कवच की भाँति हताशा और निराशा से मुझे सदा सुरक्षा प्रदान करता रहा; आपके प्रति श्रद्धापूरित शीश नतमस्तक है।

परमादरणीय गुरु **प्रो. सविन्द सिंह, अध्यक्ष, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद,** का कृतज्ञ हृदय आभारी है, जिन्होने स्नातक से स्नातकोत्तर स्तर तक न सिर्फ विषय के प्रति मेरी जिज्ञासाओं को अपनी उत्कृष्ट अध्यापन शैली द्वारा संतुष्ट किया, बल्कि क्षेत्रीय विकास मे भूगोल की उपयोगिता निर्धारण तथा उस हेतु शोध की बारीकियो को समझने का विवेक भी पैदा किया। पुन: शोध का अवसर प्रदान कर सम्बन्धित जटिलताओ का निवारण किया। अपने उत्कृष्ट अध्यापन एवं लेखन से आपने न सिर्फ भूगोल विषय को उत्कर्ष पर पहुँचाया बल्कि विषय के साथ भूगोल-विभाग को भी भूगोल जगत में अपनी पहचान दिलाई। शोधकार्य के दौरान आपका स्नेह एवं सहयोग मुझे अनवरत प्राप्त होता रहा, ये मेरा परम सौभाग्य है।

विषयगत समस्याओं एवं शोध की जटिलताओं के निराकरण मे श्रद्धेय गुरु **डा. बी.एन. मिश्र, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,** से भरपूर, सहयोग एवं प्रोत्साहन मिला। आपके उदारतापूर्ण सहयोग एवं स्नेह से शोधकार्य सहजतापूर्वक पूर्ण हुआ; आपके प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं। शोध के दौरान श्रद्धेय **डा. सुधाकर त्रिपाठी** के द्वारा प्राप्त रचनात्मक सुझावों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। भूगोल विभाग के उन समस्त विद्वजन का भी मैं हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने कई प्रकार से मुझे रचनात्मक सहयोग प्रदान किया।

मानवीय मूल्यों के पोषक **डा. माधव प्रसाद पाण्डेय,** डी.फिल., डी.लिट.; **प्रो. आर.एन. सिंह** अध्यक्ष, भूगोल विभाग, हेमवतीनंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल; **प्रो. शिवशंकर वर्मा,** भूगोल विभाग, दी.द उ. विश्वविद्यालय गोरखपुर; **प्रो. रामएकबाल सिंह** (गोपालगंज), **श्री चिरंजी सिंह,** जिला एव सत्र न्यायाधीश (फास्ट ट्रैक, गोपालगंज); **श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय** (पूर्व सदस्य कार्य परिषद, इ.वि.वि.); का मैं हार्दिक आभारी हूँ, जिनका अनुकरणीय व्यक्तित्व न सिर्फ मुझे क्रियाशील बनाए रखा बल्कि आपके स्नेह, प्रोत्साहन एवं सुझावों ने शोधप्रबन्ध की पूर्णता मे विशेष भूमिका निभाया।

ममता की प्रतिमूर्ति **श्रीमति सुमति सिंह** के द्वारा प्रदत सहयोग के लिए कृतज्ञ हृदय के उद्गार को शब्द दे पाने में मस्तिष्क असमर्थ है। अपने पारिवारिक व्यस्तताओ के बावजूद आपने जिस उदारता से शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु सुअवसर एवं सहयोग प्रदान किया तथा खड़े होने के लिए प्रयासरत शिशु की भाँति क्षण-प्रतिक्षण प्रोत्साहित करती रही, वंदनीय है?

डा. धर्मवीर सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, गाजियाबाद (उ.प्र.); **श्री यशपाल सिंह,** रेल अभियंता **डा. दीनबन्धु शर्मा,** एवं डा. प्रभासिंह का भी हार्दिक आभारी हूँ, जिनके समय-समय

पर प्राप्त शोधपरक सुझावो एव प्रोत्साहन से शोधकार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो सका। **श्री अनुपम पाण्डेय** के प्रति भी हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ, आप शोध सम्बन्धी चुनौतियो के प्रति सर्वदा आगाह करते रहे, आपके सुझावो ने शोध कार्य शीघ्र पूर्ण करने हेतु उद्वेलित किया।

श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह (लो नि वि से सम्बद्ध), ने अपनी व्यवस्तताओ के बावजूद क्षेत्रीय भ्रमण, आँकडो के सग्रह एव क्षेत्रीय समस्याओ को समझने मे मेरी भरपूर सहायता की। आपके सहयोग से शोधकार्य सफलतापूर्वक यथाशीघ्र पूर्ण हुआ। आपके प्रति विनम्रता पूर्वक आभार ज्ञापित करता हूँ।

मैं उन समस्त पुस्तकालयो, सरकारी, गैर सरकारी संगठनो, सार्वजनिक और निजी प्रतिष्ठानो एव व्यक्तियो को हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने आँकड़ो के संग्रह एव सम्बन्धित साहित्य को उपलब्ध कराने मे भरपूर सहयोग प्रदान किया। इस क्रम मे **श्री अरुण कुमार चौबे**, टी डी.एम. देवरिया, **श्री मुकेश कुमार मेश्राम** (तत्कालीन सी डी ओ देवरिया एव वर्तमान जिलाधिकारी, आजमगढ), **डा. ओ.पी. मिश्र**, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, देवरिया, **डा. विजय प्रकाश सिंह**, डी आई ओ एस. देवरिया, एव **श्री ओ.पी. सिंह**, (जिला उद्योग केन्द्र, देवरिया), के प्रति कृतज्ञ हृदय विशेष आभारी है।

अपने अनन्य मित्रो, **श्री मनीष शुक्ल** (एडवोकेट इलाहाबाद हाईकोर्ट), **डा. रामराज तिवारी, डा. मित्रपाल सिंह, श्री राजेश कुमार सिंह** तथा शोधरत सहयोगियों **करुणा सिंह, जितेन्द्र कुमार सिंह, मनीष कुमार सिंह, पंकज कुमार जायसवाल** द्वारा प्राप्त विविध रचनात्मक सुझावों एवं **सर्वेश कुमार सिंह** के आँकड़ों के संगणन मे प्राप्त सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।
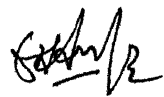
आजीवन त्याग, सघर्ष, कर्तव्यपरायण और वात्सल्य के प्रतीक रहे प्रात स्मरणीय पिता **स्व. पारस नाथ सिंह** को मैं किन शब्दों मे श्रद्धा सुमन अर्पित करूँ, जिन्हें सार्वजनिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने हेतु, भारत सरकार ने राष्ट्रपति पदक (१९८१) से विभूषित किया, पर आज जब उनके त्याग, प्रेरणा के प्रतिफल स्वरूप शोधकार्य सम्पन्नता को प्राप्त हुआ तो संतोषसुख का पारितोषिक पाने के लिए हमारे बीच नहीं हैं। उस पुण्य आत्मा को मेरा शत-शत नमन!

मैं त्याग और ममता की प्रतिमूर्ति माँ **रामपति देवी**, अनुज **राकेश, रेनू**, पत्नी आभा तथा **शिवम्, शुभम** का आजीवन ऋणी रहूँगा, जिनके त्याग, प्रेरणा, स्नेह एवं सतत-सहयोग ने मुझे इस योग्य बनाया!

अंत में मैं **'आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर'** कर्नलगंज, इलाहाबाद; को, जिसके माध्यम से बड़ी ही सूक्ष्मता एवं बारीकी से शोधप्रबन्ध का कम्प्यूटर कार्य यथाशीघ्र पूर्ण हुआ, विनम्र आभार ज्ञापित करता हूँ।

(सतीश कुमार सिंह)
शोध छात्र 'भूगोल'
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद.

कार्तिक पूर्णिमा
१९ नवम्बर, २००२

●●●

अनुक्रमणिका

चित्रो एव आरेखो की सूची
List of Maps & Diagrams

सारणी–सूची

★★★★★

अध्याय-एक

संकल्पनात्मक पृष्ठभूमि

(क) सेवाकेन्द्र की संकल्पना

1 1 सेवाकेन्द्र, केन्द्रस्थल, सेवा प्रदेश

(अ) सेवाकेन्द्र

सेवाकेन्द्र' से तात्पर्य जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, क्षेत्र विशेष मे एक ऐसी केन्द्रीय स्थिति से है जो क्षेत्र के निवासियो को वस्तुएँ एव सेवाएँ प्रदान करता है। सेवाकेन्द्र के लिए 1931 मे *मार्क जेफरसन* ने 'Central Place'[1] शब्द का प्रयोग किया। इसी शब्द के समानार्थक के रूप मे *क्रिस्टालर*[2] ने 'Zentralort' शब्द का उपयोग किया। **बाजार केन्द्र** (Market centre) शब्द का उपयोग भी केन्द्रस्थल के ही अर्थ मे होता है क्योकि प्रत्येक केन्द्र स्थल के लिए बाजार का कार्य करना अनिवार्य है।[3] सेवाकेन्द्र के सन्दर्भ मे *वाल्टर क्रिस्टालर*[4] द्वारा प्रतिपादित केन्द्रस्थल सिद्धान्त महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा दक्षिणी जर्मनी के केन्द्रस्थलो के अध्ययन के पश्चात भूगोलवेत्ताओ, अर्थशास्त्रियो एव समाजशास्त्रियो का ध्यान केन्द्रस्थल अध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ। इस सिद्धान्त के शैक्षणिक एव सैद्धान्तिक महत्व के साथ ही इसका व्यावहारिक महत्व भी है, जिससे भूगोल मे नया आयाम विकसित हुआ। *क्रिस्टालर* द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त की, विभिन्न पाश्चात्य एव भारतीय विद्वानो ने समीक्षा कर, उसे आवश्यकतानुरूप सशोधित कर विभिन्न क्षेत्रो के लिए अपने–अपने अध्ययन प्रस्तुत किये।

(ब) सेवाकेन्द्र एव केन्द्रस्थल

सेवाकेन्द्रो को **'केन्द्रस्थल'** इसीलिए कहते है क्योकि वे भिन्न–भिन्न प्रकार की *'सेवाओ'* अर्थात् तृतीयक कार्यों के केन्द्र होते है। चूँकि वे अपने प्रदेश के केन्द्र होते है और प्राय लगभग केन्द्रस्थ भी होते है, इसीलिए उनको केन्द्रस्थल कहते है। लेकिन कोई भी केन्द्रस्थल अपने प्रदेश के ठीक–ठीक केन्द्र मे ही स्थित हो ऐसा अनिवार्य नही है।[5] सेवाकेन्द्र मात्र नागरिक केन्द्र ही नही होते अपितु ऐसे ग्रामीण अधिवास भी जो अपने चतुर्दिक क्षेत्रो को सेवाये प्रदान करते है सेवाकेन्द्र हो सकते हैं। नगर, कस्बे तथा बाजार, ये सभी अपनी आतरिक जनसख्या की आवश्यकताओ की पूर्ति के अतिरिक्त कुछ कार्य अपने चारो ओर स्थित समीपवर्ती क्षेत्रो के लिए भी करते है। ऐसे ही आर्थिक सामाजिक कार्य, जिन्हे कोई स्थान या केन्द्र न केवल अपने लिए प्रत्युत मुख्यतया चारो ओर के समीपवर्ती घेरते हुए क्षेत्रो के लिए करते हैं *केन्द्रीय कार्य* कहते हैं तथा ऐसे केन्द्रो को जिनमें अथवा जिनके द्वारा ये कार्य होते है *सेवाकेन्द्र* कहते हैं। आस–पास के सभी क्षेत्र इन

केन्द्रो पर अपनी बहुत सी सामाजिक तथा आर्थिक आवश्यकताओ के लिए निर्भर रहते है। इस प्रकार सेवाकेन्द्रो को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है– *'ऐसे स्थायी मानव अधिवास या निर्माण जहाँ पर सामाजिक–आर्थिक तरह की वस्तुओ सेवाओ तथा आवश्यकताओ का विनिमय आधारभूत रूप से और प्राथमिक रूप से अस्थानीय या अकेन्द्रीय जनसख्या के लिए किया जाता है और इसलिए अपरोक्ष रूप से समीप स्थित चारो ओर को घेरते हुए क्षेत्रो पर जिनका अपने प्रदेश के रूप मे अधिकार और नियत्रण रहता है* ***केन्द्रस्थल*** *कहते है।* [6]

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि न केवल नगर वरन् ग्रामीण बस्तियाँ भी सेवाकेन्द्रो के रूप मे कार्य करती है क्योकि कोई ग्रामीण या अर्द्धनगरीय बाजार तथा इससे भी छोटा स्थल क्षेत्रीय केन्द्र या सेवाकेन्द्र के रूप मे कार्य कर सकता है।

कुछ अपवादो को छोडकर समस्त नगरीय केन्द्र **'सेवाकेन्द्र** होते है। परन्तु समस्त सेवाकेन्द्रो को *'नगर'* नही कहा जा सकता। सेवाकेन्द्रो का प्रमुख आधार अपने सम्पूरक क्षेत्र की सेवावृत्ति मे ही निहित होता है। इस प्रकार प्रत्येक सेवाकेन्द्र के चतुर्दिक कुछ न कुछ क्षेत्र होने आवश्यक है जहाँ वे अपनी सेवाओ सुविधाओ को प्रदान करते है। सेवित क्षेत्रो के अभाव मे सेवाकेन्द्रो की कल्पना भी नही की जा सकती।

(स) सेवा–प्रदेश

किसी केन्द्र स्थल को घेरते हुए और अपरोक्षत समीप स्थित उस समूचे क्षेत्र को उसका सेवा प्रदेश कहते हैं, जो अपनी विनिमयात्मक आवश्यकताओ या सेवाओ के लिए पास मे स्थित लगभग उसी स्तर के अन्य केन्द्रो की अपेक्षा इस केन्द्र पर अधिक निर्भर रहता है। ये प्रभाव प्रदेश सेवाकेन्द्रो के ही होते है। चूँकि भिन्न–भिन्न कार्यों के अपने अलग–अलग प्रदेश होते हैं अत किसी भी एक या अधिक सेवाओ को रखने वाले स्थानो का सेवा प्रदेश केवल उन्ही सेवाओ के लिए होगा, जो इन स्थानो मे उपलब्ध है।

इस प्रकार का प्रदेश एक बहुकार्यात्मक सकेन्द्रीय प्रदेश होता है। केन्द्र के किसी एक व्यक्तिगत कार्य का प्रदेश एक कार्यात्मक सकेन्द्रीय प्रदेश होता है। किसी केन्द्र के सभी कार्यों के सभी ऐसे प्रदेशो को सयुक्त रूप से एक साथ देखने पर या एक दूसरे के ऊपर प्रत्यारोपित करने पर एक ऐसा *'सामान्य सेवा प्रदेश'* बन सकता है जिसमे दिए हुए केन्द्र का कुल प्रभुत्व या नियत्रण पास के प्रतिस्पर्धा करते हुए केन्द्र की तुलना मे अधिक होता है। ऐसे ही सामान्य सेवा प्रदेश को सम्बन्धित सेवाकेन्द्र के **'प्रदेश'** या **'सेवा–प्रदेश'** के रूप मे जाना जाता है।

1.2 सेवाकेन्द्र तन्त्र

किसी क्षेत्र विशेष में विद्यमान कुछ तत्वो मे परस्पर अन्तर्प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप उन तत्वो में परिवर्तित सम्बद्धता जाल को तन्त्र (System) कहते हैं। *'तन्त्र'* के अनुरूप ही किसी प्रदेश के

सेवाकेन्द्र तन्त्र मे सेवाकेन्द्रो के आकार प्रकार वितरण तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण उनके पारस्परिक एव प्रभावी सेवाक्षेत्र से अर्न्तसम्बन्धो का जिससे उनमे एक सूत्रबद्धता परिलक्षित हो अध्ययन किया जाता है। एक *सामान्यतत्र* की मुख्य विशेषताएँ निम्नाकित होती हैं–

1 तन्त्र के अन्तर्गत अनेक तत्व एक सूत्रबद्ध होते है।

2 इसमे ऊर्जा का प्रवाह होता है जिससे कार्यशीलता बनी रहती है।

3 ऊर्जा प्रवाह के विस्तार एव सकुचन के अनुसार तन्त्र विकसित या सकुचित होता है।

सूत्रबद्धता तन्त्र अवधारणा का अनिवार्य तत्व है जो प्रदेश विशेष मे ऊर्जा प्रवाह से निर्धारित होती है। सेवाकेन्द्र एव सेवा प्रदेश के सन्दर्भ मे गमनागमन ऊर्जा प्रवाह का द्योतक है जो किसी भी सेवाकेन्द्र तन्त्र के अस्तित्व व विकास हेतु अनिवार्य है। प्रादेशिक अर्थतन्त्र के सन्दर्भ मे यह ऊर्जा प्रवाह जनसख्या प्रवजन समाक सन्देश अथवा द्रव्य के रूप मे हो सकता है। अत किसी सेवाकेन्द्र तन्त्र मे जिन केन्द्रो के मध्य ऊर्जा का प्रवाह अधिक होता है वह मार्ग सापेक्षतया अधिक महत्वपूर्ण होगा। परिणाम स्वरूप इस सुदृढ मार्ग जाल पर धीरे–धीरे सगम बिन्दु स्थापित होते है जो कालान्तर मे नगरीय केन्द्र के रूप मे उभरते है। इस प्रक्रिया के अनुसार नये सेवाकेन्द्र बनते हैं अथवा पूर्व स्थित सेवाकेन्द्र तन्त्र मे अभिवृद्धि होती है।

इस प्रकार सेवाकेन्द्र तन्त्र प्रादेशिक तन्त्र का सरचनात्मक आधार प्रस्तुत करता है। किसी सेवाकेन्द्र तन्त्र मे ऊर्जा प्रवाह के विस्तार एव सकुचन के अनुसार वह तन्त्र भी विकसित एव सकुचित होता है यथा दो प्रमुख सेवाकेन्द्रो के मध्य उपलब्ध गमनागमन मार्ग को अवरूद्ध करके किसी अन्य मार्ग से उन केन्द्रो को सम्बद्ध किया जाय तो इसके परिणाम स्वरूप पूर्ववर्ती मार्ग पर अवस्थित सक्रिय सेवाकेन्द्रो का विकास अवरूद्ध हो जाएगा तथा दूसरी ओर नवीन परिवहन मार्ग पर नये–नये सेवा केन्द्र विकसित होगे।

1 3 सेवाकेन्द्र . सकल्पनात्मक क्रम–विकास एव *केन्द्रस्थल सिद्धान्त*

यद्यपि सेवाकेन्द्रो के लिए **केन्द्रस्थल** शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम *मार्कजेफरसन* [8] द्वारा किया गया, परन्तु इससे पूर्व सेवाकेन्द्र सम्बन्धी सकल्पना का प्रयोग *वानथ्यूनेन,*[9] *कोहल,*[10] *ललाने,*[11] *गाल्पिन,*[12] *कुले,*[13] आदि विद्वानो द्वारा किया जा चुका था। केन्द्रस्थल (सेवाकेन्द्र) सिद्धान्त का सम्यक् एव विस्तृत विवेचन का श्रेय जर्मन विद्वान *वाल्टर क्रिस्टालर (1933)* को है, जिन्होने दक्षिणी जर्मनी के 800 से 40 लाख आबादी वाले विभिन्न केन्द्रो के विशेष सन्दर्भों मे अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनकी मान्यता है कि ऐसे प्रदेशों में जिनमें उच्चावचीय समानता हो प्राकृतिक ससाधन एव जनसख्या समवितरित हो, सभी केन्द्रों से सभी दिशाओ मे परिवहन एव गमनागमन अबाधित हो व उन पर होने वाला व्यय दूरी के समानुपातिक होता है, अर्थव्यवस्था पूर्ण प्रतियोगितावादी हो एवं आर्थिक मनुष्य ही

निर्णायक इकाई हो, विभिन्न प्रकार की सेवाओ एव सुविधाओ के आदान–प्रदान के लिए विभिन्न पदानुक्रमिक स्तरो के केन्द्रस्थलो का विकास होता है। इनमे अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण बिन्दुओ पर प्रकार्यो का सकेन्द्रण अधिक होता है। *क्रिस्टालर* ने इन्ही बिन्दुओ को केन्द्रस्थल कहा तथा जो प्रकार्य इस केन्द्रस्थल या इसके चतुर्दिक विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान करते हैं *केन्द्रीय प्रकार्य* कहलाते है। प्रत्येक केन्द्रस्थल एव उनके केन्द्रीय प्रकार्यों के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध पाया जाता है क्योकि जहॉ एक ओर सेवा प्रदेश विभिन्न सेवाओ के लिए अपने केन्द्रस्थल पर निर्भर रहता है वही दूसरी ओर सेवाकेन्द्र भी प्राथमिक प्रकार की क्रियाओ एव तद्जनित आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु अपने सेवा प्रदेश पर निर्भर करता है।

अपनी परिकल्पना के माध्यम से *क्रिस्टालर* ने बताया कि सभी तरह से एक समाग क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का वितरण परस्पर बराबर दूरी पर प्रोत्साहित होगा एव इस तरह व्यवस्थित सेवाकेन्द्रो का सेवाक्षेत्र षटभुजाकार होगा क्योकि षट्भुज ही एकमात्र ऐसी आदर्श ज्यामितीय आकृति है जिसमे एक ही स्तर के सेवाकेन्द्रो के समूह के चतुर्दिक सम्पूरक क्षेत्रो मे न तो कोई भाग असेवित रह जाता है और न कोई उभयनिष्ठ ही होता है। प्रत्येक सेवाकेन्द्र एक निश्चित वृत्ताकार क्षेत्र को सेवाये प्रदान करता है जिसकी त्रिज्या वस्तुओ के वहनीयता के समानुपाती होती है। इस प्रकार प्रत्येक सेवाकेन्द्र का एक वृत्ताकार सेवा प्रदेश होता है किन्तु सेवितक्षेत्र केन्द्रो द्वारा सेवित क्षेत्रो के मध्य कुछ भाग या तो सेवाओ के प्राप्ति से वचित रह जाता है या तो कुछ भाग दोनो के सेवाप्रदेशो मे उभयनिष्ठ हो जाता है। इन समस्याओ के कारण ही *क्रिस्टालर* ने अपने सेवाकेन्द्रो द्वारा सेवित प्रदेशो के आकार को षटभुजाकार माना है।

सेवाकेन्द्र सकल्पना के दो मूलभूत आधार है— ***प्रथम*** कुछ आर्थिक नियत्रक कारक होते है, जो विपणन केन्द्रो के स्वरूप एव क्रियाकलापो को प्रभावित करते हैं और ***दूसरा*** आधार सरचनात्मक स्वरूप से सम्बधित है। यह स्वरूप मानव अधिवासो की आदर्शतम स्थिति मे ही परिलक्षित होता है, जो केन्द्रीय क्रियाकलापो को सम्पन्न करता है। आर्थिक नियत्रक कारको मे ***प्रभाव सीमा (Threshold)*** तथा ***वस्तु–परास (Range of Goods)*** निहित हैं। *क्रिस्टालर* के अनुसार किसी सेवाकेन्द्र को कार्यरत रहने के लिए न्यूनतम मागे होनी आवश्यक हैं। *वस्तु–परास* के अतर्गत वह दूरी आती है जहॉ तक वस्तुओ एव सेवाओ की आपूर्ति लाभदायक ढग से की जा सकती है। इस तरह सेवाकेन्द्र के प्रभाव प्रदेश का निर्धारण होता है। सामान्य वस्तुओ की आपूर्ति करने वाले सेवाकेन्द्र सख्या मे अधिक होते हैं तथा विशिष्ट वस्तुओ की आपूर्ति करने वाले सेवाकेन्द्र सख्या में कम होते हैं। *क्रिस्टालर* द्वारा परिकल्पित आदर्श दशाओ के उपस्थित होने पर एक ही प्रकार के विपणन केन्द्रो की आपसी दूरी बराबर होती है।

हैगेट [14] *(1979)* के अनुसार षटकोण वृत्त का निकटतम ज्यामितीय स्वरूप है। सरचनात्मक स्वरूप के अतर्गत *क्रिस्टालर* द्वारा प्रतिपादित सेवा प्रदेश का स्वरूप षट्कोणीय ही होता है। यदि

CLASSICAL MODELS OF CENTRAL PLACE THEORY

VERSORGUNGSPRINZIP MODEL

(K=3 Network)
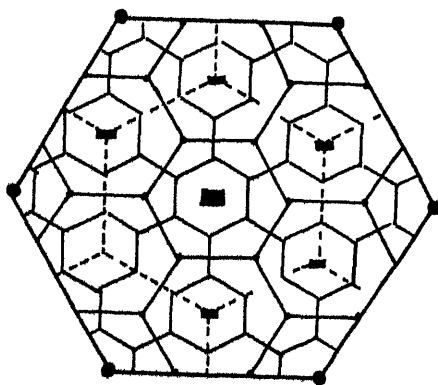
VERKEHRSPRINZIP MODEL

(K=4 Network)
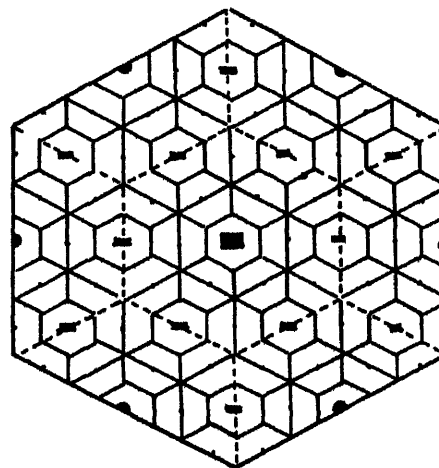
ABSOUNDERUNGSPRINZIP MODEL

(K=7 Network)
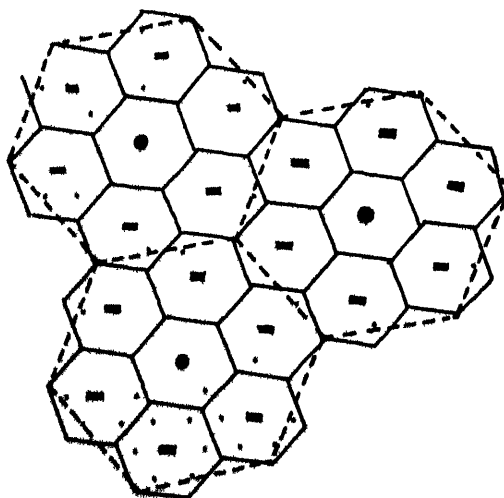
■ —— **CITY & CITY LEVEL UMLAND**

• ----- **TOWN & TOWN LEVEL UMLAND**

▪ —— **VILLAGE & VILLAGE LEVEL UMLAND**

· —— **HAMLET & HAMLET LEVEL UMLAND**

FIG 11

सर्वाधिक महत्व के सेवाकेन्द्रो की स्थिति ज्ञात है तो उनसे क्रमश कम महत्व के सेवाकेन्द्रो की स्थिति ऐसे तीन केन्द्रो द्वारा निर्मित *त्रिभुज* के शीर्ष पर होती है। क्रमश कम महत्व के सेवाकेन्द्रो के षटकोण भी एक ही तरह के वस्तुओ के लिए बराबर होगे। इस तरह क्रमश कम महत्व के सेवाकेन्द्रो की स्थिति उनसे अधिक महत्व के तीन सेवाकेन्द्रो के बीचो–बीच निश्चित की जा सकती है। इस प्रकार प्रत्येक सेवाकेन्द्र के चतुर्दिक उससे क्रमश कम महत्व के 6 सेवाकेन्द्र होगे।

सेवाकेन्द्रो का विकास विभिन्न पदानुक्रमो मे होता है तथा वे अपने विविध विस्तार वाले सेवा प्रदेशो को सेवाये प्रदान करते है। इनमे निम्नस्तरीय पदानुक्रम के सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति पास–पास होती है तथा उनके द्वारा सेवित प्रदेश छोटा होता है जिनमे निम्नस्तरीय पदानुक्रम वाले प्रकार्यों की सेवाये सुलभ होती है। इसके विपरीत उच्चस्तरीय पदानुक्रम वाले सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति दूर–दूर होती है तथा उनके सेवा प्रदेश बडे होते है। इनमे निम्नस्तरीय सेवाओ के साथ–साथ उच्चस्तरीय सेवाओ की सुलभता होती है। विभिन्न क्षेत्रो मे उच्चस्तरीय एव निम्नस्तरीय सेवाकेन्द्रो के मध्य अन्योन्याश्रिता पायी जाती है जिससे वे एक दूसरे के विकास एव सम्पोषण मे सहायक होते हैं। सेवाकेन्द्रो की अन्योन्याश्रितता तथा उनके मध्य पदानुक्रम स्थापित करने हेतु *क्रिस्टालर* ने कई पद–सोपान बताया एव बताया कि इसमे आनुपातिक सम्बन्ध होता है। इस अनुपात को उन्होने *'K'* मूल्य नाम दिया *'K'* का मान किसी एक प्रदेश के पदानुक्रम हेतु स्थिर रहता है। इसलिए इसे ***"Fixed 'K' Hierarchy"*** कहते हैं।

क्रिस्टालर ने अपने केन्द्रस्थल सिद्धान्त मे विभिन्न दशाओ मे *'K'* के तीन मूल्य बताये है तथा इसके आधार पर तीन प्रतिरूपो या सिद्धान्तो की व्याख्या की है।

1 'K' = 3, *बाजार सिद्धान्त*

2 'K' = 4, *परिवहन सिद्धान्त*

3 'K' = 7, *प्रशासकीय सिद्धान्त*

केन्द्रस्थल सिद्धान्त के इस शास्त्रीय माडल को चित्र – 1 1 मे प्रदर्शित किया गया है।

1 *बाजार सिद्धान्त ['K' = 3]*

यह सिद्धान्त उस दशा मे उपयुक्त है, जब वस्तुओ तथा सेवाओ का वितरण प्रधान हो। इस अवस्था मे किसी केन्द्रस्थल की केन्द्रीय वस्तुओ की आपूर्ति यथा सभव निकटवर्ती स्थान से की जाती है। इस प्रकार यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि क्रेता को वस्तुओ और सेवाओ के लिए न्यूनतम दूरी तय करनी पड़ती है। अत इसमे निचली श्रेणी के छ केन्द्रो की स्थिति षटभुज के शीर्ष बिन्दुओं पर होती है। इन छ केन्द्रो के प्रदेशों के केवल एक तिहाई (6 x 1 / 3) भाग–अर्थात् दो केन्द्र और केन्द्रो की सख्या का भी एक तिहाई भाग (6 x 1 / 3) ही बड़ी श्रेणी के प्रदेश के अंतर्गत शामिल होते हैं और बड़े केन्द्र से वस्तुओं और सेवाओ की आपूर्ति प्राप्त करते

है। चूँकि बडी श्रेणी का केन्द्र अपने से छोटी श्रेणी के स्तर के कार्यो का सम्पादन भी उस श्रेणी के केन्द्र की हैसियत से करता है। अत कुल मिलाकर एक बडे केन्द्र और उसके प्रदेश के साथ दो छोटी श्रेणी के केन्द्र और उनके प्रदेश (6 x 1/3 + 1), सम्बद्ध रहते है। इस प्रकार बाजार सिद्धान्त मे पदानुक्रम मे स्थित प्रत्येक उच्च श्रेणी का केन्द्र एव प्रदेश अपने से निम्न श्रेणी के केन्द्र एव प्रदेश के बीच तीन गुने का आनुपातिक सम्बन्ध रखता है (चित्र– 1 2A)। इसमे केन्द्रो का पदानुक्रमीय स्वरूप 1 2 6 18 54 एव पूरक प्रदेशो का अनुपात 1 3 9 27 81 होता है। परन्तु केन्द्रो की जनसख्या सिद्धान्त तीन गुनी कम होती है। इस प्रकार इस व्यवस्था मे प्रत्येक केन्द्रस्थल अपने तीन उच्चस्तरीय केन्द्रस्थलो के बराबर प्रभाव मे रहेगा।

सारणी–1 1
केन्द्रस्थलो और उनके प्रदेशो का सैद्धान्तिक वितरण–तन्त्र[15]
(बाजार सिद्धान्त पर आधारित सख्याएँ कि मी तथा वर्ग कि मी मे)

क्र स	पदानुक्रम का प्रकार स्तर वर्ग या श्रेणी	केन्द्रो की सख्या	केन्द्रो और प्रदेशो की कुल स	प्रदेश का अर्धव्यास	दो केन्द्रो के बीच की दूरी	केन्द्रो की जनसख्या (लगभग)	प्रदेश का क्षेत्रफल	प्रदेश की प्राकारिक जनसख्या
1	Marktort (M) बाजार पुरवा	486	729	4 0	6 9	1 000	44	3 500
2	Amtsort (A) कस्बा केन्द्र	162	243	6 9	12 0	2 000	133	11 000
3	Kreistadt (K) काउण्टी नगर	54	81	12 0	20 7	4 000	400	35 000
4	Bezirkstadt (B) जिला नगर	18	27	20 7	36 0	10 000	1 200	1 00 000
5	Gaustadt (G) छोटी प्रातीय राजधानी	6	9	36 0	62 1	30 000	3 600	3 50 000
6	Provinzstadt(P) प्रातीय मुख्य नगर	2	3	62 1	108 0	100 000	10 800	10 00 000
7	Landstadt (L) प्रादेशिक राजधानी नगर	1	1	108 0	186 8	500 000	32 400	35 00 000

'Stadt' means a town *(नगर)* *स्रोत– नगरीय भूगोल ओम प्रकाश सिह तारा, पब्लिकेशन्स, वाराणसी।*

सारणी से स्पष्ट है कि *क्रिस्टालर* के बाजार सिद्धान्त का सबसे छोटा सेवाकेन्द्र, *बाजारकेन्द्र* (M) का अपने निकटतम पड़ोसी बाजार केन्द्र से दूरी 7 कि मी, उसके प्रदेश का अर्द्ध व्यास 4 कि मी तथा उससे सेवितक्षेत्र का क्षेत्रफल 44 वर्ग कि मी एव सेवित जनसंख्या 3500 व्यक्ति है। साथ ही इसकी अग्रिम उच्चतर श्रेणियो मे सेवाकेन्द्रो के मध्य दूरी तथा उनका अर्द्धव्यास 3 या

(1 73205) गूना अधिक होता जाएगा। इसी प्रकार अगली श्रेणी मे क्षेत्रफल या जनसख्या भी तीन गुना बढ़ जाएगी, यथा *कस्बा केन्द्र* (A या Amtsort), जो *बाजार केन्द्र* M की अगली श्रेणी है की आपसी दूरी 12 कि मी उनके प्रदेश का अर्द्धव्यास 7 कि मी उनका क्षेत्र 132 वर्ग कि मी एव उनकी सेवित जनसख्या 11 000 हो जाएगी।

2 *परिवहन सिद्धान्त ['K' = 4]*

यह सिद्धान्त परिवहन जाल के अत्यधिक सक्रिय होने पर लागू होता है। इस सिद्धान्त का लक्ष्य परिवहन लागत को न्यूनतम करना है। इसमे निचली श्रेणी के छ केन्द्र षटभुज के शीर्ष बिन्दुओ पर स्थित होते है। परिणाम स्वरूप छ केन्द्रो मे से प्रत्येक के प्रदेश के आधे भाग बडे प्रदेश के अतर्गत शामिल होते है और चूँकि इनमे से प्रत्येक केन्द्र पास के दोनो बडे केन्द्रो से सेवाये प्राप्त करता है अत छ केन्द्रो और उनके प्रदेशो का आधा (6x1／2=3), बड़े केन्द्र और उसके प्रदेश के साथ मिलकर (3+1) K=4 पदानुक्रम का निर्माण करते हैं। इसमे से प्रत्येक उच्च श्रेणी का केन्द्र और प्रदेश अपने से निम्न श्रेणी के केन्द्र और प्रदेश से चार गुने का आनुपातिक सम्बन्ध रखता है जैसे 1 4 16 64 आदि। इसीलिए इसे *K=4 प्रतिरूप* कहते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार सेवाकेन्द्रो के विभिन्न पदानुक्रमीय वर्गों मे सेवाकेन्द्रो का अनुपात क्रमश 1 3 12 48 192 और उनके पूरक प्रदेशो का अनुपात क्रमश 1 4 16 64 256 होता है (चित्र 1 2 A)।

3 *प्रशासकीय सिद्धान्त ['K'=7]*

यह सिद्धान्त राजनैतिक किस्म का है। आर्थिक ढग से विलग यह सिद्धान्त उस दशा मे लागू होता है, जब प्रशासनिक तत्र प्रधान होते है। इसका उद्देश्य होता है, प्रत्येक उच्च स्तरीय केन्द्र स्थल द्वारा अपने निम्न स्तरीय केन्द्रस्थलो पर एकछत्र प्रभाव स्थापित करना क्योकि प्रशासकीय नियन्त्रण, शक्ति का उचित क्षेत्रीय विभाजन सुरक्षा और राजनैतिक–प्रशासकीय सेवाओ की पूर्ति के लिए यह आवश्यक होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार निचली श्रेणी के सभी छ केन्द्र बड़ी श्रेणी के केन्द्र के षट्भुजाकार प्रदेश के पूर्णत भीतर षटकोणीय ढग से इस प्रकार स्थित होते है कि सभी छ केन्द्रो और उनके प्रदेश पूरी तरह से एक ही बड़े केन्द्र और उसके प्रदेश से सम्बद्ध होते हैं। अत इसमे उच्च कोटि के केन्द्र एव प्रदेश का निम्न श्रेणी के केन्द्र एव प्रदेश से सात गूने का आनुपातिक सम्बन्ध होता है। इसमे सेवाकेन्द्रो का अनुपात 1 6 42 294 तथा उनके पूरक प्रदेशो का अनुपात 1 7 49 343 होता है। इसमे वृद्धि 7 के गुणक मे होती है। अत इसे *K=7 प्रतिरूप* कहते हैं (चित्र 1 2 A)।

क्रिस्टालर द्वारा प्रतिपादित केन्द्रस्थल सिद्धान्त का प्रयोग आगे चलकर विभिन्न विद्वानो ने किया। अधिसंख्य विद्वानों का सेवाकेन्द्रों के पदानुक्रमिक वर्गीकरण के प्रयासो का प्रधान उद्देश्य

यह सिद्ध करना रहा है कि वस्तुत सेवाकेन्द्र सापेक्षिक केन्द्रीयता के अनवरत क्रम मे नही प्रत्युत एक दूसरे से सर्वथा विलग कोटियो मे होते हैं। इनके अनुसार पदानुक्रम वर्ग की एक कोटि दूसरी अग्रिम कोटि से सर्वथा भिन्न एव स्पष्टतया विलग होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि *क्रिस्टालर* ने परिवहन के साधन एव प्रशासनिक सीमाओ के सन्दर्भ मे केन्द्रस्थल सिद्धान्त का परिमार्जन किया था। *ब्रश* [16] *1953* ने *क्रिस्टालर* के परिकल्पना की पुष्टि की तो *विनिग* [17] *1955* तथा *थामस* [18] *1961* ने सेवाकेन्द्रो की कोटिबद्ध पदानुक्रम व्यवस्था को गलत सिद्ध करते हुए कहा कि सेवाकेन्द्रो के पदानुक्रमिक श्रेणियो मे स्पष्टतया कठोर विलगाव नही पाया जाता प्रत्युत सेवाकेन्द्र एक अनवरत क्रम मे स्थित होते है। *बेरी* तथा *गैरीसन 1958*[19] ने केन्द्रस्थल सिद्धान्त का सयुक्त राज्य अमेरिका मे परीक्षण करने के उपरात बताया कि सेवाकेन्द्रो की स्थापना समाग दशाओ मे ही होगा ये आवश्यक नही है। जनसख्या के असमान वितरण एव असमान क्रयशक्ति के होने पर भी केन्द्रस्थल सिद्धान्त लागू हो सकता है। इन्होने *विनिग* एव *थामस* के पदानुक्रमिक विचारो पर गहरी असहमति व्यक्त करते हुए *क्रिस्टालर* के स्पष्ट विलग कोटियो का जोरदार समर्थन किया तथा पदानुक्रम का निर्धारण कार्याधार जनसख्या एव वस्तुओ की परिवहनीयता के आधार पर करते हुए केन्द्रस्थल सिद्धान्त को अधिक व्यापक बना दिया।

4 लॉश का *'आर्थिक भूदृश्य सिद्धान्त'*

क्रिस्टालर के परिकल्पना से प्रेरित होकर विभिन्न विद्वान किसी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति, प्रतिरूप तथा सेवा प्रदेश के विकास मे इनके प्रभाव के विश्लेषण की ओर उन्मुख हुए। इनमे कुछ विद्वानो ने *क्रिस्टालर* के मत के प्रति सहमति व्यक्त की जबकि अन्य ने इससे असहमति व्यक्त करते हुए उपयुक्त परिस्थितियो के अनुकूल इसमे परिमार्जन प्रस्तुत किया। इनमे *लॉश* प्रमुख हैं।

लॉश [20] ने *क्रिस्टालर* के केन्द्र स्थल तत्र सिद्धान्त की विचारधाराओ एव मान्यताओ के आधार पर इसमे कुछ वास्तविकता एव लचीलेपन का समावेश करते हुए अपने **आर्थिक भूदृश्य सिद्धान्त** का प्रतिपादन किया (चित्र 1 2B)। *लॉश* ने *क्रिस्टालर* के षटभुजाकार बाजार क्षेत्र से सहमति जताते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत निश्चित पदानुक्रम को नही माना, साथ ही अपने भून्वैन्यासिक सगठन मे ना तो उच्चस्तर के केन्द्रस्थल द्वारा सेवित निम्न स्तर के केन्द्रो की कोई सख्या निश्चित की और न ही *क्रिस्टालर* की तरह उनके आकार का ही परिसीमन किया।[21] *लॉश* के प्रतिरूप में एक उच्च केन्द्र होता है जहाँ सभी वस्तुओ का उत्पादन होता है तथा इन्ही पर वास्तविक विशेषीकरण, श्रम विभाजन एव अन्य केन्द्रों के मध्य व्यापार सम्पन्न होता है। निम्नस्तरीय केन्द्र बड़े केन्द्रों को अपने विशिष्ट उत्पादन की आपूर्ति करते हैं। नगरो से सेवाकेन्द्रो में दूरी बढ़ने के साथ साथ केन्द्र का आकार बढ़ता है एव लघु केन्द्र बड़े केन्द्र के मध्य समाहित होने की प्रवृति

CENTRAL PLACE THEORY
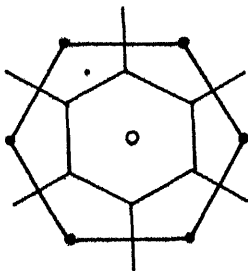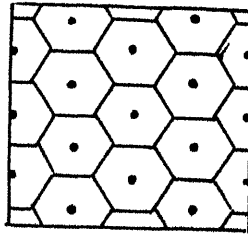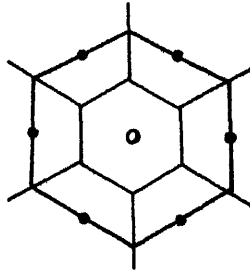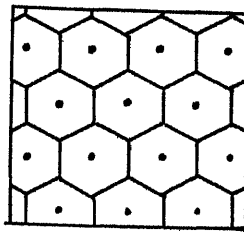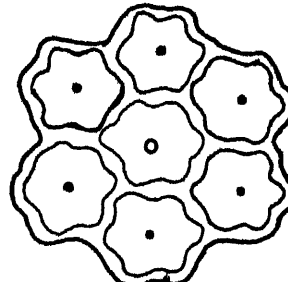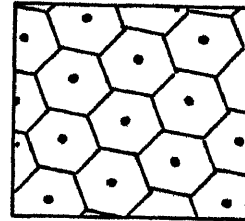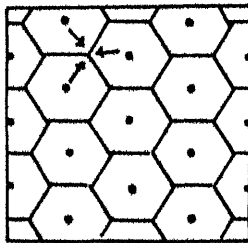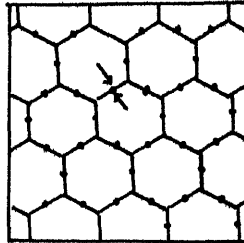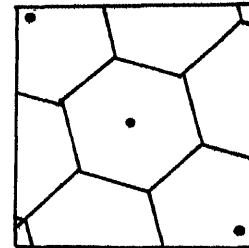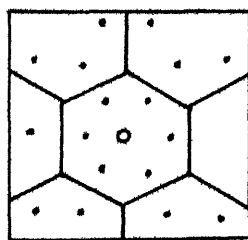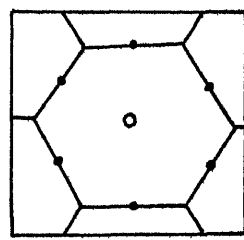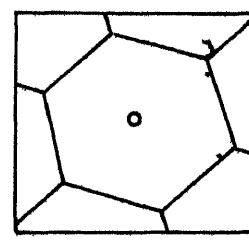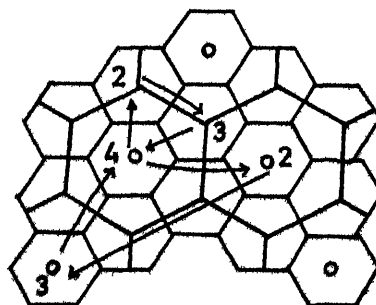
FIG 1 2

रखते है।

लॉश ने लघुतम कृषि ग्रामो को अपना *प्रारभिक बिन्दु* माना है जो समान रूप से वितरित नाभिकीय जनसख्या वाले क्षेत्रो मे स्थित होते हैं। इनमे से जब कोई ग्राम विनिर्माण कार्य प्रारम्भ करता है तो उसे बाहर क्षेत्र की आवश्यकता होती है और ये क्षेत्र एक षटभुजाकार आकार मे ही प्राप्त होता है। यदि फार्म द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार क्षेत्र अतिरिक्त उत्पादन के कारण विस्तृत होता है तो वह अन्य प्रतियोगी उत्पादन केन्द्रो के प्रभाव क्षेत्रो पर षटभुजो द्वारा अतिक्रमण द्वारा ही सम्पन्न होता है। इन्होने षटभुजो के आकार को भौगोलिक के साथ–साथ उत्पादित वस्तुओ के केन्द्र के सम्बन्ध मे भी माना है। इस प्रकार एक केन्द्र विशेष के विभिन्न उत्पादनो के लिए कई षटभुजाकार बाजार क्षेत्र प्राप्त हो सकते है। परिवहन लागत को *लॉश* ने दूरी का परिणाम बताया है। इसलिए यदि उद्योग की परिवहन लागत दूसरे से कम है तो उसका षटभुजाकार बाजार क्षेत्र दूसरे की अपेक्षा अधिक विस्तृत होगा।

लॉश की मान्यता है कि जिन वस्तुओ की अवसीमा आवश्यकता आधारभूत षटभुजाकार बाजार क्षेत्र की 1 से 3 होती हे वे $K=3$ रेखा जाल मे जबकि 3 से 4 के मध्य रहने वाली वस्तुए $K=4$ प्रतिरूप मे तथा 4 से 7 के मध्य अवसीमा वाली वस्तुऐं $K=7$ प्रतिरूप मे स्थित होगी। ऐसी स्थिति मे एक ऐसा आर्थिक भू–दृश्य उत्पन्न होता है जिसमे अधिकतम सख्या मे अवस्थितियॉ होती है, साथ ही सभी वस्तुओ के मध्य की कुल दूरी न्यूनतम होती है। अत वस्तुओ की स्थानीय आपूर्ति अधिकतम सख्या मे न्यूनतम लागत मे होती है।

5 *लॉश* और *क्रिस्टालर* के अध्ययन की तुलना

[1] *क्रिस्टालर* का केन्द्रस्थल सिद्धान्त उच्च श्रेणी के नगरो से प्रारम्भ होकर निम्न श्रेणी के नगरो की ओर आगे बढता है, जबकि *लॉश* छोटे केन्द्र से बडे केन्द्र की ओर बढते है।

[2] *क्रिस्ट्रालर* का सिद्धान्त तृतीयक कार्यों या सेवाओ की व्याख्या अधिक उपयुक्त ढग से करता है, जबकि *लॉश* का मॉडल द्वितीयक कार्यो हेतु अधिक उपयुक्त है।

[3] *क्रिस्टालर* के सिद्धान्त मे एक प्रदेश के पदानुक्रम हेतु जहॉ *'K'* का मान स्थिर रहता है, वही *लॉश* का पदानुक्रम काफी लचीला एव परिवर्तनशील है।

इस प्रकार *लॉश* एव *क्रिस्टालर* के सिद्धान्तो की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि वे दोनो ही वस्तुओ के लिए एक रूप तथा समान मॉग को प्रारम्भिक बिन्दु मानते हैं। लेकिन *लॉश* गौण प्रकार्यों तथा भूवैन्यासिक अर्थव्यवस्था के लघुस्तर पर क्रियान्वयन से अधिक सम्बन्धित है जबकि *क्रिस्टालर* वृहद स्तर से नीचे की ओर अग्रसर होते हैं। दोनो के प्रतिरूप कृषि निवेश तथा उसके उत्पादन की मॉंग–पूर्ति के प्रति उपेक्षा करते हैं। *लॉश* के प्रतिरूप मे केन्द्रस्थलो का पदानुक्रमिक होना आवश्यक नहीं है तथा यह भी आवश्यक नही है कि आकार से समानता रखने वाले केन्द्र

वस्तुओ के परिसर मे भी समानता रखे। इन दोनो के षटभुजाकार योजना मे भी पर्याप्त अन्तर दिखाई पडता है। *लॉश* की योजना *क्रिस्टालर* की योजना की तरह योजनाबद्ध नही है।

क्रिस्टालर ने केन्द्रस्थलो को स्थायी माना जबकि अध्ययन क्षेत्र जैसे विकासशील क्षेत्रो मे केन्द्रीय क्रियाकलाप आवर्ती विपणन केन्द्रो के द्वारा सम्पादित होते है। *क्रिस्टालर* ने इन्हे अपने सिद्धान्त मे स्थान नही दिया है। *स्किनर* [22] ने ऐसे आवर्ती केन्द्रस्थलो का केन्द्रस्थल सिद्धान्त मे समावेश किया है। इस परिमार्जन से केन्द्रस्थल सिद्धान्त की सरचनात्मक अपेक्षाओ मे कुछ अन्तर आया है (चित्र 1 2C)।

क्रिस्टालर, लॉश के पश्चात अनेक विद्वानो ने पदानुक्रम निर्धारण मे केन्द्रीय कार्यो को आधार माना जिसमे– *उलमैन*[23] *स्मेल्स*[24] *डिकिन्सन*[25] *ब्रश*[26] *कार्टर,*[27] आदि विद्वानो का अध्ययन प्रमुख है। *सिडाल* [28] ने थोक व्यापार *ब्रेशी* [29] *गोडलुण्ड* [30] ने जनसख्या *ग्रीन*[31] *कैरूथर्स* [32] ने बस सेवको *लोमश* [33] ने प्रकीर्णन आरेख तथा *प्रीस्टन*[34] *बेकमैन* [35] एव *डेकी* [36] ने गणितीय मॉडल का प्रयोग केन्द्रस्थलो के पदानुक्रम निर्धारण मे किया।

इन विद्वानो के अतिरिक्त *हैरिश* [37] *इशार्ड*[38] *फिलब्रिक,*[39] *बेरी एव गैरीशन*[40] *मेयर*[41] *किग*[42] *जॉनसन*[43] *डेविस*[44] *पार*[45] *फिशर*[46] *थामस*[47] आदि का नाम प्रमुख है, जिन्होने केन्द्रस्थलो से सम्बन्धित अध्ययन करके नगरीय भूगोल मे नये आयाम जोडने के प्रयास किये।

1 4 भारत मे सेवाकेन्द्रो से सबधित अध्ययन

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व तक सेवाकेन्द्रो का अध्ययन पाश्चात्य देशो तक सीमित रहा। पर युद्धोपरान्त भारत मे भी इसका अध्ययन सैद्धान्तिक एव व्यावहारिक दोनो ही दृष्टियो से होने लगा। यद्यपि भारत मे व्यक्तिगत नगरो का अध्ययन 1950 ई से ही प्रारम्भ हो गया था परन्तु सेवाकेन्द्रो से सम्बन्धित सर्वप्रथम अध्ययन, *कर* [48] द्वारा 1960 ई0 मे ***'कलकत्ता प्रदेश के केन्द्रस्थलीय पदानुक्रम''*** मे किया गया।

काशीनाथ सिह[49] ने मध्य गगाघाटी के सेवाकेन्द्रो का अध्ययन कर भारत मे नगरीय भूगोल के नीव को सबलता प्रदान किया परन्तु सेवाकेन्द्रो के विविध पहलुओ का सर्वप्रथम विशद् अध्ययन *ओमप्रकाश सिह* [50] द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ***''उत्तर प्रदेश के केन्द्रस्थलो का अध्ययन'',*** के माध्यम से हुआ।

केन्द्रस्थलों एव विकास केन्द्रो के माध्यम से *बनमाली* [51] एव *सेन* [52] द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर समन्वित विकास हेतु नियोजन के प्रयास किये गए। सेवाकेन्द्रो को विकास ध्रुवो के रूप मे देखते हुए *मिश्रा* [53], *प्रकाशराव* [54] एव उनके सहयोगियो द्वारा प्रादेशिक नियोजन के तर्कसगत प्रयास हुए

जिससे प्रादेशिक नियोजन मे सेवाकेन्द्रो की भूमिका की सकल्पना स्पष्ट रूप से उजागर हुई।

इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे विभिन्न विद्वानो द्वारा सेवाकेन्द्रो से सम्बन्धित अनेक अध्ययन प्रस्तुत किये गये इनमे *सिह*[55] *तिवारी*[56] *मिश्रा*[57] *रवान*[58] *मूर्ति*[59] *पाण्डेय*[60] आदि के अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण हैं।

(ख) विकास की संकल्पना

1 5 विकास, प्रगति एव सवृद्धि की अवधारणा

विकास प्रगति एव *सवृद्धि* शब्दो का प्रयोग प्राय एक दूसरे के पर्याय के रूप मे किया जाता है परन्तु तीनो शब्द भिन्न है। *डडले सियर्स* ने करीब 30 वर्ष पूर्व सभवत लैटिन अमेरिकी देशो के सन्दर्भ मे लिखा था *ग्रोथ विदाउट डेवलपमेन्ट* अर्थात् बिना विकास के वृद्धि। इस प्रकार सामान्य अर्थ मे **विकास** से आशय सकल राष्ट्रीय उत्पाद मे वृद्धि से है जबकि सैद्धान्तिक दृष्टि से यह कई और तत्वो पर भी आधारित है। **प्रगति'** का क्षेत्र और भी व्यापक एव विस्तृत है। इसमे विकास के साथ–साथ अन्य सामाजिक पहलू भी समाहित हैं। **सवृद्धि** का अर्थ है आकलन किए जा सकने वाले तत्वो मे बढोतरी। इस प्रकार विकास से अभिप्राय आर्थिक परिवर्तन से है तो प्रगति से अभिप्राय सामाजिक परिवर्तन से।[61]

(अ) प्रगति और विकास

प्रगति का अभिप्राय वाछनीय परिवर्तन से है, जिसमे इष्ट मूल्यो की पूर्ति होती है। प्रगति का सदर्भ उद्देश्यपरक दिशा की ओर धनात्मक परिवर्तन होता है। यदि सामाजिक आर्थिक परिवर्तन वाछित तरीके से होता है तो उसे *प्रगति* समझा जा सकता है। इस प्रकार प्रगति एक सापेक्षिक धारणा है जिसमे वर्तमान का मूल्याकन भूतकाल को आधार बनाकर किया जाता है। इसमे मूल्याकन एक सामान्य किन्तु निश्चित पैमाने पर किया जाता है। मूल्याकन की कसौटिया आर्थिक, तकनीकी प्रगति, सास्कृतिक लक्षण गुॅण और मानसिक विकास है। तकनीकी प्रगति सरलतम कसौटी है, इसका सामाजिक एव सास्कृतिक विकास से निकट का सम्बन्ध है। वास्तव मे किसी क्षेत्र मे परिवर्तन या प्रगति दूसरे क्षेत्र से सम्बधित है और उस पर निर्भर भी है। अत प्रगति एक जटिल परिघटना है।[62]

प्रगति की अवधारणा की तरह विकास की अवधारणा मे भी वाछित दिशा मे परिवर्तन की ओर सकेत है। इस प्रकार विकास की अवधारणा एक नूतन परिघटना है। जबकि प्रगति की अवधारणा प्रबोध और औद्योगिक क्राति से जुड़ी हुई है। विकास की प्रकृति सदर्भात्मक और सापेक्षिक है। इस प्रकार वाछनीय दिशा मे नियोजित गुणात्मक परिवर्तन लाने के उपाय को *विकास* कहते है। विकास की धारणा सामाजिक– सास्कृतिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक और

भौगोलिक परिस्थिति के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र मे भिन्न–भिन्न पायी जाती है।

विकास एक सम्मिश्र अवधारणा है। किसी क्षेत्र के विकास मे कृषि उद्योग शिक्षा स्वास्थ्य परिवहन एव सचार आदि विभिन्न क्षेत्र मे प्रगति को शामिल किया जाता है। विकास मे समाज के निम्नतम उपेक्षित लोगो के कल्याण को भी सम्मिलित करते है और तत्सबधित कल्याणकारी नीतियो का निर्माण करते है। अत विकास एक मूल्य– भारित अवधारणा है। यह किसी समाज क्षेत्र और जनता की सामाजिक सास्कृतिक आर्थिक व भौगोलिक आवश्यकताओ से सम्बद्ध है।[63] विकास का अभिप्राय एक परिघटना के पूर्णतर वृद्धि रूपी उद्‌विकास से है। मनुष्य का अपने पर्यावरण पर नियत्रण विकास का ही उदाहरण है।

(ब) सवृद्धि और विकास

आर्थिक सवृद्धि को हम एक ऐसी वृद्धि दर के रूप मे परिभाषित कर सकते है जो अत्यन्त निम्न जीवन स्तर मे फॅसी हुई किसी अल्पविकसित अर्थ व्यवस्था को अल्पावधि मे ही ऊॅचे जीवन स्तर तक पहुॅचा सके।[64] कुछ अर्थशास्त्रियो के अनुसार आर्थिक सवृद्धि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी अर्थव्यवस्था का कुल राष्ट्रीय उत्पादन लगातार दीर्घकाल तक बढता रहता है[65]। आर्थिक सवृद्धि से प्राय यह अर्थ निकाला जाता है कि उत्पादन मे समय के साथ कितनी वृद्धि हुई? दूसरी ओर आर्थिक विकास की सकल्पना मे प्रति व्यक्ति उत्पादन मे वृद्धि के साथ–साथ इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि अर्थव्यवस्था के आर्थिक व सामाजिक ढॉचे मे क्या परिवर्तन हुए? इस प्रकार आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमे कुल राष्ट्रीय उत्पादन मे कृषि के हिस्से के सापेक्ष उद्योगो सेवाओ व्यापार बैकिग व विनिर्माण का हिस्सा बढता जाता है। इस प्रक्रिया मे श्रम शक्ति की व्यावसायिक सरचना मे भी परिवर्तन होता है तथा उसके कार्य कुशलता व उत्पादकता मे वृद्धि होती है। अत *सवृद्धि* परिवर्तन के मात्रात्मक पहलू की ओर सकेत करती है जबकि *विकास* में मात्रात्मक के साथ–साथ गुणात्मक परिवर्तन को भी प्रश्रय मिलता है।[66]

किडलबर्गर के अनुसार जहॉ आर्थिक सवृद्धि का अर्थ उत्पादन मे वृद्धि होता है वही आर्थिक विकास से तात्पर्य उत्पादन मे वृद्धि के साथ–साथ उत्पादन की तकनीक, सस्थागत व्यवस्था तथा वितरण प्रणाली मे परिवर्तन होता है। आर्थिक सवृद्धि की तुलना मे आर्थिक विकास प्राप्त करना कही अधिक कठिन है। आर्थिक ससाधनो की उपलब्धता सुनिश्चित करके उसकी उत्पादकता व उत्पादन बढ़ाकर आर्थिक सवृद्धि की जा सकती है किन्तु आर्थिक विकास के लिए उत्पादन के साधनो की सरचना मे परिवर्तन लाना अनिवार्य होता है साथ ही उसके आवटन मे भी परिवर्तन लाना होता है, जिससे सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार जहा आर्थिक सवृद्धि के लिए राष्ट्रीय आय पर ध्यान देना पड़ता है, वही आर्थिक बिकास का अनुमान मुख्यत सरचनात्मक परिवर्तनो के आधार पर लगाया जाता है।

(स) क्राति और विकास

किसी भी क्षेत्र मे त्वरित आकस्मिक धनात्मक परिवर्तन को ही *क्रान्ति* कहते है। क्रातियॉ क्षेत्रो के अनुसार अनेक प्रकार की होती है यथा– *राजनैतिक क्राति सामाजिक क्राति औद्योगिक क्राति कृषि क्राति* आदि। यहॉ *क्राति* का तात्पर्य विकास के सन्दर्भ मे है। क्रातिकारी विकास से अप्रत्यासित विकास होता है जबकि साधारण विकास सतत् गतिशील होता है। इस प्रकार क्राति का अर्थ परिवर्तन के चरम स्वरूप से है।[67] यदि किसी समाज या क्षेत्र मे इस तीव्र परिवर्तन से सामजस्य करने की क्षमता नही है तो उसके नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत होते है। जहॉ विकास से धीमे एव सतत् परिवर्तन का बोध होता है वही इससे सतुलित विकास का भी बोध होता है। जबकि *क्राति* का अर्थ तीव्र और आमूल परिवर्तन होता है।[68] किसी समाज या क्षेत्र मे कुछ ऐसे तत्व होते है जिनमे क्रातिकारी विकास की आवश्यकता होती है, वस्तुत ये विकास प्रक्रिया की कुजी होते है जिन्हे तीव्र किये बिना अन्य विकास कार्य सम्पादित ही नही हो सकते। भारत के सन्दर्भ मे *हरित क्रॉति* के बाद कृषि आधारित उद्योगो का विकास स्वत स्फूर्त था। मानव समाज के विकास मे क्रातियो ने एक आवश्यक भूमिका अदा की है।[69]

1 6 विकास की भौगोलिक अवधारणा

मनुष्य अपने चेतन व गतिशील स्वभाव के कारण सभी प्राणियो से अलग है। वह अपने वर्तमान वस्तु–स्थिति से सन्तुष्ट न रहकर उसमे मनोवाछित परिवर्तन लाकर विकसित स्वरूप देखना चाहता है। वस्तुओ एव घटनाओ का स्वरूप परिवर्तन ही विकास होता है।[70] परिवर्तन दो तरह का होता है– ऋणात्मक एव धनात्मक। विकास का सम्बन्ध धनात्मक परिवर्तन से होता है।[71] यह परिवर्तन भूतल पर अवस्थित किसी भी वस्तु–स्थिति से हो सकता है। अत तथ्यात्मक सन्दर्भ मे विकास की परिभाषाओ का स्वरुप बदलता रहता है। विकास के अतर्गत भू–तल पर अवस्थित सम्पूर्ण तथ्यो मे धनात्मक परिवर्तन को ही सम्मिलित किया जाता है। मनुष्य ही सभी अध्ययनो का केन्द्र–बिन्दु होता है और मानव कल्पना मे वृद्धि ही भूगोल का मूल उद्देश्य रहा है।[72] अत मानव के क्रिया–कलापो के विकास को ही विकास की परिधि मे सम्मिलित करना चाहिए। ये क्रिया–कलाप सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक स्वरूपो से सम्बधित हो सकते है। इन समस्त क्रियाओ मे आर्थिक क्रियाओ का स्थान सर्वोपरि है किन्तु विकास का सम्बन्ध केवल आर्थिक क्रियाओ से ही नही है, इसमे वातावरण की गुणवत्ता मे वृद्धि तथा सामाजिक आर्थिक प्रगति के आधारभूत कारक सरचनात्मक एव सस्थागत परिवर्तन को भी विकास के अतर्गत समाहित किया जाता है। वस्तुत विकास एक व्यावहारिक सकल्पना है जिसका अभिप्राय प्रगति, उत्थान एव वाछित परिवर्तन से है। विगत वर्षो मे विकास से तात्पर्य आर्थिक क्षेत्र मे हुई प्रगति और सुधार से समझा जाता था, किन्तु आजकल इसका आशय जीवन के विविध क्षेत्रो मे हुए वाछित गुणात्मक एव परिमाणात्मक परिवर्तनो से किया जाता है।[73] इन्ही तत्वो को ध्यान मे रखकर *ब्रह्मप्रकाश* एव

मुनीस रजा[74] ने विकास को कार्य अथवा कार्यों की एक श्रृखला या प्रक्रम माना है जो जीवन की दशाओ मे शीघ्र ही सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सास्कृतिक तथा वातावरणीय सुधार करता है अथवा भविष्य मे जीवन की सम्भावना मे वृद्धि करता है या दोनो ही कार्य इसके द्वारा किए जाते है।

गुलतुग[75] ने विकास की नयी परिभाषा देते हुए बताया कि विकास का सिद्धान्त सामाजिक विषयो का वह क्षेत्र है जहाँ भूतकाल का अध्ययन इतिहास वर्तमान का अध्ययन समाजशास्त्र अर्थशास्त्र एव भूगोल आदि तथा भविष्य का अध्ययन भविष्यशास्त्र एक साथ करते है। *आर पी मिश्र*[76] ने विकास का विश्लेषण करते हुए कहा है कि विकास समाज एव अर्थ व्यवस्था के मात्रात्मक विस्तार के अतिरिक्त उनमे वाछित गति से वाछित दिशा मे सरचनात्मक परिवर्तन के साथ–साथ मानव के सामाजिक एव मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण से सम्बद्ध है। इसमे सामयिक क्षेत्रीय तथा स्थानीय पहलुओ के साथ नियोजन का समन्वय देखा जाता है। विकास के विविध पहलुओ को देखते हुए *आर एन सिह*[77] ने लिखा है कि– *'विकास एक आदर्शोन्मुखी सकल्पना है जिसमे सकारात्मक, प्रयोजनात्मक एव वाछित सतत् उर्ध्वोन्मुख परिवर्तन समाहित है।*

1 7 आर्थिक विकास की अवधारणा

यह विकास की अर्थशास्त्रीय अवधारणा है जो आर्थिक सवृद्धि की अवधारणा से अधिक व्यापक है परन्तु आर्थिक विकास के लिए आर्थिक सवृद्धि की पूर्व दशा का होना अनिवार्य है। बीसवी शताब्दी के आरम्भ मे विकास की प्रमुख समस्या गरीबी, सवृद्धि होने के बावजूद बढती गयी जिससे शताब्दी के मध्य के बाद से आर्थिक विकास की सकल्पनाओ को आर्थिक सवृद्धि से भिन्न माना जाने लगा। पाकिस्तानी अर्थशास्त्री *महबूब– उल– हक*[78] का कहना है कि विकास की सर्वप्रमुख समस्या गरीबी की सबसे भयानक किस्मो पर सीधा प्रहार करना है। गरीबी भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा, बेरोजगारी और असमानताओ जैसी समस्याओ के उन्मूलन को विकास के मुख्य लक्ष्यो मे शामिल किया जाना चाहिए।

आर्थिक विकास से सम्बधित दो मुख्य विचारधाराएँ है–

प्रथम परम्परागत विचारधारा है– जिसमे सकल घरेलू उत्पाद मे 5–7 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि एव उत्पादन तथा रोजगार मे परिवर्तन का स्वरूप इस प्रकार हो कि तृतीयक व विनिर्माण क्षेत्र का हिस्सा कृषि की अपेक्षा बढ़ता जाय को शामिल किया जाता है। इसमे सकल घरेलू उत्पाद मे वृद्धि तथा प्रति व्यक्ति उत्पाद मे वृद्धि द्वारा विकास के शेष उद्देश्यो (गरीबी निवारण आर्थिक असमानता मे कमी और रोजगार अवसरों मे वृद्धि आदि) को स्वत धीरे–धीरे प्राप्य मान लिया जाता हैं।

व्यवहारिक रूप में देखने से पता चलता है कि जनसंख्या के अधिकाश भाग को आर्थिक

सवृद्धि से कोई लाभ नही मिला और उनकी स्थिति मे किसी प्रकार का सुधार नही हुआ है। अत बहुत से विद्वानो ने इस परम्परागत विचारधारा को सशोधित करके आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य *गरीबी असमानता और बेरोजगारी* का निवारण रखा है। इसके अतर्गत **पुनर्वितरण के साथ सवृद्धि *(Redistribution with Growth)*** का नाम दिया है। इस सम्बन्ध मे *चार्ल्स पी0 किन्डलबर्गर* और *ब्रूस हैरिक* [79] का कहना है *आर्थिक विकास की परिभाषा प्राय लोगो के भौतिक कल्याण मे सुधार के रूप मे ऑकी जाती है। जब किसी देश मे खासकर निम्न आय वाले लोगो के भौतिक कल्याण मे बढोत्तरी होती है जनसख्या को अशिक्षा बीमारी और छोटी उम्र मे मृत्यु के साथ–साथ गरीबी से छुटकारा मिलता है कृषि लोगो का मुख्य व्यवसाय न रहकर औद्योगिकरण होता है जिससे उत्पादन के लिए प्रयोग होने वाले कारको के स्वरूप मे परिवर्तन होता है कार्यकारी जनसख्या का अनुपात बढता है और आर्थिक तथा दूसरे प्रकार के निर्णयो मे लोगो की साझेदारी बढती है तो अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदलता है। इस प्रकार के परिवर्तन को* ***आर्थिक विकास*** *कहते है।*

ब्रोगर[80] ने आर्थिक विकास का अर्थ बताते हुए कहा है कि इसके अतर्गत सामाजिक राजनैतिक सास्कृतिक तथा आर्थिक परिवर्तनो के सयुक्त प्रभाव को सम्मिलित किया जाना चाहिए। *माइकल पी0 टोडेरो* [81] विकास के स्वरूप को सम्पूर्ण सामाजिक आर्थिक सरचना एव विचारो के बाछित परिवर्तन मे बताते हैं। विकास मे न केवल आर्थिक पक्ष बल्कि सामाजिक कल्याणकारी, मनोवैज्ञानिक एव सास्कृतिक पक्ष भी आते है। इसीलिए *स्मिथ* [82] ने लिखा है कि मानव के कल्याण मे वृद्धि ही विकास है। इस प्रकार आर्थिक विकास के लिए निम्न उद्देश्यो का पूरा होना अनिवार्य है–

(1) आर्थिक विकास निर्धन जनसख्या के लिए अर्थपूर्ण हो
(2) निर्धनता मे कमी हो,
(3) वास्तविक आय मे दीर्घकालीन वृद्धि हो
(4) आर्थिक असमानता मे कमी हो
(5) क्षेत्रीय असमानता मे कमी हो,
(6) विकास और समृद्धि की दरो मे क्षेत्रीय अतर मे कमी हो।

उपरोक्त मे से एक या दो अथवा सभी लक्ष्यो को प्राप्त करने मे हम असफल रहते हैं तो आर्थिक विकास कहना अनुपयुक्त होगा चाहे प्रति व्यक्ति आय दुगूनी ही क्यो न हो जाय।[83]

1 8 सविकास *(इकोडेवेलपमेन्ट)* की अवधारणा

यह विकास की नवीनतम अवधारणा है। प्रारभिक वर्षों मे पर्यावरण की भारी कीमत पर हुए भौतिक विकास के कारण उत्पन्न पारिस्थितिकीय एव पर्यावरणीय समस्याओ मे इस अवधारणा का

बीज निहित है। इसके अतर्गत वर्तमान मे पर्यावरण को बिना क्षति पहुँचाए विकास करना ही इसका प्रमुख लक्ष्य एव उद्देश्य है।

प्रारभिक विचारधारा कि मानवीय क्रियाकलाप प्रकृति द्वारा नियत्रित होता है के बाद जब विज्ञान एव प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव को प्राकृतिक वातावरण द्वारा प्रभावित सीमाओ को पार करने मे सक्षमता का एहसास दिलाया तो विज्ञान एव प्रौद्योगिकी के जरिए मानव ने विकास के अनेक द्वार खोल दिए। इस क्रातिकारी विकास के फलस्वरूप पारिस्थितिक तत्र असतुलित होने लगा जो आज विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओ *(वायु प्रदूषण जल प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण ओजोन आवरण क्षय हरित गृह प्रभाव जल सकट सूखा जलवायु परिवर्तन आदि)* के रूप मे परिलक्षित हो रहे है एव जिसका दुष्प्रभाव मानव सहित समस्त जीवन–जगत पर पड रहा है।

वातावरण का विनाश सिर्फ आर्थिक विकास के कारण ही नही बल्कि अत्यधिक निर्धनता का भी प्रतिफल है।[84] भारत मे पर्यावरण सरक्षण के क्षेत्र मे आने वाली समस्याएँ गरीबी व विकास के निम्न स्तर से जुडी हुयी है हमारी विशाल आबादी और उसमे हो रही निरन्तर वृद्धि तथा अनियमित विकास गतिविधियो के कारण पर्यावरण को जो क्षति पहुँच रही है वह इतनी अधिक है कि इसके लिए सीधे आवश्यक उपाय करने की आवश्यकता है। पर्यावरण प्रबन्ध को अब भारत मे राष्ट्रीय विकास के लिए मार्ग निर्देशक तत्व के रूप मे स्वीकार कर लिया गया है। आज गरीबी बेरोजगारी जैसी सामाजिक समस्याओ का समाधान आर्थिक विकास की तीव्र दर के रूप मे देखा जा रहा है। परन्तु इस प्रक्रिया ने अनेक पर्यावरणीय समस्याओ को त्वरित किया है, जो स्वय विकास की दिशा मे किये जा रहे प्रयासो का अनचाहा परिणाम है, ये समस्याएँ है– प्राकृतिक ससाधनो का कुप्रबन्ध, वनो का विनाश, कूडे–कचरे और अवाछित पदार्थों का अनियोजित ढग से फेका जाना विषैले रसायनो का अधाधुँध प्रयोग, अति नगरीकरण आदि।[85]

उपर्युक्त विवरण से लग सकता है कि विकास और पर्यावरण सरक्षण परस्पर विरोधी है पर ऐसा नही है। प्रारम्भ मे ये माना जाता था कि बिना पर्यावरण को क्षति पहुँचाये विकास नही हो सकता। जहाँ विकसित देशो मे पर्यावरण ह्रास का कारण विकास है वही विकासशील देशो मे इसका प्रधान कारण गरीबी है। आज इन पर्यावरणीय समस्याओ के सन्दर्भ मे विकास का अर्थ पर्यावरण को सरक्षित रखते हुए तथा उनके अनुकूलतम उपयोग से विकास करना हो गया है। क्योकि विकास का केन्द्र मानव होता है तथा मानव के सर्वांगीण ओर स्थायी विकास के लिए प्रकृति का अक्षुण रहना भी अनिवार्य है। इस प्रकार प्रकृति की इस अक्षुणता को बनाये रखते हुए विकास करना ही *सविकास* की अवधारणा है। अर्थात विकास और पर्यावरण परस्पर अन्योन्याश्रित हैं, प्रतिलोम नहीं। इस प्रकार सविकास का सामान्य अर्थ है, बिना विनाश के विकास, इसे *सधृत विकास (सस्टेनेबुल डेवेलपमेन्ट)* अथवा *ठोसविकास (साउण्ड डेवलेपमेन्ट)* की सज्ञा दी जाती है। *संधृत विकास* का उद्देश्य है– मानव समाज की विद्यमान भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को,

बिना भावी पीढियो की भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति की क्षमता को किसी प्रकार नुकसान पहुँचाए सुनिश्चित करना। सक्षेप मे *सविकास ऐसा विकास है, जो सामाजिक दृष्टि से वाछित आर्थिक दृष्टि से सतोषप्रद एव पारिस्थितिकी दृष्टि से पुष्ट हो'*। [86]

1 9 विकास के निर्धारक तत्व

प्राकृतिक पर्यावरण प्रौद्योगिकी और सस्थाये आर्थिक विकास के तीन आधारभूत प्राचल है जिनके द्वारा विकास की दिशा तथा स्तर निर्धारित होता है [87] किन्तु विकास की सकलपना तथा विकास को निर्धारित करने वाले सूचको के सम्बन्ध मे मतभेद है। ये सूचक एक स्थान से दूसरे स्थान एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति एक समाज से दूसरे समाज मे भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। विकास स्तर के निर्धारण से सम्बन्धित *एडेलमैन* तथा *मेरिस* [88] ने राजनैतिक तथा सामाजिक विषयो से सम्बन्धित 41 सूचको का प्रयोग किया है। वर्तमान समय मे विकास का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक परिस्थिति मे निरन्तर वृद्धि करना है। इस वृद्धि को किसी समाज की आवश्यक वस्तुओ के प्रयोग तथा शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार तथा प्रति व्यक्ति आय के स्तर से ज्ञात किया जा सकता है। इन्ही तथ्यो को ध्यान मे रखकर *हेगल* [89] ने समाज एव व्यक्ति के कल्याण से सम्बधित 12 सूचको का प्रयोग विकास के स्तर को निर्धारित करने मे किया है। *सयुक्त राष्ट्र के सामाजिक विकास शोध सस्थान* [90] *(UNRISD)* ने 16 सूचको को विकास के स्तर निर्धारण मे उचित बताया है। *बेरी* [91] ने 1960 मे आर्थिक विकास के विश्लेषण मे परिवहन ऊर्जा का प्रयोग कृषि उत्पाद सचार, व्यापार, जनसख्या तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद को प्रमुख सूचको के रूप मे प्रयुक्त किया है। इसके अतिरिक्त भी अनेक सूचक प्रयुक्त हुए हैं किन्तु अधिकाश विद्वानो ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद, स्वास्थ्य, शिक्षा, नगरीकरण, रोजगार, सचार, परिवहन तथा जनसख्या सरचना औद्योगिकरण आदि सूचको का प्रयोग किया है।

1 10 विकास के सिद्धान्त

समाजशास्त्रियो मनोवैज्ञानिको अर्थशास्त्रियो तथा जीव विज्ञानियो ने विकास से सम्बधित अनेक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया है। उनमे से भौगोलिक दृष्टिकोण से उपयुक्त कुछ प्रमुख सिद्धान्तो की सक्षिप्त व्याख्या निम्नवत है–

(अ) मिरडल का *'क्यूमूलेटिव कॉजेशन मॉडल'*

मिरडल महोदय [92] ने 1956 मे विकास सम्बन्धी *'क्यूमूलेटिव कॉजेशन मॉडल'* प्रस्तुत किया (चित्र–1 3)। इसके माध्यम से इन्होने यह बताने का प्रयास किया है कि प्रादेशिक विभेदशीलता आर्थिक विकास का स्वाभाविक प्रतिफल होती है, क्योकि एक प्रदेश बिना दूसरे को क्षति पहुँचाये कभी भी विकास नहीं कर सकता। इनके मॉडल से स्पष्ट है कि आर्थिक विकास मुख्यत उन्ही स्थानो पर केन्द्रित होता है जहाँ कच्चा माल एव शक्ति के साधनो की उपलब्धता आसानी से होती

चित्र (माडल)– 1 3

MYRDAL'S PROCESS OF CUMULATIVE CAUSATION
LOCATION OF NEW INDUSTRY
Expansion of local employment and population
Increase in local pool of trained industrial labour
Development of ancilliary industry to supply former with inputs etc
Development of external economies for former's production
Provision of better infrastructure for population and industrial development road factory sites, public utilies, health & education services, etc
Attraction of capital and enterprise to exploit expanding demands for locally produced goods and services
Expansion of local government funds through increased local tax yield
Expansion of service industries and others serving local market
Expansion of general wealth of community
Source : R J , Chorly and P Haggett
'Models in Geagraphy' Methuen

है। उनके अनुसार किसी स्थान पर एक बार विकास की प्रक्रिया आरम्भ हो जाने पर कार्यों के सचयी प्रभाव केन्द्राभिमुखी शक्ति एव गुणक प्रभाव के कारण सतत् बढती जाती है। फलत बढती हुई औद्योगिक इकाइयॉ द्वितीयक प्रकार की औद्योगिक स्थापना को जन्म देती है जिससे केन्द्रीय प्रदेश का निर्माण होने लगता है। सामाजिक इकाइयॉ इस प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती है जिससे स्वयपोषी आर्थिक वृद्धि होने लगती है। केन्द्रीय प्रदेशो की ओर अपेक्षतया निर्धन क्षेत्रो से ससाधनो का आकर्षण बढता जाता है जिसे *मिरडरल* ने *बैकवास इफेक्ट* कहा तथा इसके परिणाम स्वरूप अभिवर्धित केन्द्रीय प्रदेश से फैलने वाले सम्भावित विकास को *स्प्रैड इफेक्ट* की सज्ञा दी जिसके माध्यम से अतत सम्पूर्ण प्रदेश का विकास होता है।

इस प्रकार इन्होने विकास की तीन अवस्थाओ का निरूपण किया। ***प्रथम अवस्था*** को प्रारभिक औद्योगिक स्थिति कहा जब प्रादेशिक असमानताऍ न्यूनतम होती हैं। ***द्वितीय अवस्था*** मे सचयी कारक सर्वाधिक प्रभावित होते है। जिससे प्रदेश विशेष अन्य प्रदेशो की तुलना मे तीव्रगति से विकसित होता है तथा ससाधनो के वितरण मे असतुलन बढने लगता है। ***तृतीय अवस्था*** मे निस्तारण प्रभाव के कारण स्थानिक विषमताऍ कम होने लगती है।

मिरडल महोदय के इस मॉडल की आलोचना इसके अत्यधिक गुणात्मकता को लेकर हुई जिसके कारण यह मॉडल वास्तविकता से परे हो जाता है। इसके बावजूद विकसित एव विकासशील राष्ट्र तथा किसी देश के विकसित एव विकासशील क्षेत्रो के अन्तर को स्पष्ट करने मे यह मॉडल काफी सक्षम है।[93]

(ब) फ्रीडमैन का *'केन्द्र–परिधि मॉडल'*

फ्रीडमैन ने *मिरडल* के दो प्रदेशो की आर्थिक विषमताओ के स्थान पर स्थानिक रूप से विषमताओ का वर्णन किया है तथा विश्व को *गतिशील प्रदेश,* द्रुतगति से बढने वाले *केन्द्रीय प्रदेश* तथा अल्पगति से बढने वाले या *स्थैतिक प्रदेशो* मे विभक्त किया है। *फ्रीडमैन* के अनुसार क्षेत्रीय विस्तार मे विकास के स्तर के परिप्रेक्ष्य मे चार सकेन्द्रीय कटिबध देखे जा सकते हैं।[94]

पहला प्रदेश– जिसकी अवस्थिति केन्द्रीय होती है को इन्होने केन्द्रीय प्रदेश कहा है। यह प्रदेश का वह क्षेत्र होता है, जहॉ नगरीय औद्योगीकरण उच्चस्तरीय तकनीक विविध ससाधन तथा जटिल आर्थिक सरचना के साथ वृद्धिदर उच्च होती है। इस प्रदेश के परिधीय क्षेत्र मे विस्तृत केन्द्रीय प्रदेश से प्रभावित ऊर्ध्वोन्मुख **मध्यम प्रदेश** होता है। जहॉ ससाधनो का अधिकाधिक उपयोग होता है, जन प्रवास वृहद् पैमाने पर होता है तथा आर्थिक वृद्धि स्थिर होती है। तत्पश्चात् परिधीय विस्तार मे ससाधन युक्त **सीमान्त प्रदेश** होता है, जहॉ नूतन खनिजों के खोज एव विदोहन हेतु नवीन अधिवासो का विकास होता है तथा उसकी सीमा मे सवृद्धि की सभावनाएँ विद्यमान होती हैं। केन्द्रीय प्रदेश से सुदूरतम प्रदेश को उन्होने **अधोन्मुख प्रदेश** कहा है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ नहीं होती है तथा कृषि उत्पादन न्यूनतम होता है, जो प्राथमिक

ससाधनो की समाप्ति तथा औद्योगिक सस्थानो की क्षीणता के कारण सम्पन्न होता है। *'क्यूमूलेटिव कॉजेशन मॉडल* की ही भॉति इस मॉडल का भी प्रयोग आर्थिक एव क्षेत्रीय विश्लेषण हेतु किया जा सकता है।

(स) रोस्टोव का *'आर्थिक वृद्धि की अवस्थाओ का सिद्धान्त '*

यह सिद्धान्त विशेषत तकनीकी नवीनताओ को दृष्टिगत रखते हुए किसी प्रदेश मे सामयिक आर्थिक वृद्धि का विश्लेषण करता है। *रोस्टोव* ने किसी क्षेत्र के विकास की निम्न *पॉच* अवस्थाओ का निरूपण किया है—[95] (चित्र–1 4)

(क) रूढिवादी समाज

(ख) ऊपर उठने की पूर्व अवस्था

(ग) ऊपर उठने की अवस्था

(घ) चर्मोत्कर्ष प्राप्त करने की अवस्था तथा

(ङ) अधिकतम उपभोग की अवस्था

पहली अवस्था मे इन्होने रूढिवादी समाज की कल्पना की है जिसका प्रधान व्यवसाय निर्वाहन कृषि है तथा सभाव्य ससाधनो की खोज नही हो पायी है। कुछ दशको के बाद ऊपर उठने के पूर्व की अवस्था *(द्वितीय अवस्था)* आती है जबकि आर्थिक वृद्धि तेजी से होती है और व्यापार विस्तृत होता है। वाह्य प्रभाव के कारण परम्परागत तकनीको के प्रयोग के साथ–साथ नवीन तकनीको का प्रयोग भी प्रारम्भ हो जाता है। *तृतीय अवस्था* ऊपर उठने की अवस्था आती है जब प्राचीनता का प्रतिस्थापन नवीनता द्वारा हो जाता है तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी युक्त समाज का जन्म होता है, जिससे अनेक औद्योगिक इकाइयो की स्थापना होती है। राजनीतिक एव सामाजिक सस्थाओ मे परिवर्तन होने लगता है तथा स्वयपोषी एव स्वय–सेवी वृद्धि आरम्भ हो जाती हैं। *चतुर्थ अवस्था* मे समाज अत्यधिक सुसगठित हो जाता है तथा पूॅजी बढ़ने लगती है। कुछ पुरानी औद्योगिक इकाइयो का समापन नई औद्योगिक इकाइयो की स्थापना के कारण होने लगता है। वृहद् नगरीय क्षेत्र विकसित होने लगते हैं तथा यातायात– सचार व्यवस्था अत्यधिक जटिल हो जाता है। चौथी अवस्था का चरमोत्मर्ष *पॉचवी अवस्था* है, उत्पादकता प्रचुर मात्रा मे बढ जाती है, तकनीकी व्यवस्था मे वृद्धि होने लगती है तथा भौतिकता मे वृद्धि के साथ ससाधनो का वितरण सामाजिक कल्याण हेतु होने लगता है।

इस सिद्धान्त मे पूँजी निर्माण की विधि की व्यवस्था की गयी है, किन्तु *पॉच अवस्थाओ* के अर्तसम्बन्ध को स्थापित करने वाले तन्त्र की व्याख्या नही की गयी है। इसके बावजूद साधारण तथा विकसित देशो के विश्लेषण मे यह प्रक्रिया सदिग्ध है। तृतीय विश्व के कई देश *प्रथम तीन* अवस्थाओ के अतर्गत आते हैं।

चित्र (माडल)– 14

THE ROSTOW MODEL OF ECONOMIC DEVELOPMENT
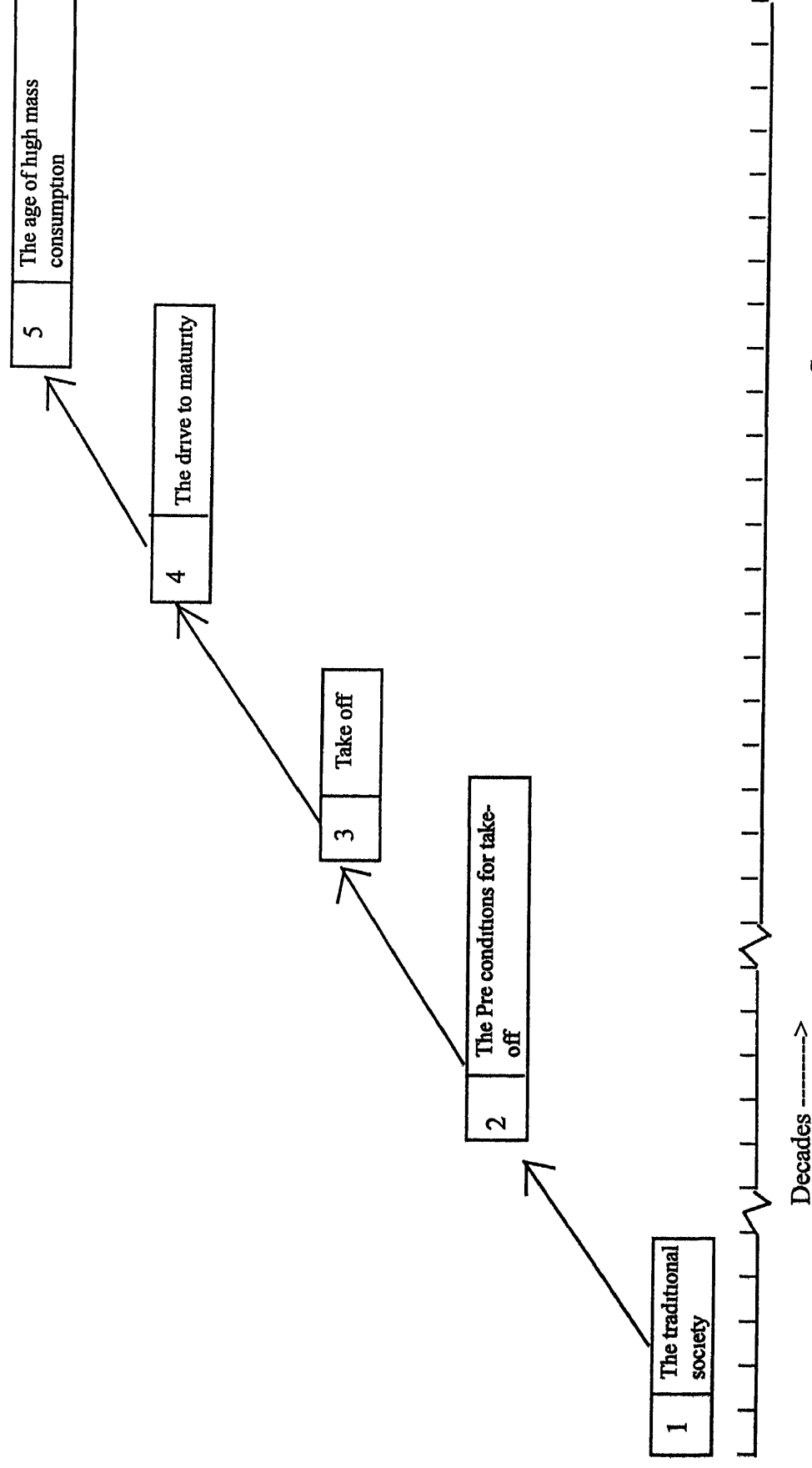
Source R J Chorley and P Haggett, *'Models in Geography'*, Methuen

(द) विकासध्रुव एव विकास केन्द्र सिद्धात

विकास ध्रुव सकल्पना का प्रतिपादन सर्वप्रथम 1955 मे *पेरॉक्स*[96] महोदय ने किया। चूँकि *पेरॉक्स* एक अर्थशास्त्री थे इसलिए इन्होने केवल आर्थिक तत्वो पर ही ध्यान केन्द्रित किया भौगोलिक तत्वो की ओर इनका ध्यान नही गया। इस सिद्धान्त को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करने का श्रेय *बोडविले*[97] को है। *पेरॉक्स* की मान्यता है कि किसी क्षेत्र मे विकास एकाएक प्रकट नही होता है अपितु वह कुछ सीमित केन्द्रो पर विभिन्न रूपो मे दृष्टिगत होता है तथा उसका प्रभाव अनेक रूपो मे अनेक माध्यमो द्वारा फैलता है। विकास की इस प्रक्रिया मे क्षेत्रीय ससाधनो के समुचित प्रयोग तथा क्षेत्रीय लोगो की आवश्यकताएँ पूरी होने की क्षमता छिपी होती है।

पेरॉक्स के अनुसार ***'वृद्धिध्रुव'*** से तात्पर्य ऐसे केन्द्र से है जिससे अपकेन्द्रीय शक्तियॉ बाहर की ओर फैलती है तथा जिसकी ओर अभिकेन्द्रीय शक्तियॉ आकर्षित होती है। इस प्रकार प्रत्येक केन्द्र आकर्षण और विकर्षण के केन्द्र के रूप मे अपना निजी क्षेत्र रखता है जो अन्य केन्द्रो के क्षेत्र मे सम्बद्ध होता है। इनके अनुसार प्रत्येक केन्द्र मे कुछ ऐसे प्रमुख उद्योग या आर्थिक कार्य स्थित होते है जो नवीनीकरण एव वृद्धि के जनक होते हैं। ये उद्योग एव आर्थिक कार्य बडे अपेक्षाकृत प्रगतिशील प्रविधियो से युक्त तथा तीव्र वृद्धि की विशेषताओ वाले होते है। इन्ही औद्योगिक एव आर्थिक क्रियाओ के द्वारा ये केन्द्र सम्बधित प्रदेशो मे अग्रगामी तथा पृष्ठगामी सम्बन्धो को स्थगित करने के द्वारा विकास की उत्पत्ति करते है। चूँकि प्रादेशिक आर्थिक विकास ऐसे ही केन्द्रो के माध्यम से होता है अत इन्हे *वृद्धिजनक ध्रुव* कहते हैं। इन केन्द्रो से बाहर की ओर फैलने वाला प्रभाव समस्त क्षेत्र के विकास मे सहायक होता है, किन्तु केन्द्र से बाहर की ओर फैलने वाले प्रभावो पर यदि अन्दर की ओर आने वाले प्रभाव अधिक प्रभावी होते है तो केन्द्र के समीपवर्ती क्षेत्रो के ससाधन, पूँजी निवेश एव मानव क्षमताएँ केन्द्र की ओर खिचती चली जाती है, जिससे क्षेत्रीय विषमता का जन्म होने लगता है अर्थात् केन्द्र विकसित होता है और प्राश्र्ववर्ती क्षेत्र पिछड़ जाता है। इस प्रकार इस सिद्धान्त का सबसे प्रबल तर्क यह है कि केन्द्र मे विभिन्न सुविधाओ के पूँजीभूत होने से वहॉ स्वत स्फूर्त विकास उत्पन्न हो जाता है जिससे अवस्थापनात्मक कारक यथा–सड़के शक्ति जल स्वास्थ्य सुविधाओ आदि का विकास हो जाता है।

विकास ध्रुव' शब्द के प्रयोग के सन्दर्भ मे *डारवेण्ट*[98] का विचार है कि प्रकार्यात्मक एव भौगोलिक दोनो क्षेत्रो के लिए इस शब्द के प्रयोग से सभव की स्थिति असम्भव हो जाती है। अतएव इसके निराकरण हेतु भौगोलिक केन्द्र के क्षेत्रो के लिए ***'विकास केन्द्र'*** शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए।

भारत जैसे विकासशील देश के सदर्भ मे विकास केन्द्र सकल्पना को प्रयोज्य बनाने हेतु *आर पी मिश्र*[99] ने इन विकासकेन्द्रो मे तीन आधारभूत प्रकार्यो का पाया जाना आवश्यक माना है, जिसके अनुसार ये केन्द्र सेवाकेन्द्र, विकास उत्प्रेरक केन्द्र एव सामाजिक रूपान्तरण केन्द्र के रूप

मे कार्य करते है। क्षेत्रीय स्तर पर विकासात्मक गतिविधियो मे विविध योगदान के आधार पर *आर पी मिश्र* तथा कुछ अन्य लोगो ने वृद्धि जनक केन्द्रो को पॉच पदानुक्रमीय वर्गों मे रखा है—

(1) राष्ट्रीय स्तर पर ***'वृद्धि ध्रुव'*** *(Growth Poles)*

(2) प्रादेशिक स्तर पर ***वृद्धि केन्द्र'*** *(Growth Centres)*

(3) उप—प्रादेशिक स्तर पर ***'वृद्धि बिन्दु*** *(Growth Points)*

(4) लघु—प्रादेशिक स्तर पर ***'सेवाकेन्द्र*** *(Service Centres)*

(5) स्थानीय स्तर पर ***केन्द्रीय ग्राम*** *(Central Village)*

विकास ध्रुव सिद्धान्त मे दो प्रमुख कठिनाइयॉ उत्पन्न होती हैं। प्रथम विकास ध्रुवो का चयन कठिन है तथा द्वितीय राजनीतिक दबाव के कारण चयन प्रक्रिया और कठिन हो जाती है। *बोदविले* ने इन विकास ध्रुवो की पहचान प्रमुख केन्द्रीय बस्तियो के रूप मे किया है जिनमे दूसरे बस्तियो को प्रभावित करने की क्षमता होती है। उनके अनुसार उपलब्ध सुविधाओ की सख्या और क्षेत्रीय आकार मे इन केन्द्रो के विभिन्न स्तर होगे। इनमे सबसे बडा केन्द्र क्रमश अपने छोटे केन्द्र को प्रभावित करेगा तथा अविकसित क्षेत्र इन केन्द्रो से लाभ उठा सकेगे। फलत सम्पूर्ण क्षेत्र विकास परिधि मे आ जाएगा। विकास की यह प्रक्रिया *ट्रिकल डाउन'* तथा *'टॉप डाउन'* के नाम से भी जानी जाती है। विकास ध्रुवो से विकास की ऐसी क्रमबद्ध श्रखला बन जाती है, जिससे सम्पूर्ण प्रदेश मे सतुलित विकास को गति मिलती है। इसके इन्ही विशेषताओ के कारण नियोजको मे यह सिद्धान्त काफी लोकप्रिय है। विकास ध्रुवो की अवस्थापना मे स्थान का चयन तथा सुविधाओ को उपलब्ध कराने मे धन की आवश्यकता कभी—कभी इस सिद्धान्त के क्रियान्वयन मे व्यवधान उत्पन्न कर देते हैं। वास्तव मे विकास ध्रुवो की उत्पत्ति का सहसम्बन्ध उस क्षेत्र के मॉग व पूर्ति पर निर्भर करता है।

इस प्रकार प्रगतिशील उद्योग औद्योगिकरण तथा उनका प्रभाव विस्तार ही इस सिद्धान्त का मूलाधार एव प्रमुख तत्व है।[100] समय—समय पर *मृदाल,*[101] *हैन्सन*[102] *हारमेनसन* आदि द्वारा इसमे अनेक सुधार किए गए है। *हर्षमैन, मृदाल* तथा *फ्रीडमैन*[103] ने इसमे सचयी कार्यकारण तथ्यो पर तथा प्राथमिक असमानताओ के सकेन्द्रण की प्रवृति सम्बधी विचार जोडे। इस सन्दर्भ मे *मृदाल* का मत है कि विकास की प्रक्रिया इस प्रकार सचालित होती है कि उसका पश्च्गामी प्रवाह अग्रगामी प्रवाह की तुलना मे अधिक शक्तिशाली होता है और इससे आर्थिक प्रवाह का फैलाव स्वत अवरुद्ध हो जाता है। जबकि *हर्षमैन* की मान्यता है कि किसी निश्चित अवधि मे अग्रगामी प्रवाह का धीरे—धीरे प्रवाह होना अपरिहार्य है। *फ्रीडमैन* ने अपने अध्ययन मे किसी केन्द्र की नव्यताओ को उत्पन्न करने या उसे अपनाने की क्षमता को अधिक महत्व प्रदान किया है।

References

1 Yeates and Garner 'The North American City', Op cit, P 160

2 Christaller, W (1933) 'Central place in Southern Germany', Translated by C W Baskin, New Jersy

3 Berry's 'Geography of market Centres ', op (fn 4), pp 1-3

4 Christaller, W (1933), 'Central Place in Southern Germany', Translated by C W Baskin New Jersy

5 सिह ओम प्रकाश 'नगरीय भूगोल प्रथम सस्करण 1979 पृष्ठ– 320

6 Singh, O P (1973) 'Central Places their Origin and Evolution' U B B P Vol 9, Pt 1, pp 30 34

7 सिह ओम प्रकाश 'नगरीय भूगोल प्रथम सस्करण 1979 पृष्ठ–323–324

8 Yeates and Garner, 'The North American City', op cit, P 160

9 Von, Thunen, J N (1910), 'Der Isollerte State in Beziehung auf landwirsts chaft and Nationale Okonomie, Jena'

10 Kohl, JC (1850), 'Der Verkhr and die Ansied tung der Memenschen in Iheren Abhangi kiet, Vonder Gestalting der Erdoberflache', 2nd ed Leipzig

11 Lalanne, L (1863), 'An essay of theory of Railway system based on observation of facts and basic laws governing population distribution', Academia Des Sciences, Vol 57, pp 206-10

12 Golpin, G J (1915), 'Social Anotomy of an Agricultural Community', Res Bull, 34, Univ Of Wisconsin

13 Cooly, C H (1889), 'The theory of Transportation' Publication of the American Economic Association, May, 1889 p 148

14 Hagett, P and Clift, A D and Prey, A (1979), 'Locational Analysis in Human Geography', Vol 1, Arnold, Heinemance

15. Christaller's original work 'Die Zentralen ' (Fn 4), p 72 and Baskin, C W, Op cit (Fn 4), P 67

16 Brush, J E (1953), 'The Hierarchy of Central Places in S W Wisconsin' Geog Rev, Vo 1-43, PP 380-402

17 Winning R (1955), 'A Description of, Ceretain Spatial Aspects of Economic System, Economic development of cultural change', Vol-3, pp 147-75

18 Thomas, E N (1961), 'Toward an Expanded Central Place Model', Geog, Rev, Vol.51, pp 400-411

19 Berry, B J L and Garrison, W L (1958), 'The Functional bases of Central place Hierarchy and note on the central place Theory and Range of good', Eco-Geog 34, pp 145-154

- Berry, B J L and Garrision, W L (1958), 'Recent development of Central Place theory', proc of the Reg Science

20 Loesh, A (1954), 'The Economics of Location', Yale University press, New Haven.

21 Mishra, R.P et , 'The Economics of Location', Yale University Press New Haven

22 *Skinner, G W (1954) 'Marketing and Social Structure in Rural China', Jl As Stud Vol 35, pp 445-53*

23 *Ullman, E L (1941), 'A Theory of Location of Cities', American Journal of Sociology, XI VI, No-2, pp 853-68*

24 *Smailes A E (1944), 'The Urban Hierarchy in England and Wales', Geography, 29, pp 41-51*

25 *Dickinson R E (1951) 'The wets European city', A Geographical Integration London*

26 *Brush, J E (1953) op cit*

27 *Carter, H C (1955) 'Urban Graded and Spheres of Influence in South-West Wales', Scot Geog Mag', 71, p 43-56*

28 *Siddol, W R (1961), 'Wholesale Retail Trade Relations as Indicies of Urban Centrality', Econ Geog , 37*

29 *Bracey, H E (1956), 'A Rural Component of Centrality applied to six southern Countries, the U K ', Econ Geog , 32, pp 38-50*

30 *Godlund, S (1956), 'The Functions and Growth of Bus Traffic with the sphere of Urban Influence', Lung Stud in Geog, Ser B No 18*

31 *Green, F H W (1948) 'Motor Bus Service in West England', Trans Inst of British Geog , 14, pp 59 -68*

32 *Carruthers, W I (1953), 'The Classification of Service centres in England and Wales', Geog Jl 123, pp 371-285*

33 *Lomas, G M (1964) 'Retail Trade Centres in the Midlands', Town Plan Inst Soc*

34 *Preston, R E (1971), 'The Structure of Central Place System', Econ Geog Vol 47*

35 *Beckmann, M J (1958), 'City Hierarchies and the distributioin of city size', Eco Devel Cul Change, No -6*

36 *Dacey, M F (1962), 'Analysis of Central Place and point Pattern by Nearest-Neighbour Analysis', Lund Std in Geog Series B, 4*

37 *Harris, C D (1953), 'A Functional classification of the Cities in the United State', Geog Rev Vol 53*

38 *Isard, W (1956), 'Mitod for Bestamning evtatorters centralitetagrade', Vensk Geog Arsback, Vol 34*

39 *Philbrick A K (1957), 'Areal Functional Organization in Regiond Human Geog ', Eco Geog 33*

40 *Berry, B J L & Garrison, WL (1958), op cit*

41 *Mayor, H M & Cohn C F (1959), 'The Economic Bese of cities', in Readings in the Urban Geography Chicago*

42 *King, L C (1962), 'Central Place Theory and the spacing of Town in the United States', in M M caskil (Ed) Land and Livelihood', Newzeeland Geog Soc*

43 *Johnson, R J (1966), 'Central Places and the Settlement Pattern', A A A G Vol 56*

44 Davies, W K D (1967) 'Centrality and Central place Hierarchy' Urban Studies, 4

45 Parr J B (1977), 'Growth Poles Regional Development and Ceneral Place Theory' Pap Reg Assn 31

46 Fisher, H B (1975) 'Rural Growth Centres, experience in the Pilot Research Project, Sanfrancisco' 26

47 Thomas E N (1961) op cit

48 Kar, N R (1960) 'Urban Hierarchy and Contral function around Calcutta in lower West-Bengal and their Significance', Proc of the I G U Symp in Urban Geog, Lund 'Swden

49 Singh, K N (1966), 'Spatial Pattern of Central Places in Middle Ganga Valley,'N G J I Vol 12, No 4

50 Singh O P (1969), 'The Study of Central Placel in U P', Unpub Ph D thesis, B H U, Varanasi

51 Wanmali, S (1972), 'Regional planning for Social Facilities An Examination of Central Place concept and their Application'

52 Sen , L K et al (1971) 'Planning Rural Growth Centres for Integrated Development, study of Miryalguda Taluka' N I C D , Hyderabad

53 Mishra, R P (1972), 'Growth-Poles and Growth Centres in the context of India's Urban and Regional Development Problems' in Kullinski (Ed)

54 Rao, V L S P (1974), 'Planning for an Agricultural region' in Mishra, R P et al, 'Reginal Development Planning in India' New Delhi

55 Singh, J (1979), 'Central Places and Spatial organization in a Backward Economy Gorakhpur Region- A study in Intergrated Regional Development, Gorakhpur

56 Tiwari, R C (1980), 'Spatial organization of Service Centres in the lower Ganga- Yamuna Doab', Nat Geog Val XV, No 2, pp 103-124

57 Mishra, H N (1984), 'Urban Systems of a Developing Economy, A study of Allahabad City Region', I I D R , Allahabad

58 Khan, Z T (1992), 'Spatial Distribution of Central Place in Sheonath Basin', Paper presented in XIII th Annual meet of N G Gorakhpur

59 Murthy K L N (1993), 'Identification of Central place Hierarchy A case Study form flood prone Environment', paper Presented in XVth I G C, Bhubaneswar

60 Pandey, J N & Mishra, P (1989), 'Environment and spatial Distribution of settlement in Deoria Distriet U P', in Mishra, B N (ed), 'Rural Development in India', Allahabad, PP 225-231

61 दत्त भवतोष वृद्धि विकास और प्रगति 'योजना' प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मत्रालय नई दिल्ली 15 अगस्त 1987 पृष्ठ 6

62- शर्मा के एल भारतीय समाज एन सी ई आर टी नई दिल्ली 1991 पृष्ठ 153

63- वही पृष्ठ 154

64- मिश्र एस0के0 एव पुरी वी0के0 भारतीय अर्थव्यवस्था' टिमनकला पब्लिशिग हाउस मुम्बई 2000 पृ 3

65 Meır G M and Balduın, R E , 'Economıc Development Theory, Hıstory and Polıcy' New York, 1957, P 2

66 Drewnowskı, J , 'On Measurıng and Plannıng the qualıty of Lıfe, Mounton', The Hague, 1974, p 95 s

67- पूर्वोक्त सन्दर्भ सख्या 62 पृष्ठ 151

68- देव उपर्जन सभ्यता की कहानी (2) एनसीईआरटी नई दिल्ली 1987 पृ 178

69- वही पृष्ठ 179

70- मिश्रा बीएन 'विकास एक वैज्ञानिक–धार्मिक सन्दर्भ' भू–सगम 2 (1) इलाहाबाद ज्योग्राफिक्स सोसायटी इलाहाबाद 1984 पृ 1–16

71 Qureshı, M H , 'Indıa Resources and Regıonal Development', NCERT, New Delhı, 1990, p 81

72 Smıth, D M Human Geography A welfare Approach, Arnold Heıne Mann, London, 1984

73 सिह आरएन एव कुमार ए0 भारतीय नियोजन प्रणाली एव ग्रामीण विकास एक समीक्षा' भू–सगम 2 (1) इलाहाबाद ज्योग्राफिक्स सोसायटी इलाहाबाद 1984 पृष्ठ 17–24

74- Prakash, B and Raza M , 'Rural Development Issues to Ponder', Kurukshetra, 32(4), 1984, PP 4-10

75 तिवारी आरसी तथा त्रिपाठी एस 'समन्वित ग्रामीण विकास भौगोलिक दृष्टिकोण' 'ग्रामीण विकास सकल्पना उपागम एव मूल्याकन (स) सिह पी एव तिवारी ए पर्यावरण विज्ञान अध्ययन केन्द्र इलाहाबाद 1989 पृ 48–64

76 Mıshra, R P Sundaram, K P and Prakash Rao, V L S, 'Regıonal Development Plannıng ın Indıa A New Stretegy', Vikas Publıshıng House New Delhı, 1974, p 189

77 Sıngh, R N and Kumar, A, 'Spatıal Reorganısatıon Concept & Approaches', Natıonal Geographer, 18 (2), 1983, p 215-226

78 Haque, Mahbub-ul, "Employment and Income Dıstrıbutıon ın the 1970s A New Perspectıve", Pakıstan Economıc and Socıal Revıew, June- Dec 1971 p 6

79 Kındleberger C P and Herrıck, B , 'Economıc Development' (New York, 1977) p 1

80 Broger, D , 'Central Palace System, Regıonal Plannıng Development ın Developıng Countrıes Case of Indıa'

81 Todaro, M P, 'Economıc Development', ın the Thırd World', New York, Long man Inc 1983

82 पूर्वोक्त संदर्भ – स 72

83 Seers, Dubley, 'The Meanıng of Development', 11th world conference of the Socıety for Internatıonal Development (New Delhı-1989) p 3

84 सिह जगदीश, 'वातावरण नियोजन एव सविकास' ग्रामोदय प्रकाशन गोरखपुर 1988 पृ0 242

85- 'भारत' प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, 2000 पृ0 140–142

86- पूर्वोक्त संदर्भ सं0– 84 पृ0 242–246

87 Qureshi, M H , 'Indıa Resources and Regıonal Development', NCERT, New Delhi 1996. p 81

88 *Adelmn, I and Herrιs C T, 'Socιety, Polιtιcs and Economιc Development' Baltιmore, The Jon Hopkιns, 1967*

89 *Hagen, E E, 'A framework for Analysιng Economιc and Polιtιcal Development', Bookιng Instιtutιon, 1962, pp-1-38*

90 *'Unιted Natιons Research Instιtute for Socιal Development Contents and Measurements of Socιal Economιc Development', Geneva, Report No 70, 10, 1970*

91 *Berry, B J L, 'An Inductιve Approach to the Regιonalιzatιon of Economιc Development', 1960*

92 *Myrdal, G 'Economιc Theory and Underdevelopment', London 1957*

93 *Keeble, D, 'Models of Economιc Development', ιn R J Chorley and P Haggette, 'Models ιn Geogrephy', London, Methuen, 1967*

94 *Frιedman, J, 'The Urban Regιonal Frame for Natιonal Development, Internatιonal Development Revιew, 1966*

95 *Rostow, W W, 'The Stage of Economιoc Growth', London, Cambrιdge Unιversιty press, 1962 p 2*

96 *Persons, F, 'La Natιon De Croιrrance', Economιque Applιque, Nos 1 & 2, 1955*

97 *Boudevιlle, T R, 'Problem of Regιonal Economιc Plannιng', Edιnburgh Unιversιty Press, 1966*

98 *Darwent, D F 1969, 'Growth Poles and Growth Centres Regιonal Plannιng- A Revιew Envιronment and Plannιng' Vol I pp- 5-32*

99 *Mιshra, R P (1979), 'Central Places and Spatιal Centres ιn the context of Indιa's Urban & Regιonal Development', ιn Kulklιnskι, A (ed)*

100 *Glasson, J (1978), 'An Introductιon to Regιonal Plannιng, Concept, Theory and Practιce', London pp 146-148*

101 *Myrdol, G M (1975), 'Economιc Theory and Under-development Regιons, London*

102 *Hanson, N M (1972), 'Growth Centres ιn Regιonal Economιc Development', New York*

103 *Freιdmann, J R (1969), 'A General Theory of Polarιsed Development', School of Archιtecture and Urban Plannιng, Los Angles*

अध्याय-दो

अध्ययन क्षेत्र का महत्व एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

नामकरण– **देवरिया'** का शाब्दिक अर्थ होता है *ऐसा स्थान जहॉ मदिर स्थिति हो।*[1] इस प्रकार देवरिया की उत्पत्ति **देवरही** से मानी जाती है जो *करना नदी (Karna river)* तट पर स्थित चतुर्भुजी भगवती के मदिर हेतु विख्यात है। देवरिया का वर्तमान प्रदेश प्राचीन काल मे घने जगलो (अरण्य) से आवृत था। अत इसे *देवारण्य प्रदेश* या *देवारण्य* भी कहा जाता था क्योकि इस अरण्य प्रदेश मे देवो एव ऋषियो की तपोस्थली थी। इस प्रकार ***देवरिया*** शब्द की व्युत्पत्ति *देवारण्य* से *देवरिया* भी मानी जाती है।

अध्ययन क्षेत्र का महत्व

1 अध्ययन क्षेत्र *(देवरिया जनपद)* का पौराणिक महत्व

इस जनपद के पौराणिक आख्यानो पर दृष्टिपात करे तो विदित होता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के प्रथम पुत्र *कुश'* की राजधानी ***कुशीनगर'*** मे थी जो कभी इसी जनपद मे था अब स्वय जनपद हो चुका है। कहा जाता है कि महर्षि विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को लेकर हरिहर क्षेत्र की ओर जाते समय इस जिले के दक्षिण पश्चिम कोण पर सरयू के सगम पर उन्होने एक कुटी की स्थापना की थी। इस जनपद के *अहिल्यापुर* नामक स्थान के बारे मे ऐसा कहा जाता है कि गौतम ऋषि की पत्नी *अहिल्या* अपने पति के शाप से जब पत्थर रूप मे हो गयी थी तो वन गमन के समय भगवान श्रीराम के चरण स्पर्श से उसने पुन सजीव होकर स्त्री रूप धारण कर लिया था। इस जनपद का वर्तमान ***'भागलपुर'*** *भागर्वपुर* का विकृत रूप है। यह *भार्गव'* या *'भृगु'* शब्द से बना है। यहॉ पर *भृगु* तथा उनके शिष्यो के आश्रम के होने की बात कही जाती है। इस बात की सत्यता इससे भी जान पडती है कि इस क्षेत्र के दक्षिण मे सरयूपार बलिया' जनपद मे *महर्षि भृगु* का प्राधान्य क्षेत्र होने के साथ साथ यहॉ पर अनेकानेक ऋषियो की परिपूरित धर्मारण्य क्षेत्र पाया जाता है।

मार्टिन मान्ट गोमरी ने अपनी पुस्तक *इस्टर्न इण्डिया'* मे लिखा है कि प्रारम्भ मे *भागलपुर'* और *खैराडीह'* दोनो एक ही नगर थे जो सयुक्त रूप से *भार्गवपुर* कहलाते थे तथा बाद मे अपभ्रश होकर *भागलपुर* हो गये। कहा जाता है कि यह भृगुवशीयो का बसाया हुआ नगर था। जन श्रुतको के अनुसार यहॉं भृगुवशीय ऋषि *यमदग्नि* का आश्रम था। *'मार्टिन'* ने यह भी लिखा है कि सयुक्त नगर *भागर्वपुर* घाघरा के एक ही ओर दक्षिण मे स्थित था। कालान्तर मे इस नदी की धारा मे परिवर्तन हुआ और यहॉ के लोगो ने नदी के उस पार उत्तर की ओर जाकर

भागलपुर नामक नया नगर बसा लिया।

भागलपुर के प्राचीन नगर के पास पीपल के वृक्ष बहुत मात्रा मे विद्यमान थे। जो सरयू की कटान के कारण धराशायी हो गये। पीपल का वृक्ष *बोधिवृक्ष* के रूप मे बौद्ध सस्कृति मे विशेष स्थान रखता है। पीपल वृक्षो की बहुलता से यह इगित होता है कि यह स्थान कभी बौद्ध केन्द्र के रूप मे विकसित रहा होगा। *प्रो सिन्हा* को *खैराडीह* की खुदाई मे जो कमरे तथा अन्य सामग्रियॉ मिली है। उनसे स्पष्ट सकेत मिलता है कि यहॉ कभी बौद्ध विहार विद्यमान थे। बौद्धकाल के बाद इस क्षेत्र पर *भर* राजाओ का शासन रहा जो भवन निर्माण कला मे बडी रुचि लेते थे और इसके जानकार भी थे। इस क्षेत्र के *इन्दौली* मे भरो की गढी थी जहॉ खुदाई करने पर उस काल की ईंटे आदि मिलती है।

इस जनपद मे भगवान् शिव की अराधना के प्रसिद्व केन्द्र **रुद्रनाथ** *रुद्रपुर* तथा **दीर्घेश्वर नाथ** स्थित है जिनसे *अश्वत्थामा* का सम्बन्ध जोडा जाता है। **दुग्धेश्वर नाथ महेन्द्र नाथ शौवनाथ सोमनाथ** आदि के प्राचीन स्थल आज भी है। **रुद्रपुर** मे सहनकोट के पास स्थित **दुग्धेश्वर नाथ** का मदिर एकादश रुद्रो की कोटि मे आता है। कहा जाता है कि कामधेनु ने जब इन्द्र के वज्र के लिए महर्षि दधीचि की हड्डी के लिए उनका मास चाटा था तो स्वत स्तनो से दूध की धारा बहने लगी। उसी से इस शिवलिग का उदय हुआ तथा इसका नाम **दुग्धेश्वर नाथ'** पडा।

मझौली राज के दक्षिण मे एक मदिर है जिसका नाम **दीर्घेश्वर नाथ** है। कहा जाता है कि *अश्वत्थामा* ने दीर्ध जीवन के लिए यही तपस्या की थी इसलिए इस मदिर का नाम दीर्धेश्वर नाथ है। सलेमपुर के पास **सोहनाग** परशुराम धाम के रूप मे जाना जाता है कहा जाता है कि परशुराम ने यहॉ साधना की थी। देवरिया जनपद के भू–भाग को महान सन्तो ने भी अपनी साधना हेतु चुना था क्योकि एक तो घने अरण्य दूसरे भगवती सरयू का पवित्र किनारा तीसरे पर्वतराज हिमालय की सन्निकटता ने इस क्षेत्र मे ऐसा वातावरण तैयार कर दिया था कि यहॉ आकर चचल मन स्वत शान्त हो जाता था। इस जनपद के लार कस्बे मे स्थित **मठलार आश्रम** एक सिद्धपीठ है।

2 अध्ययन क्षेत्र (देवरिया जनपद) का ऐतिहासिक महत्व

जब दुनियॉ की अधिकाश जातिया निर्वस्त्र होकर घूम–घूम कर भोजन तलाश रही थी राजनैतिक चितन का स्वरूप शैशवावस्था मे था उस समय देवरिया जनपद की उर्वरक मिट्‌टी मे स्वतत्र **मल्ल गणराज्य** का अस्तित्व था।

मल्ल गणराज्य को महाभारत मे *'मल्लराष्ट्र'* तथा जातक कथाओ मे *'मल्लरद्व'* कहा गया है। यहा राज्य दो राज्यों में विभक्त था। इन्ही दोनो राज्यो का जिक्र महाभारत मे *मल्ल* एव *दक्षिण*

मल्ल के नाम से किया गया है। बौद्ध धर्म का इतिहास देवरिया जनपद के कण–कण मे समाया हुआ है।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के आते आते राजनैतिक चेतना बलवती होने लगी थी और उनके छोटे–छोटे कबीले बडे–बडे राज्यो मे समाहित होने लगे थे। इस तरह धीरे–धीरे सोलह महाजनपदो का युग प्रारम्भ हुआ उस समय देवरिया जनपद का भू–भाग *कोशल जनपद* का एक अग था जहॉ के मल्ल वीरो को कोशल राज्य मे विशेष स्थान प्राप्त था। वे लोग उस समय सेना मे भर्ती होने के लिए देवरिया मे राप्ती नदी द्वारा नावों से कोशल राज्य की राजधानी *श्रावस्ती* जाया करते थे। महापण्डित *राहुल साकृत्यायन* ने भी इस तथ्य को अपनी पुस्तक *'वोल्गा से गगा'* पे *बन्धुत्व मल्ल निकन्ध'* मे उल्लेख किया है। कालान्तर मे जब गणराज्यो का परिवर्तन हुआ तो *महावीर मल्ल* अपना अलग गणराज्य कायम करके उसका विस्तार गोरखपुर से देवरिया तक किये। *महापद्मनन्द* के युग मे यह जनपद नन्द राजाओ के अधीन था। कालान्तर मे जब मगध पर ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी मे मौर्य राजाओ का वर्चस्व हुआ और *चन्द्रगुप्त मौर्य* राजा बना तो देवरिया का भू–भाग मौर्य राजाओ के अधीन हो गया।

देवरिया जनपद के भू–भाग को महान सन्तो ने भी अपनी साधना हेतु चुना था। सिद्ध सन्त *अनन्त महाप्रभु* का आश्रम इसी जनपद के बरहज बाजार मे स्थित है। महान सत *देवरहा बाबा* का आश्रम भी इसी जनपद के सरयू नदी के तट पर *'मइल* कस्बे के निकट स्थित है। राष्ट्रीय स्तर के महान स्वतत्रता सेनानी *बाबा राघवदास* का भी पवित्र आश्रम बरहज बाजार मे है। इस प्रकार उपर्युक्त विकिरणो से स्पष्ट है कि देवरिया जनपद आज से ही नही अपितु अतीत काल से ही ऐतिहासिक एव सास्कृतिक विरासत मे अत्यन्त गौरवशाली रहा है। ससार मे चाहे शील क्षमा एव करुणा का उपदेश देने वाले देवदूतो की परम्परा रही हो या सत्य अहिसा जैसे सतत् मानवीय मूल्यो के उपदेशको की बात रही हो अथवा अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे सामाजिक विचारधारा का प्रचार–प्रसार रहा हो महान सन्त परम्परा एव गरिमामयी ऐतिहासिक धरोहरो हेतु यह पावन धरती सदैव से ही नितान्त वैभवशाली रही है।

भौगोलिक पृष्ठभूमि

किसी भी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो' के उद्भव विकास तथा उस क्षेत्र के विकास मे भौगोलिक कारको की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जहॉ भौतिक कारक सेवाकेन्द्रो के उद्भव हेतु उपयुक्त स्थल एव परिस्थिति का निर्माण करते है वही सामाजिक और आर्थिक कारक उसके उद्भव एव विकास को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का उद्भव एव विकास भौतिक, सामाजिक एव आर्थिक कारको के सयुक्त प्रभाव का प्रतिफल होता है।

अध्ययन क्षेत्र (देवरिया जनपद) मे सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास के निरूपण हेतु

FIG 2 1 LOCATION MAP OF STUDY AREA (DEORIA DIST)
72
80
92
N
32
20
12
200 0 200
KM
100 0 100 KM
STUDY AREA
83°35'E
40'
45'
84°
10'
26°5' N
50
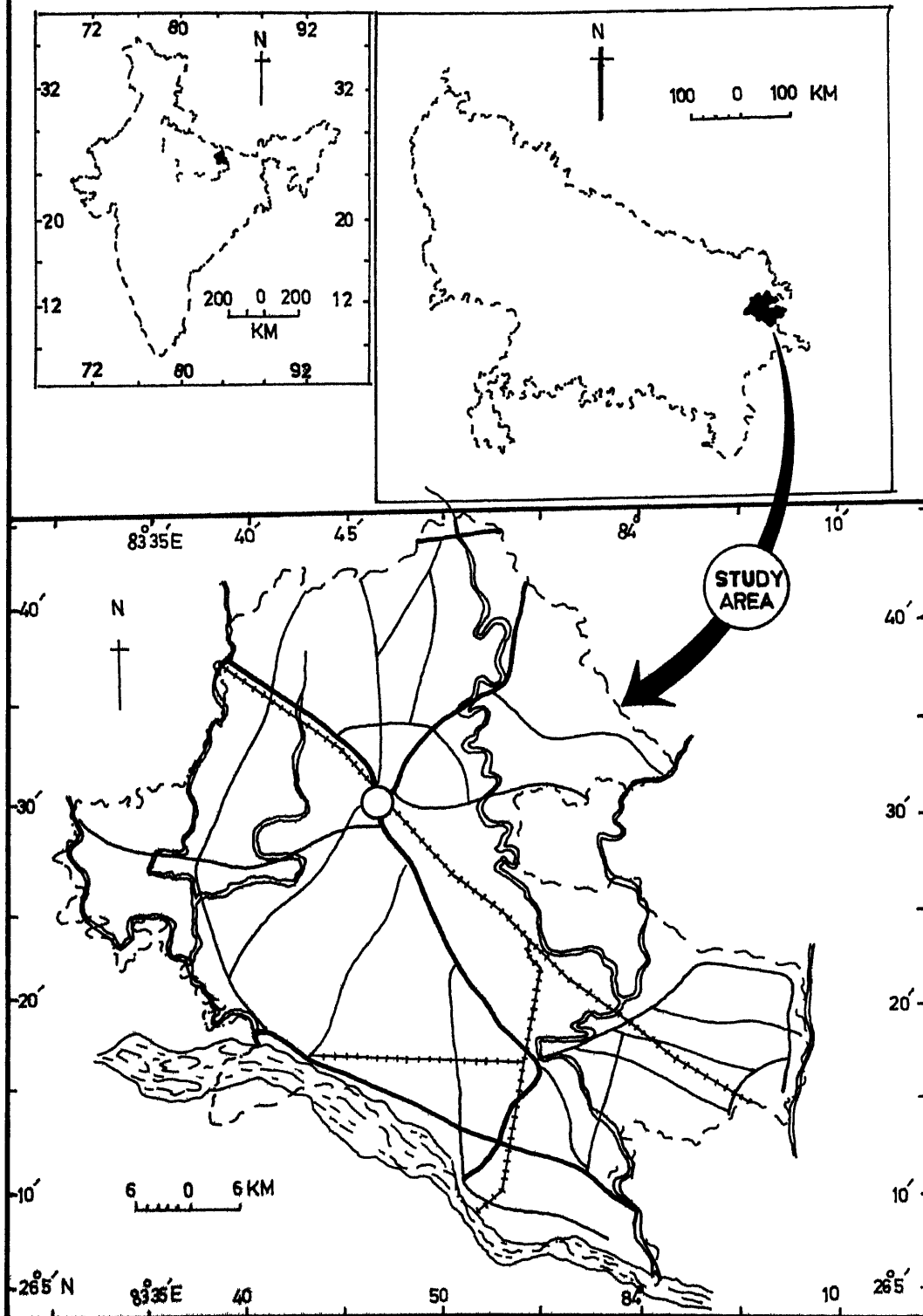
भौगोलिक कारको का ज्ञान अपेक्षित है। अत जनपद के भौगोलिक स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत है।

2 1 भौतिक पृष्ठभूमि

प्रकृति द्वारा नैसर्गिक रूप मे प्रदत समस्त अवयवो (वायु, जल मृदा वनस्पति आदि) जो किसी भी सेवाकेन्द्र के विकास के लिए आधार प्रदान करते है भौतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। इनका विवेचन निम्नवत् है—

[1] अवस्थिति

अध्ययन क्षेत्र देवरिया जनपद उत्तर प्रदेश के उत्तरी—पूर्वी छोर पर अवस्थित है। जहॉ उत्तर मे इसकी सीमा कुशीनगर जनपद से मिलती है पश्चिम मे गोरखपुर जनपद अवस्थित है तथा दक्षिण मे मऊ एव बलिया जनपद अवस्थित है वही पूर्व मे यह बिहार राज्य के साथ उत्तर प्रदेश की सीमा का निर्धारण करता है।

स्थिति एव विस्तार

देवरिया जनपद 26^0 6' और 27^0 18' उत्तरी आक्षाशो एव 83^0 29 से 84^0 26 पूर्वी देशान्तर[2] के मध्य वर्तमान मे 2389 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर विस्तृत है। जो उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का लगभग 1 प्रतिशत (0 99 प्रतिशत) है। वर्तमान देवरिया जनपद सन् 1801 से 1946 ई तक गोरखपुर जनपद के अन्तर्गत सम्मिलित था। 1946 मे गोरखपुर जनपद से हाटा पडरौना देवरिया और सलेमपुर तहसील को अलग कर *देवरिया* नामक एक नये जनपद की निर्माण किया गया। पुन 1994 मे देवरिया के लगभग 54 6 प्रतिशत क्षेत्रफल को इससे अलग कर *कुशीनगर* नामक नये जनपद का निर्माण किया गया [3] । इसी के बाद इसका वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ है।

प्रशासनिक दृष्टि से देवरिया जनपद वर्तमान मे पॉच तहसील एव पन्द्रह विकासखण्डो मे विभक्त है।[4] पॉचो तहसील है— *देवरिया सदर रुद्रपुर सलेमपुर बरहज भाटपाररानी*। दो नगर पालिका परिषद *देवरिया* तथा *गौराबरहज* मे है।

[2] उच्चावच

अध्ययन क्षेत्र नदियो द्वारा लाई गई जलोढ मिट्टी द्वारा निर्मित समतल मैदान है। जिसकी सागर तल से औसत ऊॅचाई 72 मीटर है। क्षेत्र का सामान्य ढाल उत्तर—पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर है। उच्चावच के आधार पर इसे भाट प्रदेश बागर प्रदेश तथा खादर प्रदेश मे बॉटा जा सकता है। इसमे खादर क्षेत्र का धरातल बागर प्रदेश से नीचा है तथा बागर प्रदेश का धरातल भाट प्रदेश से नीचा है। दक्षिण एव दक्षिण पश्चिम मे इस क्षेत्र की सीमा का निर्धारण *घाघरा* एव *राप्ती* नदियों द्वारा होता है।[5] इस मैदानी क्षेत्र की औसत ऊॅचाई उत्तर—पश्चिम मे बढ़कर 74 मीटर तक हो जाती है। जलोढ सरचना के इस समतल क्षेत्र के निर्माण मे *गण्डक, घाघरा* एव

राप्ती नदियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके प्रवाह मार्गो के परिवर्तन के फलस्वरूप अध्ययन क्षेत्र मे अनेक नदी छाडन बडी झीले तथा छोटे–छोटे जलाशय निर्मित हो गये है। इसके कारण मैदान मे कुछ हद तक व्यतिक्रम आ गया है परन्तु अपरदन एव निक्षेपण क्रियाओ की सक्रियता से यह व्यतिक्रम क्रमश कम होता गया है।

[3] भू–आकृति प्रदेश

उच्चावच ढाल प्रवणता, मृदा प्रकार जल प्रवाह आदि के आधार पर इस मैदान को तीन भूआकृति प्रदेशो मे विभाजित किया जा सकता है। जो निम्नवत है [6]

(क) उत्तरी–पूर्वी भाट क्षेत्र

(ख) बागर क्षेत्र

(ग) कछारी क्षेत्र

(क) उ पूर्वी भाट क्षेत्र

यह क्षेत्र इस मैदान मे कुशीनगर जनपद के पडरौना तहसील के तराई भाग से लगा हुआ है। इसमे भाट मृदा की प्रधानता है जो इस मैदानी भाग मे नवीनतम जमाव के फलस्वरूप निर्मित हुई है। इस जमाव का विकास *गडक नदी* एव *खनुआ नाला* द्वारा हुआ है। आज भी इस क्षेत्र के ऊपरी भाग मे सीपे, घोघे आदि जलीय जीवो के अवशेष विशेष रूप से मिलते हैं जो नये जमावो के घोतक हैं। इसी कारण यह एक चूना प्रधान क्षेत्र बन गया है *[सीप घोघा आदि जलीय जीवो के बाह्य आवरण मे कैल्शियम की प्रधानता होती है जो चूना (कैल्शियम कार्बोनेट– $Ca\ Co_3$) का एक प्रधान घटक है] /* जलोढ सरचना के कारण इस क्षेत्र मे भूमिगत जल का स्तर काफी ऊॅचा है परन्तु इसमे पश्चिम उत्तर–पश्चिम की ओर गहराई बढती जाती है। भूमिगत जल स्तर के ऊॅचा होने से इस क्षेत्र मे नमी सदा बनी रहती है। विकासखण्ड *पथरदेवा* पूर्णत तथा *देसहीं देवरिया रामपुर कारखाना* एव *देवरिया सदर* अशत इस क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। गन्ना एव चावल की कृषि के लिए यह भाट क्षेत्र विशेष उपयुक्त है।

(ख) बागर क्षेत्र

प्राचीनतम जलोढ द्वारा निर्मित यह क्षेत्र जनपद के पश्चिमी तथा उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र मे विस्तृत है। इसके अतर्गत *देवरिया तहसील* का कुछ पश्चिमी भाग तथा *सलेमपुर तहसील* का अधिकाश शामिल किया जाता है। यह क्षेत्र पूरे जनपद का सर्वाधिक उर्वर एव उपजाऊ भू–भाग है, जहॉ बाढ का पानी नही पहुँच पाता। इसे दो उपविभागो मे बॉटा जा सकता है–

(1) उत्तरी बांगर क्षेत्र

यह बागर क्षेत्र के उत्तर से उत्तर–पूर्व मे विस्तृत है जो बहुत ही उपजाऊ भू–भाग है। यह क्षेत्र *देवरिया तहसील* तक ही सीमित है, जो इसके 29 94 प्रतिशत क्षेत्र पर विस्तृत है। इसके

अतर्गत देवरिया तहसील के विकासखण्ड *देसही देवरिया रामपुर कारखाना* का अधिकाश क्षेत्र *गौरीबाजार* एव *बैतालपुर* का कुछ उत्तरी भाग तथा विकासखण्ड *देवरिया सदर* का उत्तरी भाग शामिल है। इन क्षेत्रो मे उत्तरी बागर क्षेत्र एक पतली पटटी के रूप मे विस्तृत है।

(2) दक्षिणी बागर क्षेत्र

इसका विस्तार *देवरिया–गोरखपुर रेललाइन* के दक्षिण मे देवरिया गौरीबाजार बैतालपुर विकासखण्डो के दक्षिणी भाग एव रुद्रपुर के उत्तरी भाग मे है। बाढ–पकोप से वचित यह क्षेत्र बलुई दोमट मिट्टी का क्षेत्र है जिसमे गेहूँ की प्रधानता है। यह क्षेत्र *मझनान व कर्नानाला के* प्रवाह क्षेत्र *के* अतर्गत आता है जो ग्रीष्मकाल मे सूख जाते है। इस भाग मे सिचाई साधनो का अभाव है क्योकि नहरीक्षेत्र का विस्तार रेललाइन के उत्तर ही हुआ है।

(ग) कछारी क्षेत्र

जनपद का सबसे दक्षिणी भाग जो *राप्ती* और *घाघरा* नदियो के सामानान्तर एक पतली पटटी के रूप मे विस्तृत है इसे कछारी क्षेत्र कहते है। यह सामान्यत निम्न भू–भाग है जहॉ *राप्ती* एव *घाघरा* नदियॉ अपनी सहायक नदियो के साथ प्रतिवर्ष बाढ लाती है। इससे इस क्षेत्र मे प्रतिवर्ष नवीन कॉप मिट्टी का फैलाव हो जाता है जो बहुत ही उपजाऊ होती है। इनमे नमी धारण करने की क्षमता अधिक होती है फलत इस समस्त भाग पर कृषि की जाती है। जहॉ *राप्ती* के किनारे कछारी पट्टी सकीर्ण है वही *घाघरा* के किनारे यह प्राकृतिक तटबधो द्वारा अवरोधित है। पर इन तटबधो को तोडकर प्रतिवर्ष बाढ का पानी इस क्षेत्र मे फैल जाता है। खरीफ के समय बाढग्रस्त हो जाने से इस क्षेत्र मे कृषि नही हो पाती होती भी है तो प्राय नष्ट हो जाती है। परन्तु रबी की फसल यहॉ उच्च उत्पादकता के साथ कम लागत पर उगायी जाती है।

[4] अपवाह तत्र एव प्रतिरूप

किसी भी भू–भाग के प्रतिरूप का सीधा सम्बन्ध उसके धरातल के स्वरूप एव सरचना से जुडा होता है। यहॉ तक कि उस पर धरातल की ऊपरी सतह के व्यतिक्रमो और अधोभौमिक तत्वो की विशेषताओ का भी प्रभाव पडता है। इस सम्बन्ध मे *प्रो स्टाम्प* का यह कथन बहुत ही प्रामाणिक और अनुकूल प्रतीत होता है कि *धरातल की सरचना और उसके स्वरूप मे अत्यन्त निकट का सबध होता है और वे धरातल के अपवाह को पूर्णत प्रभावित करते है।'*

वस्तुत अध्ययन क्षेत्र के अपवाह प्रतिरूप के विकास मे मृदा सरचना का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। क्षेत्र की मृदा प्रधानत दोमट या बलुई दोमट है, जो जल मे शीघ्र घुलनशील है। अत इसका अपरदन सरलता से और शीघ्र होता रहता है। इसी कारण जितनी सरलता से अपवाह मार्ग बनते हैं, उतनी ही शीघ्रता और सरलता से अवरोध मिलने पर परिवर्तित भी होते रहते हैं। *राप्ती* एव *छोटी गण्डक* नदियो के मार्ग परिवर्तन का यही प्रमुख कारण है। इसके

DRAINAGE PATTERN
OF DEORIA DISTRICT
N
NAKTA R
RAPTI R
CHHOTI GANDAK R
KHANUA R
JHARAHI R
GHAGHARA R
6 0 6 KM
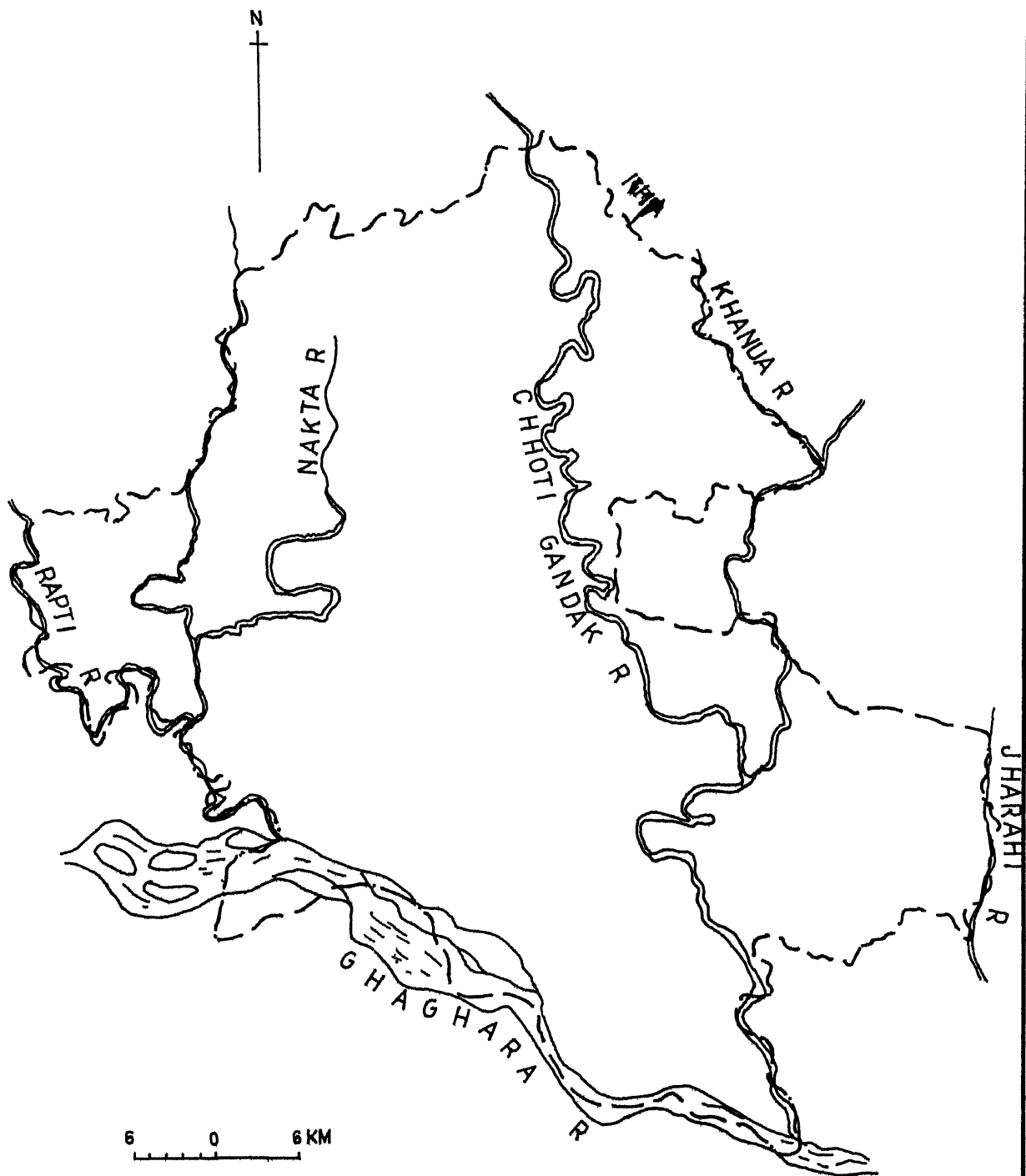
FIG 2 2

विपरीत चिकनी मिट्टी और भाट मिटटी चिपचिपी एव कम घुलनशील होती है जिससे अपवाह के मार्ग परिवर्तन मे अवरोध उत्पन्न होता है परन्तु जहाँ भाट मिटटी के साथ बालू का अश अधिक होता है वहाँ नदियो द्वारा अपरदन एव मार्ग परिवर्तन अधिक होता है।

नदियो मे जल की बहुलता के आधार पर इस क्षेत्र के अपवाह को मौसमी और स्थायी दो प्रकारो मे विभक्त किया जा सकता है। क्षेत्र का सम्पूर्ण जल *छोटी गण्डक* नदी प्रणाली या *राप्ती घाघरा* नदी प्रणाली मे सन्निहित है। इनमे शुष्क मौसम मे प्राकृतिक अपवाह केवल बडी नदियो मे ही दिखाई देता है। जबकि छोटी नदियाँ प्राय सूखी रहती है परन्तु वर्षा के दिनो मे छोटी नदियाँ भी अपने उफान पर आ जाती है।

शोध क्षेत्र का सामान्य अपवाह प्रतिरूप उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व दिशा मे पाया जाता है जो क्षेत्र के सामान्य ढाल का ही अनुसरण करता है। इस क्षेत्र के सम्पूर्ण अपवाह तत्र का जल अतत *घाघरा* मे मिल जाता है क्योकि सभी नदियाँ इसी मे आकर मिल जाती हैं। क्षेत्र के अन्तर्गत प्रवाहित हाने वाले अपवाह को निम्न तीन तन्त्रो मे विभाजित किया जा सकता है[7]–

क– *राप्ती नदी तत्र* पश्चिम मे

ख– *छोटी गण्डक नदी तत्र* मध्य मे

ग– *घाघरा नदी तत्र* दक्षिण–पूर्व मे

(क) राप्ती नदी तत्र

1 राप्ती नदी

राप्ती नदी देवरिया जनपद के दक्षिणी–पश्चिमी सीमान्त पर प्रवाहित होती है। इसका प्रारभिक नाम *'इरावती'* था। जो कालान्तर मे क्रमश *'राप्ती'* एव पुन *'राप्ती'*[8] हो गया। नदी का उद्गम शिवालिक पर्वत मे होता है और यह बहराइच, गोण्डा, बस्ती एव गोरखपुर जनपदो मे बहती हुई *'तिघरा खैरवा'* के पास देवरिया जनपद को स्पर्श करती है। दक्षिण पूर्व दिशा मे प्रवाहित होकर यह *'परसियाकान्त'* के पास घाघरा नदी से मिल जाती है।

2 गउरा (Gaura) नदी

यह *राप्ती* की सहायक नदी है जिसका उद्गम गोरखपुर जनपद के *'कुडाघाट ताल'* से हुआ है। *राप्ती* के सामानान्तर ही यह दक्षिण–पूर्व दिशा मे प्रवाहित होकर *समोगर* के निकट *राप्ती* मे मिल जाती है। निचले भागो मे इसे *'कटना'* नाम से जाना जाता है।

3 मझनान नदी

यह *गउरा (कटना)* की ही एक सहायक नदी है जो *मसूरगज* (हाटा तहसील जनपद कुशीनगर) से उत्पन्न होती है तथा दक्षिण की ओर प्रवाहित होकर गोरखपुर और देवरिया जनपद की सीमा बनाते हुए *खानदौली (Khandauli)* के पास देवरिया में प्रविष्ट होती है। दक्षिण में और

प्रवाहित होने पर इसमे बॉयी ओर से *बरहरी नदी* मिलती है। इसकी सबसे बडी सहायक *करना (Karna) नदी* है। जो रुद्रपुर मे *सरया* के पास मिलती है। ये सयुक्त नदी दक्षिण मे बहकर आगे *राप्ती* मे मिल जाती है।

4 करना नदी

इसे अध्ययन क्षेत्र मे नाला के रूप मे अभिव्यक्त किया जाता है। यह नाला *'बालकुऑ'* (विकासखण्ड गौरीबाजार जनपद देवरिया) के पास उद्भुत होकर देवरिया नगर क उत्तर–पश्चिम मे प्रवाहित होकर रुद्रपुर के पास *मझना नाले* मे मिल जाता है। अध्ययन क्षेत्र मे इसके प्रवाह की दिशा उत्तर से दक्षिण है। यह पूर्णत वर्षाकालीन नाला है। जो ग्रीष्मकाल मे सूख जाता है।

5 नकटा नाला (Nakta)

यह *करना नाला* की सबसे प्रमुख सहायक नदी है। जो देवरिया तहसील मे *कटउरा (Katura)* से उत्पन्न होकर दक्षिण दिशा मे बहते हुए *टिवार (Tewar)* के पास *करना* मे मिल जाता है। यह भी प्रमुखत बरसाती नाला है।

(ख) छोटी गण्डक नदी तत्र

1 छोटी गण्डक नदी

यह नेपाल के *'बाघवन'* क्षेत्र से उत्पन्न होकर *'पूरनहवा नाला'* के रूप मे *बडी गण्डक* के एक पुराने मार्ग का अनुसरण कर दक्षिण की ओर प्रवाहित होती हुयी भारत मे *'शीतलपुर गॉव'* मे नेपाल की सीमा पार करती है यहॉ से लगभग 16 किमी प्रवाहित होने पर यह दो शाखाओ *(चन्दन नाला एव छोटी गण्डक)* मे विभक्त हो जाती है। *चन्दन नाला* उत्तर पश्चिम की ओर बहती है। जबकि *छोटी गण्डक* दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत यह नदी *हेतिमपुर ग्राम* के पास प्रवेश करती है ओर अध्ययन क्षेत्र के लगभग मध्य से प्रवाहित होती हुई दक्षिण–दक्षिण पूर्व मे घाघरा से मिल जाती है।

2 ऊँची नदी

यह *छोटी गण्डक* की सहायक नदी है जो देसही देवरिया से उत्पन्न होकर देवरिया तहसील मे दक्षिण–पूर्व दिशा मे प्रवाहित होकर *बैकुण्ठपुर* के पास *छोटी गण्डक* मे मिल जाती है।

3 कोइलर नदी (Koılar)

यह भी *छोटी गण्डक* की ही सहायक है जो *'ताल'* से उत्पन्न होकर दक्षिण–पूर्व दिशा मे बहती हुए *बरसीपार* गॉव के पास *छोटी गण्डक* मे मिल जाती है।

4 खनुआ नदी

छोटी गण्डक की यह सहायक नदी कुशीनगर जनपद मे हाटा तहसील मे स्थित *'सिरसिया'* मे उत्पन्न होती है। *डुमारी* एव *सोनबरसा* गॉवो के निकट यह अध्ययन क्षेत्र मे प्रवेश करती है तथा

देवरिया एव कुशीनगर जनपद की उत्तरी–पूर्वी सीमा पर बहती हुई आगे जाकर उत्तर प्रदेश (देवरिया) एव बिहार (सीवान) की भी सीमा निर्धारित करती है। भाटपार रानी से 4 किमी उत्तर–पश्चिम मे यह *छोटी गण्डक* से मिल जाती है।

(ग) घाघरा नदी तत्र

1 घाघरा नदी

घाघरा नदी अध्ययन क्षेत्र मे नही प्रवाहित होती है पर इसकी कुछ सहायक नदियॉ अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग मे बहती है। *घाघरा नदी* अध्ययन क्षेत्र के सलेमपुर तहसील को दक्षिण–पूर्व मे स्पर्शकरती है और बलिया के साथ देवरिया की सीमा बनाती है। *घाघरा* का उद्‌गम हिमालय मे *मापचाचुगो ग्लैशियर* से होती है।

2 झरही नदी

यह कुशीनगर जनपद के पडरौना तहसील के *बॉसगॉव* नामक गॉव के पास से उत्पन्न होकर दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है। प्रारम्भ मे यह *गडक नदीतत्र* का भाग थी पर वर्तमान मे *घाघरा* की सहायक है। यह अध्ययन क्षेत्र मे सलेमपुर तहसील मे प्रवेश करती है तथा दक्षिण दिशा मे बहती हुई देवरिया और सीवान (बिहार) की सीमा निर्धारित करती है।

[5] भौमिकीय सरचना

भूगर्भिक सरचना की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र ***सरयूपार मैदान*** का ही एक भाग है जिसे मध्यवर्ती गगा मैदान के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। मैदान का निर्माण एक बडे अवतलित गर्त मे मलवे के गहरे एव विस्तृत निक्षेप के द्वारा हुआ है। जिसका जमाव *प्लीस्टोसीन काल* से वर्तमान समय तक हो रहा है।

इस प्रकार भूगर्भिक कालक्रम के अनुसार इस मैदान का निर्माण *प्लीस्टोसीन युग* के *चतुर्थ कल्प* से लेकर *आधुनिक काल* तक माना जाता है। जो 10 लाख पूर्व से लेकर 10 हजार वर्ष पूर्व तक मानी जा सकती है। इस मैदान की सरचना एव निर्माण काल के विवेचनो मे पर्याप्त अन्तरो के साथ ही साथ इसकी गहराई के सम्बन्ध मे भी भूगोलवेताओ मे मतैक्य नही है।[9]

मैदान के विभिन्न भागो मे गहराई के अनुसार जलोढ की सरचना मे बालू कणो सिल्ट, क्ले और ककडो का विभिन्न अनुपात पाया जाता है। सरचना के आधार पर इन्हे दो भागो मे बॉटा जा सकता है– **(1) पुरानी जलोढ़–** इसे *बागर (Bangar)* कहते है। जो अपेक्षकृत काले रग की मृदा है। जिसमे ककड़ीट और चूने की प्रचुरता पायी जाती है, जिसे *'ककड़'* कहते हैं। ये बाढ़ क्षेत्र के ऊपरी भागो मे पाया जाता है, जिसका निक्षेप मध्य से ऊपरी *प्लीस्टोसीन काल* तक हुआ है। **(2) नवीन जलोढ़–** इसे स्थानीय रूप मे *कछार* (Kachhar) या *खादर (Khadar)* कहते हैं। यह हल्के भूरे रग की होती है तथा कल्शियम का इसमे अभाव होता है। इसका निक्षेप काल *होलोसीन काल*

अथवा *ऊपरी प्लीस्टोसीन* से वर्तमान समय तक है। इस जनपद मे खनिजो का प्राय अभाव है पर जो खनिज प्राप्य हैं। वे निम्नवत् है–

साल्टपीटर (Saltpetre) – यह प्रमुख रूप से सलेमपुर तहसील मे गौरा बरहज के समीप प्राप्य है।

रेह (Reh) – यह नमकीन पदार्थ है जो सतह के ऊपर पाया जाता है जिसका उपयोग साबुन बनाने मे होता है। अध्ययन क्षेत्र मे इसकी प्राप्ति सलेमपुर तहसील के उत्तरी भाग मे होती है।

बालू (Sand) – इसकी प्राप्ति देवरिया–कसया रोड पर *छोटी गण्डक* *कटक* के पूर्व मे *सिरसीघाट* के निकट और सलेमपुर तहसील मे *बडवारघाट* से होती है।

क्ले (Clay)– इसकी प्राप्ति जनपद मे लगभग हर जगह से होती है। इसका उपयोग ईट बनाने खिलौने बनाने बर्तन बनाने आदि मे होता है।

[6] भूकम्पीय स्थिति

अध्ययन क्षेत्र भारत के सामान्य क्षति वाले भूकम्पीय क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। यद्यपि अभी तक कोई बडा भूकम्प इस क्षेत्र मे नही आया है। पर हल्के से सामान्य भूकम्प आ चुके हैं जिससे कुछ क्षति हुई है। सबसे पहले 4 जनवरी, 1994 मे उसके बाद 1934 मे पुन 1988 मे हल्के भूकम्प आ चुके हैं। चूँकि अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति *'ग्रेट हिमालयन बाउण्ड्री फाल्ट'* से दूर नही है अत यहाँ हल्के भूकम्प आते रहते है। *इण्डियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीटयूट* द्वारा निर्मित भारत के भूकम्प मानचित्र मे अध्ययन क्षेत्र को *जोनIV* के अतर्गत रखा गया है जहाँ भूकम्प तीब्रता की सभावना *VIII* तक (परिष्कृित मरकली इन्टेन्सिटी स्केल 1931) हो सकती है। *मरकली स्केल* के अतर्गत तीव्रता का विस्तार *I* से *XII* तक है जिसमे I का अर्थ है *महसूस न होने वाला कम्पन* तथा *XII* का अर्थ है– *सम्पूर्ण विनाश*।[10]

[7] जलवायु

भूमि उपयोग को प्रभावित करने तथा सेवाकेन्द्र के विकास को प्रेरित करने वाले भौतिक कारको मे जलवायु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मध्य गगा मैदान मे स्थित अध्ययन क्षेत्र की जलवायु *आर्द्र उष्ण मानसूनी* है। इसके पश्चिम मे शुष्क तर जलवायु, पूर्व मे आर्द्रतर जलवायु, उत्तर मे तराई मैदान की उमस भरी उष्णार्द्र जलवायु एव दक्षिण में शुष्कार्द्र जलवायु पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र मे जलवायु के विभिन्न तत्वो यथा तापमान वायुदाब, वर्षा आर्द्रता का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।[11]

DEORIA DISTRICT
CLIMATIC CONDITIONS- 2001
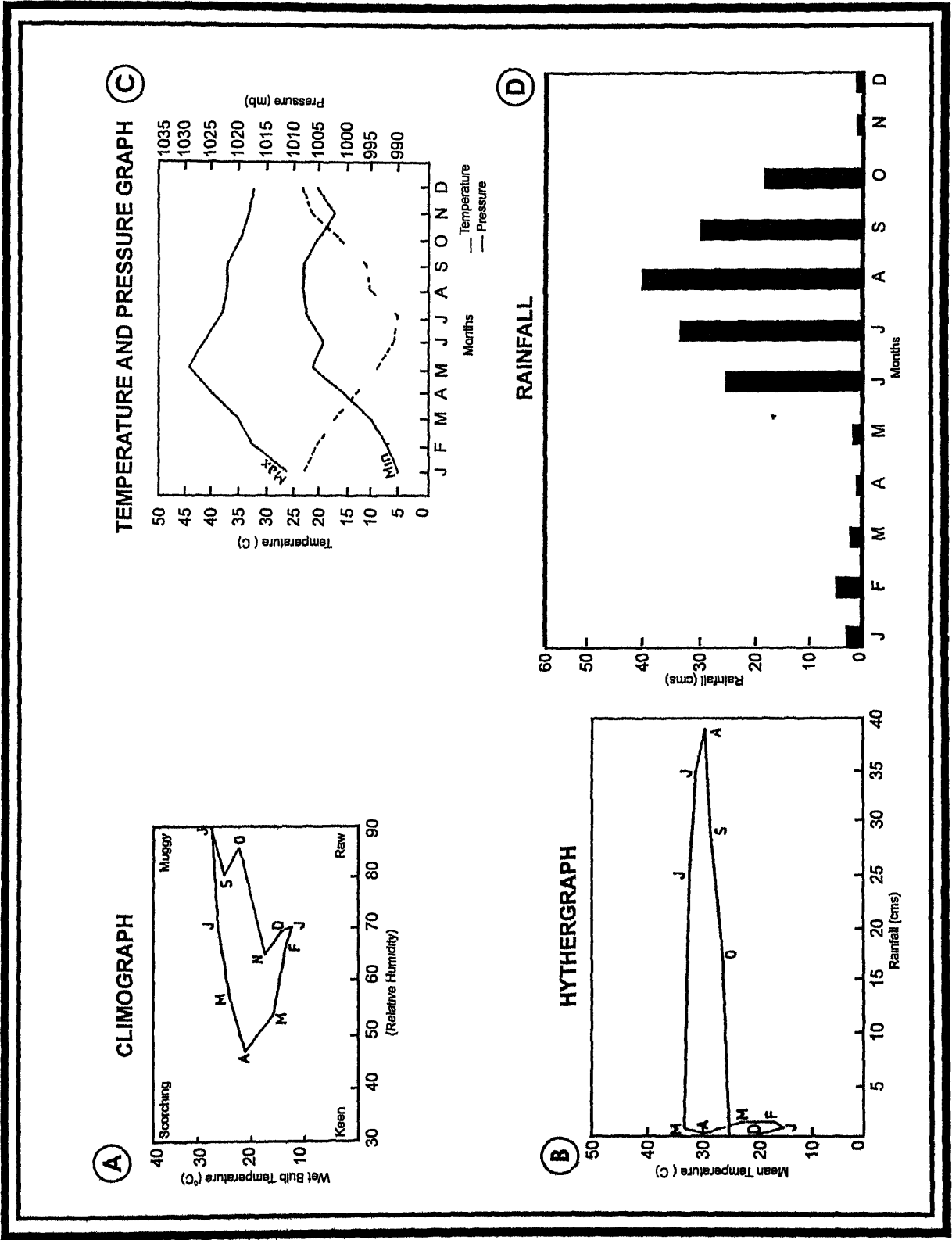
Fig 2 3

(क) तापमान

तापमान किसी भी क्षेत्र की जलवायु सम्बन्धी विशेषताओ को निर्धारित करने मे विशेष महत्व रखता है। उपोष्ण कटिबन्ध मे स्थित होने के कारण क्षेत्र मे *मई* मे अधिकतम औसत तापमान 44 0° से न्यूनतम औसत तापमान *जनवरी* मे 15 2° से रहता है। *जनवरी* मे न्यूनतम तापमान 4 8° से तक हो जाता है। इस क्षेत्र का ओसत वार्षिक तापमान 26 4° से एव औसत वार्षिक तापान्तर लगभग 11 8° से है। सर्वाधिक औसत दैनिक तापान्तर *दिसम्बर* माह मे पाया जाता है जो 17 3° से के लगभग होता है।

(ख) वायुदाब

वायुदाब तापक्रम से निर्धारित होता है। तापक्रम और वायुदाब मे सामान्यत उलटा सम्बन्ध पाया जाता है। क्षेत्र मे *बसत विषुव (Equinox)* (21 मार्च) के पश्चात तापक्रम मे वृद्धि के परिणामस्वरूप वायुदाब घटना प्रारम्भ हो जाता हे और क्रमश *मई* मे 994 5 मिलीबार *जून—जुलाई* मे औसतन 990 9 मिलीबार एव 990 7 मिलीबार हो जाता है। इस प्रकार *जुलाई* मे वायुदाब न्यूनतम (990 7 मि बार) होता है। पुन *शरद विषुव* (21 सितम्बर) के पश्चात तापक्रम मे निरन्तर ह्रास के कारण वायुदाब बढते—बढते *नवम्बर* मे 1002 3 मिलीबार, *दिसम्बर* मे 1008 2 मिलीबार तथा *जनवरी* मे 1008 4 मिलीबार हो जाता है।

(ग) वायुवेग

अध्ययन क्षेत्र मे औसत वायुगति 4 47 किमी प्रति घण्टा है। वायुगति *नवम्बर* माह मे न्यूनतम (2 0 किमी / घण्टा) होती है तथा *मई* माह मे अधिकतम (7 1 किमी / घण्टा) होती है तथा *मई* माह मे अधिकतम (7 1 किमी / घण्टा) हो जाती है। स्पष्ट है वायु वेग पर वायुदाब का प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। शीत ऋतु मे औसत वायुवेग 2 4 किमी / घण्टा होती है तथा ग्रीष्म ऋतु मे औसत वायुगति 6 6 किमी / घण्टा रहती है। कभी—कभी यहाँ पर झझावातो के आने पर वायु वेग अत्यधिक बढ़कर 50 किमी प्रति घण्टा तक पहुँच जाता है।

(घ) वायु दिशा

हिमालय के निकट स्थित होने के कारण इस क्षेत्र मे लगभग वर्ष के 45 प्रतिशत दिनो मे हवाएँ शात रहती है 55 प्रतिशत दिनो मे हवाओ की दिशा अधिकाशत *पुरुवा* एव कुछ *पछुआ* होती है। वर्ष मे पुरुवा हवाओ की दिन सख्या 80 दिन से कम नही होता है इनमे अधिकाश दिन *जुलाई* महीने मे होता है। वर्ष मे पश्चिम से प्रवाहित होने वाली हवा के दिनो की सख्या 47 है जिसमे ये *अप्रैल* माह मे सर्वाधिक दिन प्रवाहित होती हैं।

विवेचन करने से स्पष्ट हो जाता है कि *शीत काल* (अक्टूबर से फरवरी) मे तापमान कम रहने से हवाएँ प्राय शान्त रहती है। किन्तु *ग्रीष्म काल* (अप्रैल से जुलाई) मे तापमान बढ़ने से हवाएँ अधिक सक्रिय होने लगती हैं।

DEORIA DISTRICT
WEATHER CONDITIONS- 2001
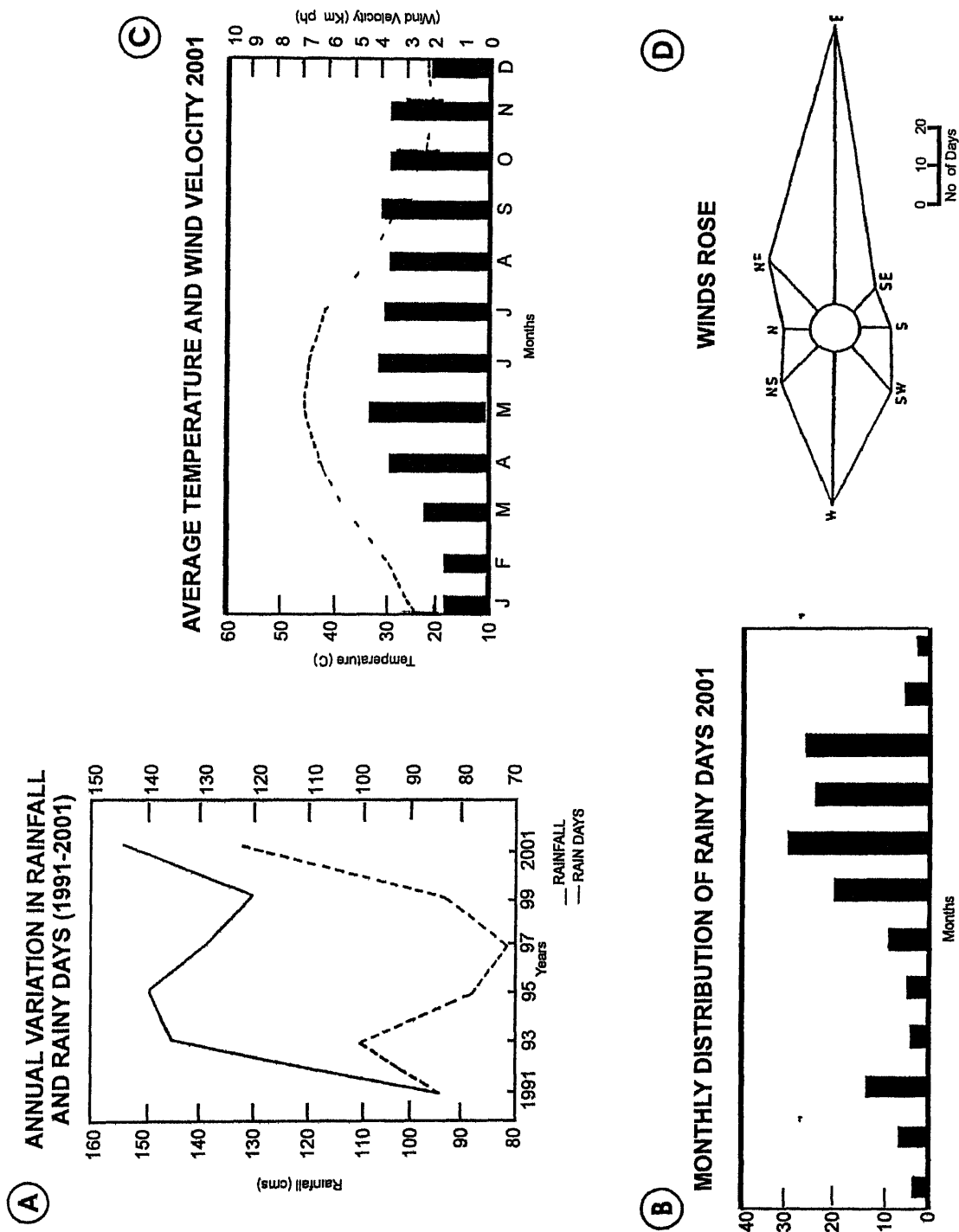
Fig 2 4

(ड) वर्षा

अध्ययन क्षेत्र मे वर्षा का वार्षिक औसत 153 सेमी है एव वर्ष मे वर्षा के दिनो की कुल सख्या लगभग 122 है। वार्षिक वर्षा का लगभग 85 90 प्रतिशत भाग *जून* से *अक्टूबर* के मध्य ***ग्रीष्म कालीन मानसून*** से प्राप्त होता है। 7 प्रतिशत वर्षा ***शीतकालीन चक्रवातो*** से *नवम्बर* से *फरवरी* माह के मध्य तथा शेष 3 प्रतिशत वर्षा *मार्च* से *मई* माह के मध्य मानसून पूर्व होती है। अध्ययन क्षेत्र मे अधिकतम वर्षा की मात्रा (401 8 मिमी) एव वर्षा के दिनो की अधिकतम सख्या (26 दिन) *अगस्त* माह मे पायी जाती है। *दिसम्बर* मे वर्षा की मात्रा एव वर्षा के दिनो की सख्या न्यूनतम (21 मिमी एव 2 दिन) होती है। इस प्रकार इस क्षेत्र मे वर्षा की मात्रा के मासिक वितरण एव वर्षा के दिनो की मासिक सख्या मे बहुत अधिक विषमता है। यहाँ की वर्षा मानसून की अनिश्चितता एव अनियमितता से प्रभावित होती है।

(च) सापेक्षिक आर्द्रता

सापेक्षिक आर्द्रता का तापमान एव वर्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सापेक्षिक आर्द्रता के मासिक वितरण मे भिन्नता मिलती है। सबसे कम सापेक्षिक आर्द्रता गर्म शुष्क माह *अप्रैल* मे (12 प्रतिशत) पाई जाती है जबकि *अक्टूबर* माह मे सापेक्षिक आर्द्रता सर्वाधिक (130 प्रतिशत) तक हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र मे अधिकतक वार्षिक आर्द्रता का औसत 86 2 प्रतिशत एव न्यूनतम वार्षिक आर्द्रता का औसत 50 46 प्रतिशत पाया जाता है। इस प्रकार सापेक्षिक आर्द्रता का वार्षिक औसत 68 37 प्रतिशत है।

(छ) ऋतुऍ

क्षेत्र मे तीन प्रमुख ऋतुऍ पायी जाती हैं। जो जलवायु सम्बन्धी विशेषताओ के आधार पर निश्चित की गयी है।

1 वर्षा ऋतु

वर्षा ऋतु का आगमन *जून* के मध्य से प्रारम्भ होता है और *अक्टूबर* तक रहता है। वर्षा ऋतु के आरम्भ होने पर ग्रीष्म ऋतु के शुष्क एव तर वातावरण मे सुहावनापन आ जाता है। घनघोर घन गर्जन, विद्युत चमक से युक्त मेघाच्छादन आदि वर्षा ऋतु की प्रमुख विशेषताऍ है। वार्षिक वर्षा का लगभग 92 प्रतिशत भाग अध्ययन क्षेत्र मे इसी ऋतु मे प्राप्त होता है। अधिकतम वर्षा *अगस्त* माह मे (40 18 सेमी) प्राप्त होती है। वर्षा की अधिकता के कारण क्षेत्र की नदियो एव नालो के समीपस्थ निम्न भू–भाग जलाप्लावित हो जाते है।

2 शीत ऋतु

यह ऋतु *नवम्बर* से *फरवरी* तक चलती है। *नवम्बर* के पश्चात शीतलता मे वृद्धि होने लगती है तथा दैनिक तापान्तर भी बढ़ता है। *जनवरी* का महीना सबसे शीतल होता है जिसमे औसत न्यूनतम तापमान 7 9° से एव औसत अधिकतम तापमान 20° से तक पाया जाता है। इस ऋतु

मे शीत लहर का प्रकोप होता रहता है तथा *भूमध्य सागरीय अवदाबो* से अल्प मात्रा मे वर्षा भी होती है। शीतलहर के समय तापमान 4 8° से तक नीचे उतर जाता है। इस ऋतु की प्रमुख विशेषताओ मे शात मौसम मेघरहित आकाश तथा कभी–कभी शीतलहर का प्रकोप प्रमुख है।

3 **ग्रीष्म ऋतु**

यह ऋतु *मार्च* से *जून* तक रहती है। *फरवरी* के पश्चात तापक्रम मे वृद्धि होती है। *मई* माह सर्वाधिक गर्म रहता है। *मई* एव *जून* के महीने मे उष्ण–शुष्क वायु चलने लगती है। धूल भरी ऑधी तथा यदा–कदा 'लू' भी इस ऋतु मे चला करती है। इन दिनो क्षेत्र का औसत अधिकतम तापमान लगभग 39 7° से एव औसत न्यूनतम तापमान 25 8° से रहता है। औसत तापान्तर 13 6 से रहता है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग मे हिमालय की तराई होने से एव नहरो के अधिक होने के कारण 'लू' का प्रभाव कम पडता है। फिर भी इस क्षेत्र मे इस ऋतु मे गर्मी के कारण दिन कष्टमय तथा राते अपेक्षाकृत कम कष्टकारी होती है।

[8] मृदा

मृदा आधारभूत ससाधन है। जनपद की मृदा *जलोढ़* है। *प्राचीन जलोढ* बागर क्षेत्र मे तथा *नूतन जलोढ* खादर क्षेत्र मे पायी जाती है। सरचना एव उर्वरता के आधार पर क्षेत्र की मृदा को निम्न वर्गों मे वर्गीकृत किया जा सकता है–[12]

(1) बालूकणो की मात्रा के आधार पर

1 **बलुई मिट्टी**

यह नदियो की तलहटियो एव रेतीली भूमि मे पायी जाती है। इसमे बालू का अश अधिक होता है।

2 **दोमट मिट्टी**

यह अपेक्षाकृत उच्च बागर क्षेत्रो मे मिलती है। इसमे बालू और मिट्टी का अश बराबर होता है।

3 **मटियार मिट्टी**

यह निम्न भू–भागो मे पायी जाने वाली बालू रहित मृदा है। धान की कृषि के लिए ज्यादा उपयुक्त होती है।

(2) उर्वरता के आधार पर

1 **गोयड़ मिट्टी**

आबादी के नजदीक अधिक उर्वर मिट्टी।

2 **मझार मिट्टी**

गोयड़ मिट्टी क्षेत्र से दूर एव अपेक्षाकृत कम उर्वर मृदा।

3 पाली मिट्टी

गॉव से अधिक दूर एव कम उर्वर मृदा।

(3) उत्तरप्रदेश का *चकबन्दी विभाग* मृदा का एक नया वर्गीकरण प्रस्तावित किया है। इसके अनुसार वर्गीकरण निम्नवत् है–

1 बागर मिट्टी

आर्द्रता एव कणो के आकार के आधार पर इसके निम्न उपविभाग है–

(i) – **दोमट मिट्टी**– क्षेत्र के आतरिक भागो मे मिलती है।

(ii)– **मटियार दोमट मिट्टी**– भूरे रग की तथा धान की खेती के लिए अनुकूल एव जल धारण क्षमता अधिक।

(iii)– **मटियार मिट्टी**– भूरी हल्की काली चिपचिपी मृदा जल धारण क्षमता अधिक।

(iv)– **करैल मिट्टी**– चीका प्रधान अपेक्षाकृत नीची भूमि मे पायी जाने वाली गाढे भूरे रग की चिपकदार मिट्टी।

(v)– **बलुई दोमट मिट्टी**– बॉगर मृदा के अतर्गत सबसे अधिक क्षेत्र पर विस्तृत मृदा जल धारण क्षमता कम।

2 भाट मिट्टी

इस का क्षेत्र बागर मिट्टी क्षेत्र से ठीक उत्तर–पूर्व मे स्थित है। यद्यपि यह भी जलोढ मृदा ही है पर इसमे चूना प्रधान पदार्थों की अधिकता है।[13] इसके निम्न उपविभाग है–

(i)– **चउर भाट मिट्टी**– अत्यधिक उर्वर मृदा,

(ii)– **चॅवर भाट मिट्टी**– निम्न कोटि की दलदली मिट्टी,

(iii)– **धूसी भाट मिट्टी**– हल्के लाल रग की शुष्क मिटटी जो छोटी *गण्डक नदी* के पूर्वी भाग मे छोटे–छोटे टुकडो के रूप मे मिलती है।

3 कछारी मिट्टी

इस का विस्तार अध्ययन क्षेत्र मे दक्षिणी पश्चिमी, दक्षिणी एव दक्षिण–पूर्वी भागो मे है। यह मिट्टी मुख्यत उर्वर बलुई मिट्टी है। कछारी नदियो का विस्तृत निक्षेपण *राप्ती* एव *छोटी गण्डक* नदियो द्वारा हुआ है।

क्षेत्र के कुछ भागो मे क्षारीय अनुर्वर मृदा जिसे क्षेत्र मे *'ऊसर'* कहा जाता है, प्राप्त होती है। यह बागर क्षेत्र मे यत्र–तत्र पायी जाती है। इस मृदा मे क्षारीय एव लवणीय तत्वो की प्रधानता होती है। इसके धूसरित भाग को क्षेत्र मे *'रेह'* के नाम से जाना जाता है। नदियो के किनारे की मृदा अपरदन की समस्या से ग्रस्त है। क्षेत्र की मृदा सामान्य रूप से उर्वर है जो फसलोत्पादन

के लिए उपयुक्त है।

[9] प्राकृतिक वनस्पति

सन् 1840 के पूर्व सरयूपार मैदान मे *राप्ती घाघरा* तथा अन्य नदियो के तटो पर घने जगल थे।[14] मध्यम वर्षा एव उपजाऊ भूमि होने के कारण वृक्षो की अकिधकता थी। परन्तु बाढ मे कृषि भूमि के विस्तार के साथ वनो की अधाधुँध कटाई होने लगी। जिससे वर्तमान मे वन अध्ययन क्षेत्र के 3 29 प्रतिशत भूमि पर ही बाग–बगीचो के रूप मे रह गये है। वनो के अतर्गत सबसे कम क्षेत्र *रुद्रपुर विकासखण्ड* मे (1 81 प्रतिशत) है। अध्ययन क्षेत्र के भाट मृदा क्षेत्र वाले उत्तरी भाग मे *शीशम* वृक्ष की बहुतायत है जबकि मध्यवर्तीय उच्च भूमि मे एव नदियो के किनारे तट बन्धो पर स्थित *धूस'* क्षेत्रो पर *आम जामुन महुआ* आदि के वृक्ष मिलते हैं। दक्षिण मे *राप्ती* एव उसकी सहायक ददियो के किनारे तट बन्धो पर स्थित *धूस'* क्षेत्रो पर *आम जामुन महुआ* आदि के वृक्ष मिलते है। दक्षिण मे *राप्ती* एव उसकी सहायक नदियो के अचल मे *बेर* एव *बबूल* के वृक्षो की अधिकता है।

वर्तमान समय मे सडको एव नहरो के किनारे वृक्षारोपण तीव्र गति से किया जा रहा है।

2 2 सामाजिक–सास्कृतिक पृष्ठभूमि

क्षेत्र की उर्वर मृदा, अनुकूल जलवायु तथा सतत् प्रवाही नदियॉ प्राचीन काल से ही मानव बसाव की केन्द्र रही है। *मुकर्जी* [15] के अनुसार 15 हजार वर्ष ई पूर्व इस क्षेत्र मे मानव आदिम जीवन व्यतीत करता था तथा उसकी कृषि का ढग प्रारम्भिक अवस्था मे था। आर्यों के आगमन के साथ विकसित कृषि कार्य प्रारम्भ हुआ एव सुव्यवस्थित अधिवास विकसित हुए। बौद्धकालीन युग तक यहॉ पर सभ्यता का पूर्ण विकास हो चुका था।

[1] जनाकिकीय वैशिष्ट्य

मनुष्य न केवल प्राकृतिक परिवेश का अग है, अपितु वह परिवेश निर्माता और सम्पूर्ण मानवीय चिन्तन का केन्द्र भी है अत सम्पूर्ण जनसख्या तथा उनकी विशिष्टताये चिन्तन का ऐसा आधार प्रस्तुत करती है, जहॉ से मानव हित की योजनाऍ बनायी जाती हैं। जनसख्या एव उसकी विशेषताऍ स्वय में एक महत्वपूर्ण ससाधन है क्योकि इसकी सरचना वितरण प्रतिरूप एव जनाकिकीय वैशिष्ट्य पर ही विभिन्न ससाधनो का वर्तमान आर्थिक उपयोग, सरक्षण एव समुचित नियोजन आधारित होता है तथा उसी के सन्दर्भ मे विकास स्तर का निर्धारण एव मापन किया जाता है। जनसख्या के सम्यक अध्ययन हेतु उसके विभिन्न पक्षो का ज्ञान अपरिहार्य है। इसमे जनसख्या वृद्धि, जनसख्या घनत्व एव क्षेत्रीय वितरण के साथ ही आयु सरचना लिगानुपात, साक्षरता, क्रियाशील जनसख्या एव व्यावसायिक सरचना आदि का समुचित विश्लेषण आवश्यक

सारणी 2 1

देश, प्रदेश एव जनपद मे जनसख्या वृद्धि की तुलनात्मक स्थिति

जनगणना वर्ष	जनपद जनसख्या (लाख मे)	दशकीय वृद्धि		
		जनपद	उत्तर प्रदेश	भारत
1901	14 84	–	–	–
1911	16 20	8 90	(–) 0 9	5 75
1921	16 53	2 08	(–) 3 08	(–) 0 31
1931	17 66	6 78	6 6	11 00
1941	19 70	11 53	13 5	14 22
1951	21 02	6 74	21 8	13 31
1961	23 75	12 96	16 7	21 51
1971	28 12	18 41	19 8	24 80
1981	34 97	24 30	25 6	24 60
1991	44 40	27 00	25 4	23 86
2001*	27 30	(–) 38 5	25 8	21 34

स्रोत– गजेटियर जिला देवरिया–1988 जनगणना हस्तपुस्तिका–1981 भारत की जनगणना 2001
ऑकडे एव तथ्य– उपकार प्रकाशन, भारत–2001

* कुशीनगर जनपद के सृजन के कारण जनसख्या कम हो गई

सारणी 2 2

जनपद एव प्रदेश का जनसख्या घनत्व

वर्ष	जनसख्या घनत्व (देवरिया)	जन घनत्व (उत्तर प्रदेश) (व्यक्ति/वर्ग किमी)
1971	595 व्यक्ति/वर्ग किमी	300
1981	734 '	377
1991	872 " '	583
2001	1077 "	689

स्रोत– भारत की जनसख्या– 2001 आकडे एव तथ्य

है।

(क) जनसख्या वृद्धि

सन 1901 में देवरिया जनपद की जनसख्या 7 4 लाख थी जो क्रमश बढते हुए 1991 मे 44 40 लाख हो गयी। इस दौरान **सर्वाधिक तीव्र वृद्धि की दर 1981 से 1991 के दशक मे 27 0 प्रतिशत रही**। जबकि 1971–1981 के मध्य यह वृद्धि 24 3 प्रतिशत रही थी। मई 1994 मे जनपद कुशीनगर के सृजन के फलस्वरूप इस जनपद की जनसख्या घटकर 22 04 लाख रह गयी। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार इस जनपद की वर्तमान जनसख्या बढ़कर 27 30 लाख हो गयी है जो कि गत दशक की अपेक्षा लगभग 17 1 लाख कम हो गयी। इस दौरान जनसख्या की वृद्धिदर (– 38 5) ऋणात्मक रही। जनपद की जनसख्या वृद्धि की तुलना यदि

चित्रारेख– 25

जनपद देवरिया : जनसंख्या वृद्धि (1901—2001)
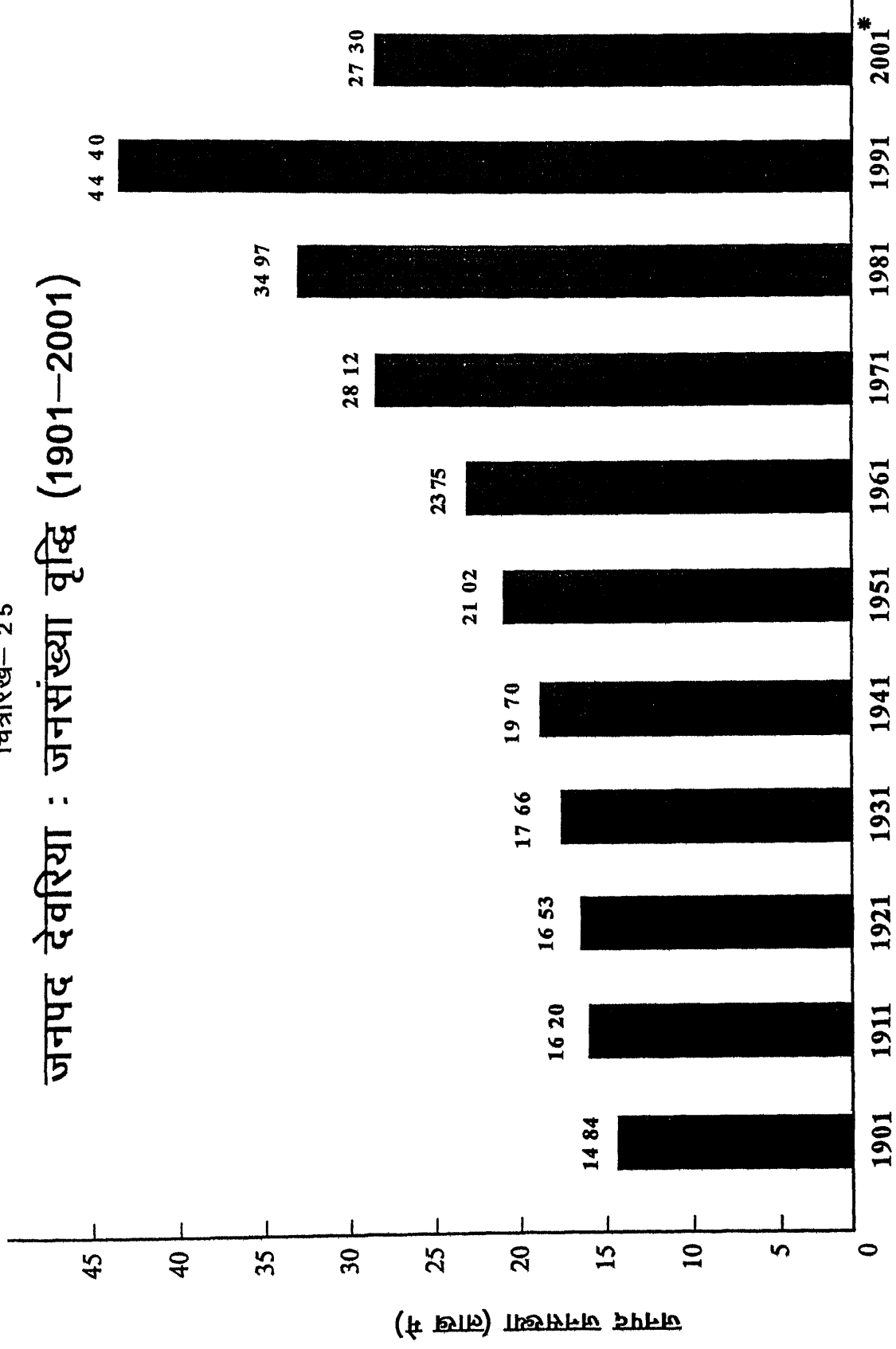
* (वर्ष 1994 मे देवरिया से कुशीनगर जनपद के सृजन के कारण 2001 की जनसख्या कम हो गई है।)

प्रदेश की जनसख्या वृद्धि से करे तो स्पष्ट होता है कि 1931 के बाद 1991 के जनगणना वर्ष के अलावे कभी भी जनपद की वृद्धिदर प्रदेश की वृद्धिदर से अधिक नही रही।[16]

(ख) जनसख्या घनत्व

देवरिया का जनसख्या घनत्व विगत पॉच दशको मे 1971 से 2001 के दौरान निरन्तर बढता रहा है। 1971 मे यहॉ एक वर्ग किमी क्षेत्र मे 595 व्यक्ति रहते थे। जो 2001 मे बढकर 1077 हो गये जो *प्रदेश* और *देश* के घनत्व से बहुत अधिक है 1991 मे **उ प्र** का जनसख्या घनत्व 548 था जो 2001 मे 689 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो गया। इन्ही वर्षो मे **भारत** का घनत्व 267 से बढकर 324 (2001) व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हुआ। अत यदि देवरिया के जनसख्या घनत्व की तुलना प्रदेश (2001 वर्ष) से करे तो यह प्रदेश का 1 56 गुना है तथा देश का 3 32 गुना है। वर्तमान मे घनत्व की दृष्टि से जनपद का प्रदेश मे **9वॉ** स्थान है।[17]

(ग) ग्रामीण एव नगरीय जनसख्या

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद देवरिया की जनसख्या के 90 प्रतिशत लोग *ग्रामीण क्षेत्र* मे तथा 10 प्रतिशत लोग *नगरीय क्षेत्र* मे निवास करते हैं। नगरीय जनसख्या (217363) मे 52 प्रतिशत लोग *गौरा बरहज* एव *देवरिया* के दो नगर परिषदो तथा 48 प्रतिशत लोग 8 नगर पचायतो मे निवास करते है। रोजगार पाने के इच्छुक लोगो का ग्रामीण क्षेत्रो से नगरीय क्षेत्रो मे पलायन होने के कारण नगरीय क्षेत्र की जनसख्या स्वाभाविक रूप से बढती जा रही है। 2001 मे प्रदेश की 20 8 प्रतिशत जनसख्या नगरो मे रहती थी। जबकि देश की 28 प्रतिशत जनसख्या 2001 की जनगणना के अनुसार नगरीय थी।[18]

सारणी 2.3

जनपद, प्रदेश, देश की नगरीय जनसख्या (प्रतिशत मे) की तुलनात्मक स्थिति

जनगणना वर्ष	जनपद	प्रदेश	देश
1951	3 46	13 64	17 30
1961	2 42	12 85	18 83
1971	2 96	14 02	19 90
1981	6 63	17 95	23 32
1991	10 00	-	25 70
2001		20 8	27 78

स्रोत– जिला गजेटियर, देवरिया, जनगणना हस्त पुस्तिका–1981, भारत की जनसख्या–2001, आकडे एव तथ्य।

(घ) लिग अनुपात

देवरिया में 1901 मे लिगानुपात 1,011 था जो क्रमश कम होते 1931 मे 944 हो गया। कुछ उतार–चढाव के बावजूद इसमे वृद्धि होती रही और यह 2001 मे बढ़कर 1003 हो गया।[19] इस

सारणी 24

जनपद, प्रदेश एव देश का लिगानुपात

जनगणना वर्ष	दशकीय वृद्धि		
	जनपद	उत्तर प्रदेश	भारत
1901	1011	942	972
1911	995	916	964
1921	966	908	955
1931	944	903	950
1941	988	907	945
1951	1003	908	946
1961	1002	907	941
1971	958	876	930
1981	988	882	935
1991	995	876	927
2001	1003	898	933

स्रोत– जिला गजेटियर देवरिया जनगणना हस्त पुस्तिका–1981, भारत की जनसख्या 2001 ऑकडे एव तथ्य– उपकार प्रकाशन

दृष्टि से वर्तमान मे यह प्रदेश का तीसरा सर्वाधिक लिगानुपात वाला जनपद है [क्रमश *प्रथम*– आजमगढ, (1026), *द्वितीय* जौनपुर (1021) है]। परन्तु देश मे हो रही भ्रूण कन्याओ की मृत्यु मे वृद्धि का प्रभाव यहा भी दिखने लगा है। 0–6 आयु वर्ग की जनसख्या मे प्रति हजार लडको पर लडकियो की सख्या मात्र 964 है[20] जो एक चिन्तनीय प्रवृत्ति है।

(ड) साक्षरता

साक्षरता अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास को प्रतिबिम्बित करती है।[21] साक्षरता की दृष्टि से जनपद मे साक्षरता उत्तर प्रदेश की तुलना मे अधिक है। जनपद मे 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसख्या का 61 4 प्रतिशत पुरुष तथा 23 4 प्रतिशत स्त्री साक्षर रही है। जनपद मे स्त्री एव पुरुष को मिलाकर साक्षरता का कुल प्रतिशत 42 3 था परन्तु वर्तमान समय मे वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार *प्रदेश* की साक्षरता दर 57 36 प्रतिशत के सापेक्ष इस *जनपद* की साक्षरता दर 59 84 प्रतिशत है जिसमे पुरुषो की साक्षरता दर 76 31 प्रतिशत तथा स्त्रियो की साक्षरता दर 43 56 प्रतिशत है। इस प्रकार से इस जनपद की साक्षरता दर मे लगभग 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिसमे स्त्रियो की साक्षरता दर मे लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्तमान जनगणना के अनुसार पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो की साक्षरता दर मे ज्यादा वृद्धि हुई है।

इस जनपद में साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत *'दीप शिखा उत्तर साक्षरता कार्यक्रम''*

चलाया जा रहा है। जनपद के उन नवसाक्षरो के लिए जिन्होने सम्पूर्ण साक्षरता अभियान अनौपचारिक शिक्षा प्रौढ शिक्षा प्राथमिक विद्यालय या अन्य माध्यमो से प्राथमिक स्तर तक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो उनके लिए *उत्तर साक्षरता कार्यक्रम* सचालित किया जा रहा है।[22]

(च) अधिवास

क्षेत्र मे ग्रामीण एव नगरीय दोनो प्रकार के अधिवास पाये जाते है। यहॉ पर 1991 की जनगणना के अनुसार आवासीय मकानो की सख्या 3,11,951 है जिसमे 91 प्रतिशत आवासीय मकान ग्रामीण क्षेत्र मे तथा 9 प्रतिशत आवासीय मकान नगरीय क्षेत्रो मे हे। इसी प्रकार जनपद के 91 प्रतिशत परिवार ग्रामीण क्षेत्रो मे तथा 9 प्रतिशत नगरीय क्षेत्रो मे निवास करते है[23]।

(छ) जनसख्या वितरण

किसी भी क्षेत्र मे जनसख्या का वितरण मूलत क्षेत्र की भौतिक विशेषताओ आर्थिक क्रियाओ सामान्य आवासीय सुविधाओ एव ऐतिहासिक पृष्ठभूमि द्वारा नियत्रित होता है। 1991 मे देवरिया जनपद का जनसख्या घनत्व 972 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था। जो 2001 मे बढकर 1077 हो गया। परन्तु जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्र मे इसका वितरण समान नही है। अपेक्षाकृत अनुकूल क्षेत्रो मे ये सघनता अत्यधिक उच्च है तथा कुछ प्रतिकूल क्षेत्रो मे कम। इस दृष्टि से जनसख्या सान्द्रण को तीन वर्गों मे विभक्त किया गया है। *उच्च जनसख्या सान्द्रण* के क्षेत्र जनपद के उत्तरी एव मध्यवर्ती क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र है। *मध्यम उच्च जनसख्या का सान्द्रण* क्षेत्र पश्चिमी तथा मध्यवर्ती पूर्वी भाग मे केन्द्रित है। अपेक्षाकृत *कम जनसख्या का साद्रण* क्षेत्र के दक्षिणी दक्षिणी पूर्वी एव मध्य भागो मे क्रमश *राप्ती, घाघरा* एव *छोटी गण्डक* नदियो के खादर प्रदेश मे हुआ है।

(ज) नगरीकरण

देवरिया जनपद नगरीकरण की दृष्टि से एक पिछडा जनपद है। पिछले 50 वर्षों मे जनपद की नगरीय जनसख्या का प्रतिशत पहली बार दो अको मे पहुँचकर 1991 मे 10 00 हुई जबकि उस दौरान प्रदेश का नगरीकरण स्तर लगभग 18–19 प्रतिशत के बीच था। जनपद की सम्पूर्ण नगरीय जनसख्या मे से आधे से अधिक (52 प्रतिशत) लोग क्रमश *देवरिया* तथा *गौरा बरहज* मे सग्रहित है। तीसरा स्थान *लार* तथा चौथा स्थान *रुद्रपुर* का है।[24]

(झ) जनसख्या का स्थानान्तरण

अध्ययन क्षेत्र एक पिछडा जनपद है जहाँ रोजगार के अवसर कम हैं। अत इस क्षेत्र से प्रदेश तथा देश के नगरो मे रोजगार की तलाश मे अधिक सख्या मे व्यक्ति स्थानान्तरित हुए है। यहाँ के स्थानान्तरण की प्रवृत्ति को तीन वर्गों– *स्थायी स्थानान्तरण आकस्मिक स्थानान्तरण एव मौसमी स्थानान्तरण* में विभक्त किया जा सकता है। क्षेत्र मे पुरुष एव स्त्री दोनो का ही

स्थानान्तरण अन्तर्क्षेत्रीय एव अन्तर्प्रान्तीय हुआ है। विवाह के कारण स्त्रियो का स्थानान्तरण पुरुषो की अपेक्षा अधिक हुआ है। क्षेत्र की लगभग 25 प्रतिशत जनसख्या स्थानान्तरित होती रहती है। स्पष्ट है कि आर्थिक दृष्टि से पिछडा क्षेत्र होने के कारण आव्रजन की अपेक्षा प्रवजन अधिक हुआ है। क्षेत्र मे ग्राम से नगरोन्मुख स्थानान्तरण अधिक हुआ है।

[2] सामाजिक सरचना

इस मैदानी जनपद की सामाजिक सरचना मे उच्च मध्य एव निम्न वर्ग के लोग है। यहॉ की सम्पूर्ण जनसख्या मे विभिन्न धर्मो वर्गों और वर्णो के लोग है। सम्पूर्ण ग्रामीण जनसख्या मे *हिन्दू* लगभग 83 7 प्रतिशत *मुस्लिम* लगभग 16 5 प्रतिशत *सिक्ख ईसाई जैन* और *बौद्ध* मिलकर लगभग 0 2 प्रतिशत है। *शहरी अचल* मे यह प्रतिशत क्रमश 84 7 14 7 और 0 6 प्रतिशत है। इस जनपद मे ग्रामीण अचल मे मुस्लिम आबादी का प्रतिशत शहरी अचल की तुलना मे अधिक होना एक विचित्रता है।

हिन्दुओ मे वर्ण तो केवल चार ही है— *ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूर्द* किन्तु इनकी अनेक जातियॉ और उपजातियॉ मिलती हैं। विशेषकर ब्राह्मणो की प्रमुख शाखाये यही से उद्भूत है। धतुरा सिरजम श्रीमुख शण्डिल्य ब्राह्मणो के उद्गम स्थल हैं तथा धतुरा उधोपुर बेलही सिरजम बरपार पटनी बुढियाबारी एव देवरिया खास इनके प्रमुख गॉव हैं। *सरयू और छोटी गण्डक* के सन्धिस्थल के समीप स्थिति ***पिण्डी*** और ***नदौली*** नामक ग्राम *गर्दभमुख ग्रोत्रीय शाण्डिल्य* ब्राह्मणो के उद्गम स्थल हे। इसी तरह ***पयासी*** *गौतम गोत्रीय मिश्र* ब्राह्मणो का उद्गम स्थल है। बरहज के पास स्थित ***बारा दीक्षित*** ब्राह्मणो का आरभिक स्थल है। भेडी, बकरुआ सराव बसडीला *कश्यप गर्ग गोत्रीय शुक्ल* ब्राह्मणो के प्रमुख गॉव है। ब्राह्मणो की सभी शाखाये सयुक्त रूप से *सरयूपारीय* ब्राह्मण वर्ग मे आती है। सरयूपारीय *'सर्वार'* शब्द का अपभ्रश है जिसका आशय *सरयू* के उत्तरी भाग मे रहने वाले लोगो से है।[25] साथ ही *शाकल्यद्वीपी और कनौजिया* ब्राह्मणो का निवास भी इस जनपद मे है।

इस जनपद मे चारो तरफ फैले हुए *क्षत्रियो* की भी अच्छी सख्या है तथा इनकी भी कई उपशाखाऍ हैं। *नकटा नाला* और *मझना* के बीच मे *श्रीनेत वशीय* क्षत्रियो के प्रमुख स्थल हैं— सॉडा इन्द्रपुर असनहर वर्दगोनिया इत्यादि। मझौली *मल्ल क्षत्रियो* तथा पैकौली, गडेर और बौरोना *शाही क्षत्रियो* के प्रमुख स्थान है। इनके अतिरिक्त *कौशिक सूर्यवशी चन्देल पॅवार, अमेठिया, बघेल* और *चौहान* जैसी क्षत्रिय उपजातियॉ भी इस जनपद मे हे। इस जनपद मे *भूमिहारो* की भी महत्वपूर्ण स्थिति है और इनकी प्रमुख उपशाखाये है— *गौतम किवऱ* और *गौर* तथा *शाही* । इस जनपद के उत्तरी क्षेत्र मे इनका बाहुल्य है। ये मूलत खेतिहर लोग हैं।[26]

वैश्य भी इस जनपद मे सर्वत्र फैले हुए है, यद्यपि इनकी सख्या बहुत नही है। जनपद के

व्यापार– वाणिज्य का अधिकाश इनके नियत्रण मे है।

इस जनपद मे *अहीरो* की सख्या भी बहुत है। ये अधिकाशत कृषि कार्य और दुग्ध उत्पादन मे लगे हुए है। ऐसा कहा जाता है कि वे राजपूतो के साथ यहॉ आए।[27]

कोइरी कुर्मी और कॅहार भी इस जनपद मे है। *कोइरी* लोग कुशल कृषक है और शाक सब्जी उत्पादन मे बेजोड है। इनकी प्रमुख शाखाऍ हैं– *कनौजिया भगतिया कटियॉ* और *जुरीहार*।

जहॉ तक व्यावसायिक समूहो– जातियो का प्रश्न है– इनमे प्रमुख हैं– *बढई लोहार भडभूज छिप्पी दर्जी कोरी कुम्भकार नाई सोनार मल्लाह* और *पटहेरा*।

अनुसूचित जाति जिनकी प्रभावी सख्या इस जनपद मे है की लगभग 40 उपशाखाऍ है। इनमे से अधिकाश अब भी मजदूर वर्ग के लोग है तथा स्वतत्रता के बाद भी इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नही है और जीवन स्तर मे कोई गुणात्मक सुधार नही हुआ है।[28]

2 3 आर्थिक एव वाणिज्यिक पृष्ठभूमि

(अ) कृषि (Agriculture)

[1] भूमि उपयोग प्रतिरूप

भू–लेख से प्राप्त वर्ष 2001–02 के ऑकडो के आधार पर जनपद देवरिया का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 2,52,370 हे है।[29] भूमि उपयोग सम्बन्धी विवरण निम्नवत् है–

सारणी– 2.5

भूमि उपयोग प्रतिरूप, देवरिया जनपद– 2000–01

क्रमाक	मद	क्षेत्रफल (हे)	प्रतिशत
1	वन	260	0 1
2	उसर एव खेती के अयोग्य भूमि	3,692	1 46
3	खेती के अतिरिक्त अन्य उपयोग मे लाई गई भूमि	26,877	10 65
4	कृषि अयोग्य भूमि (बजर)	2,359	0 94
5	स्थायी चारागाह एव अन्य चराई गई भूमि	65	0 03
6	अन्य वृक्षो झाड़ियो बागो आदि के क्षेत्र	3,919	1 55
7	वर्तमान परती भूमि	7,172	2 84
8	अन्य परती भूमि	3,851	1 53
9	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	2,04,175	80 90

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया 2001 पृ0 41

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे सर्वाधिक भूमि कृषि कार्य मे लगी है। इसके पश्चात् कृष्येतर भूमि वर्तमान परती वृक्षो झाडियो बागो आदि के क्षेत्र तथा उसर भूमि आदि का स्थान है।

उपर्युक्त भूमि उपयोग के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्र मे उपलब्ध वर्तमान परती भूमि एव उसर भूमि मे सुधार एव सिचाई साधनो के विकास द्वारा कृषि भूमि के क्षेत्र मे विस्तार की पर्याप्त सभावनाएँ है। इससे न सिर्फ कृषि उत्पादन बढेगा बल्कि क्षेत्र के आर्थिक विकास मे भी सुधार होगा।

[2] कृषि जोत का आकार

कृषि गणना वर्ष 2001–02 के अनुसार जनपद मे कुल जोतो की सख्या 3,46,411 है एव जोतो का कुल क्षेत्रफल 2,10,618 हेक्टेयर है जबकि प्रदेश की कुल जोतो की सख्या 2,00,74,032 ह एव क्षेत्रफल 1,79,85,932 हे है। इस प्रकार जनपद की जोतो की सख्या प्रदेश की जोतो की सख्या का 1 83 प्रतिशत है। जनपद मे प्रति जोत औसत क्षे 0 61 हे है।

सारणी 2 6

देवरिया जनपद के क्रियात्मक जोतो का आकार के अनुसार विवरण [30]

क्रमाक	जोत सीमा	प्रतिशत कुल जोत स	प्रतिशत कुल क्षे स
1	1 0 हे से कम	85 11	50 37
2	1 0 हे से 2 0 हे	9 91	21 65
3	2 0 हे से 4 0 हे	3 94	59 48
4	4 0 हे से 10 0 हे	0 96	8 04
5	10 हे से ऊपर	0 08	1 89
	योग	100 00	100 00

***स्रोत–** सामाजार्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया (2001–2002)*

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हे कि जनपद मे छोटे जोतो का आकार एव क्षे का प्रतिशत काफी ज्यादा है।

सारणी 2 7

प्रदेश मे क्रियात्मक जोतो का आकार के अनुसार विवरण (2001–2002) [31]

क्रमाक	जोत सीमा	प्रतिशत कुल जोत स	प्रतिशत
1	1 0 हे से कम	72 82	31 43
2	1 0 हे से 2 0 हे	15 54	24 41
3	2 0 हे से 3 0 हे	5 28	14 21
4	3 0 हे से 5 0 हे	3 69	15 52
5	5 0 हे से अधिक	2 67	14 43
	योग	100 00	100.00

***स्रोत–** सामाजार्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया (2001–2002)*

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि *जनपद* मे 1 0 हे से कम क्षेत्रफल वाली जोतो का प्रतिशत 85 11 है जबकि *प्रदेश* मे यह प्रतिशत 72 82 है। इसी प्रकार *जनपद* मे जातो के अतर्गत क्षेत्रफल कुल क्षेत्रफल का 50 37 है जबकि *प्रदेश* मे यह प्रतिशत 31 43 है। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद मे छोटी जोतो की सख्या प्रदेश की तुलना मे अधिक है। इसके अनुकूल ही जनपद मे कृषि विकास की योजनाएँ बनाने की नितान्त आवश्यकता है।

[3] कृषि–भूमि उपयोग प्रतिरूप एव शस्य साहचर्य

अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है जिसके कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (252370 हे) का 84 6 प्रतिशत भू–भाग कृषि जोत के अतर्गत है परन्तु 2001–02 मे 80 90 प्रतिशत भू–भाग पर कृषि की गयी जो जनपद का शुद्ध कृषित क्षेत्रफल है। जनपद का सकल कृषित क्षेत्र 3 17 759 हेक्टेयर है। जिसमे *खरीफ रबी* एव *जायद* की फसले होती है। सर्वाधिक कृषित भूमि *खरीफ* (50 46 प्रतिशत) शस्यान्तर्गत है। इसमे प्रमुख फसल धान है जो कछारी भू–भाग तथा सिंचित भू–भागो मे अधिकाशत की जाती है। *रबी* शस्यान्तर्गत 47 55 प्रतिशत क्षेत्र है। इसमे गेहूँ, प्रधान फसल एव सरसो, चना, मटर, आदि अन्य फसले उगाई जाती है। सिंचित भू–भागो मे गेहूँ की प्रमुखता है। *जायद* के अतर्गत 1 81 प्रतिशत क्षेत्र पर सब्जियो की कृषि की जाती है। 0 15 प्रतिशत क्षेत्र गन्ना के अतर्गत है।[32] इसे निम्न सारणी से स्पष्ट किया जा सकता है–

सारणी 2 8

देवरिया जनपद मे विभिन्न शस्यान्तर्गत क्षेत्र का विवरण

शस्य	क्षेत्रफल हे मे	क्षेत्रफल प्रतिशत मे
खरीफ	160366	50 46
रबी	151114	47 55
जायद	5778	1 81
गन्ना	501	0 15
सकल बोया गया क्षेत्र	3,17 759	100

स्रोत– सामाजार्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया (2001–2002)

[4] शुद्ध कृषित क्षेत्र एव सकल कृषित क्षेत्र

वर्ष 2001–02 मे जनपद मे शुद्ध बोया गया क्षेत्र 2,04 175 हे है जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 80 90 प्रतिशत है। एक बार से अधिक बोये गये फसल का क्षे 1 13 584 हे है। जिसका तहसीलवार वर्गीकरण एव जनपद मे प्रतिशत निम्न सारणी से प्रदर्शित किया जा सकता है।

सारणी 29

शुद्ध एव सकल कृषित क्षेत्र का तहसीलवार विवरण[33]

क्रमाक	तहसील	शुद्ध बोया गया क्षे प्रति (जनपद के क्षेत्रफल से)	1 बार सेअधिक बोया गया क्षेत्र प्रतिशत
1	देवरिया	36 02	39 36
2	रुद्रपुर	12 27	19 23
3	सलेमपुर	18 64	17 03
4	बरहज	15 13	11 18
5	भाटपार रानी	13 94	13 20
	योग	100 00	100 00

स्रोत– सामाजार्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया (2001–2002)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि *देवरिया तहसील* मे एक बार से अधिक बाए गए क्षेत्र का प्रतिशत अधिक है उसके बाद क्रमश *रुद्रपुर सलेमपुर भाटपाररानी* एव *बरहज* का स्थान है। एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत उन्ही भागो मे अधिक है जो बागर क्षेत्र के अतर्गत है तथा जहाँ सिचाई सुविधाओ का विकास समुचित मात्रा मे हुआ है।

[5] फसलचक्र एव फसल सघनता [34]

अध्ययन क्षेत्र मे खरीफ एव रबी प्रधान फसले है। ***रबी*** की प्रमुख फसले *गेहूँ, जौ चना* एव *लाही सरसो* तथा ***खरीफ*** की फसलो मे प्रमुखत *धान मक्का अरहर* है। इसके साथ ही *गन्ना चना* एव *सावा* की फसले भी बोयी जाती हैं। वर्ष 2000–2001 मे जनपद की *फसल सघनता* 155 63 रही है। वर्ष 2000–01 मे *रबी* मे बोयी गयी फसलो के क्षे का 91 1 प्रतिशत क्षेत्र *गेहूँ,* 1 82 प्रतिशत *मटर* 1 40 प्रतिशत *आलू,* 1 00 प्रतिशत *जौ,* 0 52 प्रतिशत *चना* तथा 4 16 प्रतिशत क्षेत्र मे अन्य फसले बायी गयी है। वर्ष 2001–01 मे 151114 हे क्षेत्र मे *रबी* की फसल बोयी गयी थी जिसमे *देवरिया सदर तहसील* मे गेहँ का क्षेत्र सबसे ज्यादा है एव सबसे कम क्षेत्र *भाटपाररानी तहसील* का है। अधिक उपज वाले *गेहूँ* की खेती का अधिक प्रचलन होने के कारण *जौ* का क्षेत्रफल प्रतिवर्ष कम होता जा रहा है।[34]

खरीफ की फसल मे कुल बोया गया क्षेत्र 1 60,366 हेक्टेयर था जिसमे *धान* का क्षेत्र *देवरिया सदर तहसील* मे सबसे अधिक एव *भाटपाररानी तहसील* मे सबसे कम रहा है। *मक्का* का क्षेत्र *भाटपाररानी तहसील* मे सबसे अधिक (2 553 हे) एव सबसे कम *बरहज तहसील* का (399 हे) है।

वर्ष 2000–01 मे जनपद मे 2 080 हे मे *लाही* एव अन्य खाने योग्य तिलहनी फसलो को बोया गया है जिसमे *देवरिया तहसील* मे सबसे अधिक क्षेत्र (816 हे) एव *बरहज तहसील* मे सबसे कम क्षेत्र (221 हे) है।

जनपद में *गन्ने* की खेती का महत्वपूर्ण स्थान था परन्तु विगत कई वर्षों से कई चीनी मिलो की दशा जर्जर होने के कारण एव कई बन्द होने के कारण गन्ने का उत्पादन दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है, जिसके फलस्वरूप बाये गये क्षेत्र मे भी कमी होती जा रही है। वर्ष 2000–01

मे *गन्ना* कुल 18227 हे भूमि मे बोया गया था जिसमे *देवरिया सदर* मे सबसे ज्यादा क्षे एव सबसे कम क्षे तहसील *बरहज* का रहा है।

[6] कृषि उत्पादकता

देवरिया जनपद कृषि की दृष्टि से उपजाऊ भू–भाग है। यहाँ कृषि के क्षेत्र मे आधारभूत ढॉचा के विकास का प्रभाव उत्पादकता पर परिलक्षित होने लगा है। 1995 से 1998 के वर्षों के दौरान *मक्का* की उत्पादकता मे सर्वाधिक वृद्धि हुई इसके बाद क्रमश *चना अरहर जौ चावल मटर मूँगफली गेहूँ, लाही–सरसो* का स्थान रहा। क्षेत्र मे *चावल* एव *गेहूँ* जो प्रधान खाद्यान्न फसले है इनमे *चावल* उत्पादकता थम सी गयी है एव *गेहूँ* की उत्पादकता मे ऋणात्मक वृद्धि हुई है।[35] इसे निम्न सारणी से स्पष्ट किया जा सकता है–

सारणी 2 10

देवरिया जनपद मे औसत कृषि उत्पादन एव उत्पादकता, कु /हे (1995–1998)

मुख्य फसले	औसत उपज 1995	औसत उपज 1998	उत्पादकता मे वृद्धि प्रतिशत
1 मक्का	8 51	15 24	79 0
2 चना	4 53	6 74	48 78
3 अरहर	6 99	9 38	34 19
4 जौ	19 32	25 03	29 55
5 चावल	17 40	19 35	11 2
6 मटर	12 21	12 99	6 38
7 मूँगफली	7 75	8 01	3 35
8 गेहूँ	23 22	23 04	(–) 0 77
9 लाही सरसो	6 63	6 43	(–) 3 0

स्रोत– सामाजार्थिक समीक्षा जनपद देवरिया (2001–2002)

[7] सिचाई एव बाढ

सिचाई– कृषि के लिए जल अनिवार्य है जिसकी पूर्ति प्राकृतिक तथा कृत्रिम साधनो द्वारा होती है। सिचाई का प्राकृतिक साधन वर्षा है। वर्षा के अभाव तथा अनिश्चितता के कारण कृत्रिम साधनो द्वारा जल उपलब्ध कराना ही सिचाई कहलाता है। मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता, अनियमितता, असामयिकता तथा विषमता सिचाई की आवश्यकता को अनिवार्य बना देती है।

अध्ययन क्षेत्र मे सिचाई के प्रमुख स्रोत *नहर राजकीय नलकूप निजी नलकूप* एव *पम्प सेट* हैं। जनपद मे *नहरों* की कुल लम्बाई 401 कि मी है। जिससे 30 220 हेक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई होती है। *राजकीय नलकूपो* की सख्या 854 है जिसमे 39,552 हेक्टेयर तथा *निजी नलकूपो* द्वारा 87351 हेक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई की गयी है। इसी प्रकार *कुएँ* 639 हेक्टेयर तथा *तालाब* एव *झील* 1017

हेक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई सुविधा प्रदान करते है। अन्य स्रोतो से 158 हे क्षेत्र मे सिचाई होती है। जनपद मे वर्ष 2000–01 के अनुसार *शुद्ध सिचित क्षेत्रफल* 1 58 937 हेक्टेयर रहा है एव *सकल सिचित क्षेत्रफल* 1 77,819 हे था जो सकल बोए गये क्षेत्रफल का 55 76 प्रतिशत था। जनपद मे वर्ष 1999–2000 के अनुसार सकल बोया गया क्षेत्रफल 317759 हेक्टेयर था। जनपद मे सिचाई के प्रधान स्रोत *नलकूप* है। कुल सिचाई का 79 85 प्रतिशत भाग इनसे सीचा जाता है। उसके बाद *नहरो* से 19 01 प्रतिशत भाग की सिचाई होती है। *तालाब एव झील* से सिचाई बहुत कम क्षेत्रो मे होती है। *झील तालाब* वर्षा पर निभर स्रोत है।[36]

सारणी– 2 11

जनपद मे स्रोतवार सिचाई के साधनो द्वारा सिचाई का विवरण (2000–2001)

सिचाई स्रोत	सिचित क्षेत्रफल (हे मे)	सिचित क्षेत्र का प्रतिशत
नलकूप	1 26 903	79 85
नहर	30 220	19 01
तालाब–झील	1 017	0 64
कुँए	639	0 40
अन्य	158	0 09
योग	1 58 937	100 00

स्रोत– *सामाजार्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया (2001–2002)*

बाढ– यह जनपद बाढ की दृष्टि से काफी सवेदनशील है। इस जनपद का *रुद्रपुर तहसील* का अधिकाश भाग नदियो से आच्छादित रहने के कारण साथ ही *राप्ती* एव *घाघरा* नदी के बीच पतला कछारक्षेत्र है, जो प्राय प्रत्येक वर्ष बाढ की चपेट मे आता है। इसके कारण प्रत्येक वर्ष कृषि एव पशुओ के साथ–साथ जनजीवन को गम्भीर खतरा बना रहता है। इस जनपद मे *छोटी गण्डक, राप्ती, गोर्रा, घाघरा* नदियो के अलावा *मझना नाला, नकटा नाला* तथा *कुर्ना* एव *खनुआ नाला* जो प्राय वर्षा के दिनो मे नदी का रूप ले लेते हैं, इनसे भी काफी क्षति होती है। बाढ नियत्रण कार्य हेतु बाढ़ खण्ड विभाग देवरिया उत्तरदायी है जिसके द्वारा रुद्रपुर एव सलेमपुर तहसील के अतर्गत पडने वाली *राप्ती गोर्रा, घाघरा* नदियो से बचाव कार्य हेतु इस जनपद मे निम्न रणनीति अपनायी गयी है।

(1) बाढ खण्ड द्वारा जनपद मे *घाघरा राप्ती गोर्रा* नदियो एव *कटुआ नाला* के किनारे बाढ से सुरक्षा हेतु तटबन्ध निर्मित कराया गया है। वर्ष 1998 में आयी प्रलयकारी बाढ़ के फलस्वरूप *गोर्रा नदी* के दोनो किनारे पर स्थिति जमीदारी बॉध को लेकर जितने कटाव हुए थे उनके पुन निर्माण का कार्य विभाग द्वारा पूर्ण कर लिया गया है।

(2) विभाग द्वारा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रो मे तीन *गेज स्थल* क्रमश *पिडरा, मेढ़ी, बरहज* मे

स्थापित किये गये हैं, जिसके प्रभारी बाढ खण्ड के सहायक अभियन्ता बनाये गए है तथा उनके साथ तीन या चार अवर अभियन्ता सम्बद्ध कराये गये है जो उनकी देखरेख मे बाढ सुरक्षा कार्यो मे सलग्न रहते है।

इस जनपद मे *गण्डक नहर–3* एव *बाढ कार्य खण्ड* द्वारा बाढ सुरक्षा हेतु 34 बन्धे निर्मित किये गये है जिसकी कुल लम्बाई 223 43 किमी है एव इससे 46 083 हेक्टेयर क्षेत्रफल बाढ से सुरक्षित किया गया है।

वर्ष 1998 मे आयी प्रलयकारी बाढ के अनुभवो को ध्यान मे रखते हुए बाढ काल मे तटबधो तथा उसके किनारे स्थित ग्रामीणो की सुरक्षा हेतु क्षेत्रीय स्तर पर ग्रामवार बाढ सुरक्षा समितियो का गठन वर्ष 1999 मे किया गया है।

[8] जल एव मृदा सबधित पर्यावरणीय समस्याये एव उनका सरक्षण

जल एव मृदा पृथ्वी पर जीवन के आधारभूत ससाधन है। इनके बिना कृषि कार्य की तो कल्पना ही नही की जा सकती। हमारा उत्तरदायित्व है कि हम इसको केवल अक्षुण्ण रूप मे ही नही बल्कि सुधरे हुए रूप मे आगामी पीढियो के लिए सौपे। इसके लिए कृषि विकास की प्रक्रिया मे भूमि ससाधन की वहन क्षमता तथा जल ससाधन की उपलब्धता एव गुणवता तथा इसके सामर्थ्य और पर्यावरण सुरक्षा के पहलुओ की ओर हमे अवश्य ध्यान देना चाहिए। भूमि तथा जल चक्रो के बीच तालमेल का सम्बन्ध बनाने के लिए कार्यक्रम तैयार करने की उपलब्ध भूमि की उपलब्धता बढ़ाने उत्पादकता फिर से प्राप्त करने भूमि का फिर से सुधार करने और कम उपजाऊ भूमि का विकास करने व ग्रामीण क्षेत्रो मे जीवन स्तर मे सुधार लाने की आवश्यकता को लेकर कृषि तथा इसके अन्य आनुषगिक माध्यमो से अध्ययन क्षेत्र के लोगो के लिए समृद्धि लायी जा सकती है।

अध्ययन क्षेत्र नेपाल से लगे तराई क्षेत्र के समीप स्थित है, जहॉ नेपाल से निकलने वाली अनेक नदियॉ जनपद से होकर गुजरती है तथा अपने रास्ते मे पानी के तेज बहाव एव आयतन के कारण कटाव तथा बाढ़ की समस्या उत्पन्न करती हैं। साथ ही तराई क्षेत्र होने के कारण जनपद मे भूमिगत जल स्तर अन्य जनपदो की तुलना मे अपेक्षाकृत कम है। जनपद मे भूमि एव जल सरक्षण सम्बन्धी मुख्य समस्याओ मे जल भराव (वाटर लॉजिग) मृदा के उपरी परत का क्षरण, नदियो के तेज बहाव से इसके किनारे स्थित कृषि एव अकृष्य भूमि का कटाव बढती जनसख्या के कारण अत्यधिक पेड़ पौधो एव वनस्पतियों का नाश, उसर भूमि तथा समुचित भू–सरक्षण तकनीक न अपनाये जाने के कारण उबड़–खाबड भूमि तथा परती भूमि का होना है। जनपद मे मुख्यत *घाघरा, छोटी गण्डक, राप्ती, गोर्रा,* आदि नदियॉ अपने बहाव मे किनारे स्थित

उपयोगी भूमि का कटाव करती है तथा वर्षा ऋतु मे अत्यधिक जल के कारण बाढ की समस्या पैदा करती है जो बाद मे पक सिल्ट छोड जाती है। इससे बहुमूल्य कृषि भूमि का काफी क्षेत्र प्रभावित होता है तथा कृषि उत्पादन एव उत्पादकता कम हो जाती है।[37]

सरक्षण के उपाय

इन समस्याओ के निदान हेतु यह आवश्यक है कि जनपद मे भूमि एव जल सरक्षण तकनीक का अधिकाधिक प्रयोग किया जाय जिससे इन समस्याओ का यथा सम्भव निदान हो सके। इन उन्नतशील तकनीको मे मृदा के ऊपरी परत के कटाव को रोकने हेतु *'फिल्ड बन्ड 'कन्टूर बन्ड चकरोड* आदि का निर्माण आवश्यक है। जलभराव की समस्या के निदान हेतु उपर्युक्त नियोजन कर *ड्रेन* आदि का निर्माण उपयोगी होगा। इसी प्रकार जल सरक्षण तथा मतस्य पालन आदि हेतु अधिकाधिक तालाब एव पोखरो का निर्माण उपयोगी होगा। मृदा कटाव की रोकथाम हेतु नदियो नालो के किनारे तथा कृषि एव अकृष्य भूमि मे उपयुक्त प्रजाति के घास झाडी तथा पेडो का रोपड आवश्यक है। नदियो से आने वाली बाढ की रोकथाम हेतु नदियो का गहरा किया जाना तथा उससे निकली मिटटी का उपयोग इसके दोनो तरफ बॉध बनाने मे किया जाना उचित होगा।

उपरोक्त समस्याओ तथा उसके सुझाये गए निदान को दृष्टिगत रखते हुए जनपद मे वर्तमान भूमि सरक्षण इकाई की स्थापना वर्ष 1993 मे की गयी। *भूमि सरक्षण इकाई देवरिया* द्वारा विगत वर्षों मे जनपद के विभिन्न समस्याग्रस्त क्षेत्रो मे ड्रेन निर्माण तालाब निर्माण नाला स्थिरीकरण, जलबॉध निर्माण मेडबन्दी समतलीकरण घास रोपण, पौध रोपण, तथा लघु सिचाई कार्यक्रम के अन्तर्गत बोरिंग एव पुल निर्माण आदि कार्यों का निष्पादन किया गया है। इन कार्यो के निष्पादन हेतु विगत वर्षों मे *सुनिश्चित रोजगार योजना जवाहर रोजगार योजना दस लाख कूप योजना, विधायक निधि, राष्ट्रीय जलागम एव जलमग्न योजना* आदि योजनाओ मे प्राप्त धनराशि से उपरोक्तानुसार कार्यों का निष्पादन किया गया। परन्तु वर्तमान मे *राष्ट्रीय जलागम योजना* के अतर्गत *बैतालपुर* विकासखण्ड तथा *राष्ट्रीय जलमग्न योजना* के अन्तर्गत विकासखण्ड *गौरीबाजार* मे ही धनराशि प्राप्त होने के कारण कार्यों का निष्पादन हो पा रहा है।

[9] कृषि वैशिष्ट्य

अध्ययन क्षेत्र का मुख्य आर्थिक क्रिया–कलाप कृषि है। प्रागैतिहासिक काल से ही यहाँ पर कृषि कार्य प्रारम्भ हो गया था। इस क्षेत्र मे कृषि एव पशुपालन मे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। वैसे उन्नत प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र मे यत्रीकरण का प्रभाव क्षेत्र मे भी पड़ रहा है फिर भी पशुपालन की महत्ता कायम है।

[10] पशुपालन

जनपद आरम्भिक काल मे पशुधन सम्पन्न था परन्तु अब बढते यत्रीकरण के फलस्वरूप इसकी सख्या निरन्तर कम होती जा रही है। अब कृषि कार्य का ये पूरक नही रहा बल्कि केवल दुधारू पशुओ का ही महत्व रह गया है। जनपद मे पशुधन की विभिन्न नस्लो मे चौपाए ही अधिक प्रमुख है।

अध्ययन क्षेत्र मे वर्ष 1993 की पशुगणना के अनुसार पशुओ की कुल सख्या 7 98 121 थी जिसमे प्रतिशत सख्या क्रमानुसार *गौजातीय महिषवशीय भेड बकरा—बकरी घोडे एव टट्टू* एव *सुअर* का है।

1997 के पशुगणना के समय ये पशुसख्या घटकर 6 08 971 हो गयी। इसमे मात्र 4 वर्षो मे 1 89 150 पशुओ की कमी हो गयी। सर्वाधिक कमी *भेडो* और *गौजातीय* पशुओ मे हुयी।

[11] मत्स्य पालन

जनपद के ग्रामीण अचल मे तालाब पोखर के रूप मे ग्रामपचायत के स्वामित्व के अतर्गत विभिन्न आकार के कुल 1 835 तालाब *(जलक्षेत्र 866 हे)* उपलब्ध है। इनमे 1 521 तालाब विकसित जलक्षेत्र के रूप मे उपलब्ध है जिसमे तकनिकी विधि से मत्स्य पालन कार्य सम्पादित किया जा रहा है। मत्स्य बीज उपलब्ध कराने हेतु ***खुखुन्दू*** मे *हैचरी'* की स्थापना की गयी है।

[ब] ऊर्जा (Energy)

1 ऊर्जा उपभोग

ऊर्जा प्रत्येक आर्थिक गतिविधि को किसी न किसी रूप मे अवश्य प्रभावित करती है और इसकी उपलब्धता तथा लागत पर राष्ट्र का आर्थिक भविष्य प्रगति तथा जनता का जीवन स्तर निर्भर करता है। अन्य विकासशील देशो की तरह भारत मे भी ऊर्जा की आवश्यकता गैर वाणिज्यिक स्रोतो जैसे लकडी, उपले, बेकार कृषि पदार्थों आदि और वाणिज्यिक स्रोतो जैसे बिजली, कोयला, तेल तथा परमाणु ईधन से पूरी होती है। विद्युत ऊर्जा की सबसे सुविधाजनक और उपयोगी किस्म है। इसलिए अन्य ऊर्जा साधनो की तुलना मे इसकी मॉग बहुत अधिक तेजी से बढ़ी है।[38] उद्योग और कृषि दोनो क्षेत्रो मे विद्युत की महत्वपूर्ण भूमिका है। अत बिजली की खपत की मात्रा देश मे उत्पादकता और विकास दर की सूचक होती है। इसे देखते हुए विकास कार्यक्रमो मे विद्युत—विकस को उच्च प्राथमिकता दी गयी है। विद्युत सविधान की *समवर्ती सूची* मे सम्मिलित है, इसलिए इसके विकास की जिम्मेदारी केन्द्र और राज्यो दोनो पर है।[39] इसके साथ ही निजी क्षेत्र मे भी विद्युत उत्पादन किया जाता है। केन्द्र मे विद्युत विभाग विद्युत ऊर्जा के विकास और इसके उत्पादन, संरक्षण, वितरण एव सरक्षण का कार्य देखता है।

अध्ययन क्षेत्र विद्युत उत्पादन की दृष्टि से निर्धन है। यहाँ कोई भी विद्युत उत्पादन गृह नही है वरन् बाहर से प्रेषित विद्यु त पर ही जनपद का सम्पूर्ण विकास कार्य अवलम्बित है।

वर्ष 1999–2000 तक केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण के अनुसार 4 737 ग्रामो तथा 10 नगरो को विद्युतीकृत किया जा चुका है। विद्युतीकृत गॉवो की सख्या कुल आबाद ग्रामो की 72 2 प्रतिशत है। वर्ष 1998–2000 मे 18 ग्रामो को विद्युतीकृत एव 26 पम्पसेट/नलकूपो का ऊर्जन किया गया। न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अतर्गत अधिक से अधिक ग्रामो को विद्युत सुविधा पूर्ण करने हेतु योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही है।

सारणी– 2 12

जनपद मे विभिन्न कार्यों मे विद्युत उपभोग (ह कि वा घ)

क्रम सं	मद	1997–98	1999–2000	कुल उपभोग मे प्रतिशत अश
1	2	3	4	5
1	घरेलू प्रकाश एव लघु विद्युत शक्ति	46563	87839	87 3
2	वाणिज्यिक प्रकाश एव लघु विद्युत शक्ति	4381	4568	4 54
3	औद्योगिक विद्युत शक्ति	12182	1715	1 70
4	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	604	17	0 016
5	रेल / ट्रेक्सन	–	–	
6	कृषि विद्युत शक्ति	76251	6065	6 03
7	सार्वजनिक जलकल एव मल प्रवाह उर्ध्दन व्यवस्था	849	30	0 03
	योग	140830	100534	100 00

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका– 2001 पृष्ठ– 63–64

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्ष 1999–2000 मे विद्युत की सर्वाधिक खपत घरेलू प्रकाश एव लघु विद्युत शक्ति मे हो रही है। कृषि मे 6 03 प्रतिशत एव उद्योग मे 1 70 प्रतिशत की बिजली खपत, उद्योग एव कृषि विकास की दयनीय स्थिति को ही सूचित करते है। यदि इस खपत की तुलना 1997–98 के ऑकडो से करे तो विगत तीन–चार वर्षों मे जहॉ घरेलू प्रकाश वाणिज्यिक प्रकाश एव लघु विद्युत शक्ति की खपत मे भारी वृद्धि हुई है वही कृषि एव उद्योग मे क्रमश 92 प्रतिशत एव 86 प्रतिशत की कमी हुयी, जो एक चिन्तनीय प्रवृत्ति है। ये क्षेत्र मे विकास की अधःप्रवृत्ति को ही सूचित करता है।

1980–81 से 1999–2000 के दौरान ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्युतीकरण के लक्ष्य मे तीव्र वृद्धि हुयी है। 1980–81 मे जनपद मे जहाँ मात्र 32 प्रतिशत गॉवो मे ही विद्युत पहुँची थी वही 1999–2000 तक यह प्रतिशत बढ़कर 72 2 के अक तक पहुँच गया।

[स] औद्योगिक स्थिति

उद्योग को मानव जाति के विकास की कुजी कहा जाता है परन्तु अध्ययन क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछडा हुआ है। यहॉ कृषि आधारित उद्योग के विकास की पर्याप्त सभावनाऍ है और उद्योगो का विकास भी इसी आधार पर हुआ भी है पर वर्तमान मे उनकी स्थिति भी बहुत ही निराशाजनक है।

क्षेत्र मे वृहद् उद्योग के अतर्गत गन्ना पर आधारित *चीनी उद्योग* का विकास हुआ। प्राचीन काल मे भी खाडसारी उद्योग के रूप मे यह विकसित था, परन्तु वर्तमान औद्योगिक इकाइयो की स्थापना के साथ वे विनष्ट हो गये। चीनी उद्योग की वर्तमान ईकाइयॉ–*प्रतापपुर गौरीबाजार भटनी देवरिया* एव *बैतालपुर* मे स्थापित हैं।

जनपद लघु उद्योग के विकास मे भी काफी पिछडा हुआ है। इसके अतर्गत यहॉ मुख्य रूप से *इजीनियरिंग वर्क्स फूड स्टफस ऑयल इण्डस्ट्रीज गुड उद्योग विद्युत बल्ब प्लास्टिक उद्योग पिंटिग प्रेस* आदि विकसित हैं। कृषि पर आधारित लघु उद्योगो के विकास की यहॉ पर्याप्त सभावनाऍ है। कुटीर उद्योगो का विकास ग्रामीण क्षेत्रो मे हुआ है।

[द] परिवहन व्यवस्था

परिवहन तन्त्र आर्थिक विकास का मुख्य आधार है। किसी क्षेत्र मे परिवहन साधनो का वैसा ही महत्व है जैसा कि मानव शरीर मे रक्त वाहिनी धमनियो का होता है। देश मे कृषीय और औद्योगिक उत्पादन कार्यक्रम परिवहन व्यवस्था के विकास से सम्बद्ध हैं। विकसित परिवहन व्यवस्था से कृषि–विकास और औद्योगिकीकरण मे सहायता मिलती है। परिवहन साधनो के पर्याप्त विकास होने पर देश के सामाजिक जीवन मे कुछ ऐसे परिवर्तन होते हैं, जिनसे आर्थिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है।[40] किसी भी देश–प्रदेश या क्षेत्र के सतुलित विकास के लिए एकीकृत परिवहन तत्र की आवश्यकता होती है। परिवहन के माध्यम से *क्षेत्रीय विशिष्टीकरण'* का लाभ पिछडे क्षेत्रो को भी मिल जाता है। इस प्रकार परिवहन जाल पिछडे क्षेत्रो मे भी ससाधनो के उपयोग को बल देकर वृद्धि एव विकास की स्थिति उत्पन्न करेगा।[41] आर्थिक विगलन राजनैतिक विखण्डन और सामाजिक दूरियो को, एकीकृत एव समन्वित परिवहन जाल से ही खत्म किया जा सकता है। उपभोग एव उत्पादन बिन्दुओ मे सयोजन गॉव एव शहर से सम्बन्ध स्थापित करने तथा प्राकृतिक आपदा के समय ये बहुत ही सार्थक सिद्ध होते है। परिवहन तन्त्र न केवल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को एकीकृत करता है, वरन् स्थानीय बाजारो को राष्ट्रीय बाजार से और राष्ट्रीय बाजार को अतर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ता है।[42] *कैनन* महोदय के अनुसार *"परिवहन के अतिरिक्त कोई दूसरा ऐसा महत्वपूर्ण साधन नही है जो किसी भी अविकसित क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक एव सास्कृतिक प्रगति मे तीव्र विकास ला सके।"*[43] क्षेत्रीय विकास के

विभिन्न स्तरो एव परिवहन साधनो के विकास मे गहन अतर्सम्बन्ध मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रो के आर्थिक विकास मे तो परिवहन साधनो का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है।

परिवहन तन्त्र क्षेत्र की भौगोलिक दशाओ से प्रभावित होते हैं। देवरिया जनपद एक समतल भू–भाग है जहॉ पर सडक एव रेल परिवहन का विकास सुगमतापूर्वक हुआ है। प्राचीन काल मे नदियॉ एव सडके प्रमुख परिवहन का साधन रही है परन्तु वर्तमान समय मे परिवहन के प्रमुख साधन रेल मार्ग एव सडक मार्ग है।

अध्ययन क्षेत्र मे आधुनिक परिवहन मार्गो (मुख्यत सडक एव रेल) का विकास अग्रेजी शासन काल मे प्रारम्भ हुआ था। इससे पूर्व इस क्षेत्र मे जल परिवहन अधिक महत्वपूर्ण था। जल मार्ग पर स्थित *हेतिमपुर, रुद्रपुर गौराबरहज तरकुलवा, भागलपुर* मुख्य व्यापारिक सेवाकेन्द्र थे। ये केन्द्र *छोटी गण्डक राप्ती, घाघरा– गगा जलमार्ग* द्वारा व्यापार के लिए देश के विभिन्न भागो से जुडे हुए थे। किन्तु रेल परिवहन के विकास तथा सडको के निर्माण के कारण जल परिवहन का महत्व धीरे–धीरे कम होने लगा और अब लगभग समाप्त हो गया है।

(क) रेल परिवहन

अध्ययन क्षेत्र मे रेल मार्ग निर्माण का कार्य *बगाल और उत्तरी–पश्चिमी रेलवे (बी एन डब्ल्यू आर)* के अतर्गत मई 1882 से प्रारम्भ हुआ। 15 जनवरी 1885 को इसे परिवहन के लिए खोल दिया गया। 14 मई 1952 को जब भारतीय रेलवे को *जोन* मे विभाजित किया गया तब यह *उत्तरी–पूर्वी रेलवे जोन* के अतर्गत सम्मिलित किया गया जिसका मुख्यालय ***गोरखपुर*** मे स्थापित किया गया।

जनपद के रेल मार्ग को निम्न भाग मे बॉटा जा सकता है।

[i] गोरखपुर–सोनपुर–जक्शन ट्रक लाइन– यह लाइन गोरखपुर से मझना नाला को पार करते ही जनपद मे प्रवेश करती है। देवरिया–सलेमपुर–भाटपाररानी तहसील होते हुए दक्षिण–पूर्व दिशा मे बिहार के सोनपुर को चली गयी है। यह बड़ी लाइन है तथा इस पर निम्न प्रमुख रेलवे स्टेशन स्थित हैं– *गौरी बाजार बैतालपुर, देवरिया सदर, अहिल्यापुर, नूनखार भटनी जक्शन नोनापार, भाटपार रानी बनकटा।*

[ii] भटनी– औरिहार–इलाहाबाद मुख्य लाइन– यह लाइन जनपद मे मात्र 27 किलोमीटर की दूरी तक ही विस्तृत है। इस जनपद मे इस पर निम्न स्टेशन है– *पेड़कोल, सलेमपुर, लार रोड, तुर्तीपार।*

[iii] भटनी– बरहजबाजार ब्रान्च लाइन– यह लाइन जनपद मे मात्र 20 किमी तक

TRANSPORT NETWORK OF DEORIA DIST (2002)
N
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
MAIN DISTRICT ROAD
& OTHER DISTRICT ROAD
PWD ROAD
RAIL LINE
6 0 6 KM
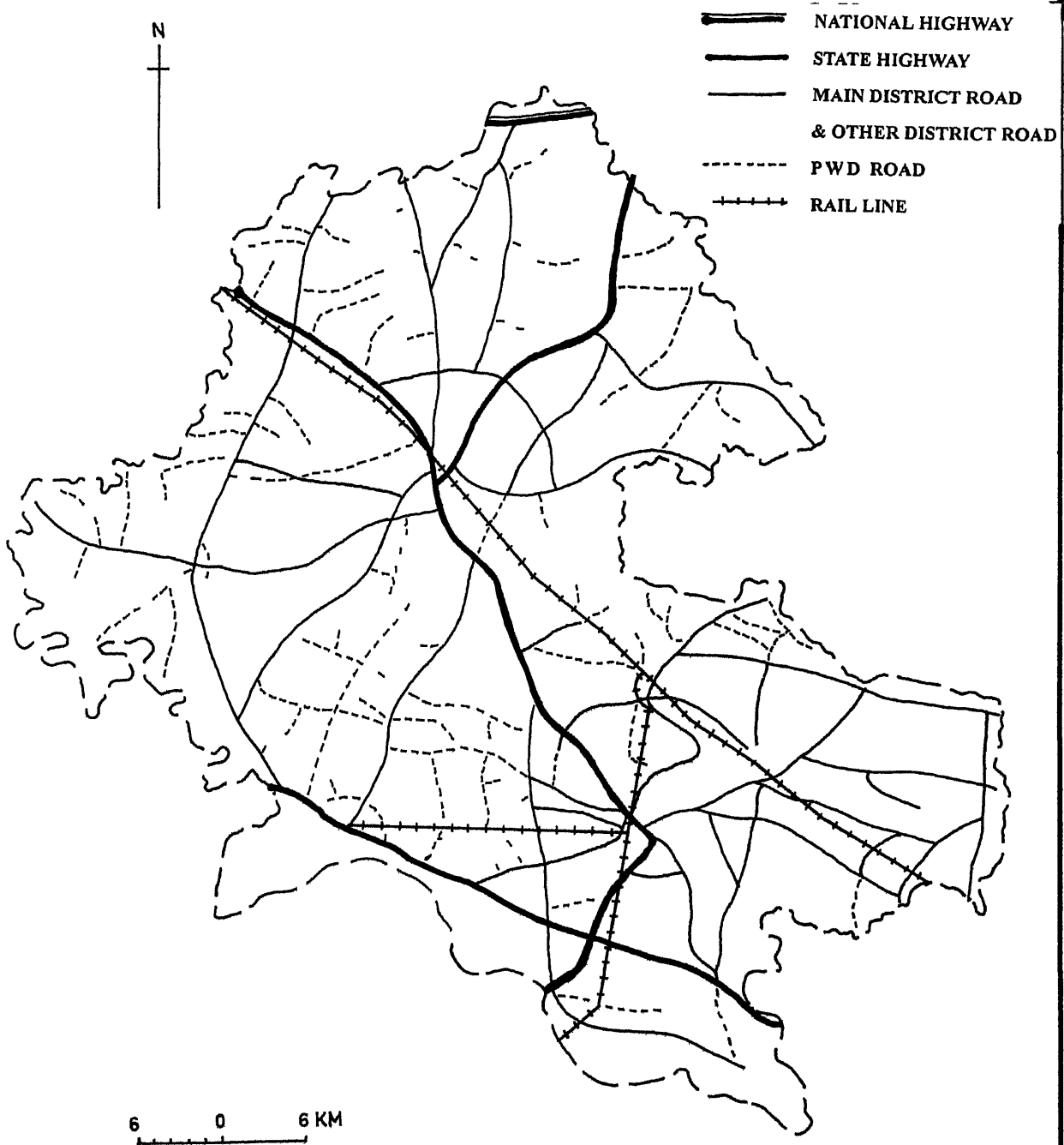
FIG 26

ही विस्तृत है। इस लाइन को 1 दिसम्बर 1897 को यातायात के लिए खोला गया। इस पर मुख्य स्टेशन है– *सतरॉव* और *बरहज बाजार*।

इस प्रकार उपरोक्त रेल लाइनो के साथ जनपद मे रेल लाइनो की कुल लम्बाई 111 किमी है जिनमे सभी लाइने बडी लाइन ही है।

(ख) सडक परिवहन

सडक क्षेत्र का सबसे प्राचीन परिवहन मार्ग है। अपेक्षाकृत कम लागत के कारण रेल मार्गो की तुलना मे सडको का अधिक विकास हुआ है। सडको पर परिवहन साधनो की विविधता तथा मात्रा के कारण सड़को के स्वरूप मे पर्याप्त अन्तर मिलता है। सडको का आधुनिक महत्व इसी शताब्दी के आरम्भिक वर्षों से बढा जब मोटर गाडियो के अत्यधिक प्रचलन से द्रुत सडक परिवहन रेल परिवहन की बराबरी करने मे समर्थ हुआ। अब दोनो परिवहन माध्यम एक–दूसरे के पूरक हो गए है। प्रत्येक सेवाकेन्द्रो को रेलमार्गो से जोडना असभव है किन्तु प्रत्येक सेवाकेन्द्र को सडको से जोडा जा सकता है। रेलमार्गो को सडको से जोडकर अभिगम्यता और बढायी जा सकती है। इसलिए लोच विश्वसनीयता एव गति को सडक परिवहन की मुख्य विशेषता बताया गया है।

अध्ययन क्षेत्र मे स्वतत्रता के पश्चात् विभिन्न नदियो पर पुलो का निर्माण सडको का निर्माण तथा उनको पक्का करने की गति मे तीव्रता आयी जिससे क्षेत्र मे सडको का जाल बिछ गया है चित्र (2 6)। अध्ययन क्षेत्र मे सडको का जाल बिछ गया है। बाढ का प्रभाव सडको के विकास मे बाधक रहा है। सम्प्रति क्षेत्र मे राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रादेशिक राजमार्ग तथा अन्य सडके है।

[य] सचार

पिछड़े क्षेत्रो के विकास मे सचार साधनो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सचार माध्यमो से नवीनताओ का प्रसरण होता है जो पिछडेपन को दूर करने मे सहायक होता है। विकसित सचार सेवाये आधुनिक समय की अनिवार्य आवश्यकता है। सदेश विचार एव सुचनाओ इत्यादि के आदान–प्रदान को सचार कहते है। सचार माध्यमो को *व्यक्तिगत सचार माध्यम* तथा *जनसचार माध्यम* मे विभक्त किया जा सकता है। ***व्यक्तिगत सचार माध्यम*** के अतर्गत *डाक तार* तथा *दूरभाष* आदि आते हैं। ये वैयक्तिक सेवाये प्रदान कर विकास को बढावा देते हैं। *रेडियो, दूरदर्शन पत्र–पत्रिकाऍ* तथा *सिनेमा* आदि ***जनसचार*** के माध्यम हैं।

जनपद मे 276 डाकघर 21 तारघर 668 पी सी ओ तथा 5,931 टेलीफोन है।

[र] श्रम एव रोजगार

31 मार्च 2001 को जनपद के सार्वजनिक क्षेत्र मे 17 419 तथा निजी क्षेत्र मे 4,831 व्यक्ति विभिन्न प्रकार के रोजगार मे लगे हुए थे। इस प्रकार कुल 22,250 व्यक्तियो में से *निजी क्षेत्र* का

प्रतिशत 21 7 एव *सार्वजनिक क्षेत्र* का प्रतिशत 78 3 है। जनपद मे एक सेवायोजन कार्यालय स्थित है जिसमे वर्ष 2000–01 मे 30 782 बेरोजगारो ने प्रतीक्षारत व्यक्तियो के रूप मे नामाकन कराया है।

इस जनपद मे वर्ष 2000–01 मे कुल 61 पजीकृत कारखानो मे से 29 कारखाने कार्यरत है जिनमे 8696 श्रमिक कार्यरत है। जनपद मे विभिन्न सेक्टरो मे कार्यरत श्रमिको का विवरण निम्नवत है–

सारणी– 2 13

विभिन्न सक्टरो मे कार्यरत श्रमिको का विवरण 2001

विभिन्न सेक्टर	कार्यरत श्रमिक सख्या
कृषक	3 47,089
कृषि श्रमिक	1 69 406
पशुपालन एव बागवानी	2 255
खान खोदना	338
कुटीर उद्योग	858
अन्य उद्योग	22 176
निर्माण	4 084
व्यापार–वाणिज्य	34 949
यातायात–सचार	6 385
अन्य कर्मकार	57 575

★★★★★

References

1 *Varun, D P , 'Gazetteers of Deoria, Govt Press Allahabad P 1*

2 *I bid p 1*

3 *सामाजार्थिक समीक्षा, जनपद–देवरिया (2001–2002) पृ 4*

4 *वही पृष्ठ–5*

5 *सदर्भ सख्या 1 पृष्ठ–3*

6 *सदर्भ सख्या– 1 पृष्ठ 3*

7 *सदर्भ सख्या 1 पृ 5*

8 *वही*

9 *वही पृष्ठ 9*

10 *संदर्भ– 1 पृष्ठ 10*

11 *वही, पृष्ठ 11–13*

12 *बसु, जे के कैथ डी सी रामाराव एम एस बी भारत में मृदा सरक्षण उ प्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (लखनऊ) हिन्दी संस्करण।*

13 Singh M, 'Land Utilization in North-Eastern Uttar-Pradesh an unpublished thesis, 1960, Agra pp 79-80

14 Singh R L 'India- A Regional Geography'- 1971, p-204

15 Mukerji, R K (1938) 'The Changing face of the Bengal, Calcutta, pp 33-34

16 सामाजार्थिक समीक्षा जनपद देवरिया 2001–2002 कार्यालय अर्थ एव सख्याधिकारी देवरिया अर्थ एव सख्या प्रभाग राज्य नियोजन सस्थान उत्तर प्रदेश पृष्ठ 6

17 सदर्भ 16 पृष्ठ 7

18 सदर्भ 16 पृष्ठ 7

19 सदर्भ–वही पृष्ठ–7

20 उत्तर प्रदेश एक अध्ययन–2003 प्रतियोगिता साहित्य सीरीज पृ –32

21 Tripathi, R S, 'History of Kannauj to the Muslim conquest', pp 302-324

22 सदर्भ 16 पृष्ठ 9

23 वही पृष्ठ 8

24 वही पृष्ठ–7

25 उ प्र डिस्ट्रिक्ट गजेटियर देवरिया 1988 पृष्ठ–52

26 पार्श्वोद्धृत पृष्ठ–53

27 पार्श्वोद्धृत पृष्ठ–53

28 उ प्र डिस्ट्रिक्ट गजेटियर देवरिया 1988 पृष्ठ–55

29 विकास के बढ़ते कदम जनपद देवरिया सूचना एव जनसपर्क विभाग देवरिया– पृष्ठ–46

30 वही पृष्ठ– 46

31 वही पृष्ठ– 46

32 सामाजिक आर्थिक समीक्षा जनपद–देवरिया 2001–02 अर्थ एव सख्या प्रभाग राज्य नियोजन सस्थान उत्तर प्रदेश पृष्ठ– 14–15

33 सदर्भ– 32 पृष्ठ–15

34 सदर्भ 32 पृष्ठ– 15–16

35 सदर्भ–32 पृष्ठ–16

36 सदर्भ 32 पृष्ठ–22–24

37 वही पृष्ठ 17

38 भारत सूचना और प्रसारण मत्रालय प्रकाशन विभाग नई दिल्ली– 1986 पृ 457

39 वही पृष्ठ– 458

40 मिश्र एस के व पुरी, वी के भारतीय अर्थव्यवस्था' 1991 पृ 867।

41 कुरैशी एम एच, 'भारत ससाधन और आर्थिक विकास, एन सी ई आर टी 1998 पृ 102

42 वही पृ 101

43 Cannon, A M, 'New Railway Construction and the Pattern of Economic Development of East Africa, Transactions', I B C No -36, June 1965 pp 21

अध्याय-तीन

सेवाकेन्द्रों का उद्भव–विकास

3 1 सेवाकेन्द्रो के उद्भव विकास को प्रभावित करने वाले कारक

किसी भी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास मे वहॉ की ऐतिहासिक एव भौगोलिक परिस्थितियो का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये सेवाकेन्द्र किसी क्षेत्र मे अकस्मात् प्रकट नही होते बल्कि उस क्षेत्र के *भौतिक आर्थिक सामाजिक एव सास्कृतिक* कारक सम्मिलित रूप मे इसके उद्भव एव विकास को सम्पन्न करते है। सेवाकेन्द्र मानव अधिवासो के अभिन्न अग होते है। अत इनका उद्भव एव विकास मानव अधिवासो की स्थापना से सम्बधित होता है। उपर्युक्त कारको के बदलते समीकरणो के कारण अधिवासो के महत्व एव आकार मे वृद्धि होती है अथवा वे ह्रास को प्राप्त होते है।[1]

प्रत्येक पूर्ण विकसित केन्द्र या बडा नगर एक छोटी बस्ती या स्थान के रूप मे प्रारम्भ होता है जिनका अस्तित्व भिन्न–भिन्न जटिल भौतिक एव मानवीय कारको पर आश्रित रहता है। एक बार किसी स्थान पर सेवाकेन्द्र के जन्म ले लेने पर तथा उसके कार्य करने पर अनेक राजनैतिक–ऐतिहासिक तत्व उसकी विकास की अवस्थाओ को निर्धारित करने के लिए प्रभावित करते रहते है।[2]

इस प्रकार सेवाकेन्द्रो के उद्भव, विकास एव वितरण को प्रभावित करने वाले कारको को दो प्रमुख भागो मे बॉटा जा सकता है– ***भौतिक*** एव ***मानवीय***।

(अ) भौतिक कारक

सेवाकेन्द्र अवश्यमेव एक मानवीय रचना है परन्तु ***भौतिक कारक*** ही इसके प्रारभिक आधार के रूप मे कार्य करते है। इसके अतर्गत *धरातल का स्वरूप, जल की उपलब्धता परिवहन मार्ग* आदि प्रमुख हैं। भौतिक कारक सेवाकेन्द्रो के आधार को निर्धारित करते है। इनमे जल की उपलब्धि एक प्रमुख कारक है। जलमार्गो द्वारा स्थानीय यातायात की सुविधा भी मिलती रही है। विशेषकर प्राचीन काल मे जब परिवहन के अन्य साधनो का विकास नही हुआ था। यही कारण है कि, प्राचीन काल मे जब वर्तमान बडे–बडे केन्द्रो की आधार स्थापना हुयी तो उनको एक छोटी बस्ती या निर्माण के रूप मे बहुसुरक्षित प्राकृतिक आधार धरातलो पर बसाया गया और आज भी अधिकाश केन्द्र भिन्न–भिन्न नदियो के किनारे ही प्राय स्थित पाये जाते हैं।

(ब) मानवीय कारक

धरातल का स्वरूप मृदा जल की उपलब्धि एव विकास आदि भौतिक कारको के द्वारा प्राप्त

सुविधाओ या सीमाओ के मूल आधार पर मानवीय कारक प्रतिक्रिया करना प्रारम्भ करते है। *प्रशासकीय कारक यातायात मार्ग* तथा *आर्थिक विकास का स्वरूप एव अवस्था*— ये अत्यन्त शक्तिशाली ***मानवीय कारक*** हैं। जो केन्द्रो के उद्भव एव विकास पर प्रभाव डालते है। अतएव भौतिक तथा मानवीय दोनो कारक एक दूसरे के पूरक रहे है तथा परस्पर समन्वित रूप से कभी पूर्वगामी तथा कमी अनुगामी होकर कार्य करते है। सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास के लिए इन कारको के अतिरिक्त अन्य शक्तियॉ भी उत्तरदायी होती हैं जिन्हे हम दो वर्गो मे विभाजित कर सकते है।

प्रथम— कृत्रिम या प्रशासकीय शक्तियॉ

द्वितीय— प्राकृतिक रूप से क्षेत्र की सामाजिक— आर्थिक आवश्यकताओ के द्वारा स्वत प्रेरित होकर उत्पन्न शक्तियॉ।

विश्लेषण

प्रशासकीय मुख्यालय या केन्द्र सुरक्षा केन्द्र या स्थल, किले क्षेत्रीय राजधानियॉ महल औद्योगिक आवास स्थल आदि कृत्रिम शक्तियो के परिणाम हैं। दूसरी ओर भिन्न—भिन्न सामाजिक सास्कृतिक एव आर्थिक आवश्यकता के लिए सेवाकेन्द्रो की स्वाभाविक आवश्यकता भी होती है। ऐसा स्थान सामान्यतया क्षेत्र के केन्द्र मे स्थित होता है और उस क्षेत्र के लिए जिसकी आवश्यकताएँ केन्द्र से पूरी होती है का मुख्य केन्द्र भी होता है। इन केन्द्रो का जन्म सामान्यतया मेले के स्थान, साप्ताहिक बाजार मदिर या धर्मस्थल मार्ग केन्द्र इत्यादि के रूप मे होता है। इन स्थानो की स्थिति मध्यवर्ती होनी चाहिए तथा परिवहन मार्गो द्वारा सेवाक्षेत्रो से सबद्धता भी होनी चाहिए। जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र को सेवाये प्राप्त हो सके।

सेवाकेन्द्रो के विकास के निम्न प्रेरक तत्व है—

(क) विनिमय प्रक्रिया

वस्तुओ एव आवश्यकताओ का विनिमय एक प्राथमिक आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति के लिए सेवाकेन्द्रो का जन्म होता है। इसके अतिरिक्त कोई नई बस्ती भी सेवाकेन्द्र के रूप मे विकसित हो सकती है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है जहॉ पर जनसख्या वैयक्तिक रूप से अपनी प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक सभी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए आत्मनिर्भर और स्वतत्र हो। इसके लिए बहुगम्य केन्द्र स्थान की आवश्यकता होती है और इस प्रकार एक स्थानीय बाजार की उत्पत्ति हो सकती है। विशेषत मध्यवर्ती सगम स्थलो पर। एक बड़े प्रदेश मे जहॉ सेवाकेन्द्र पहले से ही कार्य कर रहे हो, नये केन्द्र उन्ही मध्यवर्ती बिन्दुओ पर जन्म ले सकते हैं जो वर्तमान केन्द्रो से काफी दूर सेवा पूर्ति की प्रभावकारी सीमा से बाहर स्थित होते हैं।

(ख) क्षेत्रीय आवश्यकता

क्षेत्र की आर्थिक आवश्यकताओ मे वृद्धि या परिवर्तन के साथ–साथ केन्द्र मे भी परिणामत परिवर्तन होना आवश्यक है। आर्थिक दृष्टिकोणो से अधिक सम्पन्न क्षेत्रो मे केन्द्रीय वस्तुओ तथा सेवाओ की मॉग अधिक तथा ऊँचे किस्म की होती है। इसलिए क्षेत्रीय केन्द्र अधिक सम्पन्नता को प्राप्त होते हैं। जैसे–जैसे केन्द्रीय वस्तुओ की मॉग बढती जाती है वैसे–वैसे पुराने केन्द्रो की सेवा क्षमता बढती जाती है या सीमावर्ती बिन्दुओ पर नये केन्द्रो का विकास होता है।

(ग) प्रशासकीय क्रियाएँ

कृत्रिम या प्रशासकीय कारको का भी कम महत्व नही है। ये कारक न केवल कुछ केन्द्रो की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी होते है अपितु ये केन्द्रस्थलो के भावी विकास मे भी सहायक होते है। पहले की प्रशासकीय बस्तियॉ इस समय बडे केन्द्रो के रूप मे विकसित हो गयी है। कुछ अन्य केन्द्र राजधानी या मुख्यालय होने के कारण ही समृद्ध हो गये है।

(घ) परिवहन सबद्धता

सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास मे परिवहन मार्ग (नदी मार्गों को लेकर) एक महत्वपूर्ण कारक है। परिवहन मार्गों के केन्द्रो पर ही प्राय वाणिज्य या बाजार केन्द्रो का जन्म होता है। यदि किसी वर्तमान केन्द्र मे परिवहन अथवा गमनागमन की सुविधा बढा दी जाती है तो उसकी सेवा क्षमता भी बढ जाती है, जिससे दूरस्थ क्षेत्र भी उसके प्रभाव मे आ जाते है और सेवा प्रदेश का विस्तार हो जाता है। यदि परिवहन के साधन तीव्रतर है तो यह दूरी और भी कम हो जायेगी (समय के सदर्भ मे)। परिवहन मार्गों एव साधनो के अभाव मे सेवाकेन्द्र और उनके प्रभाव क्षेत्र प्रभावशाली ढग से एक दूसरे से सम्बद्ध नही हो सकते।

(ङ) कार्यात्मक आधार

कार्यात्मक आधार भी सेवाकेन्द्रो के विकास का एक प्रेरक तत्व है जो प्राय सेवाकेन्द्रो के उद्भव के लिए भी उत्तरदायी होता है। प्राचीनकाल के बहुत से केन्द्रो का ह्रास इसलिए हो गया क्योकि उनकी कार्यात्मक प्रेरणा समाप्त हो गयी। सेवाकेन्द्रो के वृद्धि और उसके जीवित रहने के लिए आवश्यक है कि वह अपने समीपवर्ती क्षेत्रो को सेवाये प्रदान करता रहे। यदि कोई केन्द्रीय कार्य कृत्रिम या प्राकृतिक शक्तियो के द्वारा सेवाकेन्द्र मे जोडा जाता है तब उसका विकास और अधिक तीव्रतर होगा। सेवाकेन्द्रो के विकास के आर्थिक कारको (मानवीय कारको सहित) की सख्या दो है–

प्रथम– सेवाकेन्द्रो मे वस्तुओ एव सेवाओ की सेवा पूर्ति की मात्रा तथा क्षेत्र की आर्थिक व सामाजिक सास्कृतिक आवश्यकताएँ।

द्वितीय– केन्द्रो और क्षेत्र के बीच की आर्थिक दूरी।

प्राचीनकाल मे अधिकाश केन्द्रो का जन्म प्रशासकीय प्रभाव केन्द्रो, धार्मिक स्थानो क्षेत्रीय केन्द्रो तथा राजनैतिक राजधानियो के रूप मे हुआ है तथा केन्द्रो को सामाजिक–आर्थिक आधार बाद मे प्रदान किये गये। इन केन्द्रो के निर्धारण मे मुख्यत आधार–धरातल और अवस्थिति की भौतिक सीमाओ का प्रभाव रहा है। आधुनिक एव मध्यकालीन नगरो मे से कुछ का जन्म एक विशेष प्रकार की बस्ती निमार्ण से हुआ तथा वहॉ पर केन्द्रीय कार्यो का विकास बाद मे हुआ।

3 2 अध्ययन क्षेत्र (देवरिया जनपद) मे सेवाकेन्द्रो के पुरातात्विक स्थल

पुरातात्विक प्रमाणो से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे प्रागैतिहासिक काल से ही मानव अधिवासो का विकास हुआ। आर्यावर्त मे स्थित उस क्षेत्र मे आर्यकालीन सभ्यता पल्लवित एव विकसित हुईं। प्राचीन काल मे यहॉ नदियो के किनारो पर तथा वनाच्छादित भू–भाग के अतर्गत मानव बस्तियॉ बसी और कालान्तर मे सेवाकेन्द्रो के रूप मे रूपान्तरित हो गयी।

ऐतिहासिक काल मे अध्ययन क्षेत्र आर्य सभ्यता के *कोशल राज्य* के अतर्गत समाहित था। पौराणिक आख्यानो के अतिरिक्त इस क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो से सम्बन्धित अनेक पुरातात्विक स्थल मूर्तियो प्रतिमाओ, सिक्को, ईंटो मदिरो–मठो के अवशेषो एव स्तूपो आदि के रूप मे पूरे जनपद मे बिखरे हुए हैं। इन स्रोतो से ज्ञात होता है कि अपने आरभिक काल मे यह क्षेत्र सभ्यता एव सस्कृति के क्षेत्र मे उत्कर्ष पर था।

कार्लायल ने देवरिया गोरखपुर सयु क्त जनपद के सर्वेक्षण के उपरान्त यह मत प्रकट किया था कि इस जनपद मे जितने प्राचीन स्थल है, उतने इस देश के किसी भी जनपद मे नही तथापि इसे जनपद का दुर्भाग्य कहे या पुरातत्व के सयोग तत्व की प्रबलता कि यहॉ का पूर्ण ऐतिहासिक परिदृश्य बहुत स्पष्ट नही हो सका है।

इस जनपद के निकटवर्ती क्षेत्रो से *नवपाषाणकाल* के अवशेष, लघु पाषाणिक प्रस्तर उपकरण तथा चटाईदार मृद्माण्ड के अवशेषो की प्राप्ति *ताम्राश्य सस्कृतियो* से इस क्षेत्र का सम्बन्ध प्रमाणित करते हैं। समीपर्ती जनपदो से अन्न के जले हुए दानो तथा भूसी युक्त मृद्भाण्डो के अवशेष यह प्रमाणित करते है कि इस क्षेत्र की सस्कृति का सम्बन्ध लगभग 8000 ई0 पूर्व की *विन्ध्य गागेय धान्य सस्कृति* से था और सर्वप्रथम *धान* की खेती *विन्ध्य क्षेत्र गगा घाटी एव सरयूपार* मे आरम्भ हुई थी। जनपद के ***मदनपुर*** से चित्रित धूसर पात्र के अवशेष मिले हैं। *मदनपुर* रुद्रपुर तहसील मे *राप्ती* नदी से थोडी दूर पर स्थित है। यहॉ *एन वी पी, मृण्मूर्तियॉ* तथा *एक सिली के अवशेष* भी प्राप्त हुए हैं [3]। सलेमपुर तहसील मे भागलपुर से 4 किमी पूरब *घाघरा* से थोड़ी दूर पर ग्राम ***सहिया*** के पास *हन्द पोखर* से *काले लाल मृदभाण्ड* के अवशेष मिले हैं।[4] इसमे सन्देह नहीं है कि पुरास्थलों की दृष्टि से जनपद समृद्ध है लेकिन *मदनपुर* और *हन्द पोखर*

के अतिरिक्त अन्य स्थलो का सम्बन्ध ऐतिहासिक काल की सस्कृतियो से है। रुद्रपुर तहसील मुख्यालय के पास *सहनकोट* या *नाथनगर* मे पुरावशेषो का विशाल टीला हे, जिसके पूर्वी छोर पर स्थित दुग्धेश्वरनाथ मदिर एव परिसर मे ब्राह्मण धर्म की विभिन्न देव प्रतिमाये तथा जैन प्रतिमा है [5]। *दयाराम साहनी* ने 1906–7 मे यहॉ काले पत्थर की जिस विष्णु प्रतिमा की खोज की[6] वह *गुप्तकालीन* मूर्ति शिल्प की एक उत्कृष्ट कलाकृति है। इसके अतिरिक्त *फ्यूरर* को यहॉ जैन महावीर एव गणेश की नृत्य–मूर्ति की सूचना मिली थी।[7] रुद्रपुर के आस–पास 25 अन्य दैव मदिरो के ध्वसावशेष भी दृष्टिगोचर हुए थे जिनपर शिवलिग स्थापित थे।[8] रुद्रपुर से सटे पश्चिम एक टीले से *कार्लायल* को एक खण्डित जैन प्रतिमा मिली थी जिसकी चरण चॉकी पर *कुटिल लिपि* मे क्षतिग्रस्त एक अभिलेख (तिथ्याकित स0– 1161) अकित था।[9] वहॉ से लगभग 9 किमी दक्षिण–पूरब *बराव* और *समोगर* मे भी ध्वसावशेष देखे गये थे।[10] इसी तहसील मे *राप्ती– सरयू (घाघरा)* के प्रवाह क्षेत्र मे अन्य पुरास्थल भी है जहॉ के पुरावशेष धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे है। आज भी *घाघरा* के बॉये किनारे पर *बरहज* के आस–पास *सुरैनाडीह सोनवाडीह* तथा *देईडीहा* मे प्राक्कुषाण कुषाण मध्यकालीन अवशेष दृष्टव्य हैं। इनमे लाल काले तथा लाल मृदभाण्ड बाउल्स उन्नत गर्दन के पात्र मानव मूर्तियॉ दॉवेदार ईंटे एव मोटे–भद्दे मृद्भाण्ड उल्लेखनीय है। स्वय *बरहज* भी एक पूर्व मध्यकालीन नगर हैं जहॉ के नीलकण्ड मदिर मे शिव का मुख भाग या लिग नन्दी तथा नृवराह पूजक की मूर्तियॉ एव समीप के गेट पर बने मन्दिर मे एक विष्णु प्रतिमा के होने की सूचना है। एक लेखक ने यहॉ की नृवराह पूजक प्रतिमा का मूल्याकन करते हुए यह अनुमान व्यक्त किया है कि *गुर्जर–प्रतिहार* शासक *मिहिरभोज (836–885 ई) के कलचुरि सामत गुणाम्बोधि देव* ने पहले *बरहज* मे अपनी राजधानी बनायी।[11] यह भी कल्पना की गयी कि उस कलचुरि सामत ने अपने स्वामी की उपाधि ***आदि बराह"*** के अनुरूप स्थान का नामकरण ***बरहज'*** किया होगा। लेकिन इस धारणा की अभी अन्यथा पुष्टि नही हो पायी है।

जनपद की सलेमपुर तहसील मे सलेमपुर से लगभग 4 5 किमी दक्षिण–पश्चिम स्थित *सोहनाग* एक महत्वपूर्ण पुरास्थल है। वर्तमान सदी के आरम्भ मे यहॉ जो सर्वेक्षण किये गये उनमे यहॉ के जलाशय के तटवर्ती टीले को स्तूप एव विहार ध्वसावशेष बताया गया। किन्तु वे पुरातत्वविद् सर्वेक्षण कर्ता बौद्धधर्म एव साहित्य तथा पूर्वी उत्तर–प्रदेश मे स्थित उसके पुरास्थलो की व्यापकता से इतने अभिभूत थे कि उन्हे प्रदेश के अधिकाश ध्वसावशेषो मे स्तूप और विहार ही दृष्टिगोचर होते थे। जबकि वास्तविकता उससे परे होती थी। उस समय टीले पर परशुराम मन्दिर शिव मदिर तथा बौद्ध मूर्तियॉ दृष्टिगोचर हुईं। शिवमन्दिर के काले पत्थर की लिग प्रतिमा तथा गौरीशकर की युगल मूर्ति प्रतिष्ठित थी। टीले के निचले भाग मे झारखण्डी महादेव के मन्दिर मे शिवलिग व बौद्ध प्रतिमाये थी। *फ्यूरर* ने *सोहनाग* को एक रोचक स्थल बताते हुए कहा था कि वहॉं पुरातात्विक खोज की अच्छी सभावनाये हैं।[12] *घाघरा* के तट पर स्थित इसी तहसील के *भागलपुर* में लगभग 17' ऊंचे एव 5' की परिधि वाले गोल एकाश्मक स्तम्भ पर 10 वीं शताब्दी

की *कुटिल लिपि* मे 21 पक्तियो का एक लेख है जिसकी आरम्भिक तीन पक्तियाँ इस प्रकार है।

भुजगागक नाम भूषित विष्णु

वक्ष ( ) स्थलराजि कोस्तुभो विमर्ति रम्योरसि।

सूर्यान्चये दशरथ प्रयितो वभूव ।[13]

इससे मात्र इतनी ही सूचना मिल पाती है कि इस स्तम्भ की स्थापना किसी *सूर्यवशी* वैष्णव मतानुगामी राजा ने की थी।

सलेमपुर एव देवरिया के बीच स्थित *खुखुन्दू* मे महत्वपूर्ण प्राचीन नगर के ध्वसावशेष है जो अब लुप्त होते जा रहे है *कनिघम* के सर्वेक्षण एव उत्खनन के समय वहाँ कुल 30 टीले थे जिनपर मन्दिर दीवार खचित ईटो के अवशेष शिव पार्वती– नन्दी गणेश की प्रतिमाये लिग–विग्रह विष्णु मूर्तियाँ नवग्रह प्रस्तर खण्ड तीर्थंकर प्रतिमाएँ स्तूप आदि के अवशेष विद्यमान थे। इन्हे देखकर *कनिघम* ने कहा था कि नालन्दा को छोडकर अन्यत्र इतनी पुरासम्पदा नही है। उत्खनन मे यहाँ से ऐसे अवशेष व अभिलेख मिल सकते है जिनसे ब्रह्मण धर्म के विकास पर नया प्रकाश पड सकता है। यह वही *विशाल ग्राम* हो सकता है जिसका उल्लेख *ह्वेनसाग* ने कसया से बनारस के मार्ग मे कसया से 200 ली0 (30 मील) दक्षिण–पश्चिम की ओर किया है जहाँ के एक धनी ब्राह्मण ने अपना सारा धन एक बौद्ध सक्षराम के अलकरण मे व्यय कर दिया था। चीनी यात्री *खुखुन्दू, कहॉव भागलपुर* होकर *घाघरा* पारकर बनारस पहुँचा होगा[14] लेकिन *कार्लायल* ने चीनी यात्री द्वारा वर्णित *विशाल ग्राम* का समीकरण *रुद्रपुर* के साथ किया है।[15] जो सही नही जान पडता। *फ्यूरर* ने भी प्रकारान्तर से इन पुरावशेषो का उल्लेख किया है यथा– नीले पत्थर की चतुर्भुज विष्णु मूर्तियाँ तथा पॉच अवतार मूर्तियाँ लिग–विग्रह शिव–पार्वती व गणेश की मूर्तियाँ मन्दिरो के प्रस्तर न्यास पुष्पालकृत घुमावदार ईंटो के टुकडे, आदिनाथ शातिनाथ पार्श्वनाथ और महावीर की मूर्तियाँ आदि।[16] वहाँ *फ्यूरर* को मूर्ति शिल्प का एक उत्कृष्ट नमूना भी मिला जिसमे दो नग्न परन्तु विरल आभूषण पहने पुरुष–स्त्री की आसनमुद्रा की युगल मूर्ति थी। स्त्री की बाहो मे एक शिशु था। यह युगल मूर्ति *वर्धमान महावीर* के पिता और माता– *नाथ* एव *त्रिशला* की थी।[17] एक विद्वान ने *खुखुन्दू* को रघुवशी राजा *ककुत्स्य* अथवा *पुष्पदन्त नाथ (काकुत्स्य)* की जन्मभूमि एव राजधानी *(काकुत्स्य नगरी–काकन्दी)* बताया है और *खुखुन्दू* के आस–पास *पइलहॉ, जैतपुरा, मेहजा, दानवपुर, भीष्म नरौली सग्राम नरौली, खेम नरौली महाराजपुर पड़ौली अटहर महवार शुकरौली सुरहा, खीरसर, अवदालपुर मटहर व कुलहा* आदि ग्रामो को पौराणिक एव जैन परम्परा का स्मृतिशेष निरूपित किया है।[18] *भट्दोजि दीक्षित* के समय भी *काकन्दी जनपद* प्रसिद्ध था।[19]

खुखुन्दू से 11 किमी दक्षिण ग्राम *कहॉव* से उत्तरी छोर पर एक 34′–3″ ऊँचा एकाश्मक स्तम्भ तथा कुछ अन्य अवशेष सुविदित हैं। स्तम्भ के आधार एव शीर्ष पर जैन आकृतियाँ तथा मध्य भाग पर गुप्तकालीन ब्राह्मी मे 12 पक्तियो का अभिलेख उत्कीर्ण है जिसका प्रयोजन *गुप्त सम्राट*

स्कन्दगुप्त के शासन काल (स0—141) मे *मद* द्वारा पॉच तीर्थंकर प्रतिमाओ के दान का अकन है।[20] इस समय इस ग्राम का नाम *ककुम'* था। अन्य पुरावशेषो मे कूप ध्वस्त जैन मन्दिर तथा अनेक जलाशय भी उल्लेखनीय है। स्वय गॉव भी विशाल टीले पर स्थित है। *कनिघम* के अनुसार कभी यहॉ बोध गया के मन्दिर की शैली के लगभग 30 ऊँचे मन्दिर थे जिनमे तीर्थंकरो की मूर्तियॉ प्रतिष्ठित थी।[21] यहॉ का उक्त स्तम्भ सिह शीर्ष से युक्त था। यह वर्गाकार वर्तुलाकार बहुकोणीय आदि विभिन्न ज्यामितीय आकारो मे तराशा गया है। इसका निम्नतर भाग अशोक के स्तम्भो की तरह उलटे घटे या कमल पुष्प की तरह है जिसके ऊपर बने वर्गो मे दिगम्बर प्रतिमाये है। इसमे एक ताखे मे पार्श्वनाथ की प्रतिमा है।[22] वर्तमान समय मे *कहॉव गॉव* का क्षेत्रफल 244 84 हेक्टेयर है जिसमे 131 परिवार निवासित हैं। इसकी जनसख्या 845 है[23]। इस प्रकार इतनी कम जनसख्या घनत्व से विदित होता है कि यह ऐतिहासिक गॉव पुनर्निवासित हो रहा है। इस गॉव को वर्तमान समय मे *गौरा बरहज* तहसील मुख्यालय से पक्की सडक से जोड दिया गया है जिससे विकास की गति तीव्र हो रही है।

सलेमपुर मे ही *छोटी गण्डक* है बॉए तट पर स्थित *मझौली* मे *फ्यूरर* ने चार शैव मन्दिर एक गढी तथा राजप्रसाद देखा था।[24] जैसा कि स0 1892 के एक दस्तावेज से प्रमाणित होता है। औरगजेब के समकालीन राजा *बोध मल्क* के समय मे *मझौली राज्य* की स्थापना हुई थी। *मझौली* का उल्लेख *पटना* की एक पत्थर की मस्जिद मे लगे एक फारसी अभिलेख मे भी हुआ है जिसके अनुसार उस मस्जिद के निर्माण की सामग्री मझौली के एक मन्दिर को ध्वस्त कर उससे तथा एक किले से प्राप्त कर ले जायी गयी थी।[25] यहॉ के अन्य पुरावशेषो मे महिषासुर मर्दिनी दुर्गा की एक मूर्ति तथा दीर्घेश्वरनाथ महादेव मन्दिर के ध्वसावशेष भी उल्लेखनीय है।[26]

इसी तहसील मे जनपद के पूर्वोत्तर छोर पर मैरवा रेलवे स्टेशन से लगभग 11 किमी उत्तर स्थित *दोन बुजुर्ग* गाँव के पूर्वी छोर पर जो ध्वसावशेष है उन्हे स्थानीय लोग *'द्रोण का घर'* कहते है। यहॉ के बहुत से पुरावशेष खोद कर निकाल लिये गए हैं और अब देखने को नही मिलते। यहॉ ईंटो की मोटी फर्श भी थी। गॉव भी पूरब की ओर पसरे हुए ध्वसावशेषो के टीले पर बसा है। यहॉ से प्राप्ट ईंटो का औसत आकार है। यहॉ से ताम्र और स्वर्णमुद्राओ के मिलने की सूचना भी मिली है। लेकिन वे किसी पुरातत्वेत्ता को देखने को नही मिली।[27] *दोन* एव *मठिया* गॉव के बीच एक खेत से *गाहड़वाल नरेश गोविन्द चन्द्र* का (वि0 1176—1120) दो ताम्रफलको पर उत्कीर्ण *दान शासन* प्राप्त हुआ है।[28] जिसका प्रयोजन *गोविन्दचन्द्र* द्वारा *द्रोणायण पड* के *वत्सगोत्रीय* ब्राह्मण *दुल्टाइच शर्मा* को *अलापवत्तल* के *बड़ग्राम* के दान का अकन करना है।[29] पालि साहित्य के विभिन्न सस्करणो मे उल्लिखित *द्रोणग्राम* के *धूस्त्र गोत्रीय* ब्राह्मणो[30] तथा उक्त अभिलेख मे सदर्भित *वत्स गोत्रीय* ब्राह्मणो के *द्रोणायण पड* की पहचान इस *दोन बुजुर्ग* के साथ की जा सकती है। *बुद्ध* के अस्थि अवशेषों को विभक्त करने वाला *द्रोण ब्राह्मण* भी इसी ग्राम का

निवासी रहा होगा।

सदर तहसील मे देवरिया से लगभग 15 किमी उत्तर *करुना नाले* के पास *भरोली* तथा *बभनी* मे ध्वसावशेष मन्दिरो के अवशेष एव शैव मूर्तियॉ देखी जा चुकी है। यहॉ मृतिका दुर्ग की प्रतिमा स्पष्ट दृष्टिगोचर हुई[31]

देवरिया से 7 किमी दक्षिण दक्षिण–पश्चिम स्थित *सुरौली ग्राम* मे काफी विस्तार मे फैले हुए ध्वसावशेषो का टीला देखा गया। जिसके चतुर्दिक *परिया* को *लक्षित* करते हुए *फ्यूरर* ने यहॉ किसी दुर्ग के अस्तित्व का अनुमान किया था।[32]

उपर्युक्त स्थलो के विवेचन से जनपद के अतीत का जो चित्र उभरता है उसमे विभिन्न धर्मो की झॉकी दिखाई पडती है। यहॉ *ब्राह्मण बौद्ध* एव *जैन* तीनो धर्मों का सुन्दर समागम था और उनके प्रभाव से समिश्र समन्वयकारी सस्कृति का विकास हुआ। पूर्व मध्यकाल मे यहॉ *शैव धर्म* का प्रभाव बढा जिसका कारण *बौद्ध धर्म* के पतोन्मुख काल मे इस क्षेत्र पर ***काशी*** की *शैव परम्परा* का प्रभाव रहा होगा। इस दृष्टि से ***रुद्रपुर*** को *छोटी काशी* भी कहा जा सकता है।

3 3 अध्ययन क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(अ) प्राचीनकाल

अध्ययन क्षेत्र का इतिहास आर्य सभ्यता से प्रारम्भ होता है। *महाराजा मनु* ने मध्य देश मे अपना साम्राज्य स्थापित किया। उनके बडे पुत्र *इक्ष्वाकु* इस क्षेत्र के प्रथम शासक बने तथा *कोशल राज्य* मे *इक्ष्वाकु वश* की स्थापना हुई। इस वश के विभिन्न पराक्रमी राजाओ यथा– *मान्धाता हरिश्चन्द्र सगर, भगीरथ, दीलीप रघु दशरथ* और *राम* तथा उनके पुत्रो ने इस क्षेत्र पर राज्य किया। *महाभारत काल* मे यहॉ धार्मिक प्रवृत्ति के राजा राज्य करते थे जिन्हे *भीम* ने अपना आधिपत्य स्वीकार कराया। प्राचीन नगर *काहोन* के भग्नअवशेष तथा एक प्रस्तर पर *भीमसेन की लात* की आकृति जनपद से प्राप्त हुयी हे। कालान्तर मे यह क्षेत्र *मल्लो* के अधीन आ गया। जो *पावा (फाजिलनगर)* एव *कुशीनारा (कुशीनगर)* से शासन करते थे। *मल्लो* का राज्य गणतत्रात्मक था।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी मे यह *मल्ल* शासित राज्य *कोशल* के सोलह महाजनपदो[33] मे से एक हो गया। जिसमे *बुद्ध* के समकालीन *प्रसेनजित* का इस क्षेत्र पर प्रभुत्व था। *कुशीनगर* एव *पावा* के *मल्ल भगवान बुद्ध* और *महावीर* के अनुयायी थे।[34] *महावीर* यहॉ अक्सर आते रहते थे। कैवल्य प्राप्ति से पूर्व उन्होने यहॉ अपना अतिम धर्मोपदेश दिया था[35], जिसे *काशी* और *कोशल* राज्य के अठारह सघटनो (*नौ मल्ल* एव *नौ लिच्छवियो*) ने सुना था।[36] *भगवान बुद्ध* का इस क्षेत्र पर प्रमुख धार्मिक प्रभाव था जो इस क्षेत्र के *सोहनाग, साहिया, भागलपुर, खुखुन्दू* आदि क्षेत्र मे पाए जाने वाले बुद्ध की प्रतिमाओं, मूर्तियो, स्तूपो मठों, टीलो आदि के अवशेषो से स्पष्ट है। *भगवान बुद्ध*

महापरिनिर्वाण के पूर्व *बसाढ(बिहार)* से *कुशीनारा* के लिए आते समय *पावा* मे रुके थे तथा वही पर उन्होने एक सुनार जाति के *चन्द* नामक व्यक्ति के यहॉ अपना अतिम भोजन ग्रहण किया था।[37] बुद्ध के निर्वाण के पश्चात यहॉ उनके अस्थियो को लेकर अनेक राज्यो एव मल्ल शासको के बीच गभीर विवाद उत्पन्न हो गया। परन्तु *द्रोण* की मध्यस्थता से सघर्ष टला और अस्थियो को *आठ भागो* मे विभाजित कर प्रत्येक राज्यो को दे दिया गया। इन्ही अस्थियो के अवशेष पर *आठ स्तूपो* का निर्माण हुआ जिसमे से *दो* स्तूप इस जनपद मे निर्मित हुए एक *कुशीनगर* (कुशीनगर जनपद) एव दूसरा *पावा* मे।

पॉचवी शताब्दी ई0 पूर्व के आरम्भ मे ***मगध*** के उत्कर्ष के साथ *अजातशुत्रु* के समय मे इस क्षेत्र के *मल्लो* का राजनीतिक [38] महत्व कम हो गया। इस समय यह क्षेत्र कोसल और मगध के मध्य एक *तटस्थ क्षेत्र (Buffer)* के रूप मे ही रह गया। *चौथी शताब्दी ईसापूर्व* मे इसपर मगध के शासक *महापद्‌मनन्द* के अधीन रहा। इस दौरान *मल्ल* शासको ने *नन्द* की अधीनता स्वीकार कर अपने अस्तित्व को बनाये रखा। 321 ई0 पूर्व मे *चन्द्रगुप्त मौर्य* द्वारा नदवश के विनाश और मौर्य वश की स्थापना के साथ यह क्षेत्र मौर्य सम्राज्य के अधीन आया। इस समय यहॉ के मल्ल शासको का सम्बन्ध मौर्य शासको से मित्रतापूर्ण एव सम्मानपूर्ण बने रहे। मौर्यवश के प्रतापी शासक *सम्राट अशोक* ने *उपगुप्त* के साथ *कुशीनगर* की यात्रा की और यहॉ पर दो स्तूपो का निर्माण कराया।

185 ई पूर्व मे *पुष्यमित्र शुग* ने मौर्य शासक *वृहद्रथ* की हत्या कर शुग वश की स्थापना की। इसी के साथ मौर्य वश तथा कुशीनगर एव पावा के *मल्ल* शासको का भी अस्तित्व समाप्त हो गया।[39] इसके पश्चात यह क्षेत्र क्रमश *शक* और *कुषाणो* के आधिपत्य मे रहा। अध्ययन क्षेत्र मे अनेक स्थानो से प्राप्त कुषाण शासको *विम कडफिसस* और *कनिष्क* के सिक्के इस बात की पुष्टि करते है।[40] *कनिष्क (78 से 120 ई0)* तक इसके क्षेत्र के इतिहास पर परदा पडा रहा।

चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा गुप्त साम्राज्य की स्थापना (320 ई0) के साथ यह क्षेत्र गुप्त साम्राज्य के अधीन आ गया। *चन्द्रगुप्त द्वितीय (380—415 ई0)* के काल मे चीनी बौद्ध यात्री *फाह्‌यान (400—411)* इस क्षेत्र मे भ्रमण करने आया और *कुशीनगर* रूका[41]। मौर्य शासक *कुमारगुप्त* ने यहॉ के स्तूपो की मरम्मत कराई इस क्षेत्र से कुमारगुप्त के 16 चॉदी के सिक्के प्राप्त हुए है। *कुमार गुप्त* के शासन काल मे निर्मित *काहोन* के प्रस्तर स्तम्भ क्षेत्र मे *दृष्टव्य* है।

510 ई0 मे गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् इस क्षेत्र पर *भर* शासको का आधिपत्य हो गया। ***छठी*** शताब्दी मे कनौज के *माखिरी* शासको का इस क्षेत्र पर आधिपत्य रहा। *मौखिरी* शासक *हर्षवर्धन (606—647 ई0)*[42] के समय यहॉ पर शाति व्यवस्था बनी रही तथा इसी समय चीनी यात्री *ह्वेनसाग* भी देवरिया आया। इसने *कुशीनगर* का नाम *'कौ—सुल्ह—ना—का' (Kou-Sulh-Na-Ka)*[43] रखा। *हर्षवर्धन* ने इस क्षेत्र विशेषकर *कुशीनगर* के विकास के लिए

काफी धन देकर विकास किया।[44] हर्ष की मृत्यु के पश्चात् पुन केन्द्रीय शक्तियो का ह्रास हुआ और क्षेत्र का इतिहास पुन ***नौवी*** शताब्दी तक अधेरे मे रहा। इस बीच का क्षेत्रीय इतिहास स्पष्ट नही है।

नौवी शताब्दी मे यह क्षेत्र *कन्नौज* के आधिपत्य मे चला गया जिस पर *राजा भोज* के शासन काल मे इस क्षेत्र पर कल्चुरी राजा *गुनामबोधिदेव* का शासन स्थापित हुआ।[45]

11वी शताब्दी मे इस क्षेत्र के पूर्वी भाग *नवापार (सलेमपुर)* मे *बिसेन* का शासन स्थापित हुआ[46]। बाद मे सम्पूर्ण जनपद पर गहडवाल राजा *गोविन्द चन्द्र (1114–1154 ई0)* का आधिपत्य हो गया। इनके नाती *जयचन्द्र* को (1194 ई0 मे)[47] *सिहाबुद्दीन गोरी* ने परास्त किया जिससे गहडवाल शक्ति समाप्त हो गयी। इस समय इस क्षेत्र के बिसेन क्षत्रियो ने अपने को सलेमपुर मझौली मे स्वतत्र घोषित कर लिया। परन्तु शेष भाग पर भरो का शासन कायम रहा।

(ब) मध्यकाल

दिल्ली सलतनत के काल मे *सुल्तान दास वश* और *खिलजी वश* के शासन काल मे इस क्षेत्र पर इनका मामूली नियत्रण रहा। 1353 मे तुगलक शासक *फिरोज तुगलक* के बगाल अभियान *(हाजी इलियास साह के विरुद्ध)* के समय यहॉ के स्थानीय शासको मझौली के *बिसेन* और गोरखपुर के *उदयसिह* ने उसे अपना सहयोग प्रदान किया। कालान्तर मे यह क्षेत्र *शर्की* शासको के अधीन रहा पर इस क्षेत्र पर इनका प्रभावशाली नियत्रण नही रहा। यहॉ तक कि *शेरशाह* तक के काल का भी कोई ऐसा प्रमाण नही मिलता है कि उसका इस क्षेत्र पर पूरा नियन्त्रण रहा हो। इस प्रकार ***14वी*** शताब्दी तक इस क्षेत्र पर मझौली के *बिसेनो* का प्रभुत्व बना रहा। इसके पश्चिम मे इस समय *डोमवारो* का भी अस्तित्व बना रहा। पर ***14वी*** शताब्दी के मध्य मे *चन्द्रसेन* ने *डोमवारो* को परास्त कर *सतासी राज* की स्थापना की। प्रारम्भ मे इनका *बिसेनो* से अच्छा सम्बन्ध बना रहा[48] परन्तु बाद मे दक्षिण मे रुद्रपुर के क्षेत्र को लेकर दोनो मे सघर्ष होने लगा जो लगभग एक शताब्दी तक चला।

1556 ई मे *अकबर* के राज्यारोहण के साथ इस क्षेत्र का इतिहास स्पष्ट होने लगता है। इस समय यह सम्पूर्ण क्षेत्र मुगल सत्ता के अधीन था। कालान्तर मे *अकबर* के *जनरल फिदाई खान* एव *राजा मझौली* के बीच सघर्ष हुआ। राजा परास्त हुए। *अकबर* ने इस क्षेत्र *नेवापार* की भूमि को *शेख सलीम चिस्ती* को दान में दे दिया तथा *सलीम चिस्ती* के नाम पर इस क्षेत्र का नाम ***सलेमपुर*** रखा।[49] बाद मे *अकबर* ने *राजा सतासी* को भी परास्त कर सम्पूर्ण राप्ती क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। 1572 ई के आस–पास इस क्षेत्र पर *पयिण्डा मुहम्मद बगश* शासक नियुक्त हुए।

1596 ई में जब *अकबर* ने अपने साम्राज्य को प्रशासनिक दृष्टि से सूबो मे विभाजित किया। तो यह क्षेत्र *अवध सूबा* के अतर्गत *गोरखपुर सरकार* के अतर्गत आया। इस समय *सिधुआ जोबना, सलेमपुर* और *शाहजहॉपुर* इसके परगना बनाए गए। उत्तर–पश्चिम मे एक छोटा क्षेत्र हवेली

परगना के अधीन लाया गया।

1625 ई मे *सतासी* के राजा *बसत सिह* ने मुगल गवर्नर पर हमला कर के गोरखपुर का स्वतत्र शासक अपने आपको घोषित किया। यह स्थिति *औरगजेब* के पूर्व तक बनी रही। इस बीच दिल्ली को कोई राजस्व अदा नही किया गया। 1680 ई मे *काजी खलिल–उल–रहमान* गोरखपुर का कलक्टर नियुक्त हुआ। इन्होने सतासी के राजा को पद्च्युत कर सिलहट परगना के रुद्रपुर गॉव मे *रुद्रपुर नगर* की स्थापना किया। 1690 ई मे *राजकुमार मुअज्जम (बहादुर साह)* गोरखपुर आए। इनके सम्मान मे एक और परगना *मुअज्जमाबाद* की स्थापना की गयी।

पुन मुगल शासको के कमजोर होने एव पतन होने के साथ क्षेत्रीय सरदारो ने अपनी स्वतत्रा बहाल कर ली।

(स) आधुनिक काल

1707 ई मे *औरगजेब* के मृत्यु के समय यह क्षेत्र *अवध* के अर्तगत गोरखपुर सरकार मे सम्मिलित था जिसके अतर्गत वर्तमान के *गोरखपुर देवरिया, कुशीनगर* और *बस्ती* जिले समाहित थे। जून 1707 ई मे जब *बहादुरसाह* बादशाह बना तब उसने *चिनकिलीच खान* को गोरखपुर का फौजदार नियुक्त किया जो 1710 ई तक बना रहा[50]। इस दौरान वास्तविक शक्ति स्थानीय राजपूत शासको के हाथो मे ही रही।

सितम्बर 1722 ई मे शियाधर्मावलम्बी *सहादत खान* अवध का सूबेदार नियुक्त हुआ। यह एक तरह से नाम मात्र का ही सूबेदार था। वास्तव मे यह एक स्वतत्र शासक था। इसके समय मे चारो ओर अशाति और अराजकता व्याप्त थी। परन्तु इस दौरान *मझौली* के राजा ने अपने क्षेत्र मे शाति और सुरक्षा बरकरार रखी।[51] बाद मे *सुजाउदौला* और *आसफुदौला* के शासनकाल मे अवध की शासन व्यवस्था मे कुछ सुधार हुआ।

बाद मे अवध के नवाब को कुशासन के आरोप मे पद्च्युत कर *ईस्ट इडिया कम्पनी* ने शासन अपने हाथ मे ले लिया। 1857 ई के प्रथम स्वतत्रता सग्राम के प्रारम्भ के साथ ही इस क्षेत्र के विभिन्न तालुकेदार तथा राजाओ ने अग्रेज सत्ता के विरोध मे विद्रोह किया। विद्रोह आरम्भ होने के साथ ही देवरिया तहसील के *पैना* गाव के जमीदारो ने *घाघरा नदी* मे अनाजो से लदे हुए नावो को घेरना आरम्भ कर दिया। *बरहज* के थानेदार इसे रोकने मे असफल रहे। 5 जून को क्षेत्र मे जैसे ही सूचना मिली कि आजमगढ मे भारतीय फौजे स्वाधीनता सेनानियो के साथ मिल गयी है गोरखपुर के फौजी जवानो ने आजमगढ़ विद्रोह को दबाने के लिए जाने से इकार कर दिया। इस दौरान *सतासी* और *नरहरपुर* के राजाओ ने विद्रोह का नेतृत्व किया। *पैना* एव *घाघरा* के तटवर्ती गाँवो के जमीदार, *नरहरपुर,* नगर और सत्तासी के राज्य एव पाण्डेयपुर के बाबू ने मिटिग कर ब्रिटिश सेना के खिलाफ सहयोग का वचन लिया। इस बीच नेपाल के शासक *जगबहादुर* ने विद्रोह को दबाने के लिए अग्रेजी हुकूमत को अपनी गोरखा सेना उपलब्ध करा दी। 29 जुलाई

को 3000 गोरखा गोरखपुर मे पहुँच गए। हालॉकि अग्रेजो ने विद्रोह को दबा दिया। पर इसके बाद अग्रेज इस क्षेत्र पर पुन अपनी शक्ति और शासन नही स्थापित कर सके। गोरखा सेनाएँ अनेक बिमारियो से ग्रसित होकर कमजोर होने लगी जिससे स्थानीय प्रतिरोध करने की क्षमता उनमे नही थी। जब गोरखा सेनाएँ वापस जाने लगी तो अग्रेजो ने शासन की बागडोर पुन *मझौली सतासी बॉसी गोपालपुर तमकुही* के राजाओ को सुपूर्द कर दी और इन्ही के माध्यम से शासन चलाने लगे।

1887 ई के विद्रोह के पश्चात शासन की बागडोर ईट इडिया कम्पनी के हाथ से *ब्रिटिश क्राउन* के हाथ मे चली गयी। इसी के साथ गोरखपुर के प्रशासित क्षेत्र को गोरखपुर–देवरिया समेत बनारस डिविजन मे शामिल कर दिया गया। 1871 ई मे *पडरौना* के शहरी क्षेत्र की स्थापना की गयी तथा *देवरिया शहर'* की स्थापना 1892 ई मे की गयी।

1885 ई मे *भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस* की स्थापना के साथ इस क्षेत्र मे भी राष्ट्रीय भावना जागृत होने लगी। देवरिया की जनता ने काग्रेस के आह्वान पर 1914–1918 ई के प्रथम विश्व युद्ध मे सरकार का भरपूर सहयोग किया।

1920 ई मे जब *महात्मागाधी* ने *असहयोग आदोलन* आरभ किया। देवरिया की जनता ने इसे हृदय से समर्थन दिया। 8 फरवरी 1921[52] ई को *महात्मा गॉधी* गोरखपुर आए। अगस्त 1921 ई को *लार* मे काग्रेस की एक बडी सभा आयोजित की गयी। 17 सितम्बर को *जवाहरलाल नेहरु* देवरिया पहुँचे जहॉ विशाल भीड ने उनका स्वागत किया। इस समय सरकार ने धारा 144 को पूरे क्षेत्र मे बढा दिया पर सब निस्प्रभावी रहा। इस दौरान विदेशी कपडो एव विदेशी सामानो का बहिष्कार होने लगा तथा खादी और गॉधी टोपी लोकप्रिय होने लगा।

13 अप्रैल 1924 ई को *जवाहरलाल नेहरू* दूसरी बार देवरिया आए और लोगो से काग्रेस के फड मे चदा देने का आह्वान किया।

4 अक्टूबर, 1929 ई को *महात्मागॉधी* पत्नी *कस्तूरबा* और *जेबी कृपलानी श्री प्रकाश (बनारस)* के साथ देवरिया आये और उन्होने नागपुर के *झडा सत्याग्रह* (1923) मे लोगो के भारी सख्या मे भाग लेने पर उनका धन्यवाद किया।

1930 ई के *नमक सत्याग्रह* के समय देवरिया जनपद मे भी *गॉधीजी* के आह्वान पर नमक कानून तोडा गया। 13 अप्रैल 1930 को *बाबा राघवदास* के नेतृत्व मे नमक कानून तोडा गया।

11, मई 1935 ई को राष्ट्रीय नेता *रफी अहमद किदवई* देवरिया पहुँचे और काग्रेस की दो दिवसीय सम्मेलन की।

1935 ई के *इडियन एक्ट* के अनुसार जब काग्रेस ने विधान सभा के चुनाव मे भाग लेने का फैसला किया तब देवरिया के सभी सीटो पर काग्रेस के उम्मीद्वार चुनाव जीत गये।

इसी प्रकार 1940 ई मे *गॉधीजी* के *व्यक्तिगत सत्याग्रह* एव 1942 ई के *भारत छोडो आदोलन* के दौरान देवरिया की जनता ने खुलकर काग्रेस का समर्थन किया। 21 अगस्त को गौरी बाजार सलेमपुर और देवरिया मे आन्दोलनकारियो ने टेलीफोन लाइनो को काटकर रेलो की पटरियो को उखाडकर सडको को क्षतिग्रस्त कर एव पुलो आदि को तोडकर अग्रेजो के पैर उखाड दिए।

1945 ई मे जब *द्वितीय विश्वयुद्ध* समाप्त होने लगा। तब ब्रिटिश जनता का विचार भी भारत को पूर्ण स्वाधीनता प्रदान करने का बनने लगा।

1946 ई मे *देवरिया* गोरखपुर से अलग होकर *स्वतत्र जनपद* का अस्तित्व प्राप्त किया। ***15 अगस्त 1947 ई*** को देश वर्षो की गुलामी से स्वतत्र हो गया। पर इसी के साथ देश को विभाजन की पीडा भी झेलनी पडी। करीब 533 विस्थापित पाकिस्तानी जनपद मे आए और बसे।

30 जनवरी 1948 ई को जनपद मे जैसे ही ये खबर आयी कि *राष्ट्रपिता महात्मागाधी* की हत्या हो गयी है देश के साथ सारा जनपद स्तब्ध और शोकाकुल हो गया।

स्वतत्रता के पश्चात विकास की गति तीव्र हुई जिससे अनेक सेवाकेन्द्रो का विकास होता गया।

3 4 ऐतिहासिक कालक्रम मे देवरिया जनपद मे सेवाकेन्द्रो का उद्भव विकास

अध्ययन क्षेत्रो मे विद्यमान सेवाकेन्द्रो का उद्भव एव विकास विभिन्न काल क्रमो मे हुआ जिसे निम्नलिखित **चार** प्रमुख भागो मे विभक्त किया गया है (चित्र– 3 1)।

1 प्राचीन काल

2 मध्य काल

3 आधुनिक काल

4 स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात्।

(अ) प्राचीन काल

ऐतिहासिक तथ्यो से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र सघन वनो से आच्छादित था। *भरत* के प्राचीनतम राज्य *कोशल* का एक भाग होने के कारण यहॉ पर कई सेवाकेन्द्र विकसित हुए जिनके अब मात्र भग्नावशेष ही दृष्टव्य है। इन *प्राचीनतम केन्द्रो*[53] मे *लार सोहनाग खुखुन्दू साहिया भागलपुर बैरौनाखास* (चित्र 3 1A) आदि प्रमुख है। *खुखुन्दू* प्राचीनतम सेवाकेन्द्र है जिसका विकास ऐतिहासिक काल मे हुआ यहॉ पर उत्खनन से *बौद्ध, जैन* एव *हिन्दू मदिरो,* मूर्तियो एव प्रतिमाओ के भग्नावशेष, स्तूप, टीले आदि प्राप्त हुए हैं।

इक्ष्वाकुवशी राजाओ ने राज्य के सुचारू सचालन व्यवस्था हेतु अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न

ORGIN & EVOLUTION OF SERVICE CENTRE IN DEORIA DIST
N
A प्राचीनकाल
बैरौनाखास
खुखुन्दू
सोहनाग
भागलपुर
लार
सहिया
B मध्यकाल
शाहजहाँपुर
सिथुआ जोबना
सतासीराज
मझौली
सलेमपुर
6 0 6KM
C आधुनिक काल
गौरी बाजार
बैतालपुर
रामपुर कारखाना
देवरिया
रुद्रपुर
भटनी बाजार
मदनपुर
गौरा बरहज
सलेमपुर
प्रतापपुर
लार
D स्वतत्रताप्राप्ति के पश्चात
देसही देवरिया
बखरा
इन्दुपुर
पथरदेवा
बिसुनपुरा
बरियारपुर
खोरमा कन्हौली
मझगाँवा
भलुअनी
महेन
भाटपार
बनकटा
मईल
भागलपुर
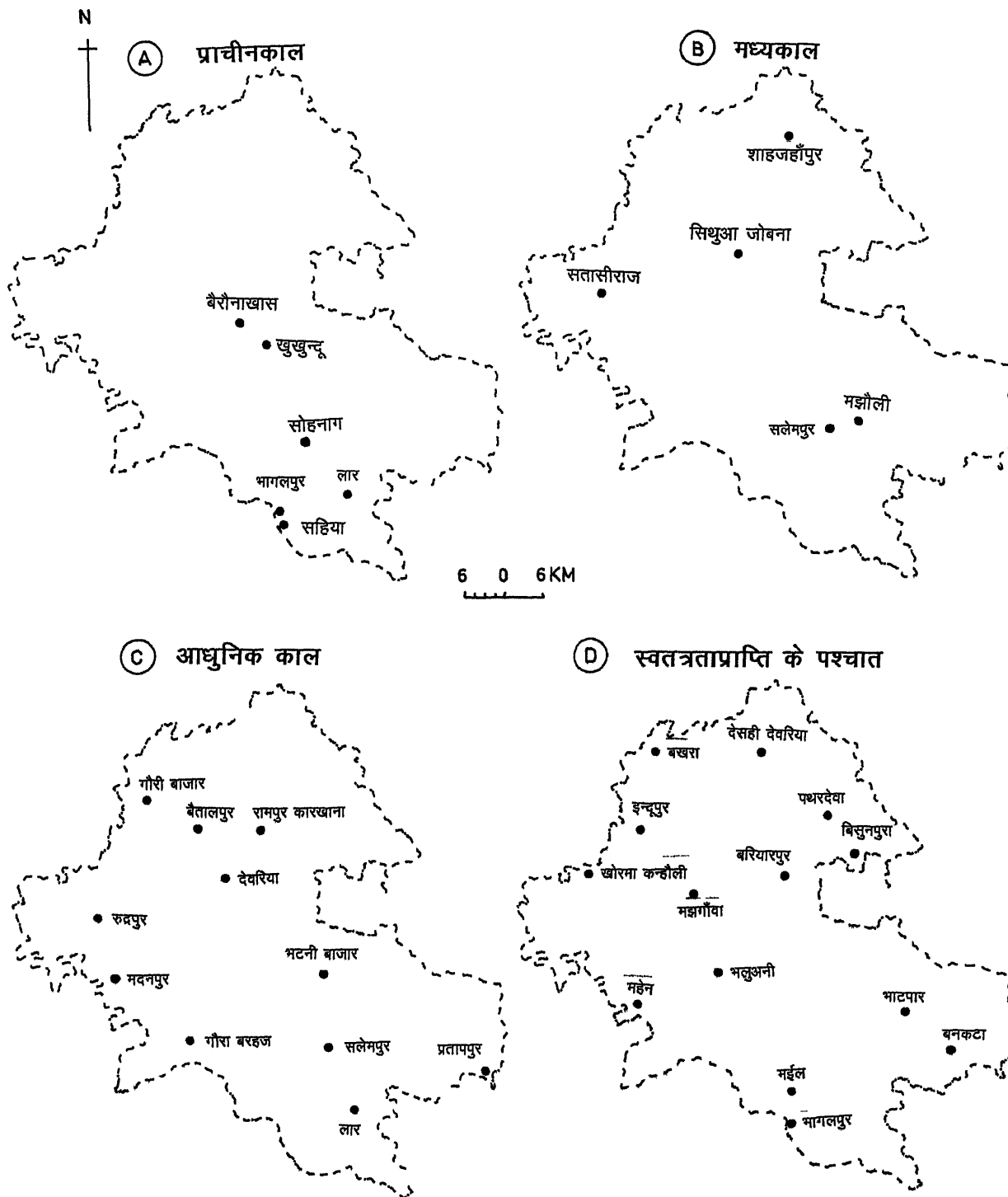
FIG 31

प्रकार के प्रशासनिक केन्द्र स्थापित किये जिनके भग्नावशेष विद्यमान है। इस सबध मे विभिन्न किवदन्तियाँ प्रचलित है। *भगवान राम* ने अपने राज्य का विभाजन पुत्रो मे किया तो *कुश* ने *कुशीनगर* को अपनी राजधानी बनायी। उन्ही के नाम पर इसका नाम *कुशीनगर* पडा। अपनी प्रशासनिक व्यवस्था हेतु इन्होने विभिन्न सेवाकेन्द्रो का निर्माण किया।

अध्ययन क्षेत्र मे स्थित *काहोन* का उद्भव *महाभारत काल* मे हुआ था। यहाँ के भग्नावशेषो मे प्राचीन तथ्य छिपे हुए है। यह प्राचीन काल का एक समृद्ध केन्द्र रहा हे। महाभारत काल मे *युद्धिष्ठिर* ने राजसूय यज्ञ के दौरान इस केन्द्र को अपने अधीन किया ओर अनुज *भीम* को सौप दिया। *भीम* ने इसे अपनी राजधानी बनाया।

वर्तमान *रुद्रपुर* की स्थापना भी प्राचीन काल मे ही हुई थी। यहाँ प्राचीन सेवाकेन्द्र के अवशेष भारी मात्रा मे प्राप्त हुए हैं। इस केन्द्र का विकास *राप्ती नदी* के किनारे जल की उपलब्धता के कारण हुआ था। यहाँ पर एक ज्योतिर्लिंग एव काले पत्थर पर बनी भगवान विष्णु की एक मूर्ति प्राप्त हुई है जिससे प्रमाणित होता है कि प्राचीन काल मे यह धार्मिक दृष्टि से समृद्धतम सेवाकेन्द्रो मे एक था।

(ब) मध्यकाल

अध्ययन क्षेत्र मे मध्यकाल *दिल्ली सल्तनत* के साथ 11वी शताब्दी से माना गया है। इस काल मे यह क्षेत्र विभिन्न राजवशो के अधीन रहा जिससे आवश्यकता तथा सुविधानुसार सेवाकेन्द्रो का विकास एव महत्व बदलता रहा (चित्र 3 1B)। मध्यकाल मे इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत के विभिन्न राजवशो का प्रभावशाली नियत्रण नही रहा क्योकि यह क्षेत्र घना वनावरण होने के कारण इसके अनुकूल नही था। फलत यहाँ विभिन्न क्षेत्रीय राजाओ ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली। जल सुविधा जो *राप्ती* एव *घाघरा* नदियो द्वारा उपलबध था तथा इन्ही नदियो द्वारा परिवहन एव व्यापार की सुविधा के कारण इन नदी तत्रो के किनारे विभिन्न सेवाकेन्द्रो का उद्भव एव विकास हुआ। इनमे *बिसेन* राजाओ द्वारा *घाघरा नदी* के किनारे *मझौली राज* की स्थापना तथा पश्चिम मे रुद्रपुर मे *राप्ती* के किनारे *सतासी राज* की स्थापना प्रमुख सेवाकेन्द्र थे। उपर्युक्त नदियो के किनारे अधिवासो का विकास हुआ। मध्यकाल मे *सिधुआ जोबना सलेमपुर शहजहाँपुर* प्रमुख सेवाकेन्द्र रहे है। ये तीनो ही प्रशासनिक एव व्यापारिक सेवाकेन्द्र थे। सिधुआजोबना, सलेमपुर और शाहजहाँपुर का विकास *अकबर* के काल मे परगना के मुख्यालय के कारण हुआ। इसमे *सलेमपुर* मझौली के बिसेन राजाओ का *प्रशासनिक केन्द्र* रहा है। *रुद्रपुर* का विकास एक *धार्मिक प्रशासनिक एव व्यापारिक केन्द्र* के रूप मे हुआ। अध्ययन क्षेत्र का *रुद्रपुर* नगर अपने आरभिक काल से ही प्रशासनिक धार्मिक एव व्यापारिक दृष्टि से एक सम्पन्न क्षेत्र एव केन्द्र रहा है। यहाँ *सतासी राज* के राजाओ का *प्रशासनिक मुख्यालय* था। *औरगजेब* की मृत्यु के पूर्व (1690 ई) जब *मुअज्जम (बहादुर शाह)* अध्ययन क्षेत्र मे आए तो उनके सम्मान मे एक और परगना *मुअज्जमाबाद*

की स्थापना की गई।

(स) आधुनिक काल

अध्ययन क्षेत्र मे इस काल का आरभ 1707 ई मे *औरगजेब* की मृत्यु के साथ हुआ। अपने आरभिक काल मे यह क्षेत्र ***मराठो*** के प्रभाव मे रहा। 1761 ई मे *पानीपत युद्ध* मे मराठो की पराजय के पश्चात् ***अवध के नबाबो*** के अधीन यह क्षेत्र आ गया। नवाबो एव क्षेत्र के स्थानीय राजपूत राजाओ मे विभिन्न समयो मे युद्ध चलता रहा। इसके पश्चात् क्षेत्र ***अग्रेजी शासको*** के अधीन आ गया। अग्रेजो ने अपनी आवश्यकता सुविधानुसार कलक्टरी कचहरी जेल कोतवाली नगरपालिका तहसील मुख्यालय अस्पताल शिक्षण सस्थाओ आदि को निर्मित कराया। अनेक व्यापारिक केन्द्रो का उद्भव इस काल मे हुआ जिससे विकास को गति मिली (चित्र– 3 1 C,D,)।

इस समय *देवरिया शहर* की स्थापना एक प्रशासनिक केन्द्र के रूप मे 1892 ई मे की गयी। इसके साथ ही यहाँ पर कचहरी कोतवाली शिक्षण केन्द्रो आदि की भी स्थापना हुई। स्वतत्रता काल मे यह क्षेत्र विशेषकर देवरिया आदोलन का एक प्रमुख केन्द्र रहा। यहाँ पर राष्ट्रीय नेताओ का आगमन बराबर होता रहा। *महात्मा गाधी कस्तुरबा गाँधी, जे बी कृपलानी, श्रीप्रकाश रफी अहमद किदवई जवाहर लाल नेहरू* आदि नेताओ का आगमन देवरिया मे कई बार हुआ।

1946 ई मे जब *देवरिया* को गोरखपुर से अलग कर एक स्वतत्र जनपद का स्वरूप प्रदान किया गया तो तत्कालीन समय मे इसमे *हाटा पडरौना देवरिया* एव *सलेमपुर* चार तहसील थे। ये तहसील मुख्यालय प्रमुख प्रशासनिक एव व्यापारिक सेवाकेन्द्रो के रूप मे विकसित हो गए।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब भारत सरकार का ध्यान पिछडे क्षेत्रो के विकास की तरफ गया तो अध्ययन क्षेत्र मे स्थित कई बडे–बडे ग्राम जहाँ साप्ताहिक बाजार और मेले लगते थे तथा रेलवे लाइन एव सड़क मार्ग के करीब थे सेवाकेन्द्र के रूप मे विकसित हुए। सेवाकेन्द्रो के विकास मे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका प्रशासनिक केन्द्रो की स्थापना, सड़को का विकास तथा वस्तु निर्माण उद्योग की स्थापना रही है जिससे विभिन्न प्रशासनिक, व्यापारिक तथा यातायात सम्बन्धित केन्द्र प्रकाश मे आए (चित्र 3 1 C,D)।

1951 ई मे तत्कालीन देवरिया जनपद के चारो तहसीलो (देवरिया, सलेमपुर हाटा पडरौना) मे 29 प्रखण्ड विकस केन्द्रो की स्थिति थी, जिसमे से बाद मे हाटा एव पडरौना तहसीलो को मिलाकर *कुशीनगर जनपद* की स्थापना की गई यदि इनके प्रखण्डो को अलग कर दिया जाय तो वर्तमान देवरिया जनपद मे 1951ई मे 15 प्रखण्ड विकास केन्द्र थे। ये निम्नवत् थे–

1– देवरिया
2 बैतालपुर
3 गौरीबाजार
4 रुद्रपुर
5 देसही देवरिया
6 पथरदेवा
7 रामपुर कारखाना
8 सलेमपुर
9 भागलपुर
10 भाटपाररानी
11 बरहज
12 भलुअनी
13 भटनी
14 बनकटा, और
15 लार

(क) प्रशासनिक इकाइयो की स्थापना

स्वतत्रता पश्चात् वर्तमान अध्ययन क्षेत्र मे 15 विकास खण्डो की स्थापना की गईं जिसका प्रभाव सेवाकेन्द्रो के विकास पर पडा क्योकि स्वतत्रता मिलने के पश्चात् *महात्मा गाधी* के विचारो के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रो मे ऐसे सेवाकेन्द्रो की स्थापना करनी थी जो उस क्षेत्र की सेवा करने मे तत्पर हो।[54] इसलिए अधिकाश विकासखण्ड मुख्यालय नगरीय क्रियाकलापो से कुछ दुर स्थापित किये गये। इस प्रकार इन प्रशासनिक इकाइयो की स्थापना से उस स्थान के विकास मे सहायता मिली।

(ख) पक्की सडको का विकास

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात तीव्रगति से पक्की सडको का निर्माण किया गया। इससे ऐसे केन्द्र जो समुचित परिवहन अभाव के कारण सुसुप्त पडे थे वे इन सडको के विकास से जागृत होकर विकसित हुये। इससे नये केन्द्रो की भी उत्पत्ति हुई। चूँकि यहाँ का धरातलीय स्वरूप समतल है अत सडक मार्ग के निर्माण के लिए उपयुक्त है। क्षेत्र के दक्षिणी भाग *राप्ती घाघरा* तथा उसकी सहायक नदियो से उत्पन्न बाढ से प्रभावित रहते है। इसी के साथ अध्ययन क्षेत्र के मध्य का भाग भी *छोटी गण्डक* एव उसकी सहायक नदियो के द्वारा उत्पन्न बाढ से प्रभावित रहता है। अत इन क्षेत्रो मे पक्की सडको का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है। स्वतत्रता के पश्चात् छोटी नदियो पर पुल निर्माण से व्यापार को बढावा मिला तथा बसो, ट्रको, टैक्सियो के गमनागमन से इन सडको पर नये सेवाकेन्द्रो के उद्भव के साथ ही पूर्व स्थित सेवाकेन्द्रो का विकास भी हुआ।

(ग) वस्तु निर्माण उद्योग एव व्यापार का विकास

रेल एव सडक मार्ग के विकास के साथ–साथ व्यापार एव वाणिज्य केन्द्रो का विकास द्रुतगति से हुआ। देवरिया जनपद की समतल एव उर्वर भूमि गन्ना की कृषि के लिए विशेष उपयुक्त है, जिससे यहाँ के फसल सयोजन मे गन्ना की प्रमुखता है। स्वतत्रता पूर्व सडको एव रेल लाइनो के विकास के साथ यहाँ पर गन्ना पर आधारित चीनी मिलो का सकेन्द्रण आरम्भ हुआ और स्वतत्रता पश्चात आधारभूत सेवाओ के विस्तार के साथ इसकी गहनता बढती गयी। फलस्वरूप चीनी मिलो की सख्या की दृष्टि से यह जनपद सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश मे **प्रथम स्थान** पर आ गया। इन चीनी मिलो की स्थापना के स्थल सेवाकेन्द्र के रूप मे विकसित हो गये। वर्तमान समय मे इस जनपद के अतर्गत *गौरीबाजार बैतालपुर देवरिया, भटनी* तथा *प्रतापपुर,* सेवाकेन्द्रो का विकास चीनी मिलो की स्थापना के कारण ही हुआ है। यहाँ ये उल्लेख करना समीचीन होगा कि *देवरिया नगर* की स्थापना अन्य चारो सेवाकेन्द्रो के पूर्व हो चुका था। *देवरिया नगर* के विकास मे चीनी मिल के साथ प्रशासनिक कारण भी उत्तरदायी हैं।

अपने चतुर्दिक उपभोक्ताओ की आवश्यकता पूर्ति हेतु सेवाकेन्द्रो मे व्यापारिक प्रतिष्ठानो की स्थापना, सेवाकेन्द्रो के विकास का प्रमुख कारण रहा है, क्योकि अपने क्षेत्र की सेवावृत्ति के अभाव मे कोई भी केन्द्र सेवाकेन्द्र की परिसीमा मे नही आ सकता।[55] अत वस्तु–विनिमय एव व्यापार ने

सेवाकेन्द्रो के उद्‌भव एव विकास मे सबसे शक्तिशाली कारक के रूप मे कार्य किया।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवरिया जनपद प्राचीनकाल से ही मानव बसाव का केन्द्र रहा है। *कोशल राज्य* के प्रभाव मे होने के कारण यहाँ पर प्राचीन नगरो का उद्‌भव एव विकास हुआ। क्षेत्र मे बहने वाली *घाघरा राप्ती* एव *छोटी गण्डक* नदियाँ जल के साथ–साथ व्यापार के लिए परिवहन मार्ग भी प्रदान करती थी। अत इनके किनारे ही क्रम से अधिवास एव कस्बो का विकास हुआ जिसमे अधिकाश कालान्तर मे सेवाकेन्द्रो का रूप ले लिए। बौद्धकाल के स्तूप मठ एव मूर्तियाँ भग्नावशेष के रूप मे आज भी दृष्टव्य है। अग्रेजो के अधीन आने पर यहाँ *म्युनिसिपल बोर्ड* की स्थापना हुई जिससे सामाजिक ढाँचे मे तेजी से परिवर्तन होने लगा। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात ढाँचागत विकास के कारण सेवाकेन्द्रो का तीव्रगति से विकास हुआ तथा कुछ नवीन सेवाकेन्द्र भी अस्तित्व मे आये।

3 5 ऐतिहासिक कालावधि मे उत्पन्न सेवाकेन्द्रो के प्रकार

ऐतिहासिक कालावधि मे कालक्रम के विकास के साथ विभिन्न प्रकार के सेवाकेन्द्रो का उद्‌गम एव विकास हुआ। उनमे से कुछ समय के साथ ही विलीन हो गये तथा कुछ आज भी जिदा है। इन सेवाकेन्द्रो को निम्न प्रकारो मे बाँटा जा सकता है–

(क) प्रशासनिक सेवाकेन्द्र

(ख) व्यापारिक एव यातायात सम्बन्धी सेवाकेन्द्र

(ग) धार्मिक सेवाकेन्द्र

(क) प्रशासनिक सेवाकेन्द्र

अध्ययन क्षेत्र मे प्राचीनकाल से ही विभिन्न प्रशासनिक कार्यो का श्रीगणेश हुआ था तथा मध्य काल मे अनेक प्रशासनिक केन्द्रो का उद्‌भव एव विकास हुआ, जो विभिन्न राजवशो द्वारा स्थापित किये गये। ये प्रशासनिक केन्द्र निम्न थे (चित्र 3 2 A)।

(I) सहनकोट

यह रुद्रपुर के समीप स्थित है जो कभी *नाथनगर* के नाम से जाना जाता था। यह अत्यन्त समृद्धिशाली नगर था। सहनकोट नामक किला तथा नाथ नगर वर्तमान रुद्रपुर से पौन मील उत्तर है। किला सहनकोट की उत्तरी सीमा दो हजार फीट से दो हजार पॉच सौ फीट तक है। किले के किनारे की दीवारे 15 से 25 फीट तक ऊची हैं। सहनकोट नामक इस गढ को *काशीराज ब्रह्मा* ने बनवाया था। रुद्रपुर के लोग इस जगह को *'हसतीर्थ'* कहते हैं। चीनी यात्री *ह्वेनसाग* यहाँ आया था और इस स्थान को *हसतीर्थ* बताया है। कुछ विद्वानो के अनुसार सहनकोट का शुद्ध नाम *शकुनकोट* है जिसे *राजा शकुनदेव* ने बनवाया था। परन्तु राजा शकुनदेव के राज्यकाल के

विषय मे इतिहासवेत्ता एकमत नही है।

(II) सुरौली

यह वर्तमान मे एक गॉव के रूप मे है जो देवरिया से 7 किमी दक्षिण दक्षिण–पश्चिम मे स्थित है। यहाँ *फ्यूरर* ने काफी विस्तार मे फैले हुए टीला का ध्वसावशेष खोजा है जो कभी प्रशासनिक केन्द्र रहा होगा। यहाँ किसी दुर्ग के अस्तित्व का भी अनुमान किया था।

(III) मझौली

यह मध्यकाल मे एक प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र था। सलेमपुर तहसील मे *छोटी गडक* के बॉए तट पर स्थित इस केन्द्र की स्थापना सन् 1100 ई मे ***बिसेन सिह*** ने *नवापार* के पास की। 1114 ई से 1154 ई तक इस जनपद पर गहडवाल शासक *गोविन्द चन्द्र* का नियत्रण था। 1194 ई मे गहडवाल शासन के पराभव के बाद *बिसेन* क्षत्रियो ने सलेमपुर *मझौली* मे अपनी स्वतत्र सत्ता स्थापित कर ली।

(IV) रुद्रपुर

यह *सतासी राज* की राजधानी के रूप मे एक प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र था जो आज तहसील मुख्यालय के रूप मे विद्यमान है। देवरिया जनपद के दक्षिण–पश्चिमाचल मे स्थित रुद्रपुर का इतिहास बहुत पुराना और गौरवपूर्ण है। ऐतिहासिक शोधो के अनुसार रुद्रपुर का उद्भव ईसा के 17वी शताब्दी के पूर्व माना जाता है। लगभग 500 वर्ष पूर्व *महाराज मझौली* ने अपनी पुत्री *दिग्राज कुँवरी'* का विवाह कश्मीर के राजघराने के किसी राजकुमार से कर दी। कश्मीर के राजघराने द्वारा इस सम्बन्ध को मान्यता न मिलने के कारण राजकुमार और कुवरी वापस लौट आये। महाराजा मझौली ने अपने ही राज्य मे *'सतासी ग्राम'* देकर उन्हे राजा बना दिया। यही रियासत *'सतासी राज्य'* के नाम से प्रसिद्ध हुयी जो वर्तमान मे *रुद्रपुर* की सज्ञा धारण किए हुए है। आरम्भ मे अयोध्या से आए हुए राजपूत *वशिष्ट सेन* ने इस स्थान पर एक किले का निर्माण कराया और नामीकाशी नाम दिया। सन् 1605 ई मे *श्रीनेत् वशीय राजा रुद्रसेन* ने पुराने किले के स्थान पर नया किला बनवाया। इन्ही के नाम पर इस स्थान का नाम रुद्रपुर पडा।

(V) सलेमपुर

मध्यकाल मे यह भी एक प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र था। इसके विषय मे दो मत लोक मे प्रचलित है। एक मत के अनुसार मझौली राज की शूरता और स्वत्व की गाथा के कारण तत्कालीन मुगल शासक ने मझौली के राजा को अपनी अधीनता स्वीकार करने तथा नाम बदलने को मजबूर किया और इनका नाम *'सलीम'* रखा। जब रानी को ये बात मालूम हुयी तो उन्होने *सलीम* को अपनाने से इनकार कर दिया। क्षोभवश राजा *छोटी गण्डक* के किनारे एक नगर बसाकर रह गये जो बाद मे *सलेमपुर* के नाम से मशहूर हुआ। दूसरे मत के अनुसार *शेख सलीम चिस्ती* के नाम पर इसका नाम पडा, जिसे मुगल बादशाह ने *चिस्ती'* को दान मे दिया था।

MAIN SERVICE CENTRE OF HISTORICAL PERIOD
A प्रशासनिक सेवाकेन्द्र
सहनकोट
रुद्रपुर
सुरौली
काहोन
मझौलीराज
सलेमपुर
B व्यापारिक एव यातायात सम्बन्धी सेवाकेन्द्र
बैकुण्ठपुर
खुखुन्दू
कहाँव
गौरा बरहज
भागलपुर
साहिया
N
C धार्मिक सेवाकेन्द्र
दुग्धेश्वरनाथ
भरोली बभनी
खुखुन्दू
गौरा बरहज
दीर्धेश्वरनाथ
सोहनाग
लार
6 0 6 KM
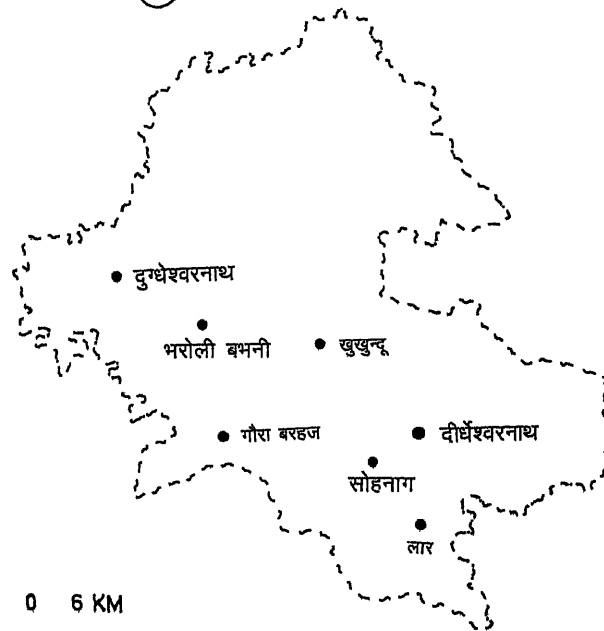
FIG 3 2

(VI) काहोन

यह एक अत्यन्त प्राचीन महाभारतकालीन नगर है जो आज भी गौराबरहज तहसील मुख्यालय के नजदीक खुरबुन्दू से 11 किमी दक्षिण मे स्थित है। आज यह एक पुनर्जीवित गाव के रूप मे है जिसकी जनसख्या घनत्व अत्यल्प है। इसका उद्भव *महाभारत काल* मे हुआ था। यहॉ के भग्नावशेषो मे प्राचीन तथ्य छुपे हुए है। यह प्राचीन काल का एक समृद्ध प्रशासनिक केन्द्र रहा है। महाभारत काल मे *युधिष्ठिर* ने राजसूय यज्ञ के दौरान इस केन्द्र को अपने अधीन किया और अनुज *भीम* को सौप दिया। *भीम* ने इसे अपनी राजधानी बनाया।

(ख) व्यापारिक एव यातायात सम्बन्धी सेवाकेन्द्र

प्राचीन एव मध्यकाल मे जलपरिवहन यातायात के प्रमुख साधन के रूप मे थे। इस समय नदी मार्गो से ही यातायात एव व्यापारिक कार्य सम्पन्न किये जाते थे। फलत नदियो के किनारे अनेक सेवाकेन्द्रो का उद्भव एव विकास हुआ। अध्ययन क्षेत्र मे मध्य भाग मे *छोटी गण्डक* के किनारे तथा दक्षिण मे *राप्ती* एव *घाघरा* नदियो के तटो पर इस प्रकार के अनेक सेवाकेन्द्रो का विकास हुआ। इनमे निम्न प्रमुख है– (चित्र 3 2 B)।

(I) सहिया

सलेमपुर तहसील मे भागलपुर से 4 किमी पूरब *घाघरा* से थोडी दूरी पर यह एक गॉव के रूप मे स्थित है। यहॉ से प्राचीन काल के काले लाल मृद भाण्ड *हिन्द पोखर* से प्राप्त हुए है जिससे अनुमान है कि अति प्राचीन काल मे यहॉ कोई नगर था जो व्यापारिक केन्द्र रहा होगा।

(II) बैकुण्ठपुर

जनपद के पूर्वी छोर पर बिहार की सीमा के अति निकट *छोटी–गण्डक* के तट पर नितान्त ग्रामीण अचल मे बैकुण्ठपुर गॉव अवस्थित है। नूनखार रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर उत्तर एव देवरिया जनपद मुख्यालय से पूरब इसकी दूरी 15 किमी है। प्राचीन समय मे यह गॉव खाद्यान्नो का व्यावसायिक केन्द्र रहा। उस समय यातायात के समुचित साधन पर्याप्त उपलब्ध न होने के कारण अनाजो का आयात नदियो के मार्ग से बडी नावो द्वारा होता था। व्यापार मे तिलहन की प्रमुखता थी।

(III) कहॉव

यह प्रशासनिक के साथ–साथ एक प्रमुख व्यापारिक सेवाकेन्द्र भी रहा है। सलेमपुर शहर से दक्षिण–पश्चिम स्थित इस स्थल मे गुप्त सम्राट *स्कन्दगुप्त* के शासनकाल का एक स्तम्भ खडा है। इस पर उत्कीर्ण अभिलेख से ज्ञात होता है कि जैन धर्मानुयायी *मद्र* नामक व्यापारी ने यहॉ पॉच जैन तीर्थंकरो की मूर्तियॉ स्तम्भ के निचले भाग मे निर्मित करायी थी। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि *गुप्त काल* मे यह स्थल व्यापार का केन्द्र था अथवा व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।

(IV) खुखुन्दू

कहॉव से उत्तर देवरिया मुख्यालय से दक्षिण–पूर्व मे 16 किमी की दूरी पर यह स्थल स्थित

है। प्राचीन काल मे यह स्थल मार्ग द्वारा कहॉव और भागलपुर से जुडा था जिस कारण व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। चीनी यात्री *ह्वेनसाग* खुखुन्दू, कहॉव भागलपुर होकर ही *घाघरा* पारकर बनारस पहुँचा था।

(V) भागलपुर

कहॉव से दक्षिण थोडा पूरब हटकर भागलपुर *सरयू नदी (घाघरा)* के तट पर स्थित है। प्राचीन समय मे नदी परिवहन की प्रमुखता के समय नदी तट पर यह प्रमुख यातायात एव व्यापारिक केन्द्र था। सडक मार्ग द्वारा यह कहॉव और खुखुन्दू से भी जुडा हुआ था। यहॉ एक खण्डित स्तम्भ पाया गया है जिसे आज भी लोग *'भीम की छडी'* कहते हैं। वस्तुत वह गुप्तो के प्रशासन काल मे हूणो शको के आक्रमण पर बिजय प्राप्ति के स्मारक के रूप मे गुप्तो के विजयी सेनापति *भीमसेन''* द्वारा बनवाया गया था। क्षेत्रीय किवदतियो ने स्तम्भ के नाम को दूसरे रूप मे उजागर किया।

(VI) बरहज

घाघरा के तट पर स्थित बरहज एक पूर्व मध्यकालीन नगर है। नदी मार्ग से यातायात के समय यह एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र रहा है।

(ग) धार्मिक सेवाकेन्द्र

'देवरिया' नाम से ही स्पष्ट है कि यह जनपद अपने अति प्राचीन काल से ही धार्मिक सेवाकेन्द्रो का सर्वप्रमुख स्थल रहा है। *'देवरिया'* नाम स्वय मे ही आध्यात्मिक है क्योकि इस भू-भाग पर विद्यमान *'देवरही शक्ति पीठ'* के कारण ही इस जिले का नाम ***'देवरिया'*** रखा गया। यहॉ पर *हिन्दू, बौद्ध जैन* सभी धर्मो का समन्वय देखने को मिलता है। ऐतिहासिक कालक्रम मे इन धर्मों से सम्बन्धित विभिन्न स्थल रहे है। जिनमे निम्न प्रमुख हैं– (चित्र–3 2 C)।

(I) खुखुन्दू

देवरिया मुख्यालय से दक्षिण–पूर्व मे 16 किमी की दूरी पर स्थित खुखुन्दू मे ब्राह्मण व्यवस्था के अनेक अवशेष होने के साथ ही साथ एक प्रमुख जैन तीर्थकर *उषोदन्त* का जन्म स्थल भी है। इस स्थान के पास अनेक ब्राह्मण मन्दिरो के अवशेष मिले है। ब्राह्मण मन्दिरो मे शिव–पार्वती गणेश और चतुर्भजी विष्णु की नीले पत्थरो की मूर्तियॉ मिली हैं। इन सबसे स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल मे यह स्थल प्रमुख धार्मिक सेवाकेन्द्र रहा है।

(II) सोहनाग

सलेमपुर तहसील मे सलेमपुर से 4 5 किमी दक्षिण–पश्चिम मे सोहनाग स्थित है। इसका सम्बन्ध *भगवान परशुराम* से जोडा जाता है। यहॉ एक बडा पोखरा है जिसके सम्बन्ध मे लोगो का विश्वास है कि इसमें स्नान करने से चर्मरोग दूर हो जाते हैं। इस पोखरे के पश्चिम मे एक टीला है। टीले पर परशुराम मन्दिर शिव मन्दिर तथा बौद्ध मूर्तियॉ दृष्टिगोचर हुई हैं। नाम के विषय मे ये मत लोक मे प्रचलित है कि कभी नेपाल के राजा *सोहन* अपने लश्कर के साथ देशाटन पर

यहॉ आए थे। यहॉ के पोखर मे स्नान करने पर उनका कुष्ठ रोग ठीक हो गया। उन्ही के नाम पर स्थान का नाम *सोहनाग* हो गया।

(III) लार

वर्तमान समय मे यह जनपद के दक्षिणी–पूर्वी छोर पर स्थित है। यह एक प्रमुख धार्मिक एव आध्यात्मिक स्थल रहा है। एक पौराणिक कथा के अनुसार *महर्षि वशिष्ठ* की एक गाय को लेकर एक बाध यहॉ चला आया था जो *लार* मे मिली और जिसकी पहचान उसके द्वारा गिराए हुए लार से हुई थी। इसी कारण इस स्थान विशेष का नाम *लार* पडा।

(IV) बरहज

सरयू तट पर स्थित बरहज आरभ से ही एक धार्मिक एव आध्यात्मिक केन्द्र रहा है। यह एक पूर्व मध्यकालीन नगर है जहॉ के नीलकण्ठ मन्दिर मे शिव का लिग नन्दी तथा नृवराह पूजक की मूर्तियॉ एव समीप के गेट पर बने मन्दिर मे एक विष्णु प्रतिमा के होने की सूचना है। इस नगर को *अनन्त महाप्रभु* की साधना स्थली माना जाता है। जिन्हे *ओकार सिद्धी* प्राप्त थी। *बरहज* के **चार** अक्षर क्रमश *बद्रीनाथ रामेश्वरम हरिद्वार* और *जगन्नाथपुरी* का कुछ–कुछ बोध कराते है ऐसी मान्यता है।

(V) मरोली–तथा बभनी

सदर तहसील मे देवरिया से लगभग 15 किमी उत्तर *करुना नाले* के पास स्थित इस स्थल से ध्वसावशेष मन्दिरो के अवशेष एव शैव मूर्तियॉ देखी जा चुकी हैं। जिससे प्राचीन काल मे इसके धार्मिक सेवाकेन्द्र के रूप मे होने का आभास मिलता है।

(VI) दीर्घेश्वरनाथ

हिरण्यावती (छोटी गण्डक) के बॉए किनारे पर स्थित विश्वसेवो का राज्य केन्द्र *मध्यपल्ली (मझौली)* के पूर्वी हिस्से पर अवस्थित दीघेश्वर नाथ मदिर आज भी अपने अतीत के गौरव को अपने पार्श्व मे समेटे पूर्वाचल को शिव का सन्देश सुना रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे ***पर्यटन केन्द्र*** के रूप मे घोषित किया है।

(VII) दुग्धेश्वरनाथ

श्री दुग्धेश्वर नाथ मदिर जिसे *हसतीर्थ* की सज्ञा दी जाती है पूर्वांचल के प्रमुख तीर्थों मे एक है। यह मदिर वर्तमान रुद्रपुर कस्बे से लगभग 2 किमी उत्तर मे स्थित है। श्री दुग्धेश्वरनाथ उपज्योतिर्लिग के विषय मे अनेक किवदतियॉ लोक मे प्रचलित हैं। बौद्ध धर्म के अवसान के समय *जगद्गुरू शकराचार्य* द्वारा द्वादश् ज्योतिर्लिग की स्थापना की गई थी, उसके बाद द्वादश उपज्योतिर्लिंग की स्थापना हुई जिसमे दुग्धेश्वरनाथ का अतिमहत्वपूर्ण स्थान है।

References

1 तिवारी रामचन्द्र अधिवास भूगोल (1997) पृ0– 17

2 Singh, O P (1973) 'Central Place and their Origin and Evolution', U B B P, Vol IX Pt I pp 30-35

3 इण्डियन आर्कियोलॉजी 1969–70 पृ0 62

4 वही 1963–64 पृ0–45

5 कनिघम आ0 रि0 खण्ड–18 पृ0 41–52 खण्ड–22 पृ0 9–13 फ्यूरर आ0रि0पृ0– 249

6 आ0 स0 रि0 1906–7 पृ0 193–95

7 वही पृष्ठ– 195–96

8 वही पृ0 249

9 वही उद्धृत युग वातायन (पाक्षिक) देवरिया फरवरी–प्रथम पृ0–1–2 4–5 मार्च 1995

10 वही

11 गुप्त हीरालाल बरहज की पूर्व मध्यकालीन प्रतिमाये युग–युगीन सरयूपार वाराणसी 1987 पृष्ठ 104–5

12 फ्यूरर पूर्वोक्त पृष्ठ 250–51 आ0स0रि0 1906–7 पृ0 193

13 वही पृष्ठ 237 उद्धृत– कनिघम आ0रि0 खण्ड–16 पृष्ठ 130 खण्ड–22 पृष्ठ 60 जे0ए0एस0बी0 भाग–7 पृष्ठ–24

14 कनिघम आ0रि0 खण्ड–1 पृष्ठ 85–91 खण्ड–16 पृष्ठ 127–29 खण्ड–2 पृष्ठ–42

15 वही आ0रि0 खण्ड–18 पृष्ठ–41

16 पूर्वोक्त पृष्ठ 248

17 वही

18 पाण्डेय रामपूजन अथ कुकुत्स्य चरित्र देवरिया, 1975, पृष्ठ 1–19

19 'काकन्दी नर्या जात' काकन्दक वही पृष्ठ 30–31 विश्वनाथ शास्त्री द्वारा उद्धृत

20 फ्यूरर आ0रि0 1891 पृष्ठ 234

21 कनिघम आ0रि0 खण्ड–1 पृष्ठ 91–95 खण्ड–16 पृष्ठ–129

22 फ्यूरर पूर्वोक्त

23 जिला जनगणना हस्त–पुस्तिका जिला देवरिया पृ0–466

24 वही पृष्ठ 248

25 आ0रि0 1906–7 पृ0– 196

26 वही

27 वही पृष्ठ– 199

28 वही

29 साहनी श्याम एई जि 18 (1925–26) पृष्ठ 218 एव आगे

30 शर्मा जे0पी0, 'रिपब्लिक्स इन एन्सिएन्ट इण्डिया' लीडेन 1968 परिशिष्ट ई पृष्ठ– 248

31 फ्यूरर पूर्वोक्त पृष्ठ 240–41

32 वही

33 Raychandhuri, H C , 'Political Hoistory of Ancient India' P 95

34 Datt & Bajpai, op cit pp 347-48

35 Pathak, op cit , p 281, 283 421

36 Majumdar and Pusalker op cit vol II p 415

37 Malalasekera, G R 'Dictionary of Pali Proper Names' Part II, p 653

38 सदर्भ 17 पृष्ठ— 221—287

39 Pandey, op cit pp 126-127

40 Srivastava, A K 'Find Spots of Kusana Coins in U P ' p 39

41 Giles, H A 'The Travels of Fa-Hsin' pp 40-41

42 Tripathi R S , 'History of Kanauj to the Moslem Conquest', p 75

43 Watters, T , 'On Yuan Chwang's Travels in India Vol, II, p 25

44 Bajpai and Dikshit, op cit p 18

45 Puri, B N 'The History of the Gurjara- Pratiharas' pp 63-64

46 Alexander op cit , p 439

47 Pandey op cit, p 228

48 Nevill H R , op cit p 110

49 I bid

50 Chandra, Satish, 'Parties and Politics at the Mughal Court', 1707-1740 p 27-28, Irvine, Welliam 'Later Mughals' vol I pp-40-41

51 Nevill- op- cit p 182

52 Hallowes, B J K, 'District Gazatteers of the United Provinees of Agra and Audh Supplementary Notes and Statistics up to 1931-32 vol XXXI (D) Gorakhpur District, P 24

53 'Uttar Pradesh District Gazatteers' Deoria-1988 pp-20

54 Mishra, R P , Sunadaram, K P and Prakash Rao, V L S, (Ed) 1974, 'Regional Development Planning in India, A New Strategy', Vikash Publishing House India pp 180-218

55 Jefferson, M (1931) 'Distribution of world's city Folk', Geographical Review, XXI, p 453

अध्याय-चार

सेवाकेन्द्रों का स्थानिक कार्यात्मक संगठन

4 1 सेवाकेन्द्रो का स्थानिक–कार्यात्मक सगठन

प्रत्येक क्षेत्र का अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है जिसका निर्माण न केवल वहाँ प्राप्त ससाधनो द्वारा अपितु वहाँ निवास करने वाले लोगो के द्वारा भी होता है।[1] ससाधनो तथा आर्थिक क्रियाओ के असमानता के कारण ही किसी विशिष्ट क्षेत्र मे विभिन्न स्तरीय सेवाकेन्द्रो का अभ्युदय एव विकास होता है। इन सेवाकेन्द्रो का अधिवास प्रतिरूपो से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। अन्य देशो की भॉति भारत मे भी विभिन्न भौगोलिक आर्थिक एव सास्कृतिक पृष्ठभूमि मे सुसहत एव व्यासृत दोनो ही प्रकार के अधिवास प्रतिरूपो का विकास हुआ है। इन दोनो प्रतिरूपो के अतिरिक्त दोनो के मध्य अनेक प्रतिरूपो जैसे विसरित पल्लियो आदि का भी विकास स्थान विशेष की विशिष्ट सामाजिक एव आर्थिक परिस्थितियो के परिणामस्वरूप मिलता है।[2] कृषि आधारित बडे पैमाने पर सहत बस्तियॉ भारतीय बस्ती प्रतिरूप की प्रमुख विशेषता है।[3] अध्ययन क्षेत्र समतल उपजाऊ भू–भाग है जहॉ गहन कृषि की जाती है। यहॉ का जनसख्या घनत्व 2001 के जनगणना के अनुसार 1077 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जो प्रदेश के औसत घनत्व (689) से काफी अधिक है। इस प्रकार घनत्व की दृष्टि से इसका प्रदेश मे **नौवॉ** स्थान है। अत स्पष्ट है कि यह क्षेत्र *सहत अधिवास* का क्षेत्र है। इस जनपद मे **बागर क्षेत्र** मे *सहत अधिवास* प्रमुख विशेषता है जबकि *छोटी गडक, राप्ती* एव *घाघरा* के **खादर प्रदेश** मे *अर्द्धसघन ग्रामीण अधिवास* पाए जाते है। ये प्रदेश जनपद के दक्षिण मे स्थित है। इसमे *रुद्रपुर, गौराबरहज* एव *सलेमपुर* तहसीलो के दक्षिणी भाग के गॉव शामिल किये जा सकते है। *माइत्सेन*[4] ने सहत ग्रामीण अधिवास को सामुदायिक कृषि व्यवस्था से और व्यासृत आवास गृहो को व्यक्तिगत कृषि व्यवस्था से सम्बन्धित बताया है।

नगरो का विकास गॉवो से होता है और नगरवासी निरतर ग्रामवासियो के परिश्रम पर ही पनपते है।[5] सामाजिक आर्थिक अध सरचना की दृष्टि से ये ग्रामीण बस्तियॉ नगरी बस्तियो की अपेक्षा पर्याप्त रूप से पिछड़ी है। इनके पिछडेपन के कारण ही बडे पैमाने पर कार्यशील जनसख्या का स्थानान्तरण गॉवो से नगरो की ओर हो रहा है जो भारतीय जनसख्या की प्रमुख समस्या है। गॉवो से नगरोन्मुखी स्थानान्तरण की समस्या का समाधान, ग्रामीण बस्तियो की सामाजिक–आर्थिक अध सरचना के विकास मे निहित है।[6] इस समस्या का समाधान क्षेत्र के विकास द्वारा ही सम्भव है और उस क्षेत्र का विकास ऐसे अनेक सेवाकेन्द्रो के माध्यम से किया जा सकता है, जहॉ लगभग सभी आधारभूत सामाजिक आर्थिक सुविधाओ का केन्द्रीकरण हो। यदि ये सेवाकेन्द्र अपने सेवा

क्षेत्रो एव अन्य सेवाकेन्द्रो से आवागमन एव सचार माध्यमो से आपस मे सुसम्बद्ध हो जाय तो विकास की गति और तेज हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र *'कृषि प्रधान पिछडी अर्थव्यवस्था'* का प्रतिरूप है। जो उद्योग भी विकसित हुए है वे भी कृषि पर आधारित उद्योग ही है जिनमे **चीनी उद्योग** सर्वप्रमुख है। इस उद्योग ने इस क्षेत्र के विकास मे भरपूर योगदान दिया है। परन्तु वर्तमान समय मे अधिकाश मिले या तो बद पडी है या बीमार चल रही है या फिर किसानो को समय से गन्नो के पैसो का भुगतान नही कर रही है जिससे क्षेत्र के विकास पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो को पहचानने का प्रयास किया है जो सख्या मे अल्प है। साथ ही उनके पदानुक्रम एव क्षेत्रीय वितरण को भी स्पष्ट किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन मे अध्ययन क्षेत्र के ऐसे सभी प्रकार के विकास जनक केन्द्रो को सेवाकेन्द्र कहा गया है। जिनका अभिनिर्धारण उनकी विशिष्ट स्थिति एव कार्यो के केन्द्रीकरण के परिणाम स्वरूप सेवाकेन्द्रो के रूप मे स्वयमेव हो जाता है। ऐसे सेवाकेन्द्र ही सम्बन्धित कार्यों द्वारा अपने समीपवर्ती क्षेत्रो को सेवा प्रदान करते है जिससे उन्हे *सेवाकेन्द्र* के रूप मे अभिहित किया जाता है।[7] सेवाकेन्द्रो का आधार छोटे गॉव से लेकर वृहद् नगरो तक होता है। ये केन्द्र विकास तथा नवाचार के जनक होते हैं। इन सेवाकेन्द्रो के आधार पर *पेरॉक्स*[8] महोदय ने जो एक अर्थशास्त्री थे *'विकास ध्रुव सिद्धान्त'* का प्रतिपादन किया। *बोडविले*[9] ने इस सिद्धान्त को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य मे नया आयाम दिया।

4 2 सेवाकेन्द्र एव केन्द्रीय कार्य

कोई भी सेवाकेन्द्र चाहे जिस आकार–प्रकार का हो वह सामाजिक आर्थिक कार्यो का सग्रह केन्द्र होता है तथा समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है। बडे सेवाकेन्द्रो मे सेवा कार्यो की सख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है। किसी भी सेवाकेन्द्र की स्थापना एव स्थायित्व उन सामाजिक आर्थिक कार्यों पर निर्भर करता है जिसके द्वारा समीपवर्ती क्षेत्र को सेवा प्रदान करता है। अत ये केन्द्र परिधीय क्षेत्र से इष्टतम् रूप मे जुडे होते है। इन केन्द्रो के सेवाओ का लाभ प्रत्येक जन तक पहुँचे इसके लिए सम्पूर्ण क्षेत्र मे विभिन्न स्तर के सेवाकेन्द्रो का जाल होना चाहिए। वास्तव मे ये केन्द्र सामाजिक– आर्थिक कार्यों के क्रीडा स्थल के रूप मे होते हैं। इन सेवाकेन्द्रो का स्वरूप स्थानीय इकाई के समान होता है जिनके द्वारा अधिकाश सुविधाएँ एव सेवाएँ प्रमुख निश्चित क्षेत्र के लोगो को दिये जाते हैं।

सेवाकेन्द्रो पर अनेक कार्यों का सकेन्द्रण होता है, किन्तु इनमे से कुछ कार्य सेवाकेन्द्र की जनसख्या के लिए तथा कुछ कार्य समीपवर्ती क्षेत्र (सेवित क्षेत्र) की जनसख्या के लिए होते है। स्वय सेवाकेन्द्र की जनसख्या को सेवा प्रदान करने वाले कार्यों को *सामान्य कार्य (Non Basic Function)* तथा समीपवर्ती क्षेत्रो को सेवा प्रदान करने वाले कार्यों को *आधारभूत कार्य (Basic Function)* कहा जाता है, जिस पर ही उनकी अवस्थिति होती है। सामान्यत सामान्य कार्य सभी

बस्तियो द्वारा किये जाते हैं किन्तु आधारभूत कार्य कुछ विशिष्ट बस्तियो (सेवाकेन्द्र) द्वारा ही सम्पादित होते है। *क्रिस्टालर* [10] ने इन आधारभूत कार्यो को *केन्द्रीय कार्य (CentralFunction)* कहा है। *भटट* [11] ने तकनीकी आर्थिक एव सस्थागत कारणो से असर्वगत (NonUbiquites) तथा कुछ निश्चित क्षेत्रो की सेवा के लिए निश्चित स्थानो पर अवस्थित सेवाओ को *'केन्द्रीय कार्य* के रूप मे माना है। *राजकुमार पाठक* [12] के अनुसार जिन कार्यों से लोगो का स्थानान्तरण सभव होता है उसे *केन्द्रीय कार्य* कहते है। यह स्थानान्तरण दैनिक मासिक वार्षिक स्थायी अस्थायी आदि अनेक रूपो मे हो सकता है। किन्तु किसी भी कार्य का केन्द्रीय कार्य होना इस बात पर निर्भर है कि उसका उस क्षेत्र मे क्या महत्व है? किसी विकास केन्द्र के केन्दीय कार्यो का महत्व स्वय उस केन्द्र एव सम्बन्धित क्षेत्र के विकास मे योगदान से है। सम्बन्धित केन्द्र एव क्षेत्र का विकास केन्द्रीय कार्यो का प्रतिफल होता है। इन सेवाकेन्द्रो का विकास परिधीय क्षेत्रो के योगदान का भी परिणाम है। वास्तव मे केन्द्रीय कार्यो का सम्बन्ध सम्बधित सेवाकेन्द्र एव क्षेत्र का विकास करने से है। अत ऐसे कार्यो को *केन्द्रीय विकास कार्य (Central Growth Function)* कहना अधिक उपयुक्त है। प्रस्तुत अध्ययन मे *प्रशासनिक कृषि एव पशुपालन शिक्षा एव मनोरजन परिवहन एव सचार चिकित्सा वित्तीय तथा व्यापार एव वाणिज्य* से सम्बन्धित 51 कार्यों को केन्द्रीय विकास कार्य के रूप मे प्रयुक्त किया गया है सारणी – (4 1)।

4 3 सेवाकेन्द्रो का निर्धारण

सेवाकेन्द्रो के निर्धारण से तात्पर्य अध्ययन क्षेत्र मे अवस्थित बस्तियो मे से उन बस्तियो का चयन करना है जो वितरित बस्तियो का सेवाकेन्द्र के रूप मे सेवा कर रहा है। सेवाकेन्द्रो के निर्धारण की प्रक्रिया सिद्धान्त रूप मे जितनी आसान लगती है, व्यावहारिक रूप मे उतनी ही जटिल प्रक्रिया है। अध्ययन क्षेत्र के विपुल बस्तियो (2004) मे से किन–किन बस्तियो को किस मात्रा मे तथा किस आधार पर सेवाकेन्द्र का अभिनिर्धारण किया जाय? वाछित ऑकडो की अनुप्लब्धता के कारण परिमाणात्मक मानदण्डो का उपयोग करना सम्भव नही हो पाता है। फलत वास्तविक विकासकेन्द्रो का सुनिश्चयन नही हो पाता है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से विभाजित एव परिभाषित बस्तियॉ कभी–कभी समस्या खडी कर देती है। कुछ गॉवो मे कुछ पुरवे अनेक केन्द्रक के रूप मे कार्य क्ररते हैं तथा कभी–कभी राजस्व गॉव वास्तविक बस्ती की इकाइयो से मेल नही खाते। कभी–कभी एक ही सातत्य की बस्ती कई राजस्व गॉवो मे बटी होती है। कभी–कभी कुछ चौराहे, मोड या मुख्य सडक की अवस्थितियॉ इतनी महत्वपूर्ण होती है कि मात्र एक या दो कार्यों के सम्पादन के बावजूद व्यावहारिक रूप मे कई बडे सेवाकेन्द्रो से महत्वपूर्ण होते हैं। प्राय यह भी देखने को मिलता है कि केन्द्रीय कार्यों की अवस्थिति सरकारी ऑकड़ो मे वस्तुत प्रदर्शित नही होती है। अत सेवाकेन्द्र के केन्द्रीय कार्यों की गणना मे प्राय कठिनाई होती है।

सामान्यत सेवाकेन्द्रो का निर्धारण *केन्द्रीय सेवाओ की उपस्थिति, केन्द्रीयता* तथा *केन्द्रीयता*

सूचकाक जनसख्या आकार कार्यशील व कुल जनसख्या के अनुपात केन्द्रीय कार्यो के कार्याधार जनसख्या तथा *बस्तियो के सेवा क्षेत्र* के आधार पर या उपर्युक्त आधारो मे से एकाधिक आधारो पर किया जा सकता है। विगत कुछ वर्षो मे भारत मे सेवाकेन्द्रो के निर्धारण मे महत्वपूर्ण कार्य हुए है। ***सुधीर वनमाली***[13] ***सेन***[14] ***नित्यानन्द,***[15] ***कुमार एव शर्मा,***[16] ***एस0बी0सिह***[17] तथा ***खान***[18] आदि विद्वानो ने *कार्यों के सकेन्द्रण* के आधार पर सेवाकेन्द्रो का निर्धारण किया है जिसमे *कार्यो के औसत कार्याधार जनसख्या* को भी स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त ***दत्ता***[19] ने *परिवहन सूचकाक* के आधार पर ***आलम***[20] ने *जनसख्या के आधार पर* ***जी0के0मिश्र***[21] *जनसख्या के आकार और कार्यो की उपस्थिति के आधार पर* तथा ***भट्ट***[23] एव ***पाठक***[24] आदि विद्वानो ने बस्तियो की *केन्द्रीयता* को सेवाकेन्द्रो के निर्धारण मे आधार माना है। ***बी0एन0 मिश्र***[25] ने इसके लिए *औसत कार्याधार जनसख्या उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* और सेवाकेन्द्र एव सेवा क्षेत्र के मध्य क्षेत्रीय अतक्रिया के लिए *परिवहनीय सम्बद्धता* को आधार माना है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सेवाकेन्द्रो के निर्धारण की अनेक प्रक्रियाए है। सभी प्रक्रियाएँ व्यक्तिनिष्ठ है क्योकि *सेवाकेन्द्रो का चयन केन्द्रीय कार्यों का चयन* तथा *सतृप्त जनसख्या बिन्दु का चयन* जिसके ऊपर ही सम्पूर्ण विश्लेषण सम्भव है, अध्ययन कर्ता के विवेक पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन मे अध्ययन क्षेत्र के 2004 बस्तियो मे से *बी0एन0मिश्र (1980)* द्वारा प्रयुक्त विधि का उपयोग करते हुए कार्यो की *औसत कार्याधार जनसख्या उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* और *बस्तियो की सम्बद्धता* के माध्यम से सेवाकेन्द्रो का अभिनिर्धारण किया गया है। इसके लिए सर्वप्रथम कार्यो के क्षेत्रीय महत्व औसत कार्याधार मूल्य और उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप के आधार पर 51 केन्द्रीय कार्यो एव सेवाओ का चयन किया गया है जो अध्ययन क्षेत्र मे वितरित बस्तियो द्वारा सम्पादित होते है सारणी– (4 1)।

(क) औसत कार्याधार जनसख्या

'कार्याधार जनसख्या' किसी भी प्रदेश मे किसी भी कार्य को उपयुक्त ढग से सेवा प्रदान करने के लिए आवश्यक जनसख्या होती है। यह प्रदेश से सम्बन्धित कार्य की *प्रवेशी* और *सपृक्त* जनसख्या के बीच की स्थिति होती है। ***प्रवेशी जनसख्या*** से तात्पर्य किसी कार्य को सम्पादित करने से सम्बन्धित उस निम्नतम जनसख्या से है जिस पर किसी बस्ती मे किसी कार्य की अवस्थापना हो। प्रस्तुत अध्ययन मे प्रवेशी जनसख्या की गणना सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र के बस्तियो मे से की गयी है। ***सपृक्त जनसख्या*** वह जनसख्या आकार है जिसके ऊपर किसी प्रदेश मे कोई कार्य (यूबीक्वीटस) हो जाता है।[26] प्रस्तुत अध्ययन मे सपृक्त जनसख्या निर्धारण मे सम्बन्धित कार्य को करने वाले सबसे बड़े केन्द्र की जनसख्या की गणना *रीड मुच*[27] विधि द्वारा की गयी है। इसके बाद सबसे कम कार्याधार जनसख्या वाले कार्य की जनसख्या से सभी कार्यों की कार्याधार

जनसख्या मे भाग देकर कार्याधार जनसख्या सूचकाक की गणना की गयी है। पुन कार्याधार जनसख्या सूचकाक के निरीक्षण के बाद कार्यो के **4 पदानुक्रम** निर्धारित किये गये हैं। सारणी (4 1) मे *कार्य उनकी प्रवेशी जनसख्या सपृक्त जनसख्या* तथा *उनकी कार्याधार जनसख्या* को प्रस्तुत किया गया है। सारिणी (4 2) मे *कार्याधार जनसख्या सूचकाक* तथा *कार्यो के पदानुक्रम* का विवरण दिया गया है।

सारणी–4 1

केन्द्रीय कार्य एव सेवाएँ

	कार्य	अध्ययन क्षेत्र मे कुल सख्या	प्रवेशी जनसख्या	सपृक्त जनसख्या	कार्याधार जनसख्या
	1	2	3	4	5
	(क) प्रशासनिक कार्य				
1	जनपद मुख्यालय	1	82168	82168	82168
2	तहसील मुख्यालय	5	9827	82168	45997
3	विकासखण्ड केन्द्र	15	5027	82168	43597
4	जनपद पचायत केन्द्र	1	82168	82168	82168
5	न्यायपचायत केन्द्र	176	2260	21550	11905
6	थाना	18	3676	82168	42927
	(ख) उद्योग एव औद्योगिक आस्थान				
7	बडे उद्योग	6	6326	82168	42247
8	बडे औद्योगिक आस्थान	2	12705	82168	47436
9	लघु औद्योगिक आस्थान	5	5027	29793	17410
10	औद्योगिक क्षेत्र	1	1348	1348	1348
	(ग) कृषि एव पशुपालन				
11	शीत गृह	3	5027	82168	43597
12	बीज गोदाम एव उर्वरक केन्द्र	299	459	5027	2743
13	कीटनाशक डीपो	17	5027	8268	6647
14	क्रय–विक्रय सहकारी समिति	5	9827	82168	45997
15	कृषि सेवाकेन्द्र	16	4025	82168	43096
16	पशु चिकित्सालय	25	5522	10270	7896
17	पशु सेवाकेन्द्र	37	735	5522	3128
	(घ) परिवहन एव सचार				
18	रेलवे स्टेशन/हाल्ट	19	2120	29793	15956
19	बस स्टेशन/स्टाप	142	222	5522	2872
20	टेलीफोन एक्सचेज	35	2250	22334	12292
21	तारघर	21	2250	22344	12297

22	डाकघर	376	316	2245	1280
23	पीसीओ	668	100	22400	11250
	(ङ) शिक्षा एव मनोरजन				
26	महाविद्यालय	12	5027	82168	43597
25	तकनीकी एव औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान	4	82168	82168	82168
26	इण्टर कॉलेज	115	1213	29793	15513
27	हाई स्कूल	121	953	22334	11643
28	सीनियर बेसिक स्कूल	413	540	5522	3033
29	जूनियर बेसिक स्कूल	1813	316	5527	2921
30	छवि गृह	16	5027	82168	43597
	(च) चिकित्सा सेवा				
31	जिला अस्पताल	1	82168	82168	82168
32	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	9	5027	29793	17410
33	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	16	3676	29793	16734
34	नये प्राथमिक स्वा0 केन्द्र	64	450	22400	11425
35	आयुर्वेदिक एव यूनानी चिकित्सालय	46	450	13698	7074
36	होम्योपैथिक चिकित्सालय	25	450	13696	7074
37	परिवार एव मातृ शिशु कल्याण केद्र/उपकेन्द्र	20	3026	29793	16409
	(छ) वित्तीय कार्य				
38	राष्ट्रीय बैंक	53	2025	82168	42096
39	भूमि विकास बैक	3	22344	82168	52256
40	जिला सहकारी बैंक	19	2903	82168	42535
41	नाबार्ड' इकाई	1	82168	82168	82168
42	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	53	1248	3549	2398
43	भारतीय जीवन बीमा निगम	1	82168	82168	82168
	(ज) व्यापार एव वाणिज्य				
44	वार्षिक मेला	17	2025	29793	15909
45	थोक बाजार	15	2025	82168	42096
46	फुटकर बाजार	45	1225	3549	2387
47	साप्ताहिक बाजार	36	1009	2245	1627
48	कृषि उपकरण यत्र विक्रय केन्द्र	20	2903	29793	16348
49	हार्डवेयर शॉप	102	1248	5522	3385
50	ऑटो रिपेयर शॉप	106	1440	5522	3481
51	दवाखाना	185	450	5500	2975

सारणी–4 2

कार्य, कार्याधार जनसख्या सूचकाक एव कार्य अनुक्रम

क्रम	केन्द्रीय कार्य एव सेवाएँ	कार्याधार जनसख्या	कार्याधार जनसख्या सूचकाक
1	2	3	4
	प्रथम क्रम के कार्य		
1	जनपद मुख्यालय	82168	64 20
2	जनपद पचायत केन्द्र	82168	64 20
3	तकनीकी एव औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान	82168	64 20
4	जिला अस्पताल	82168	64 20
5	नाबार्ड की इकाई	82168	64 20
6	भारतीय जीवन बीमा निगम	82168	64 20
	द्वितीय क्रम के कार्य		
7	भूमि विकास बैक	52256	40 82
8	बड़े औद्योगिक आस्थान	47436	37 05
9	तहसील मुख्यालय	45997	36 00
10	क्रय–विक्रय सहकारी समितियॉ	45997	36 00
11	बडे उद्योग	44247	34 56
12	महाविद्यालय	43597	34 06
13	शीत गृह	43597	34 06
14	छवि गृह	43597	34 06
15	विकासखण्ड केन्द्र	43597	34 06
16	कृषि सेवाकेन्द्र	43096	33 66
17	थाना	42927	33 53
18	जिला सहकारी बैक	42535	33 23
19	थोक बाजार	42096	32 88
20	राष्ट्रीयकृत बैंक	42096	32 88
	तृतीय क्रम के कार्य		
21	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	17410	13 60
22	लघु औद्योगिक आस्थान	17410	13 60
23	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	167734	13 07
24	परिवार एव मातृ–शिशु–कल्याण केन्द्र/उपकेन्द्र	16409	12 82
25	कृषि उपकरण यन्त्र विक्रय केन्द्र	16734	12 77
26	रेलवे स्टेशन/हाल्ट	15956	12 46
27	वार्षिक मेला	15909	12 42
28	इण्टर कॉलेज	15513	12 12
29	तारघर	12297	9 60

30	टेलीफोन एक्सचेज	12292	9 60
31	न्याय पचायत केन्द्र	11905	9 30
32	हाई स्कूल	11643	9 10
33	नया प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	11425	9 00
34	पी सी ओ	11250	8 78
35	पशु चिकित्सालय	7896	6 16
36	आयुर्वेदिक एव यूनानी चिकित्सालय	7074	5 52
37	होमियोपैथिक चिकित्सालय	7073	5 52
38	कीटनाशक डीपो	6647	5 20
	चतुर्थ क्रम के कार्य		
39	ऑटो रिपेयर शॉप	3481	2 72
40	हार्डवेयर शॉप	3385	2 64
41	पशुसेवा केन्द्र	3128	2 44
42	सीनियर बेसिक स्कूल	30 33	2 37
43	दवाखाना	2975	2 32
44	जूनियर बेसिक स्कूल	2921	2 28
45	बसस्टेशन/स्टॉप	2872	2 24
46	बीज गोदाम एव उर्वरक केन्द्र	2743	2 14
47	क्षेत्रीय ग्रामीण बैक	2398	1 87
48	फुटकर बाजार	2387	1 86
49	साप्ताहिक बाजार	1627	1 27
50	औद्योगिक क्षेत्र	1348	1 05
51	डाकघर	1280	1 00

अध्ययन क्षेत्र मे केन्द्रीय कार्यों को सम्पादित करने वाली बस्तियो मे उन्ही का चयन करने का प्रयास किया गया है जो कम से कम *5 केन्द्रीय कार्यों* को सम्पादित करती हो। इसमे *चतुर्थ क्रम* के अधिकाश कार्यो के मूल्य को अभिनिर्धारण मे शामिल नही किया गया है क्योकि अध्ययन क्षेत्र मे इनकी सख्या बहुत अधिक है तथा अधिकाश बस्तियॉ ऐसे कार्यों को सम्पादित करती है ***चतुर्थ क्रम*** के कार्यो– *औद्योगिक क्षेत्र बस स्टेशन, साप्ताहिक बाजार पशुसेवाकेन्द्र क्षेत्रीय ग्रामीण बैक डाकघर* के मूल्य को सेवाकेन्द्र के निर्धारण मे जोडा गया है क्योकि अध्ययन क्षेत्र के कम केन्द्रो पर ही ये सेवाये उपलब्ध है। इसी प्रकार ***तृतीय क्रम*** के कार्य *पी सी ओ* का उच्च मूल्य होने के बावजूद अत्यधिक सख्या के कारण अभिनिर्धारण मे इसके मूल्य को नही जोडा गया है। उक्त मानदण्डो के आधार पर अध्ययन क्षेत्र मे कुल *47 सेवाकेन्द्रो* को मान्यता प्रदान की गयी है। इन 47 सेवाकेन्द्रो की जनसख्या, तथा सम्पादित होने वाले कार्यो की सख्या सारणी (4 3) मे प्रदर्शित है। इन सेवाकेन्द्रो की स्थानिक अवस्थितियॉ मानचित्र (4 1) मे प्रदर्शित है।

SPATIAL DISTRIBUTION OF SERVICE CENTRE IN DEORIA DISTRICT (2002)

FIG 41

सारणी 4 3

जनपद मे निर्धारित सेवाकेन्द्र

क्रम	सेवाकेन्द्रो का नाम	जनसख्या (2001)	सम्पादित कार्यों की सख्या
1	2	3	4
1	देवरिया	82168	40
2	रुद्रपुर	22344	23
3	भाटपार	9827	22
4	सलेमपुर	12705	26
5	लार	22400	20
6	गौरीबाजार	5027	22
7	पथरदेवा	6214	16
8	गौरा बरहज	29793	21
9	महेन	4505	6
10	रामपुर कारखाना	9061	16
11	देसही देवरिया	1840	12
12	भटनी बाजार	11549	18
13	भलुअनी	3518	15
14	बनकटा	4507	16
15	भागलपुर	4936	11
16	मझगॉव	2705	9
17	बैतालपुर	2082	20
18	खुखुन्दू	5292	10
19	मईल	3174	7
20	भिगारी बाजार	4047	5
21	खामपार	6335	7
22	सोहनपुर	6618	7
23	पिण्डी	5996	6
24	रामलछन	2134	6
25	बखरा	3868	9
26	बिसुनपुरा	4548	6
27	पकडी बाजार	3825	8
28	मझौली राज	13698	12
29	पैना	12592	5
30	बघौचघाट	3354	6
31	रामपुर अवस्थी	1546	5
32	तरकुलवॉ	5482	9
33	कचनपुर	2480	5
34	हेतिमपुर	1951	7
35	नूनखार	4274	5

36	घाटी	3081	5
37	मदनपुर	3847	7
38	खोरमा कन्हौली	2250	5
39	बरियारपुर	1385	5
40	बलटीकरा	1260	6
41	इन्दूपुर	2875	6
42	सतराव	2416	5
43	नोनापार	3370	5
44	सोहनाग	575	5
45	प्रतापपुर	3796	6
46	नारायणपुर	2175	5
47	खोरीबारी रामपुर	4870	5

(ख) उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप

उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप सेवाकेन्द्रो के मध्य लम्बवत् अन्योन्य क्रिया है जिसके अन्तर्गत उपभोक्ताओ के द्वारा उनके आवश्यक सामानो के क्रय–विक्रय हेतु सेवाकेन्द्रो तक सचरण के स्वरूप एव उनकी प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। इसीलिए इसे *उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* कहते है। उपभोक्ताओ के सचरण प्रतिरूप के अध्ययन से किसी क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो की कार्यात्मक महत्ता का पता चलता है। साथ ही किसी क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो के विभिन्न स्तरो (पदानुक्रम) के मध्य *क्षेत्रीय अन्तर्प्रक्रिया* के अध्ययन द्वारा वहॉ पर सेवाकेन्द्रो के क्षमता निर्धारण एव चयन मे सहायता मिलती है।[28] इसके अध्ययन से क्षेत्र के भावी विकास हेतु योजना प्रस्तुत करने मे सहयोग मिलता है। अत सेवाकेन्द्रो का चयन एव पुष्टि उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप द्वारा होना अपरिहार्य है। अध्ययन क्षेत्र मे उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप के अध्ययन के लिए उपभोक्ता सचरण सर्वेक्षण को आधार बनाया गया है।

(i) उपभोक्ता सचरण सर्वेक्षण

अध्ययन क्षेत्र मे उपभोक्ताओ के सचरण प्रतिरूप के अध्ययन हेतु 150 ग्रामो का नमूने के तौर पर सर्वेक्षण किया गया। इन ग्रामो के प्रतिचयन मे इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है कि प्रतिचयनित ग्राम लगभग पूरे जनपद का प्रतिनिधित्व करे। इसके लिए कुछ ग्राम परिवहन भार्गों के निकट के लिए गए है, तो कुछ परिवहन मार्गों से दूर आतरिक क्षेत्रो से। कुछ ऐसे ग्रामो का चयन किया गया है, जहॉ सप्ताह मे एक या दो दिन बाजार लगता है, तो कुछ ग्राम केन्द्रस्थलो के समीपवर्ती है। इस प्रकार प्रतिचयनित ग्राम अध्ययन क्षेत्र के भौतिक और सास्कृतिक भू–दृश्यो के अनुरूप चुने गये है।

प्रतिचयनित ग्रामो के अतर्गत आर्थिक स्तर के आधार पर (धनी निर्धन एव मध्यम), 5 या 6

परिवारो का चयन किया गया। जैसे भूमिहीन खेतिहर मजदूर एक एकड जोत वाले कृषक 10 एकड या इससे अधिक जोत वाले कृषक एव नौकरी पेशा या व्यापार मे कार्यरत। परिवार के मुखिया से तीन स्तर के आवश्यक सामानो के क्रय—विक्रय हेतु प्रश्न पूछे गये। *प्रथम स्तर* मे प्रतिदिन उपभोग मे आने वाले समान जैसे—नमक तेल मसाला सब्जी मॉस मछली आदि *द्वितीय स्तर* के सामानो मे सप्ताह या एक माह तक खर्च के लिए खरीदे जाने वाले समान जैसे कपडा रेडीमेड बर्तन दवा स्टेशनरी जूता चप्पल सौन्दर्य प्रसाधन आदि। *तृतीय स्तर* के अतर्गत खरीदे जाने वाले सामान जैसे घडी रेडियो आभूषण ऊनी कपडे कृषि यन्त्र भवन निर्माण सामग्री शादी—विवाह के अवसरो पर उपहार के सामान आदि जो कभी—कभी क्रय किये जाते है। इसके अतिरिक्त उनके बाजार जाने के साधन बाजार जाने की आवृत्ति (प्रतिदिन साप्ताहिक या मासिक) निकटतम बाजार आसपास के अन्य बाजारो मे गमनागमन की प्रवृत्ति तथा सामानो के विक्रय हेतु गन्तव्य स्थान के विषय मे साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गयी।

(ii) उपभोक्ता सचरण सर्वेक्षण से प्राप्त परिणाम

सवेक्षण के आधार पर स्पष्ट होता है कि उपभोक्ताओ के बाजार सचरण का प्रतिरूप उनके द्वारा खरीदे जाने वाले सामानो के प्रकार तथा उनकी आर्थिक स्थिति द्वारा निर्धारित होता है। जैसे प्रतिदिन काम आने वाला सामान अधिक से अधिक 5 किमी की दूरी पर अवस्थित बाजार से चाहे वह आवर्ती बाजार ही क्यो न हो हर स्तर के उपभोक्ताओ द्वारा पैदल चलकर या साइकिल अथवा स्कूटर—मोटर साइकिल द्वारा चलकर क्रय किया जाता है।

द्वितीय वर्ग की वस्तुओ को क्रय करने के लिए निर्धन उपभोक्ता निकट के बाजार केन्द्र तक ही जाते है अथवा ग्राम के आवर्ती बाजारो मे ही क्रय कर लेते हैं क्योकि दूर के बडे केन्द्रो तक जाने के लिए इनके पास पैसा एव समय दोनो का अभाव रहता है। मध्यम एव उच्च स्तर के उपभोक्ता इन वस्तुओ को खरीदने के लिए अपने पास के प्रमुख सेवाकेन्द्र तक 15 से 20 किमी की दूरी तय कर जाते है।

तृतीय वर्ग के बहुमूल्य सामग्री एक तो उच्चस्तर के उपभोक्ता ही अधिकत्तर क्रय करते है, दूसरे वे उसे प्राप्त करने के लिए या तो दूसरे क्षेत्र के सेवाकेन्द्र कसया गोरखपुर को जाते है या देवरिया से क्रय करते हैं। भवन—निर्माण सामग्री खाद इत्यादि भारी सामान सभी स्तर के उपभोक्ता निकटवर्ती बाजार से ही क्रय करते है।

उपभोक्ताओ द्वारा सामानो के क्रय हेतु तय की गयी दूरी के आकलन से स्पष्ट है कि अधिकतम सचरण 45 किमी के लगभग है। शादी विवाह के अवसरो पर खरीदे जाने वाले सामान सभी स्तर के उपभोक्ता अपने—अपने आर्थिक स्तर के अनुरूप समीप के बाजार से लेकर देवरिया से या फिर दूसरे क्षेत्र के पडोसी सेवाकेन्द्रो— कसया, गोरखपुर से प्राप्त करते है। उपभोक्ताओ द्वारा विभिन्न सामानो के क्रय हेतु तय की जाने वाली दूरी का प्रदर्शन चित्र (4 2) मे है। जिससे

SPATIL PREFERENCE OF CONSUMERS IN DEORIA DISTRICT
ORDER OF CENTRES
FIRST ORDER
SECOND ORDER
THIRD ORDER
FOURTH ORDER
N
सकेत INDEX
मानचित्र पर रैखिक दूरी
कार्य (सारणी 42 में उल्लिखित सख्या) हेतु सचरण
0-15 CM = कार्य सख्या– 5 6 12 16 17 18 19 20 22 23 26 27 28 29 30 33 34 35 36 38 40 42 46 47 49 50 51 हेतु सचरण।
0-35 CM = कार्य सख्या– 2 3 5 6 9 10 13 14 15 16 17 18 20 21 26 27 30 32 33 35 36 37 38 39 40 44 47 50 51 हेतु सचरण।
0-13 CM = कार्य सख्या– 1 2 4 7 8 11 24 25 31 32 38 39 40 41 43 45 46 48 51 हेतु सचरण।
6 0 6 KM
FIG 42
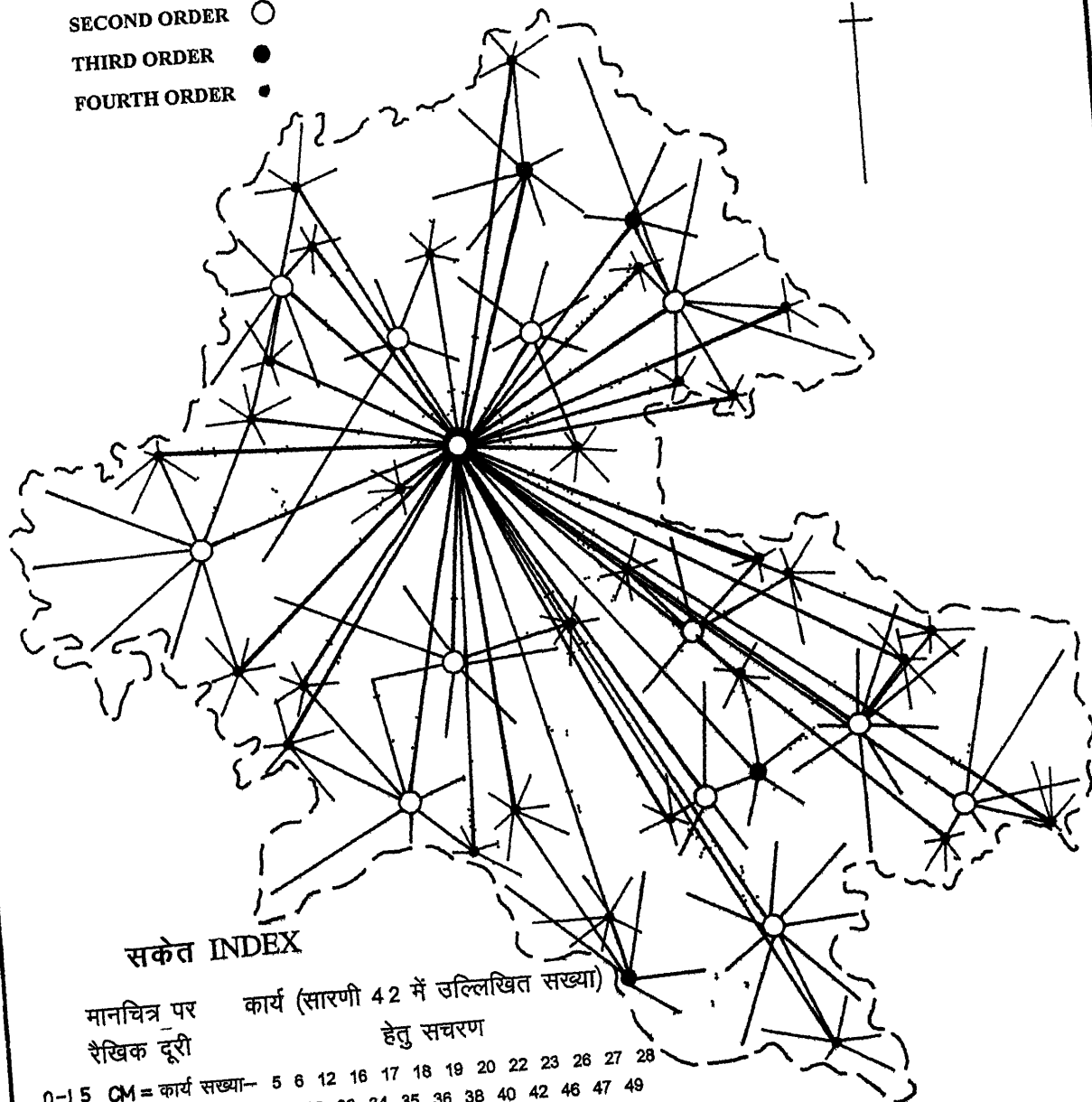
स्पष्ट है कि निकटवर्ती बाजारो का महत्व उपभोक्ताओ के लिए अधिक है क्योकि आकस्मिक या अतिशीघ्र सामानो की प्राप्ति अथवा मनोरजन हेतु प्राप्त या साय टहलते हुए जाने का कार्य इन्ही बाजार केन्द्रो द्वारा सम्पादित होता है।

उपभोक्ता सचरण का एक महत्वपूर्ण तत्व उनके द्वारा वाछित सेवाकेन्द्रो तक पहुँचने के लिए प्रयोग मे लाये गये साधन है। निकट के बाजार तक उपभोक्ता प्राय पैदल साइकिल अथवा मोटर–साइकिल का प्रयोग करते है। 5 से 10 किमी तक की दूरी पर स्थित सेवाकेन्द्रो को जाने के लिए बहुधा रिक्शा साइकिल स्कूटर मोटरसाइकिल आदि का प्रयोग किया जाता है। जबकि दूर स्थित बडे केन्द्रो तक जाने के लिए बसो टैक्सियो इत्यादि का माध्यम लिया जाता है। रेल सेवा का माध्यम उन्ही स्थलो पर जाने हेतु लिया जाता है जहाँ समय से उसकी उपलब्धि है जैसे– सलेमपुर माटपार भटनी बनकटा गौरी बाजार इत्यादि।

चित्र (4 2) मे उपभोक्ताओ के सचरण प्रतिरूप से स्पष्ट है कि उपभोक्ताओ के सचरण की दृष्टि से *देवरिया* मुख्यालय ***सबसे बडा (प्रथम क्रम)*** सेवाकेन्द्र है। जनपद की लगभग सभी जनसख्या तथा सभी सेवाकेन्द्रो को यह सेवाये प्रदान करता है। इसके लिए इसकी केन्द्रीय अवस्थिति बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है। सुदूर सेवाकेन्द्र एव जनसख्या का सचरण देवरिया के लिए प्रधानत सारिणी (4 2) मे उल्लिखित कार्य सख्या – 1 2 4 7 8 11 24 25 31 32 38 39 40, 41 43 45 46 48 51 – के लिए होता है। उपभोक्ता सचरण की दृष्टि से ***दूसरे क्रम*** *के सेवाकेन्द्र सलेमपुर रुद्रपुर गौरीबाजार पथरदेवा गौरा बरहज, लार भाटपार भटनीबाजार रामपुर कारखाना भलुअनी बैतालपुर,* और *बनकटा* है। ये सभी प्रखण्ड विकास केन्द्र के मुख्यालय है जिसमे *सलेमपुर रुद्रपुर गौराबरहज* और *भाटपार* तहसील मुख्यालय भी है। अत इन केन्द्रो द्वारा अन्य कार्यो के अलावा प्रशासनिक कार्य भी सम्पादित होता है। यहाँ प्रमुख सचरण कार्य सख्या– 2 3 5, 6 9 10 13 14 15 16 17 18 20, 21 26 27 30 32 33 35 36 37 38 39, 40 44 47 50 51 के लिए होता है। इस दृष्टि से *देसही देवरिया भागलपुर, मझौली राज* एव *तरकुलवॉ* को ***तीसरे क्रम*** के सेवाकेन्द्र मे शामिल किया जा सकता है। क्योकि *देसही देवरिया* और *भागलपुर* मे प्रखण्ड कार्यालय होने के बावजूद अन्य सेवाओ की केन्द्रीयता अपेक्षाकृत कम है। दूसरी ओर *तरकुलवॉ* और *मझौली राज* प्रशासनिक केन्द्र न होते हुए भी अन्य कार्यों के कारण प्रचुर सेवाएँ प्रदान करते है। इन केन्द्रो पर प्रशासनिक कार्य सख्या 1 2 3 4 के अलावे द्वितीय क्रम के केन्द्रो द्वारा प्रदान की जाने वाली सभी कार्यों के लिए सचरण होता है। ***चतुर्थ क्रम*** के सेवाकेन्द्र का उपभोक्ता सचरण की दृष्टि से स्थानीय महत्व अपेक्षाकृत अधिक है। इन केन्द्रो की सख्या अध्ययन क्षेत्र मे 30 है। इन पर केन्द्र से लगभग 4–5 किमी अर्द्धव्यास तक की जनसख्या कार्य सख्या– 5 6 12 16 17 18 19, 20 22 23 26 27 28, 29 30 33 34 35, 36, 38 40 42 46 47 49 50 51 के लिए सचरण करती है।

(ग) परिवहनीय सम्बद्धता

सेवाकेन्द्रो का उद्‌भव–विकास तथा अस्तित्व परिवहनीय सम्बद्धता पर ही निर्भर करता है क्योकि कार्यो एव सेवाओ के लिए सचरण परिवहन मार्गो द्वारा ही सम्पन्न होता है। जो क्षेत्र परिवहनीय दृष्टि से जितना अधिक सुसम्बद्ध होता वह उतना ही अधिक क्षेत्र के लोगो को सवाएँ उपलब्ध करायेगा। फलत उसका सेवाक्षेत्र भी विस्तृत होगा। इस प्रकार परिवहनीय सम्बद्धता *सम्बद्धता सूचकाक* के द्वारा ऑका जा सकता है। *सम्बद्धता सूचकाक* सेवाकेन्द्र एव उसके आवृत सेवा क्षेत्र के मध्य क्षेत्रीय अन्तर्प्रकिया के स्तर को व्यक्त करता है। निम्न सम्बद्धता सूचकाक निम्न स्तर तथा उच्च सूचकाक सम्बद्धता के उच्च स्तर को व्यक्त करता है।

अध्ययन क्षेत्र मे परिवहन के प्रमुख साधन सडक एव रेलमार्ग है। यहॉ राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर ग्रामीण सडको तक के सभी प्रकार पाये जाते हैं। **राष्ट्रीय राजमार्गों** की लम्बाई अध्ययन क्षेत्र मे 4 किमी **राज्य उच्च पथ**– 68 किमी **मुख्य जिला सडके**– 134 किमी तथा **अन्य जिलामार्ग** 335 एव **ग्रामीण मार्गों** की लम्बाई 1272 किमी है। अध्ययन क्षेत्र मे **बडी रेल लाइन** 111 किमी की लम्बाई तक विस्तृत है। इस प्रकार परिवहन मार्गो के सभी प्रकारो सहित अध्ययन क्षेत्र मे इसकी ***कुल लम्बाई* 1924 किमी** है। यहॉ ध्यान देने योग्य बात है कि क्षेत्रीय अन्तर्प्रक्रिया के लिए केवल उन्ही सडको को लिया गया है जो पक्की है और सम्पूर्ण वर्ष उन पर परिवहन सम्भव होता है। यद्यपि क्षेत्रीय अन्तर्प्रक्रिया मे कच्ची सडके भी प्रमुख भूमिका निभाती है। परन्तु इनकी उपलब्धता ऋत्विक होती है अत इन्हे गणना मे नही लिया गया है। ग्रामीण मार्ग का महत्व स्थानीय होता है। परन्तु क्षेत्र की जनसख्या को सेवाये इन्ही के माध्यम से प्राप्त होती है। इस प्रकार क्षेत्र की बडी जनसख्या को ये सेवाकेन्द्र से जोडते हैं। जिला मार्ग तथा इस स्तर की अन्य सडके सभी ग्रामीण मार्गो को एक–दूसरे से सम्बद्ध कर सेवाक्षेत्र का विस्तार करती है। परिवहन के साधन भी इन्ही पर उपलब्ध होते है अत क्षेत्र मे इनकी लम्बाई ग्रामीण मार्गो से कम होने के बावजूद क्षेत्रीय सम्बद्धता की दृष्टि से इनका महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है। जनपद मे राज्य उच्च मार्ग एव राष्ट्रीय राजमार्ग की लम्बाई क्रमश 68 किमी एव 5 किमी है। कम लम्बाई के बावजूद परिवहन के सभी साधनो की इनपर उपलब्धता तथा सभी बड़े सेवाकेन्द्रो से सुसम्बद्धता के कारण इन मार्गों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है। इन्ही मार्गों के सहारे अपेक्षाकृत उच्च स्तर के कार्य एव सेवाये सूदूर क्षेत्रो तक सेवा प्रदान कर पाती हैं। फलत सेवाक्षेत्र का व्यापक विस्तार होता है। इस प्रकार जो सेवाकेन्द्र केवल ग्रामीण स्तर के मार्ग द्वारा जुडा होगा उसका मूल्य अपेक्षाकृत जिलामार्ग से सम्बद्ध सेवाकेन्द्र से कम होगा तथा जो केन्द्र जिला मार्ग से केवल सम्बद्ध होगा उसका मूल्य राज्य स्तरीय सम्बद्धता वाले सेवाकेन्द्र से कम होगा। इन बातो को ध्यान मे रखते हुए परिवहन मार्गों को उनके महत्व के अनुसार मूल्य प्रदान करने के लिए जनपद मे परिवहन मार्गों की सकल लम्बाई मे परिवहन मार्ग विशेष की लम्बाई से भाग देकर प्रत्येक प्रकार के परिवहन मार्ग का मूल्य ज्ञात किया गया है। इस विधि से अपेक्षाकृत कम लम्बाई वाले

राज्य उच्चपथ एव जिलामार्ग का मूल्य ग्रामीण मार्गो से उच्च प्राप्त हुआ है। जो क्रमश निम्नवत् है–

मार्ग प्रकार	–	सम्बद्धता मूल्य
1– राष्ट्रीय एव राज्य उच्चमार्ग	–	26
2– रेलमार्ग	–	17
3– मुख्य जिला मार्ग	–	14
4– अन्य जिला मार्ग	–	6
5– ग्रामीण मार्ग	–	1 5

उपर्युक्त मूल्यो के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो का सम्बद्धता मूल्य ज्ञात किया गया। इसमे **अधिकत्तम मूल्य 166** तथा **न्यूनतम मूल्य 1** प्राप्त हुआ। अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो के निर्धारण मे न्यूनतम मूल्य 3 से ऊपर के सेवा केन्द्रो का चयन किया गया। सर्वाधिक सम्बद्धता मूल्य *देवरिया मुख्यालय* का 166 प्राप्त हुआ है। पुन इन मूल्यो के आधार पर सेवाकेन्द्रो के सम्बद्धता मूल्य सूचकाक की गणना की गयी है। सेवाकेन्द्रो के सम्बद्धता मूल्य एव सम्बद्धता मूल्य सूचकाक को सारणी (4 4) मे प्रस्तुत किया गया है।

सारणी–4 4

परिवहनीय सम्बद्धता सूचकाक जनपद देवरिया

क्रम	सेवाकेन्द्र	सम्बद्धता मूल्य	समबद्धता मूल्य सूचकाक
1	2	3	4
1	देवरिया	166	55 33
2	सलेमपुर	139	46 00
3	गौरीबाजार	114	38 00
4	बैतालपुर	93 5	31 16
5	भटनी बाजार	79 5	26 50
6	गौरा बरहज	78 0	26 00
7	हेतिमपुर	78 0	26 00
8	लार	65 5	21 83
9	रामपुर कारखाना	65 5	21 83
10	मईल	65 5	21 83
11	भाटपार	64 0	21 33
12	रुद्रपुर	62 0	20 66
13	खुखुन्दू	59 5	19 83
14	बनकटा	58 0	19 33
15	सतरॉव	58 0	19 33
16	तरकुलवॉं	53 5	17 83
17	पैना	53 5	17 83
18	नोनापार	46 0	15 33

19	मझगॉव	41 5	13 83
20	नूनखार	41 5	13 83
21	भागलपुर	39 5	13 16
22	महेन	29 5	9 83
23	बखरा	29 5	9 83
24	नारायणपुर	29 5	9 83
25	इन्दूपुर	29 5	9 83
26	रामलछन	29 5	9 83
27	मदनपुर	28 0	9 33
28	बलटीकरा	28 0	9 33
29	मझौलीराज	24 0	8 00
30	सोहनपुर	19 5	6 50
31	बरियारपुर	19 5	6 50
32	भिगारीबाजार	18 0	6 00
33	कचनपुर	18 0	6 00
34	पथरदेवा	15 0	5 00
35	भलुअनी	15 0	5 00
36	खोरीबारी रामपुर	15 0	5 00
37	देसही देवरिया	13 5	4 50
38	रामपुर अवस्थी	13 5	4 50
39	प्रतापपुर	12 0	4 00
40	बघउचघाट	12 0	4 00
41	सोहनाग	12 0	4 00
42	खोरमा कन्हौली	12 0	4 00
43	बिसुनपुरा	12 0	4 00
44	खामपार	12 0	4 00
45	पिण्डी	7 5	2 5
46	पकडी बाजार	3 0	1 00
47	घाटी	3 0	1 00

स्रोत– चित्र 4 3 से परिकलित

सारणी से स्पष्ट है कि सम्बद्धता सूचकाक और सेवाकेन्द्रो की केन्द्रीयता मे धनात्मक सम्बन्ध है। प्राय वे सेवाकेन्द्र उच्च सेवा वाले है जिनका सम्बद्धता सूचकाक भी उच्च है। जनपद के सभी सेवाकेन्द्रो को परिवहन मार्गो के साथ चित्र स (4 3) मे दर्शाया गया है।

इस प्रकार उपर्युक्त ***तीनो आधारो***—*औसत कार्याधार जनसख्या उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप एव परिवहनीय सम्बद्धता* के आधार पर जनपद मे 47 केन्द्रो को ***सेवाकेन्द्र*** के रूप मे मान्यता प्रदान किया गया है चित्र (4 1)। तीनो ही आधारो से इस बात की पुष्टि होती है कि उच्च सूचकाक उच्च सेवाकेन्द्र एव निम्न सूचकाक निम्न सेवाकेन्द्र को प्रदर्शित करते हैं। इस आधार

CONNECTIVTY OF SERVICE CENTRES IN DEORIA DISTRICT (2002)
ORDER OF CENTRES
FIRST ORDER
SECOND ORDER
THIRD ORDER
FOURTH ORDER
N
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
MAIN DISTRICT ROAD
& OTHER DISTRICT ROAD
PWD ROAD
RAIL LINE
6 0 6 KM
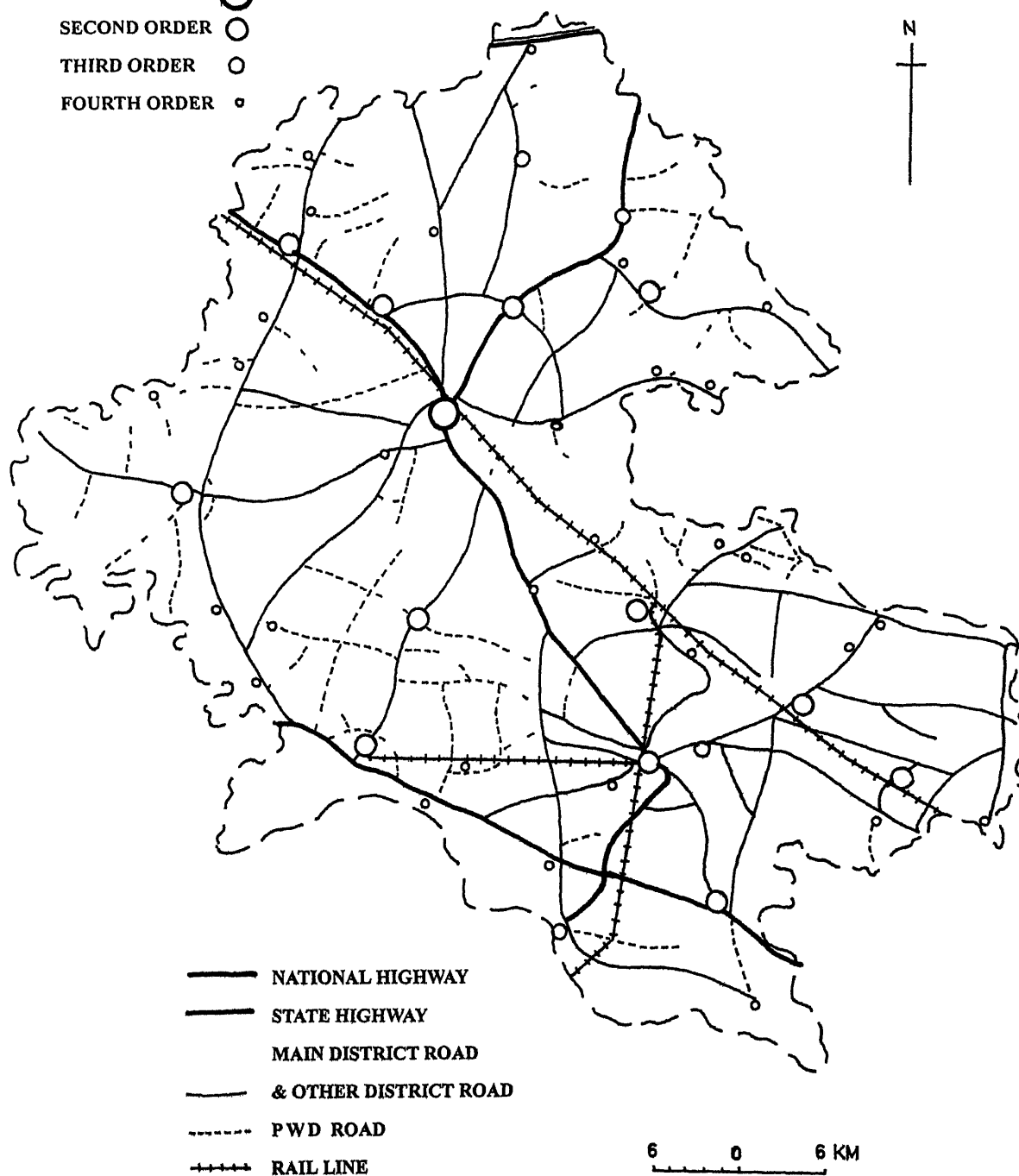
FIG 4 3

पर *देवरिया* सबसे बडा सेवाकेन्द्र है। जो औसत कार्याधार जनसख्या उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप और परिवहनीय सम्बद्धता तीनो ही दृष्टियो से उच्च सूचकाक रखता है।

4 4 सेवाकेन्द्रो की केन्द्रीयता

किसी केन्द्र की केन्द्रीयता उसके द्वारा सम्पादित कार्यो के गुण और उनकी मात्रा का द्योतक है।[29] केन्द्रीयता से सेवाकेन्द्रो के महत्व का आकलन तथा सापेक्षिक महत्व का पता चलता है। इससे सेवाकेन्द्रो का निर्धारण भी किया जाता है। *भटट* [30] ने कार्यों की मात्रा एव गुॅण के साथ–साथ कार्यों की सम्भाव्यता को केन्द्रीयता कहा है। यद्यपि किसी केन्द्र की केन्द्रीयता का उसके जनसख्या आकार से घनिष्ट सम्बन्ध होता है परन्तु यह अनिवार्य नही है। कभी–कभी जनसख्या आकार तथा केन्द्रीयता मे ऋणात्मक सम्बन्ध भी दृष्टिगत होता है।

केन्द्रीयता का निर्धारण एक जटिल एव व्यक्तिनिष्ट प्रक्रिया है। इसका निर्धारण एक या एक से अधिक आधारो पर किया जा सकता है। *क्रिस्टालर* (1933)[31] ने दक्षिणी जर्मनी मे *टेलीफोन कनेक्शन* के आधार पर केन्द्रीयता का निर्धारण किया। *डनकन*[32] *ब्रश*[33] *स्मेल्स*[34] *कार्टर*[35] *उलमैन*[36] *हार्टले एव स्मेल्स* [37] तथा *कार* [38] आदि विद्वानो ने किसी केन्द्र पर पाए जाने वाले सभी चयनित कार्यों के आधार पर केन्द्रीयता का निर्धारण किया। *ब्रेसी* [39] ने केन्द्र के आकर्षण शक्ति के आधार पर तथा *ग्रीन* [40] *कारुथर्स* [41] ने आकर्षण शक्ति के साथ–साथ केन्द्रो की विभिन्न केन्द्रो से परिवहन सम्बद्धता को भी ध्यान मे रखा है। *सिद्दाल* [42] ने फुटकर और थोक व्यापार अनुपात तथा *एबियादेन* [43] ने 1967 मे *बहु–विचर विश्लेषण (मल्टी वेरीएट एनालिसिस)* के द्वारा केन्द्रीयता का निर्धारण किया। 1971 मे *प्रेस्टन* [44] ने फुटकर व्यापार तथा औसत परिवारिक आय के आधार पर केन्द्रीयता मॉडल प्रस्तुत किया। किन्तु ऑकडो पर अत्यधिक निर्भरता इसके व्यावहारिक प्रयोग को सीमित कर देती है। वाशिगटन के *स्नोहिमश काउण्टी* के अध्ययन मे *बेरी और गैरिशन* [45] ने 1958 मे केन्द्र की केन्द्रीयता निर्धारण मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यों व उसकी कार्याधार जनसख्या और पदानुक्रम का उपयोग किया।

भारतीय विद्वानो ने भी केन्द्रीय स्थलो की केन्द्रीयता का निर्धारण अधिकाशत केन्द्रीय कार्यो के सख्या के आधार पर किया है। कार्यो के आधार पर *विश्वनाथ (1967)*[46] *ओ पी सिह (1971)*[47] *प्रकाशराव (1974)*[48], *जगदीश सिह (1976)*[49] आदि विद्वानो ने सराहनीय कार्य किया है। कार्यों की परस्पर यातायात सम्बद्धता के आधार पर बहुत कम कार्य हुआ है, फिर भी *जैन (1971)*[50] तथा *ओ पी सिह* ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो के केन्द्रीयता निर्धारण मे ***कार्यों*** को आधार बनाया गया है। कार्यों के महत्व एव मूल्य की गणना प्रत्येक कार्य के *औसत कार्याधार जनसख्या सूचकाक* के द्वारा की गयी है। इस क्रम में कार्यों के मूल्य की गणना हेतु प्रत्येक कार्य के कार्याधार जनसख्या में

क्षेत्र मे सम्पादित न्यूनतम कार्याधार जनसख्या वाले कार्य की कार्याधार जनसख्या से भाग दिया गया है। इससे प्राप्त कार्यो के मूल्य को सारणी (4 2) मे प्रस्तुत किया गया हे। केन्द्रीयता निर्धारण मे कार्यो के मूल्य के अनुसार ही केन्द्रो के सापेक्षिक महत्व को भी ऑकने का प्रयास किया जाता है। अत केन्द्रो के महत्व की गणना के लिए सेवाकेन्द्रो के सेवित जनसख्या को भी गणना मे शामिल किया गया है क्योकि सेवित जनसख्या से भी केन्द्रो के सापेक्षिक महत्व का ज्ञान होता है। सामान्यतया उच्च स्तरीय कार्यों और केन्द्रो द्वारा सेवित क्षेत्र एव जनसख्या का आकार बडा होता है। कार्यो के महत्व की तीव्रता का अनुमान किसी केन्द्र द्वारा सम्पादित सम्पूर्ण कार्यो के मूल्य को जोडकर किया गया है तथा इसे *कार्यात्मक अक (फक्शनल स्कोर)* की सज्ञा प्रदान की गयी है। अध्ययन क्षेत्र मे निर्धारित सेवाकेन्द्रो मे से सबसे कम कार्यात्मक अक से सभी सेवाकेन्द्रो के कार्यात्मक अको को भाग देकर *कार्यात्मक सूचकाक* प्राप्त किया गया है। प्रत्येक केन्द्र का कार्यात्मक अक एव सूचकाक सारिणी (4 5) मे प्रदर्शित है। प्रत्येक केन्द्र की कुल सेवित जनसख्या को न्यूनतम जनसख्या वाले केन्द्र की जनसख्या से विभाजित करके *सेवित जनसख्या सूचकाक* प्राप्त किया गया है। कार्यात्मक सूचकाक की ही भॉति सेवित जनसख्या सूचकाक भी सापेक्षिक महत्व को उपयुक्त ढग से व्यक्त करता है। प्रत्येक केन्द्र के कार्यात्मक सूचकाक और सेवित जनसख्या सूचकाक को जोडकर उनके *केन्द्रीयता अक* निर्धारित किए गए है। इस केन्द्रीयता अक से उपर्युक्त विधि द्वारा *केन्द्रीयता सूचकाक* परिकलित की गयी है। केन्द्रीयता अक की अपेक्षा केन्द्रीयता सूचकाक केन्द्रो की सापेक्षिक केन्द्रीयता को व्यक्त करने मे अधिक समर्थ है। सारणी (4 5) मे विभिन्न केन्द्रो के केन्द्रीयता सूचकाक प्रदर्शित हैं।

सारणी 4 5

सेवाकेन्द्रो का केन्द्रीयता सूचकाक

क्र स	सेवाकेन्द्र का नाम	कार्यात्मक अक	कार्यात्मक सूचकाक	सेवित जनसख्या	सेवित जनसख्या सूचकाक	केन्द्रीयता अक	केन्द्रीयता अक सूचकाक
1	देवरिया	1655 79	100 29	2730376	76 89	177 18	68 67
2	रुद्रपुर	495 86	30 03	149894	42 16	72 19	27 98
3	भाटपार	402 04	24 35	130166	36 61	60 96	23 62
4	सलेमपुर	582 93	35 30	155812	43 82	79 12	30 66
5	लार	346 14	20 96	142900	40 19	61 15	23 70
6	गौरी बाजार	401 98	24 34	168959	47 52	71 86	27 85
7	पथरदेवा	259 08	15 69	190227	53 50	69 19	26 81
8	गौरा बरहज	511 24	30 96	126603	35 61	66 57	25 80
9	महेन	73 43	4 44	18020	5 06	9 50	3 68
10	रामपुर कारखाना	330 62	20 02	130341	36 66	56 68	21 96
11	देसही देवरिया	107 08	6 48	112219	31 56	38 04	14 74
12	भटनी बाजार	356 52	21 59	134042	37 70	59 29	22 98

13	भलुअनी	238 91	14 47	140643	39 56	54 05	20 94
14	बनकटा	256 06	15 50	116683	32 82	48 32	18 72
15	भागलपुर	125 56	7 60	105645	29 71	37 31	14 46
16	मझगॉवा	86 59	5 24	13525	3 80	9 04	3 50
17	बैतालपुर	211 21	12 79	144957	40 77	53 56	20 75
18	खुखुन्दू	89 19	5 40	23214	6 69	12 09	4 68
19	मईल	94 11	5 70	7348	2 06	7 76	3 00
20	भिगारी बाजार	21 47	1 30	8094	2 27	3 57	1 38
21	खामपार	67 49	4 08	16471	4 63	8 71	3 37
22	सोहनपुर	35 83	2 17	17206	4 83	7 00	2 71
23	पिण्डी	30 15	1 82	29980	8 43	10 25	3 97
24	रामलछन	27 63	1 67	8536	2 40	4 07	1 57
25	बखरा	71 46	4 32	19340	5 44	9 76	3 78
26	बिसुनपुरा	65 25	3 95	23695	6 66	10 61	4 11
27	पकडी बाजार	93 74	5 67	19584	5 50	11 17	4 32
28	मझौली राज	290 88	17 61	45614	12 83	30 44	11 79
29	पैना	54 72	3 31	25104	7 06	10 37	4 01
30	बघौचघाट	26 11	1 58	7714	2 16	3 74	1 44
31	रामपुर अवस्थी	26 23	1 58	3555	1 00	2 58	1 00
32	तरकुलवॉ	129 51	7 84	55829	15 70	23 54	9 12
33	कचनपुर	26 23	1 58	5456	1 53	3 11	1 20
34	हेतीमपुर	35 83	2 17	4487	1 26	3 43	1 32
35	नूनखार	57 58	3 48	9830	2 76	6 24	2 41
36	घाटी	16 51	1 00	6165	1 73	2 73	1 05
37	मदनपुर	68 71	4 16	26929	7 57	11 73	4 54
38	खोरमा कन्हौली	26 23	1 58	6750	1 89	3 47	1 34
39	बरियारपुर	26 83	1 62	8185	2 30	3 92	1 52
40	बलटीकरा	29 23	1 77	4095	1 15	2 92	1 13
41	इन्दूपुर	60 66	3 67	20125	5 66	9 33	3 61
42	सतरॉव	41 81	2 53	9648	2 71	5 24	2 03
43	नोनापार	60 7	3 60	13480	3 79	7 46	2 89
44	सोहनाग	54 7	3 31	5602	1 57	4 88	1 89
45	प्रतापपुर	82 15	4 97	17203	4 83	9 80	3 79
46	नारायणपुर	103 56	6 27	11745	3 30	9 57	3 70
47	खोरीबारी रामपुर	47 39	2 87	16022	4 50	7 37	2 85

4 5 सेवाकेन्द्रो का पदानुक्रम

सेवाकेन्द्र का महत्व क्षेत्र के चतुर्मुखी विकास के लिए आर्थिक सतुलन सामाजिक कल्याण आर्थिक विकास एव वृद्धि की अवधारणा को मौलिक आधार प्रदान करता है। सेवाकेन्द्र न केवल अपनी सेवा– परिधिगत ग्रमीण भू–भाग के जन समुदाय की आवश्यकताओ एव सुविधाओ की ही पूर्ति करता है वरन् अपने प्रदेश मे स्थित अन्य छोटे सेवाकेन्द्रो को भी सेवाये प्रदान करता है। इस प्रकार इन सेवाकेन्द्रो को उनकी सेवा के महत्व क्रम या कार्यात्मक श्रृखलाबद्धता के आधार पर श्रेणीबद्ध करने को *'सेवाकेन्द्र–पदानुक्रम'* कहते है।

सेवाकेन्द्र समूह कार्यात्मक रूप से एक गुफन प्रतिरूप (Nesting Pattern) मे सगठित पाये जाते है। इस गुफन प्रक्रिया मे छोटे– बडे केन्द्र इस प्रकार व्यवस्थित होते है कि छोटे क्रम के केन्द्र बडे केन्द्र के प्रभाव क्षेत्र मे समाहित हो जाते है फिर भी अपना स्वतन्त्र सेवाक्षेत्र बनाये रखते हे। वस्तुत पदानुक्रम की सकल्पना सेवाकेन्द्रो के आकार कार्य एव सेवाओ के वितरण की तारतम्यता का प्रतिपादन करती है तथा इसके अनुसार केन्द्रो की सातत्य प्रवृति भी प्रदर्शित होती है। पदानुक्रम किसी क्षेत्र विशेष की आर्थिक विकास प्रक्रिया के लिये सरचनात्मक आधार प्रस्तुत करता है। आर्थिक रूप से पिछडे क्षेत्र के सर्वागीण विकास के प्रेरक अभिज्ञानो का प्रचार एव प्रसार सेवाकेन्द्र– पदानुक्रम के माध्यम से ही होता है।

सेवाकेन्द्रो की केन्द्रीयता सेवित क्षेत्र प्रदत्त सेवाओ की महत्ता तथा उनकी क्षेत्रीय एव जनाकिकीय आकार के आधार पर विभिन्न कर्मिक वर्गो मे व्यवस्थित करने को ही *पदानुक्रम* कहते है। किसी क्षेत्र के सेवाकेन्द्र– पदानुक्रम व्यवस्था के अध्ययन से ही यह पता लगाया जा सकता है कि सेवाकेन्द्रो मे अभिज्ञानो को आत्मसात् एव प्रसारित करने की कितनी क्षमता है। इसके लिए आवश्यक है, सेवाकेन्द्रो के वितरण प्रतिरूप का ज्ञान क्योकि सभी सेवाकेन्द्र एक से नही होते।

सेवाकेन्द्र पदानुक्रम से ही ज्ञात होता है कि ये कितने महत्व के है? उनका पदानुक्रमिक सगठन कैसा है? उनमे अवस्थापनात्मक कमियॉ कितनी हैं? तथा उनमे अन्तर्सम्बन्ध कितना गहन एव सुदृढ है? इत्यादि। सेवाकेन्द्रो के पदानुक्रम व्यवस्था का अध्ययन विविध पदानुक्रमीय श्रेणी के केन्द्रो के अन्तर्सम्बन्धो के अध्ययन हेतु आवश्यक है साथ ही सेवाकेन्द्रो एव ग्रामीण क्षेत्रो के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धो के अध्ययन हेतु भी अपरिहार्य है।

पदानुक्रम निर्धारण के लिए मुख्य रूप से केन्द्रीयता को आधार माना जाता है। केन्द्रीयता निर्धारण हेतु विभिन्न विद्यानो ने विभिन्न आधारो एव विधि तन्त्रो का प्रयोग किया है। *अध्ययन क्षेत्र* मे सेवाकेन्द्रो को विभिन्न पदानुक्रम मे विभक्त करने के लिए *केन्द्रीयता* को आधार बनाया गया है। केन्द्रीयता का निर्धारण विभिन्न *कार्यो के मूल्य* एव *सेवित जनसख्या* के आधार पर निम्न सूत्र की सहायता से किया गया है–

$$Wfi = \frac{Mti}{Wtl}$$

जहॉ Wfi = कार्य (i) का कार्यात्मक मूल्य

Mti = (i) कार्य का औसत कार्याधार मूल्य

Mtl = श्रृखला मे निम्नत्तम् औसत कार्याधार मूल्य

इसके बाद प्रत्येक सेवाकेन्द्र के *कार्यात्मक अक* की गणना निम्न सूत्र की सहायता से की गयी—

$Fv\ (i) = (Fui \times Wfi)$

Fvi = सेवाकेन्द्र (i) का कार्यात्मक मूल्य

Fvi = कार्य एव सेवाओ की सख्या (1 2 3 n)

Wfi = प्रत्येक कार्य (1 2 3 n) का कार्यात्मक मूल्य

पुन *कार्यात्मक सूचकाक* निम्न सूत्र से निकाला गया—

$$Fci = \frac{Fv\ (i)}{Fvl}$$

जहॉ— Fci = कार्यात्मक सूचकाक

$Fv(i)$ = सेवाकेन्द्र का कार्यात्मक मूल्य

Fvl = श्रृखला मे निम्नत्तम् कार्यात्मक मूल्य

इसी प्रकार सेवित जनसख्या की गणना सेवाकेन्द्र के चतुर्दिक जनसख्या जहॉ तक सेवाएँ प्रत्यक्षत पहुँचती है को जोडकर की गई। पुन उपर्युक्त सूत्रो की तरह ही सेवित जनसख्या सूचकाक की गणना की गई। सेवाकेन्द्र की केन्द्रीयता के लिए कार्यात्मक सूचकाक और सेवित जनसख्या सूचकाक के मूल्यो को जोड दिया गया पुन निम्न सूत्र से सेवाकेन्द्र के केन्द्रीयता सूचकाक को प्राप्त किया गया—

$$Ci = \frac{Cv}{Cvl}$$

जहाँ— Ci = केन्द्रीयता सूचकाक

Cv = केन्द्रीयता मूल्य

Cvl = श्रृखला मे न्यूनतम् केन्द्रीयता मूल्य,

इस प्रकार उपर्युक्त सूत्रो की सहायता से अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो की केन्द्रीयता ज्ञात की गयी और इनमे *चार पदानुक्रम* विनिश्चित किए गये। कार्यों के कार्याधार मूल्य को सारणी (4 2) मे तथा केन्द्रीयता सूचकाक के परिकलन को सारणी (4 5) मे दर्शाया गया है। केन्द्रीयता सूचकाक के आधार पर सेवाकेन्द्र पदानुक्रम सारिणी (4 6) मे प्रदर्शित है।

सारणी– 4 6

सेवाकेन्द्र पदानुक्रम

क्रम स	सेवाकेन्द्र	केन्द्रीयता
	प्रथम अनुक्रम	
1	देवरिया	68 67
	द्वितीय अनुक्रम	
2	सलेमपुर	30 66
3	रुद्रपुर	27 98
4	गौरी बाजार	27 85
5	पथरदेवा	26 81
6	गौराबरहज	25 80
7	लार	23 70
8	भाटपार	23 62
9	भटनी बाजार	22 98
10	रामपुर कारखाना	21 96
11	भलुअनी	20 94
12	बैतालपुर	20 75
13	बनकटा	18 72
	तृतीय अनुक्रम	
14	देसही देवरिया	14 74
15	भागलपुर	14 46
16	मझाली राज	11 79
17	तरकुलवाँ	9 12
	चतुर्थ अनुक्रम	
18	खुखुन्दू	4 68
19	मदनपुर	4 54
20	पकडी बाजार	4 32
21	बिसुनपुरा	4 11
22	पैना	4 01
23	पिण्डी	3 97
24	प्रतापपुर	3 79
25	बखरा	3 78
26	नारायणपुर	3.70

27	महेन	3 68
28	इन्दूपुर	3 61
29	मझगॉवा	3 50
30	खामपार	3 37
31	मईल	3 00
32	नोनापार	2 89
33	खोरीबारी रामपुर	2 85
34	सोहनपुर	2 71
35	नूनखार	2 41
36	सतरॉव	2 03
37	सोहनाग	1 89
38	रामलछन	1 57
39	बरियारपुर	1 52
40	बघउचघाट	1 44
41	भिगारी बाजार	1 38
42	खोरमा कन्हौली	1 34
43	हेतिमपुर	1 32
44	कचनपुर	1 20
45	बलटीकरा	1 13
46	घाटी	1 05
47	रामपुर अवस्थी	1 00

सारणी 4 7

सेवाकेन्द्रो की पदानुक्रमीय व्यवस्था

पदानुक्रमीय स्तर	केन्द्रीयता सूचकाक वर्ग	केन्द्रो की सख्या
1	68 67 से अधिक	1
2	18 72 से 30 66	12
3	9 12 से 14 74	4
4	1 00 से 4 68	30

सारणी (4 6) मे प्रस्तुत सेवाकेन्द्रो की पदानुक्रमीय व्यवस्था मे केन्द्रीयता की असमानता को ध्यान मे रखकर केन्द्रो का पदानुक्रम निर्धारित किया गया है। सेवाकेन्द्रो के पदानुक्रम के विभिन्न स्तरो के निर्धारण के लिए उनके केन्द्रीयता सूचकाक के सातत्य को भग करने वाले अलगाव बिन्दुओ को सीमा माना गया है। सारणी (4 6) तथा रेखाचित्र (4 4) से स्पष्टत *तीन* अलगाव बिन्दु दृष्टिगत होते है जिनके आधार पर अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो के चार पदानुक्रम निश्चित किए गए हैं। अध्ययन क्षेत्र मे **प्रथम स्तर** का एक केन्द्र मात्र *देवरिया* है जो जनपद मुख्यालय भी है। **द्वितीय स्तर** के 12 केन्द्र है जो सभी प्रखण्ड विकास केन्द्र हैं। इनमे पॉच तहसील मुख्यालय भी शामिल हैं। **तृतीय स्तर** के सेवाकेन्द्रो की सख्या 4 है, जिसमें देसही देवरिया और भागलपुर दो

चित्रारेख (4 4)

DESTRICT DEORIA
HIERARCHICAL LEVEL OF SERVICE CENTRES 2001.
केन्द्रीयता सूचकाक (Centrality Index)
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
प्रथम अनुक्रम
द्वितीय अनुक्रम
तृतीय अनुक्रम
चतुर्थ अनुक्रम
देवरिया
सलेमपुर
पथरदेवा
गौरीबाजार
रुद्रपुर
बरहज
गौरीबाजार
लार
भटनी
रामपुर कारखाना
बैतालपुर
भलुअनी
बनकटा
देसही देवरिया
भागलपुर
मझौलीराज
तरकुलवा
मदनपुर
नारायणपुर
मझगावा
पकडी
महेन
खुखुन्दू
पिण्डी
पैना
1000
2000
3000
4000
5000
6000
10 000
30 000
50 000
70 000
90 000
जनसख्या आकार (Populatıojn Sıze)
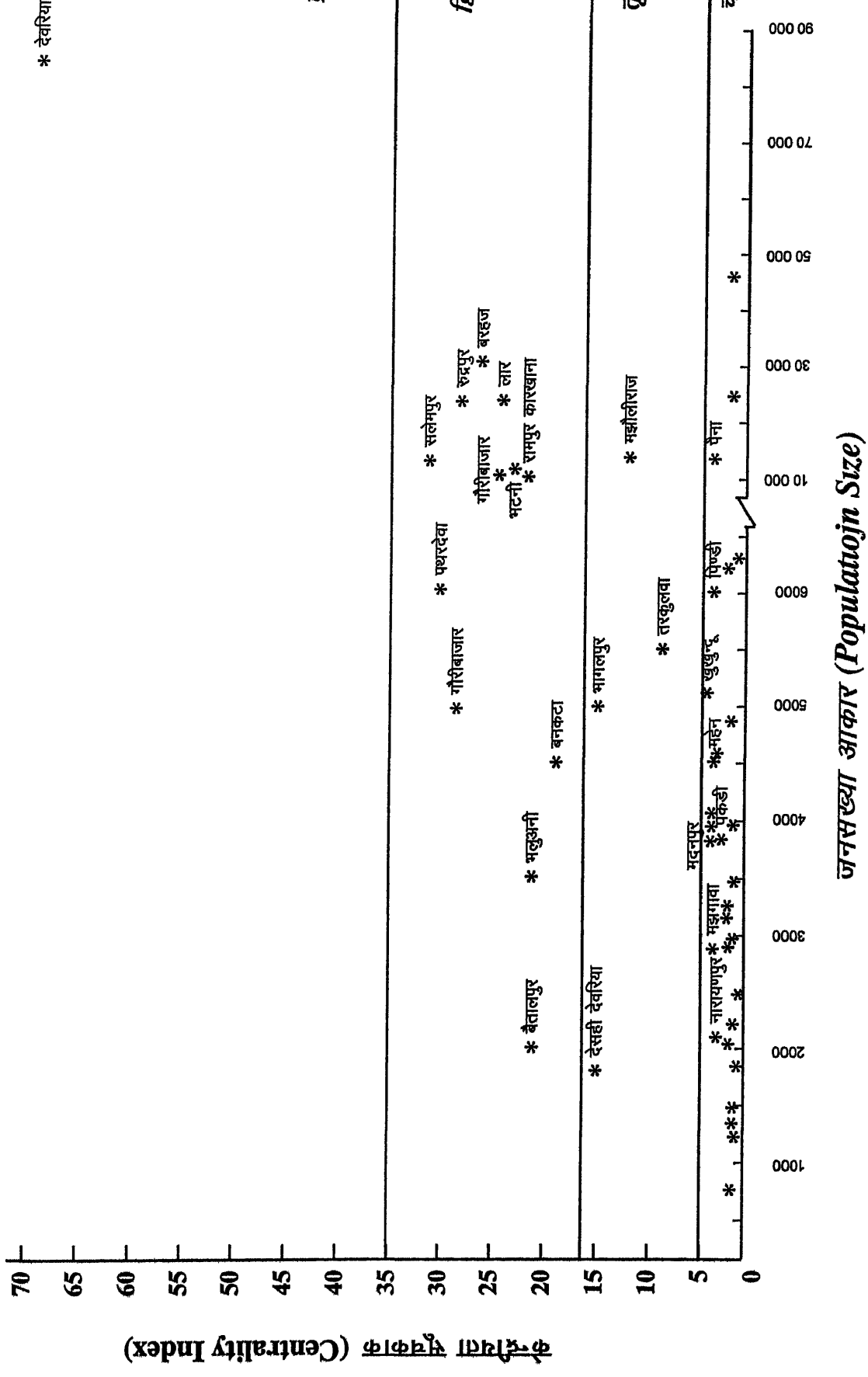
HIERARCHICAL DISTRIBUTION OF SERVICE CENTRE DISTRICT DEORIA
ORDER OF CENTRES
FIRST ORDFR
SLCOND ORDLR
THIRD ORDCR
FOURTH ORDER
N
6 0 6
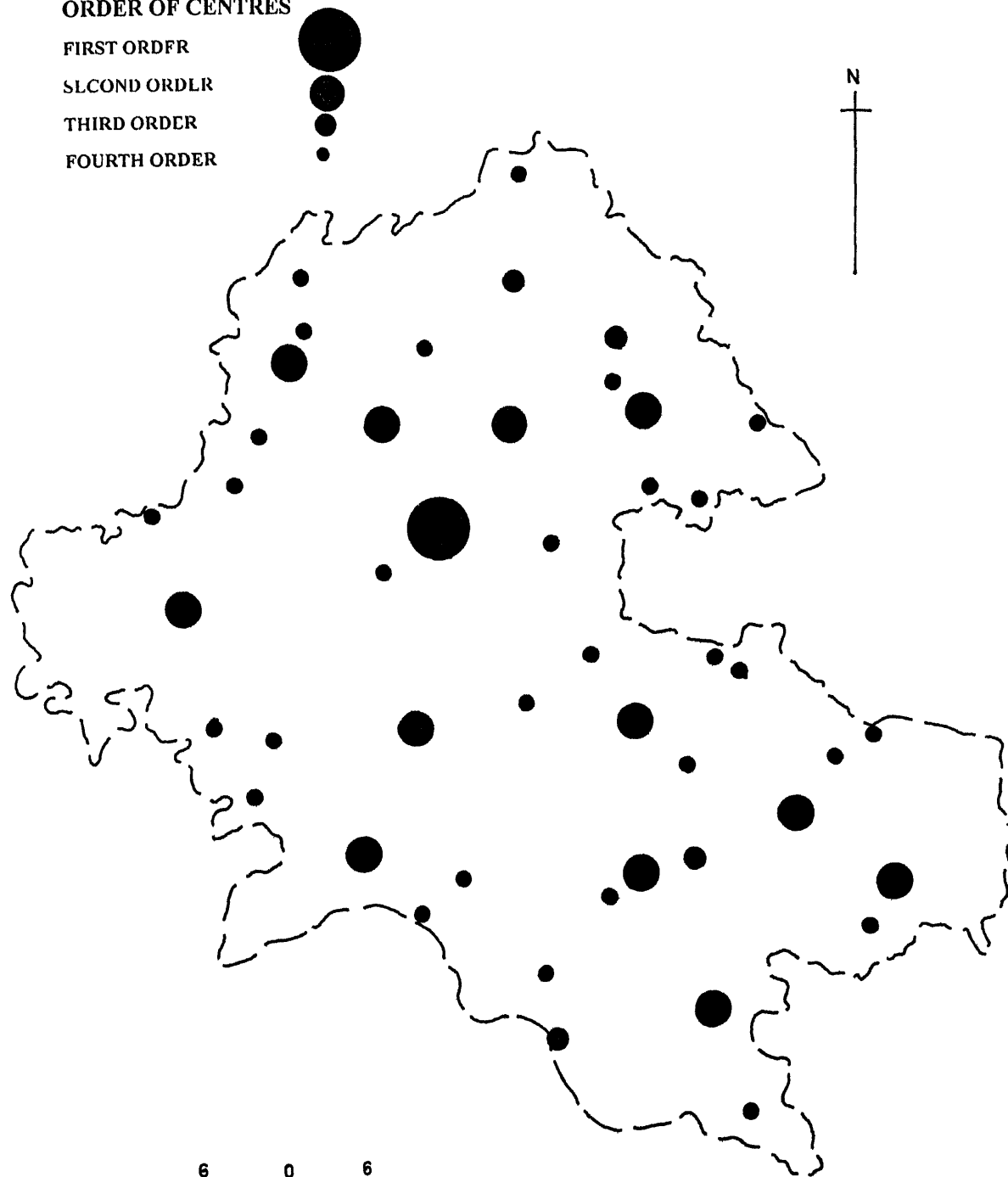
FIG 45

प्रखण्ड विकास केन्द्र मुख्यालय है। **चतुर्थ स्तर** के केन्द्रो की सख्या सर्वाधिक 30 है।

प्रस्तुत अध्ययन मे केन्द्रीयता के आधार पर प्रस्तुत सेवाकेन्द्र पदानुक्रम को *कार्याधार जनसख्या उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* और *परिवहनीय सम्बद्धता* के साथ देखने पर सभी से उसकी पुष्टि होती है। रेखाचित्र (4 4) मे सेवाकेन्द्रो को उनकी केन्दीयता एव उनके जनसख्या आकार के साथ प्रदर्शित किया गया है। चित्र (4 5) मे सेवाकेन्द्रो का पदानुक्रमिक वितरण प्रदर्शित है।

4 6 सेवाकेन्द्रो का सेवाक्षेत्र

सेवाक्षेत्र सेवाकेन्द्र के चतुर्दिक स्थित वह क्षेत्र होता है जो सेवाकेन्द्र की विभिन्न सेवाओ द्वारा लाभान्वित होता है तथा जो सेवाकेन्द्र को विभिन्न ससाधनो की आपूर्ति करता है। यह अभिकेन्द्री (Centrifugal) उभय बलो से प्रभावित होता है। इसमे प्रथम द्वारा सगृहीत तथा द्वितीय द्वारा वितरक सेवाओ को पोषण मिलता है। इस प्रकार सेवाकेन्द्र क्षेत्रीय वस्तुओ के सग्रह एव केन्द्रीय वस्तुओ के वितरण का कार्य करता है। जहॉ यह अपने अस्तित्व हेतु प्रभाव क्षेत्र के ससाधनो पर निर्भर रहता है वही सेवाक्षेत्र के निवासी अपनी बहुत सी सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक सेवाओ हेतु सेवाकेन्द्र पर आश्रित रहते है। इस प्रकार एक सेवाकेन्द्र अपने पृष्ठ प्रदेश से कुछ लेता है और बदले मे उसे कुछ देता है। इस आदान--प्रदान की क्रिया पर ही सेवाकेन्द्र और उसके सेवाक्षेत्र की समृद्धि एव प्रत्याशसा निर्भर करती है।

इस सेवाक्षेत्र के परिसीमन हेतु कई गुणात्मक और परिमाणात्मक विधियो का उपयोग किया गया है। *क्रिस्टालर* एव *लॉश* ने सेवाकेन्द्रो के सौपानिक सम्बन्ध पर आधारित आगमनिक उपागम का प्रयोग किया है। *गोडलुण्ड (1956)* और *ग्रीन (1952)* ने बस सेवाओ के ऑकडो का इस परिसीमन मे प्रयोग किया है। *स्मेल्स (1944) डिकिन्सन (1964)* प्रभृति ने निगमनिक प्रक्रमो द्वारा इस सीमा क्षेत्र के निर्धारण का प्रयास किया है, जबकि *ब्रेसी (1953 एव 1956)* ने एतदर्थ केन्द्रीयता के ग्रामीण उपादान का प्रयोग किया है। हाल मे *बेरी (1967)*[51] ने *रीले (1931)* के *'फुटकर केन्द्राकर्षण नियम' (Law of retail gravitation)* एव *'फुटकर केन्द्राकर्षण नियम' (Breaking point equation)* का प्रयोग कर इस कार्य को आसान बना दिया है। उनके द्वारा प्रयुक्त सूत्र का विवरण निम्नवत् है--

$$Ls = \frac{D}{1 + \sqrt{\frac{Ac}{Bc}}}$$

जहाँ

D	=	दो (A और B) सेवाकेन्द्रो के मध्य दूरी
Ac	=	केन्द्र A का केन्द्रीयता गणन
Bc	=	केन्द्र B का केन्द्रीयता गणन, एव
Ls	=	A केन्द्र के सेवाक्षेत्र का B से विस्तार, (किमी या मील में)

उपर्युक्त सूत्र का प्रयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र के चार सोपानिक सेवाकेन्द्रो के सेवाक्षेत्रो को चित्र (46) मे प्रदर्शित किया गया है। जहाँ **प्रथम** सेवाकेन्द्र *देवरिया* का प्रभाव समूचे जनपद पर फैला है वही *सलेमपुर रूद्रपुर गौरीबाजार पथरदेवा गौरा बरहज लार भाटपार भटनीबाजार रामपुर कारखाना भलुअनी बैतालपुर बनकटा* **द्वितीय स्तर** के प्रभावशाली सेवाकेन्द्र हैं जिनका विवरण निम्नवत है– (चित्र– 46)।

(1) *सलेमपुर* सेवाक्षेत्र

इस क्षेत्र का विस्तार अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण–मध्य पूरब मे है। इसके अतर्गत **तृतीय** स्तर का सेवाकेन्द्र *मझौली राज* तथा **चतुर्थ** स्तर का सेवाकेन्द्र *सोहनाग* स्थित है। यह क्षेत्र परिवहन मार्गो से सुसम्बद्ध है और यह सम्पूर्ण दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इसमे दैनिक बाजार डिस्पेन्सरी उच्चतर माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालय इण्टर कॉलेज पोस्ट एव टेलीग्राफ कार्यालय बैकिग आदि की सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं। यह सेवाक्षेत्र देवरिया के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सेवाक्षेत्र है। सलेमपुर तहसील मुख्यालय एव प्रखण्ड विकास केन्द्र भी है।

(2) *रुद्रपुर* सेवाक्षेत्र

इस सेवाक्षेत्र का विस्तार अध्ययन क्षेत्र के सबसे पश्चिमी भाग मे है। इसके अतर्गत **चतुर्थ** स्तर के तीन सेवाकेन्द्र *मदनपुर पकडी बाजार* और *खोरमा कन्हौली* प्रखण्ड विकास केन्द्र का मुख्यालय भी है। यह क्षेत्र सड़क मार्ग द्वारा देवरिया से अच्छी तरह सम्बद्ध है। इस क्षेत्र मे प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र इण्टर और डिग्री कॉलेज बैंकिग, टेलीफोन पुलिस स्टेशन आदि सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं।

(3) *गौरीबाजार* सेवाक्षेत्र

यह सेवाक्षेत्र अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व मे विस्तृत है। इसके अतर्गत **चतुर्थ** स्तर के चार सेवाकेन्द्र स्थित है– *बखरा नारायणपुर इन्दूपुर एव रामलछन* ये सभी केन्द्र सडक मार्ग से सीधे जुडे हुए है तथा गौरीबाजार तहसील एव प्रखण्ड मुख्यालय होने के कारण सभी कार्यों एव सेवाओ का प्रमुख केन्द्र है। यह रेलमार्ग से भी सम्बद्ध है।

(4) *पथरदेवा* सेवाक्षेत्र

यह क्षेत्र अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व मे अवस्थित एक प्रमुख सेवाक्षेत्र है। जिसमे **तृतीय** स्तर का एक सेवाकेन्द्र *तरकुलवॉ* एव **चतुर्थ** स्तर के चार सेवाकेन्द्र क्रमश *कचनपुर बघउच घाट बिसुनपुरा* एव *रामपुरअवस्थी* स्थित है। पथरदेवा प्रखण्ड विकास केन्द्र मुख्यालय होने के कारण प्रशासनिक एव वित्तीय सेवाओ का केन्द्र है। यह क्षेत्र सडक मार्ग से पूरी तरह सम्बद्ध है।

(5) *गौरा बरहज* सेवाक्षेत्र

सुदूर दक्षिण मे *घाघरा* की गोदी मे विस्तृत यह क्षेत्र खादर प्रदेश का एक प्रमुख सेवाक्षेत्र है। यह अपने पश्चिम में स्थित रुद्रपुर सेवा केन्द्र एव पूर्व स्थित लार सेवाकेन्द्र से सड़क मार्ग से तथा सलेमपुर से रेलमार्ग से प्रत्यक्षत जुड़ा हुआ है। देवरिया से यह सड़क मार्ग से अच्छी तरह सम्बद्ध है। इस सेवाक्षेत्र में **चतुर्थ** स्तरीय तीन सेवाकेन्द्र– *महेन सतराँव* एव *पैना* स्थित हैं। *गौरा बरहज* तहसील एव प्रखण्ड मुख्यालय का केन्द्र है इसके अलावे यह शैक्षणिक, वित्तीय व्यापारिक एव चिकित्सा का भी प्रमुख केन्द्र है।

SERVICE AREAS OF SERVICE CENTRE, DISTRICT DEORA
SERVICE CENTRES
SERVICE AREAS
FIRST ORDER
SECOND ORDER
THIRD ORDER
FOURTH ORDER
N
6 0 6 KM
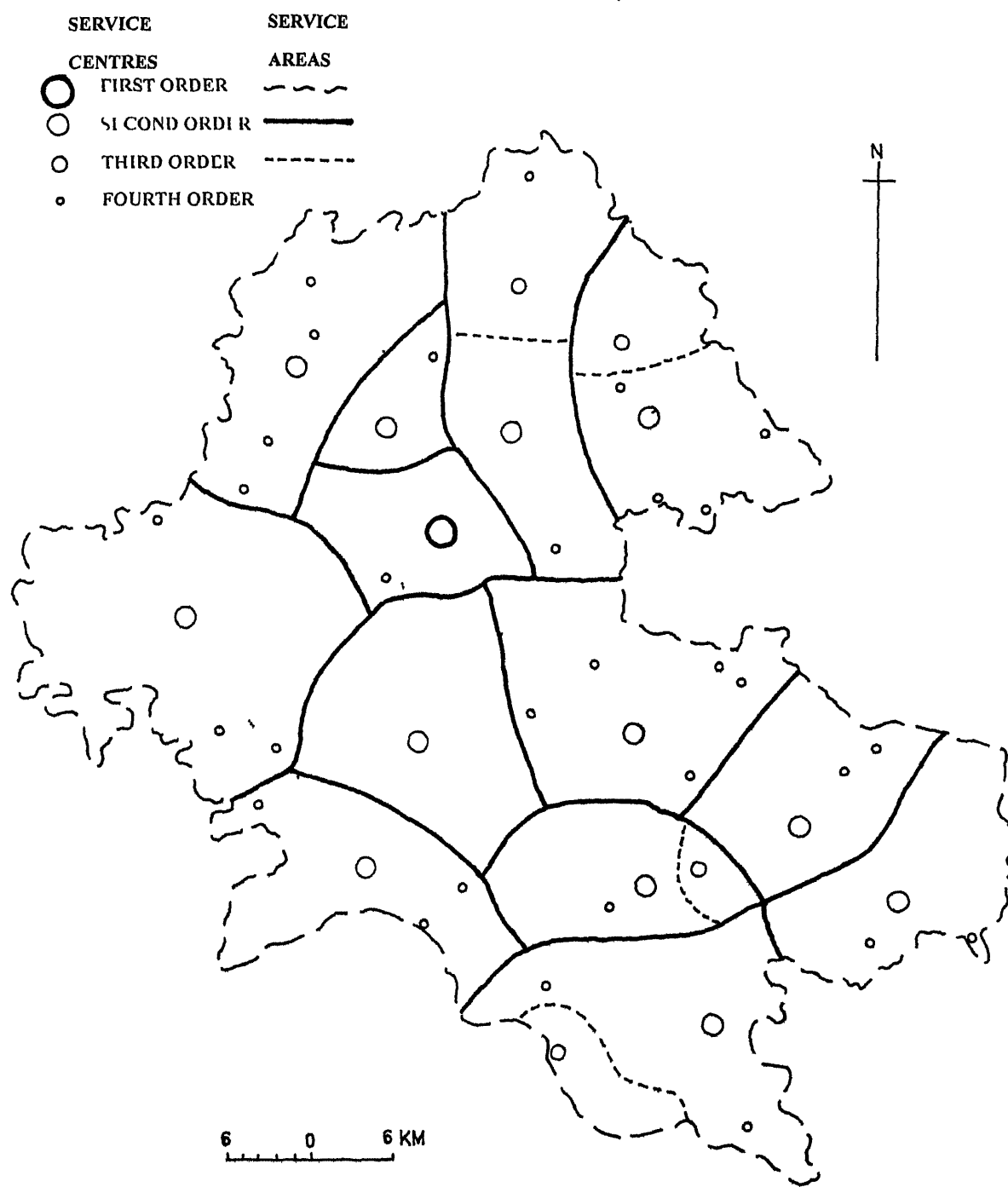
FIG 4 6

(6) *लार* सेवाक्षेत्र

जनपद के दक्षिणी–पूर्वी कोने पर अवस्थित यह प्रमुख सेवाक्षेत्र है। इसमे **तृतीय** स्तर का एक सेवाकेन्द्र *भागलपुर* एव **चतुर्थस्तरीय** दो सेवाकेन्द्र *मईल* एव *पिण्डी* स्थित हैं। लार सेवाकेन्द्र सभी कार्यो एव सेवाओ का केन्द्र है तथा देवरिया से यह सडक मार्ग से सम्बद्ध है।

(7) *भाटपार* सेवाक्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग का यह प्रमुख सेवाक्षेत्र है। इसके अतर्गत दो सेवाकेन्द्र *भिगारी बाजार* एव *खामपार* समाहित हैं। भाटपार सभी कार्यो एव सेवाओ का केन्द्र है तथा देवरिया से रेलमार्ग से जुडा है।

(8) *भटनीबाजार* सेवाक्षेत्र

भाटपार सेवाकेन्द्र के पश्चिम मे अवस्थित यह सेवाक्षेत्र अपने अन्तर्गत **चतुर्थ** स्तरीय सर्वाधिक पॉच सेवाकेन्द्रो– *खुखुन्दू, नूनखार खोरीबारी रामपुर घाटी नोनापार,* को समाहित किए हे। भटनी सेवाकेन्द्र देवरिया से सीधे रेलमार्ग से जुडा है। यह सेवाक्षेत्र भी सभी तरह के कार्यो एव सेवाओ से सम्पन्न है। भटनी प्रखण्ड विकास केन्द्र का मुख्यालय भी है।

(9) *रामपुर कारखाना* सेवाक्षेत्र

देवरिया के उत्तर मे यह अपेक्षाकृत छोटा सेवाक्षेत्र विस्तृत है जिसमे **चतुर्थ** स्तरीय एक मात्र सेवाकेन्द्र *बरियारपुर* स्थित है। यह सेवाक्षेत्र सडक मार्ग से पूरी तरह सम्बद्ध है। रामपुर कारखाना प्रखण्ड विकास केन्द्र मुख्यालय होने के साथ सभी प्रमुख–कार्यो–सेवाओ का केन्द्र है। देवरिया की सन्निकटता के कारण इस सेवा केन्द्र का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है।

(10) *भलुअनी* सेवाक्षेत्र

यह सेवाक्षेत्र दक्षिण मध्य मे विस्तृत हे। अपेक्षाकृत क्षेत्रफल अधिक होने के बावजूद इस सेवा क्षेत्र मे कोई अन्य सेवाकेन्द्र नहीं है। सडक मार्ग द्वारा यह अपन क्षेत्र से पुरी तरह जुडा है। जिसका केन्द्र भलुअनी प्रखण्ड मुख्यालय है। यह अन्य सेवाओ का केन्द्र भी है।

(11) *बैतालपुर* सेवाक्षेत्र

देवरिया मुख्यालय के सटे पश्चिमोत्तर मे विस्तृत यह अध्ययन क्षेत्र का **सबसे छोटा** सेवाक्षेत्र है। इसमे **चतुर्थ स्तरीय** एक सेवाकेन्द्र *बलटीकरा* अवस्थित है। बैतालपुर, प्रखण्ड मुख्यालय औद्योगिक केन्द्र एव अन्य कार्यों एव सेवाओ का प्रमुख केन्द्र है। यह रेलमार्ग एव सडक मार्ग से देवरिया से सम्बद्ध है।

(12) *बनकटा* सेवाक्षेत्र

यह अध्ययन क्षेत्र का सुदूर पूर्वी एव सबसे कम सम्पन्न सेवाक्षेत्र है। देवरिया से रेलमार्ग से प्रत्यक्षत जुड़े होने एव सड़क मार्गों की अच्छी क्षेत्रीय सम्बद्धता के बावजूद कार्यों एव सेवाओ की सम्पन्नता अपेक्षाकृत कम है। बनकटा प्रखण्ड मुख्यालय है तथा क्षेत्र का केन्द्र है। इसमें **चतुर्थस्तरीय** सेवाकेन्द्र *प्रतापपुर* एव *सोहनपुर* अवस्थित हैं।

References

1 पद्मनाभन् अनन्त 'मनुष्य व वातावरण' एनसीईआरटी नई दिल्ली पृ 79

2 शर्मा लक्ष्मी नारायण अधिवास भूगोल राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1983 पृ 70

3 Thaha, A, Identıficatıon of Hıerarchıcal Growth Centres and Delıneatıng of theır Hıntrlands' 10th coure of IRD, NICD, Hyderabad, Sept Oct 1977 P 1 (Cyclostyled paper)

4 Meıtzen, R , 'Sıedlung and Agrawesen der westgermanenund obstgermanen der Kelten, Romer Fınner and slaven' (3 Vol and Atlas) (Berlın W Herty, 1895)

5 सिंह इकबाल भारत मे ग्रामीण विकास एनसीईआरटी 1986 पृ 1

6 Pathak R K 'Envıronmental Plannıng Resources and Development' Chugh Publıcatıon Allahabad, 1990 p 54

7 Babu, R , 'Mıcro Level Plannıng A case study of chhıbramau Tahsıl' (Farrukhabad Dıtrıct, U P) Unpublıshed Thesıs, Geography Department, Allahabad Unıversıty, 1981

8 Perroux, F, 'La natıon de Crossance, Economıque Applıque', Nos 1 & 2 , 1955

9 Bondevılle, T R , 'Problems of Regıonal Economıc plannıng', Edınburgh Unıversıty Press, 1966

10 Chrıstaller, W, 'Dıe Zentralen orte ın Suddent Schland, Jena', G Fısher, 1933, Translated by C W Baskın, Englewood clıffes, N J 1966

11 Bhatt, L S , 'Mıcro-Level Plannıng-A case study of Karanal Area, Haryana, Indıa,' Vikas, New Delhı 1976, p 45

12 op cıt fn 6 p 55

13 Wanmalı, S , 'Regıonal Plannıng for socıal Facılıtıes- A case study of Eastern Maharashtra', NICD, Hyderabad 1970 P 45

14 Sen L K , 'Plannıng of Rural Growth Centres for Integrated Area Development A study ın Mıryalguda Taluka', NICD Hyderabad, 1971, p 92

15 Nytyanand, P and Bose, S , 'An Integrated Trıbal Development Plan for Keonȷhar Dıstrıct Orıssa', NICD Hyderabad, 1976

16 Kumar A and Sharma, N , 'Rural Centres of Servıces, Geographıcal Revıew of Indıa', Vol 39, No 1, 1977, pp 19-29

17 Sıngh, S B, 'Spatıal Organısatıon of Settlement systems' Natıonal Geographer, Vol XI No 2, 1976, pp 130 140

18 Khan, W etal, 'Plan for Integrated Development ın Paurı Garhwal', NICD, Hyderabad, 1976 pp 15-21

19 Dutta, A K , 'Transportatıon Index ın West Bengal- A means to Determıne Central Place Hierchy', National Geographıcal Journal of Indıa, Vol 16 No 3 & 4, 1970, pp 199-207

20 Alam, A M , Gopı, K N and Khan, W A , 'Plannıng for Metropolıtan Regıon of Hyderabad'- A case study ın S P Chatterjee, etal (ed), proceedıngs of Symposıum on Regıonal Plannıng, Natıonal Commıttee of Geography Calcutta, 1971

21 Mıshra G K 'A Methodology for Identıfyıng Servıce centres ın Rural Area' Behavıoural Scıences and Communıty Development, Vol 6 No 1, 1972 pp 48 63.

22 Sıngh J 'Central places and spatıal organısatıon ın a Backward Economy- Gorakhpur Regıon-A case study ıntegrated Regıonal Development,' Uttar Bharat Bhoogol Parıshad, Gorakhpur, 1979

23 op cıt , fn 11

24 op cıt , fn 6

25 Mıshra, B N (1980), 'The Spatıal Pattern of Servıce Centres ın Mırzapur Dıstrıct U P ', Unpublıshed D Phıll Thesıs Unıverıty of Allahabad Allahabad p 372

26 Pathak, R K 'Envıronmental Plannıng Resources and Development', Chugh Publıcatıon, Allahabad, 1990, p 6

27 Haggett, p etal,, 'Determınatıon of Populatıon Threshold for settlement Functıons by Read Muench Method', Professıonal Geographer, Vol 16, 1964, pp 6-9

28 Mıshra, R P (1972), 'Growth poles and Growth centres ın the context of Indıa's Urban and Regıonal Development problems ın Kulklınskı', A (ed)

29 Prakasha Rao, V L S, 'Problems of Mıcro-Level Plannıng', Behavıoural Scıences and Communıty Development, Vol 6, No 1, 1972, p 151

30 op cıt , fn 11 p 45

31 op cıt, fn-10

32 Duncun, J S , 'New-Zealand Towns as Servıce Centres', N Z G , Vol 11, 1955, pp 119-38

33 Brush, J E, 'The Hıerarchy of Central Places ın South-Western Wıs Conssın', Geographıcal Revıew, Vol Xlııı, No 3, 1953, pp 380-402

34 Smaıles, A E , 'The Urban Hıerarchy ın England and Wales', Geography, 1944, Vol 29

35 Carter, H , 'Urban Grades and Spheres of Influence ın South-West Wales', Scot Geography Mag , Vol 71, 1955, pp 43-58

36 Ullman, E L , 'Trade Centres and Trıbutary Areas of Phıllıppınes', Geographıcal Revıew Vol 50, 1960, pp 203-218.

37 Hartley, G and A E Smaıles, 'Shoppıng centres ın Greater London Areas', Trans Inst Br Geog , 29, 1961, pp 201-213.

38 Kar, N R , 'Urban Hıerarchy and Central Functıons Around the Cıty of Calcutta and ıts sıgnıficance', ın L Norgery (ed , proceedıng of the I G II

Symposium in Urban Geography, Lund 1962

39 Bracey, H E, 'Town as Rural Services Centres', Trans Inst Br Geog, 19, 1962 pp 95-105

40 Green, F H W 'Motor Bus Centres in South-West England Considered in Relation to Population and Shopping Facilities', Trans, Inst Br Geo Vol 14 1948 pp-57-69

41 Carruthers, W I, 'A Classification of Service Centres in England and Wales' Geographical Journal Vol 123, 1957 pp 371-85

42 Siddal, W R, 'Wholesale Retail Trade Ratios as Indices of Urban Centrality' Economic Geography, Vol 37, 1961

43 Abiodeen J O 'Urban Hierarchy in a developing country', Economic Geography, Vol 43(4), 1967 pp 347-367

44 Preston R E, 'The structure of Central Place systems, Economic Geography', Vol 47 (2), 1971, pp 136-55

45 Berry, B J L and Garrison, W L, 'The Functional Bases of the Central Places Hierarchy' Eco Geog Vol 34(2), 1958, pp 145-54

46 Vishwnath, M S, 'A Geographical Analysis of Rural Markets and Urban Centres in Mysore', Ph D Thesis, B H U Varanasi

47 Singh, O P, 'Towards Determining Hierarchy of service centres- A Methodology for Central Place Studies', N G J I Vol XVII (4), 1971, pp 165-177

48 Rao, V L S P, 'Planning for An Agricultural Region, in New Strategy', Vikas, New Delhi, 1974

49 Singh, J, 'Nodal Accessibility and Central Place Hierarchy A case study in Gorakhpur Region', pp 101-112

50 Jain, N G, 'Urban Hierarchy and Telephone Services in Vidarbh (Maharashtra)', N G J I, Vol 17 (2 & 3), 1971, pp 134-37

51 Berry, B J L, 1967, 'Geography of Market centres and Retail Distribution', Prentice-Hall, I N C Englewood, Cliffs, N J, New York, p 40

अध्याय-पाँच

सेवाकेन्द्र और कृषि–औद्योगिक विकास

अध्ययन क्षेत्र मूलत कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ कुल कार्यशील जनसख्या का 78 76 प्रतिशत भाग कृषि तथा उससे सम्बद्ध कार्यों मे लगी हुई है। यहाँ सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल के 80 90 प्रतिशत भाग पर कृषि होती है। इस प्रकार कृषि कार्य तथा कृषि क्षेत्र के आधार पर यह क्षेत्र नि सन्देह कृषि प्रधान क्षेत्र है। कुछ वृहद् उद्योगो (गन्ना पेपर) की स्थापना भी क्षेत्र मे हुयी है पर वे भी कृषि पर ही आधारित है। अत अध्ययन क्षेत्र की सम्पूर्ण आर्थिक गतिविधियो एव सस्कृति का आधार कृषि ही है। कृषि यहाँ के लोगो के जीविकोपार्जन का साधन ही नही बल्कि जीवन शैली भी है। प्रस्तुत अध्याय मे वर्तमान कृषि एव औद्योगिक स्वरूप का विश्लेषण कर क्षेत्र के विकास मे इनकी भूमिका को स्पष्ट करते हुए भावी विकास हेतु एक सतुलित नियोजन भी प्रस्तुत है। अध्ययन की स्पष्टता के लिए अध्ययन **दो खण्डो** मे विभक्त है। ***प्रथम भाग*** मे *कृषि विकास* एव ***द्वितीय भाग*** मे *औद्योगिक विकास* का विश्लेषण प्रस्तुत है।

कृषि विकास

5 1 कृषि सम्प्रत्यय एव विकास

कृषि का प्रारम्भ, *नवपाषाण* युग मे हुआ। हिन्दी के **कृषि'** शब्द की उत्पत्ति सस्कृत के कृष् धातु से हुई है, जिसका तात्पर्य है *'जोतना'* या *'खीचना'*। इसके अग्रेजी पर्याय **Agrıculture'** शब्द की स्थापना लैटिन भाषा के दो शब्दो **'Agre'** अर्थात् *'Land'* या *'Fıeld'* तथा **'Cultura'** अर्थात् *'The care of cultıvatıon'* से हुई है। जिसका अर्थ हुआ *भूमि को जोतकर फसल पैदा करना'*।

चैम्बर शब्दकोष मे *वाटसन* ने कृषि शब्द से आशय *'मृदा सस्कृति'* से लगाया है जबकि *जिम्मरमैन (1951)* के अनुसार कृषि के अन्तर्गत भूमि से जुडे हुए सभी मानवीय कार्य– खेत निर्माण जुताई बुआई, फसल उगाना, सिचाई करना पशुपालन, मत्स्यपालन तथा अन्य जीवो का पालन आदि सम्मिलित है।[1]

इस प्रकार कृषि का अर्थ व्यापक है। इसके अन्तर्गत मानव की उन समस्त क्रियाओ को सम्मिलित किया जाता है, जिनकी सहायता से खाद्य और कच्चे माल की प्राप्ति के लिए मिट्टी का उपयोग होता है। इसके अन्तर्गत भूमि की जुताई से लेकर कृत्रिम साधनो से सिचाई उर्वरको की आपूर्ति, मृदा सरक्षण, हानिकारक तत्वो से पौधो की रक्षा आदि अनेक विस्तृत कार्यक्रमो को

अपनाया जाता है जिनका उद्देश्य मिटटी की उत्पादकता मे वृद्धि करना है तथा जिससे न केवल खाद्य सामग्री की प्राप्ति होती है बल्कि उद्योगो के लिए कच्चा माल और पशुओ के लिए चारा मिलता है। कृषि इस बात का भी सबसे उत्तम उदाहरण है कि किस प्रकार मनुष्य ने पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास किया है। वस्तुत मनुष्य के आर्थिक विकास की प्रक्रिया मे सबसे महत्वपूर्ण कडी तब जुडी जब उसने पौधो एव पशुओ को पालतू बनाना सीखा। इससे उसके जीवन मे स्थायित्व आया प्राकृतिक नियन्त्रण मे कमी आयी और भविष्य के लिए खाद्य पदार्थो के सचयन की प्रवृति का विकास हुआ।[2]

5 2 कृषि—विकास

प्राय कृषि—विकास से तात्पर्य कृषि उत्पादकता वृद्धि से लिया जाता रहा है। कृषि उत्पादकता मे यह वृद्धि वैज्ञानिक एव तकनीकी विधियो के समावेश के फलस्वरूप सम्भव हुआ है। यहाँ पर कृषि—वृद्धि और कृषि—विकास मे विभेद का ज्ञान आवश्यक है। यात्रिक क्राति से पूर्व *'कृषि—विकास* को *'उत्पादकता मे वृद्धि* का स्थानापन्न माना जाता रहा। परन्तु आज उत्पादकता मे होने वाली वृद्धि के अपेक्षाकृत कृषि विकास को अधिक विस्तृत अर्थों मे प्रयोग करते है। *विकास वृद्धि* का पर्याय नही अपितु इसमे उत्पादकता वृद्धि के साथ ही उत्पादो का समान सामाजिक वितरण तथा परिस्थितिकीय सतुलन बनाये रखने पर भी विचार किया जाता है। इस प्रकार कृषि विकास का अभिप्राय उस उत्पादकता की वृद्धि से है जिसका लाभ समाज के सभी वर्गो को समान रूप मे प्राप्त हो और पर्यावरण का स्वरूप भी विकृत न हो। कृषि—भूदृश्य मे विकास तभी सम्भव हो सकता है जब कृषि के स्वरूप को निर्धारित करने वाले सभी कारको को योजना—बद्ध ढग से प्रयोग किया जाय।[3] अध्ययन क्षेत्र मे कृषि विकास का विश्लेषण इसी आशय के सन्दर्भ मे किया गया है।

5 3 भूमि—उपयोग प्रतिरूप

भूमि उपयोग से आशय भूमि का विभिन्न कार्यों— यथा— कृषि एव कृष्येत्तर मे उपयोग के विवेचन से है। देवरिया जनपद सरयूपार का एक समतल उपजाऊ भू—भाग वाला क्षेत्र है। इसका कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 252370 हेक्टेयर है। इसका सर्वाधिक भू—भाग (80 90 प्रतिशत) कृषि कार्यों मे सलग्न है। इसके बाद क्रमश कृष्येत्तर कार्यों, परतीभूमि, बाग—बगीचो उसर भूमि कृषि योग्य बजर भूमि वन, एव चारागाह मे भूमि का उपयोग है। आरेख (5 1) से जनपद के भूमि उपयोग को स्पष्ट किया गया है।

आरेख (5 1) के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अभी भी जनपद के प्रतिवेदित क्षेत्र की 6 77 प्रतिशत भूमि— कृषि योग्य बजरभूमि परती भूमि, उसर भूमि के रूप मे पडी हुई है जिन्हे उसर सुधार एव सिचाई की व्यवस्था द्वारा कृषि भूमि मे तब्दील किया जा सकता है। अर्थात जनपद मे

चित्रारेख [5 1]

जनपद देवरिया भूमि उपयोग 2001
(क्षेत्रफल लाख हेक्टेयर मे)

District Deoria Land Use 2001
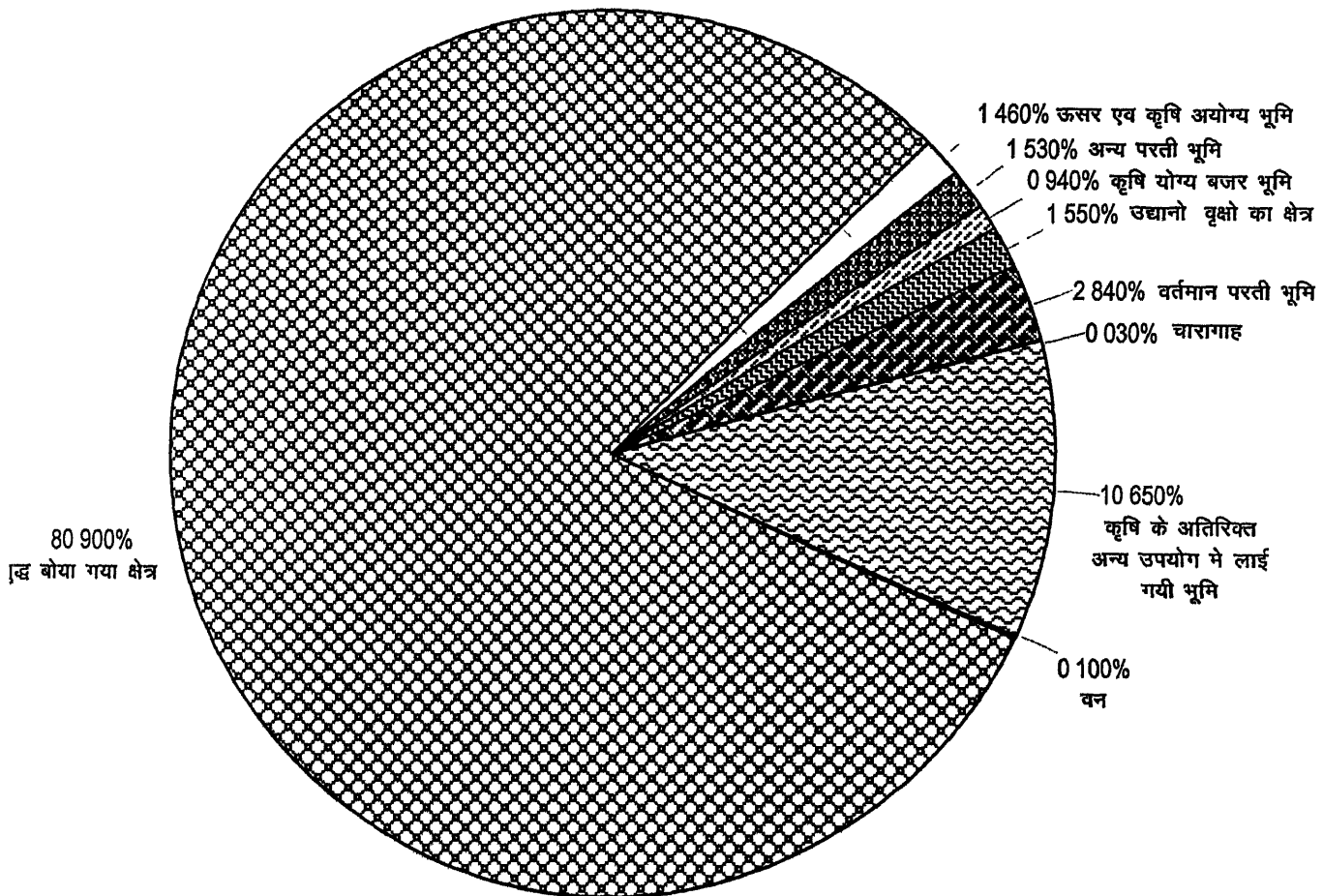
कुल उपलब्ध भूमि 252370

(लाख हेक्टेयर)

स्रोत. सांख्यकीय पत्रिका जनपद देवरिया 2001

कृषि योग्य क्षेत्र को 87 67 प्रतिशत तक बढाया जा सकता हे। अर्थात कृषि उत्पादन में बढोत्तरी की पर्याप्त सभावना है जिससे अतत क्षेत्र का आर्थिक विकास होगा। अध्ययन क्षेत्र मे विकास खण्डकार भूमि उपयोग को सारणी (5 1) मे प्रस्तुत किया गया है।

सारणी– 5 1

जनपद मे विकास खण्डवार भूमि उपयोग (हे में)

विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	वन	कृषियोग्य बजर भूमि	परती भूमि	उसर एव कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानो बागो वृक्षो एव झाडियाँ	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
1 गौरी बाजार	18575	0 05	1 02	3 44	0 17	7 61	0 01	2 49	85 17
2 बैतालपुर	16505	0 09	1 13	2 69	0 28	7 02	0 01	1 52	87 22
3 देसही देवरिया	13204	0 04	2 19	1 98	0 10	10 53	0 06	1 87	83 19
4 पथरदेवा	22866	0 16	1 07	6 29	0 41	11 29	0 03	1 87	78 85
5 रामपुर कारखाना	14375	0 45	1 42	4 61	0 25	9 80	0 01	2 46	80 97
6 देवरिया सदर	17317	0 06	1 57	4 19	0 08	8 27	0 02	1 73	84 04
7 रुद्रपुर	20739	0 04	0 85	5 47	0 54	1 29	0 04	0 60	79 42
8 भलुअनी	18549	0 05	0 48	4 75	0 57	9 17	0 01	0 69	84 26
9 बरहज	15885	0 11	0 21	5 65	3 92	15 64	0 01	0 84	73 59
10 भटनी	14156	0 18	0 96	4 37	0 86	10 25	0 02	0 86	82 46
11 भाटपार रानी	13319	0 06	0 45	2 47	0 66	9 69	0 04	1 73	84 87
12 बनकटा	14228	0 14	078	3 09	0 57	9 24	0 02	1 48	84 64
13 सलेमपुर	15469	0 03	0 58	4 02	0 89	10 92	0 01	0 85	82 66
14 भागलपुर	14637	0 02	0 48	2 28	0 70	11 50	0 04	1 52	83 42
15 लार	18198	0 04	0 37	7 83	11 04	10 08	0 01	3 07	68 27
नगरीय क्षेत्र	4348		2 96	6 94	1 49	30 72		0 16	57 70

स्रोत–साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया 2001 से परिकलित पृष्ठ स 41–42

सारणी– 5 1 से स्पष्ट है कि जनपद मे कृषि योग्य बजर भूमि का प्रतिशत सबसे अधिक *देसही देवरिया* विकासखण्ड मे है। परती भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत *लार* विकासखण्ड मे एव उसर भूमि का प्रतिशत सर्वाधिक *बरहज* मे है। अत इन विकासखण्डो मे सिचाई एव उसर सुधार के द्वारा कृषिक्षेत्र मे विस्तार की पर्याप्त सभावना है।

5 4 कृषि के आधारभूत सघटक

(अ) मृदा

मृदा कृषि का आधारभूत ससाधन है। जनपद की मृदा उपजाऊ जलोढ है। प्राचीन जलोढ़ बागर क्षेत्र मे जो उत्तर पश्चिमी क्षेत्र मे विस्तृत है तथा नूतन जलोढ़ खादर क्षेत्र मे पायी जाती है। सरचना एव उर्वरता के आधार पर क्षेत्र की मृदा को बलुई, दोमट, मटियार, गोयड़ मझार

बलुई दोमट भाट कछारी आदि भागो मे बॉटा जा सकता है। मृदा का विस्तृत वर्गीकरण अध्याय दो (2 1–8) मे किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र की 90 14 प्रतिशत जनसख्या गॉवो मे रहती है जहॉ उत्पादन का मुख्य स्रोत भूमि है। भूमि पर अधिकार आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक स्तर को व्यक्त करता है। स्वतत्रता के बाद भूमि सुधार के लिए किए गए पुनर्वितरण ने सार्वजनिक पद्धति मे विशेष स्थान ले लिया है। जैसे ग्रामीण उत्पादन पद्धति कृषि पर ही केन्द्रीत थी भूमि सुधार भी कृषि से ही सम्बन्धित था। भूमि पर कृषि कार्य किया जाना भूमि उपयोग का एक माध्यम है। *फाक्स*[4] ने भूमि उपयोग के प्रारभिक अवस्था को *भूमि प्रयोग (Land use)* तथा द्वितीय सोदेश्य उपयोग को *भूमि उपयोग (Land utilisation)* बताया। *चौहान*[5] *वैनजेटी*[6] तथा *वुड*[7] ने भी सूक्ष्म अन्तर के साथ यही विचार व्यक्त किया है।

भूमि का अपना कोई महत्व नही है इसका मूल्याकन मानवीय प्रयासो से आका जाता है– भूमि का उपजाऊ और बजर रूप मे वर्गीकरण उसके सम्भावित सामाजिक उपयोग पर निर्भर करता है। पारम्परिक रूप मे कृषि ही भूमि का सब्रसे उपयुक्त उपयोग है। इसलिए कृषि उत्पादकता ही भूमि वर्गीकरण का आधार रहा है। भूमि की उपयोगिता की धारणा स्थिर न होकर आर्थिक राजनीतिक, सास्कृतिक और पर्यावरणीय परिवर्तन के साथ बदलती रहती है। पारम्परिक रूप मे कृषि ही भूमि का सबसे उपयोगी प्रयोग रहा है। फिर भी अध्ययन क्षेत्र मे कृषि के लिए उपयुक्त भूमि का एक बड़ा हिस्सा है जिसके सुनिश्चित उपयोग की आवश्यकता है।

कृषि योग्य भूमि के अन्तर्गत शुद्ध बोये गए क्षेत्रफल के अतिरिक्त वन, कृषि योग्य बजर भूमि परती भूमि उसर एव कृषि के अयोग्य भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि, चारागाह बाग–बगीचो, को सम्मिलित किया गया है (सारणी–5 1)। सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता *पथरदेवा* विकास खण्ड मे है। परन्तु शुद्ध बोये गये क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिशत (87 22) *बैतालपुर* विकास खण्ड मे है। सबसे कम प्रतिवेदित क्षेत्र *देसही देवरिया* मे (13204 हे) है तथा सबसे कम शुद्ध बोया गया प्रतिशत क्षेत्र (68 27) *लार* विकास खण्ड मे है।

(ब) जल की उपलब्धता

मृदा के बाद जल की उपलब्धता कृषि के लिए एक अनिवार्य शर्त है। जल की पूर्ति प्राकृतिक या कृत्रिम साधनो द्वारा होती है। सिचाई का प्राकृतिक साधन वर्षा है। वर्षा के अभाव तथा अनिश्चितता के कारण कृत्रिम साधनो द्वारा जल उपलब्ध कराना ही ***सिचाई*** कहलाता है। मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता, अनियमितता, असामयिकता तथा विषमता अध्ययन क्षेत्र मे सिचाई की आवश्यकला को अनिवार्य बना देती है।

अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध कृषित भूमि 204175 हेक्टेयर है। इसके 77 84 प्रतिशत भाग (158937 हे) पर सिचाई के विभिन्न साधनो द्वारा सिंचाई सुविधा उपलबध है। विकासखण्ड वार सर्वाधिक

चित्रारेख [5 2]

जनपद देवरिया विभिन्न साधनो द्वारा स्रोतवार सिंचित क्षेत्रफल (हे० मे) 2001

Means of Irrigation & Irrigated Area 2001

शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल - 158937 [100%]

स्रोत. सांख्यकीय पत्रिका जनपद देवरिया 2001
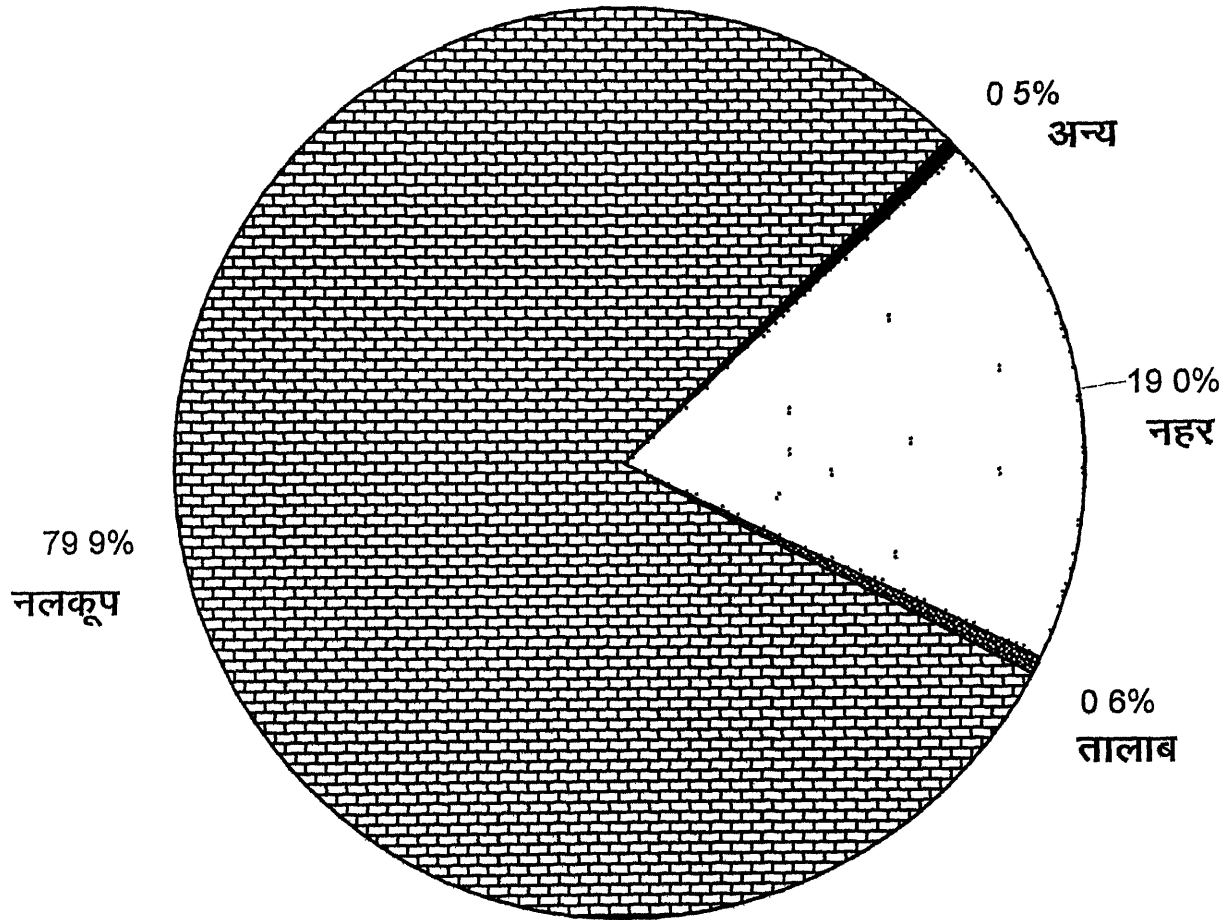
सिचित क्षेत्र प्रतिशत *पथरदेवा* का है जहॉ कृषित क्षेत्र के 97 प्रतिशत भाग पर सिचाई सुविधाओ का विस्तार हो चुका है। सबसे कम सिचित क्षेत्र प्रतिशत *भलुअनी* (57 61 प्रतिशत) का है। अध्ययन क्षेत्र मे सिचाई का सबसे प्रमुख साधन कृत्रिम ससाधन है परन्तु फिर भी वर्षा पर निर्भरता विशेषकर खरीफ की कृषि के लिए बनी हुयी है। यही कारण है कि उच्च सिचाई क्षमता के बावजूद वर्तमान वर्ष (2002) मे मानसून के समय पर न आ पाने के कारण पूरा क्षेत्र सूखा की चपेट मे आ गया और खरीफ की फसल बुरी तरह प्रभावित हुयी। सिचाई के कृत्रिम साधनो मे सबसे अधिक सिचित क्षेत्र *नलकूप* का (79 85 प्रतिशत) उसके बाद *नहर* (19 01 प्रतिशत) तथा उसके बाद *तालाब* (0 64 प्रतिशत) का स्थान आता है (आरेख 5 2)। नलकूप भी अधिकाश निजी क्षेत्र मे है। नलकूप के लिए उर्जा की उपलब्धता विद्युत द्वारा की जाती है जिसकी उपलब्धता पर्याप्त न होने से इसका परोक्ष प्रभाव सिचाई पर पडता है।

सारणी– 5 2

सिचाई के विभिन्न साधनो की स्थिति

विकास खण्ड	नहरो की लम्बाई (किमी)	राजकीय नलकूप (सख्या)	निजी नलकूप सख्या	कुँए (सख्या)
1 गौरी बाजार	47	70	533	409
2 बैतालपुर	59	62	315	518
3 देसही देवरिया	81	14	90	267
4 पथरदेवा	100	30	124	255
5 रामपुर कारखाना	59	18	112	307
6 देवरिया सदर	40	71	552	370
7 रुद्रपुर		30	154	100
8 भलुअनी		108	271	286
9 बरहज		52	218	160
10 भटनी	15	42	281	254
11 भाटपार रानी		69	229	210
12 बनकटा		55	188	301
13 सलेमपुर		101	464	408
14 भागलपुर		77	279	407
15 लार		55	412	400

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका– 2001, पृष्ठ– 63–64

जनपद मे ***नहरी सिचित क्षेत्र*** देवरिया से उत्तर स्थित क्षेत्रो मे ही सीमित है। इसमे सर्वाधिक सिचित क्षेत्र *देसही देवरिया* मे है उसके बाद क्रमश *रामपुर कारखाना पथरदेवा, बैतालपुर, गौरी बाजार,* एव *देवरिया सदर* का स्थान है। इन्ही क्षेत्रो मे नहरो की कुल लम्बाई (401 किमी) मे 386 किमी का विस्तार है। 15 किमी लम्बी नहर *भटनी* मे विस्तृत है जिससे 73 हेक्टेयर

क्षेत्र मे सिचाई होती है। ***नलकूपो*** द्वारा सर्वाधिक सिचित क्षेत्र क्रमश *सलेमपुर भलुअनी भागलपुर* और *भाटपार रानी* विकास खण्डो मे है। इन क्षेत्रो मे शुद्ध सिचित क्षेत्र का 99 प्रतिशत से अधिक भाग नलकूपो द्वारा सिचित है। ***कुँओ*** द्वारा सिचाई प्रमुखत पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रो मे क्रमश *बनकटा* और *बरहज* विकास खण्डो मे होती है। ***तालाबो*** द्वारा सर्वाधिक सिचाई भी इन्ही क्षेत्रो मे क्रमश *लार* और *बरहज* मे है। जनपद मे विकास खण्डवार सिचाई के विभिन्न साधनो का विस्तृत विवरण सारणी (5 2) मे तथा विभिन्न साधनो द्वारा सिचित क्षेत्र प्रतिशत सारणी (5 3) मे प्रदर्शित है।

(स) श्रम एव तकनीक

कृषि कार्य के आधारभूत सघटको मे *श्रम* की अपनी अलग भूमिका है क्योकि भूमि जल की उपलब्धता के बावजूद श्रम की अनुपलब्धता से कृषि–कार्य सम्भव नही है। कृर्षि–कार्य चूँकि प्राथमिक कार्य है अत इसके लिए अधिकाधिक मात्रा मे श्रमिको की आवश्यकता पडती है। श्रम की दृष्टि से भारत सम्पन्न देश है। इसी अनुरूप देवरिया जनपद भी अत्यधिक घनी आबादी के कारण श्रम ससाधन सम्पन्न क्षेत्र है। वर्ष 2001 के ऑकडे के अनुसार यहॉ जनसख्या घनत्व 1077

सारणी– 5 3

विकास खण्डवार विभिन्न साधनो द्वारा वास्तविक सिचित क्षेत्र (हेक्टेयर मे)

विकास खण्ड	शुद्धकृषित क्षेत्र	शुद्ध सिचित क्षेत्र प्रतिशत	नहर सिचित क्षेत्र प्रतिशत	नलकूप सिचित क्षेत्र प्रतिशत	कूँए सिचित क्षेत्र प्रतिशत	तालाब सिचित क्षेत्र प्रतिशत
1 गौरी बाजार	15822	74 65	33 76	66 19	0 04	
2 बैतालपुर	14339	78 75	34 78	65 12	0 04	
3 देसही देवरिया	10985	77 57	79 05	21 03		
4 पथरदेवा	18030	96 99	42.34	57 65		
5 रामपुर कारखाना	11640	94 49	58 18	41 81		
6 देवरिया सदर	14554	82 05	13 23	86 75		
7 रुद्रपुर	16471	69 03		99 34	0 52	
8 भलुअनी	15631	57 61		99 97		
9 बरहज	11690	66 86		93 46	1 66	4 35
10 भटनी	11674	73 36	0 85	99 14		
11 भाटपार रानी	11305	70 88		99 37	0 37	
12 बनकटा	12044	68 92		94 38	4 89	
13 सलेमपुर	12787	85 20		99 99		
14 भागलपुर	12211	94 06		99 67		0 32
15 लार	12425	76 00		93 07	0 02	6 77

स्रोत–साख्यिकी पत्रिका– 2001, पृष्ठ स 42–44

व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जो *प्रदेश* और *देश* के *घनत्व* से बहुत अधिक है। वर्तमान मे घनत्व की दृष्टि से जनपद का प्रदेश मे 9 वॉ स्थान है। जनपद मे कुल आबादी का 90 14 प्रतिशत (2001) गॉवो मे रहती हैं तथा इनका सर्वप्रमुख कार्य कृषि है। इस प्रकार यहॉ कृषि कार्य के लिए श्रम की समस्या नही है। जनपद के कुल कर्मकारो मे कृषको का प्रतिशत 55 75 है तथा कृषक मजदूरो का प्रतिशत– 23 01 है। इस प्रकार कुल कर्मकारो मे 78 76 प्रतिशत केवल कृषि कार्य से सम्बद्ध है।

तकनीक से श्रम की कार्यकुशलता मे वृद्धि होती है जिससे अतत उत्पादकता बढती है और कृषक के लाभ मे वृद्धि होती है जिससे उसका आर्थिक स्तर सुदृढ़ होता है। कृषि कार्य मे तकनीक या मशीनीकरण का अर्थ जमीन पर उन कार्यों के लिए मशीन के इस्तेमाल से है जो परम्परागत खेती मे बैलो घोडो और दूसरे भारवाही पशुओ या मनुष्यो के श्रम द्वारा सम्पन्न किए जाते है।[8] अध्ययन क्षेत्र इस दृष्टि से अभी भी पारपरिक ढग से ही कृषि कार्य करता है। पर इधर 5–7 वर्षो मे कृषि तकनीक की दृष्टि से इसमे नवीन तकनीको का प्रयोग बढने लगा है। वर्तमान समय मे सभी सम्पन्न किसान ट्रैक्टर थ्रेसर कम्बाइन, हार्वेस्टर इत्यादि यत्रो का उपयोग कृषि कार्य मे करने लगे है वर्तमान समय मे अध्ययन क्षेत्र के विस्तृत भाग मे गेहूँ फसल की कटाई एव धान के फसल की कटाई मे मजदूरो के स्थान पर हार्वेस्टर का उपयोग किया जाने लगा है। इन सबके बावजूद आज भी बडे पैमाने पर परम्परागत यत्रो का प्रयोग इस क्षेत्र के कृषि कार्य मे हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे ट्रैक्टरो की कुल सख्या 4 705 है उन्नत बोआई यत्र– 1 817 स्प्रेयर सख्या– 1,475, उन्नत थ्रेसिग मशीन 24 133 उन्नत हल एव कल्टीवेटर– 49 385 एव 26,487 है। उपर्युक्त तथ्यो से कृषि मे यन्त्रीकरण के अभाव की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है।

(द) उर्वरक प्रयोग

उत्पादन वृद्धि मे सतुलित उर्वरको के प्रयोग का विशेष महत्व है। नवीनतम अनुसधानो से प्राप्त परिणाम के अनुसार *नाइट्रोजन फास्फोरस* एव *पोटाश* का अनुपात कृषि मे **4 2 1** होना चाहिए। जबकि **जनपद** मे अब तक नाइट्रोजन फास्फोरस एव पोटाश का अनुपात ***22 5 1*** है। अत आवश्यकता है कि सस्तुत मात्रा मे उर्वरको के प्रयोग हेतु *फास्फोरस* एव *पोटाश* के प्रयोग पर बल दिया जाय। विशेषकर दलहनी एव तिलहनी फसलो मे फास्फोरस एव पोटाश के प्रयोग पर अवश्य ही बल दिया जाय। वर्षवार उर्वरक खपत का विवरण सारणी (5 4) मे प्रस्तुत है।

सारणी– 5 4

जनपद मे वर्षवार उर्वरक खपत का विवरण (के जी / हे)

क्र स	उर्वरक	1998–99	1999–2000	2000–2001	2001–2002
1	नाइट्रोजन	19 52	21 50	24 00	21 83
2	फास्फोरस	4 02	3 98	5 00	4 72
3	पोटाश	1 00	1 00	1 00	1 00

स्रोत–खरीफ/रबी उत्पादन कार्यक्रम, कृषि विभाग देवरिया 2001/02 पृष्ठ–11

सारणी 5 4 से स्पष्ट है कि जनपद मे उर्वरक का उपयोग सस्तुत अनुपात मे नहीं हो रहा है। अभी भी फास्फोरस और पोटाश की खपत बहुत कम है तथा नाइट्रोजन का प्रयोग बहुत अधिक। इससे उत्पादकता प्रभावित होती है। लगभग सभी विकास खण्डो मे उर्वरक खपत का यही प्रतिरूप देखने को मिलता है। सारणी (5 5) मे प्रत्येक विकास खण्ड मे उर्वरक खपत का विवरण प्रस्तुत है। सारणी (5 6) मे प्रति हेक्टेयर बोये गये क्षेत्र पर उर्वरक उपभोग प्रस्तुत है। जिसमे उपभोग मे क्षेत्रीय स्तर पर भारी असतुलन दृष्टिगत होता है।

सारणी–5 5

जनपद मे विकास खण्डवार उर्वरक खपत (मी टन) एव एन पी के अनुपात

	विकास खण्ड	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	एन पी के अनुपात	जिक
1	गौरीबाजार	3281	700	151	22 5 1	19
2	बैतालपुर	3271	711	150	22 5 1	15
3	देसही देवरिया	3211	702	148	22 5 1	15
4	पथरदेवा	3201	712	146	22 5 1	15
5	रामपुर कारखाना	3662	728	151	24 5 1	15
6	देवरिया सदर	3663	726	167	22 6 1	19
7	रुद्रपुर	2951	704	152	19 5 1	15
8	भलुअनी	3261	708	151	22 5 1	15
9	बरहज	3131	700	150	21 5 1	19
10	भटनी	3311	694	148	22 5 1	15
11	भाटपार रानी	3351	704	150	22 5 1	15
12	बनकटा	3202	708	151	21 5 1	15
13	सलेमपुर	3251	707	150	22 5 1	18
14	भागलपुर	3031	709	136	22 5 1	15
15	लार	3271	702	147	22 5 1	15

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका– 2001, पृष्ठ– 69 एव खरीफ उत्पादन कार्यक्रम (2000–01) कृषि विभाग देवरिया पृ 27

5 5 कृषि विकास के उत्प्रेरक एव सहायक तत्व

कृषि कार्य मे उपर्युक्त आधारभूत तत्वो के अलावे कई एसे तत्वो का भी समावेश होता है जो कृषि कार्य मे सहयोग प्रदान करते हैं तथा क्षेत्र मे जिनकी स्थापना से विकास तीव्र होता है। अर्थात् ये कृषि विकास को उत्प्रेरित करते है। जहॉ कृषि के आधारभूत घटक (मृदा जल श्रम) प्रकृति प्रदत्त है, वही उत्प्रेरक तत्व पूर्णत मानवीय हैं तथा इनकी उपलब्धता देश और राज्य के आर्थिक विकास से निर्धारित और नियत्रित होती है। कृषि विकास के इन उत्प्रेरक तत्वो की स्थापना सेवाकेन्द्रों पर ही होती है और इन्ही इकाइयो के माध्यम से सेवाकेन्द्र सेवाक्षेत्र को अपनी सेवाये प्रदान करते हैं। कृषि विकास के इन उत्प्रेरक तत्वो मे *बीज गोदाम/उर्वरक डिपो ग्रामीण गोदाम कीटनाशक डिपो शीत भण्डार, कृषि सेवाकेन्द्र, मण्डी समिति, पशु चिकित्सालय,*

सारणी– 56

जनपद मे विकास खण्डवार प्रति हे सकल बोये गये क्षेत्र पर उर्वरक उपभोग (एन पी के)

क्रम सख्या	विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र
1	गौरीबाजार	315 3
2	बैतालपुर	249 5
3	देसही देवरिया	239 2
4	पथरदेवा	235 0
5	रामपुर कारखाना	224 0
6	देवरिया सदर	222 1
7	रुद्रपुर	220 1
8	भलुअनी	215 2
9	बरहज	185 8
10	भटनी	179 7
11	भाटपार रानी	176 0
12	बनकटा	169 2
13	सलेमपुर	161 7
14	भागलपुर	154 0
15	लार	135 9

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका– 2001, पृष्ठ– 165

पशु सेवाकेन्द्र कृतिम गर्भाधान केन्द्र सहकारी समितियॉ एव *वित्तीय सस्थाएँ* प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो पर इनकी उपलब्धता तथा क्षेत्र के कृषि विकास मे इनकी भूमिका का विवेचन निम्नवत् है।

(1) बीज गोदाम, उर्वरक डिपो

कृषि के सहयोगी तत्वो मे बीज गोदाम एव उर्वरक डिपो की सबसे प्रमुख भूमिका होती है। देश मे 60 के दशक मे आयी हरितक्राति 70 के दशक के मध्य तक देश के कई अन्य भागो मे प्रसारित होते हुए देवरिया तक पहुँची। हरितक्राति का चूँकि एक प्रमुख पहलू उन्नतशील बीज एव रासायनिक उर्वरक के प्रयोग से सम्बन्धित था। अत देवरिया मे 1981 तक इसके अनेक केन्द्रो की स्थापना सेवाकेन्द्रो पर हो चुकी थी। 1981 मे बीज गोदाम एव उर्वरक डिपो की कुल सख्या 254 थी। इनमे सर्वाधिक केन्द्र *देवरिया सदर* मे तथा सबसे कम सख्या *देसही देवरिया* और *भटनी* विकास खण्डो मे थी। सन् 2001 तक ये सख्या बढकर 299 हो गयी। इस समय बीज गोदाम एव उर्वरक डिपो की सर्वाधिक सख्या *देवरिया सदर* विकास खण्ड मे (31) एव न्यूनतम सख्या *देसही देवरिया* मे (13) है। इन केन्द्रो की सेवाकेन्द्रो पर स्थापना से कृषि मे उन्नतशील बीजो एव उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित हुई, जिससे कृषि मे इनका प्रयोग बढा।

(2) ग्रामीण गोदाम

ग्रामीण गोदामो की स्थापना अन्न को सुरक्षित सचित रखने के उद्देश्य से की जाती है। सेवाकेन्द्रो पर इनकी स्थापना का कृषि विकास पर सकारात्मक प्रभाव पडता है। 1981 तक कृषि उपज के अतिरेक को सुरक्षित सग्रह कर रखने हेतु जनपद मे 149 ग्रामीण गोदाम थे। जिसमे सर्वाधिक गोदाम क्रमश *सलेमपुर (14)* एव *देवरिया सदर (12)* मे स्थापित थे। 2001 मे जनपद मे इनकी सख्या बढकर 174 हो गयी। वर्तमान मे सर्वाधिक गोदामो की सख्या *सलेमपुर* प्रखण्ड मे (17) तथा सबसे कम *पथरदेवा* एव *रामपुर कारखाना* विकास खण्डो मे क्रमश 9 9 है।

(3) कीटनाशक डिपो

हरित क्राति के बाद के वर्षो मे कृषि मे उन्नतशील बीज सिचाई के समुचित प्रबन्ध एव उर्वरको के प्रयोग के साथ कीटनाशको का प्रयोग अपरिहार्य हो गया। जनपद की कृषि उत्पादकता मे वृद्धि तथा किसानो के लाभ वृद्धि हेतु 1981 तक जनपद मे मात्र 5 कीटनाशक डिपो थे। ये सभी *गौरी बाजार देवरिया सदर रुद्रपुर बरहज* एव *सलेमपुर* मे केन्द्रीत थे। कृषि विकास मे इनकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए 2001 तक जनपद के विभिन्न सेवाकेन्द्रो पर इनकी स्थापना की गयी जिससे वर्तमान मे सख्या बढकर 17 हो गयी है। इसमे *सलेमपुर* एव *देवरिया सदर* मे दो केन्द्र है तथा बाकी सभी विकास खण्डो मे एक–एक केन्द्र स्थित है।

(4) शीत भण्डार

1981 मे देवरिया जनपद मे कुल मात्र 2 शीत भण्डार थे जिसमे सबसे पुराना एक शीत भण्डार *गौरीबाजार* मे तथा दूसरा *देवरिया सदर* मे मुख्यालय पर स्थापित था। देवरिया मुख्यालय के उत्तर–उत्तर पश्चिमी क्षेत्रो मे आलू की बढती पैदावार को सचित रखने के लिए बाद मे *देवरिया* मे ही एक और शीत भण्डार की स्थापना की गयी। इससे सख्या बढकर तीन हो गयी है। परन्तु ये पर्याप्त नही कहा जा सकता क्योकि कभी–कभी किसानो को शीत भण्डार की कमी की वजह से अपने उपज को या तो औने–पौने कीमत पर बेचना पडता है या वे जल्द ही नष्ट हो जाते है। शीत भण्डार की स्थापना से कृषि प्रतिरूप पर सीधा प्रभाव पडता है।

(5) कृषि सेवाकेन्द्र

कृषि विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कृषि सेवाकेन्द्रो की स्थापना की जाती है। इस निमित्त 1981 तक देवरिया मे इनकी स्थापित सख्या मात्र 6 थी जो 2001 तक बढकर 16 हो गयी। अर्थात इसमे 10 इकाइयो की वृद्धि हुयी। कृषि सेवाकेन्द्रो से कृषको को कृषि सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की जानकारी एव सहायता प्रदान की जाती है।

(6) कृषि उत्पादन मण्डी समिति

यदि कृषक को उसके उपज का उचित मूल्य न मिले तो कृषक उस फसल विशेष के प्रति अरुचि दिखाने लगता है। कृषको के उपज को उचित मूल्य पर क्रय–विक्रय करने के लिए

सारणी 57 (1)

विकास खण्डवार कृषि से सम्बन्धित मुख्य सुविधाए (वर्ष 1981–2001)

विकास खण्ड	बीज गोदाम उर्वरक डिपो स 1981–2001		ग्रामीण गोदाम 1981–2001		कीटनाशक डिपो 1981–2001		शीत मण्डार 1981–2001		कृषि सेवाकेन्द्र 1981–2001		कृषि उत्पादन मण्डी समिति 1981–2001		पशु चिकित्सालय 1981–2001	
1 गौरीबाजार	23	26	10	12	1	1	1	1	1	3	-	-	-	1
2 बैतालपुर	24	25	11	12	-	1	-	-	-	-	-	-	1	2
3 देसही देवरिया	10	13	9	10	-	1	-	-	-	-	-	-	-	1
4 पथरदेवा	17	19	9	9	-	1	-	-	-	-	-	-	1	2
5 रामपुर कारखाना	14	18	7	9	-	1	-	-	-	1	-	-	-	1
6 देवरिया सदर	27	31	12	13	1	2	1	2	2	4	1	1	1	2
7 रुद्रपुर	16	19	10	11	1	1	-	-	-	-	-	-	1	2
8 भलुअनी	14	15	10	12	-	1	-	-	1	4	-	-	1	3
9 बरहज	17	21	10	12	1	1	-	-	-	-	-	-	-	1
10 भटनी	10	14	11	12	-	1	-	-	-	-	-	-	-	1
11 भाटपाररानी	12	15	9	10	-	1	-	-	-	-	-	-	1	2
12 बनकटा	14	15	10	11	-	1	-	-	-	2	-	-	-	1
13 सलेमपुर	22	29	14	17	1	2	-	-	1	1	-	-	1	2
14 भागलपुर	17	19	8	12	-	1	-	-	-	-	-	-	1	2
15 लार	17	20	9	12	-	1	-	-	1	1	-	-	1	2
योग जनपद	254	299	149	174	5	17	2	3	6	16	1	1	9	25

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 70–71 78–79 81–82 106 एव जिला गजेटियर देवरिया– 1988 पृष्ठ 78–131 तथा जिला जनगणना हस्त पुस्तिका देवरिया– 1981 से सगणित पृष्ठ– 7–19 495–500 640–661

सारणी 5 7 (2)

विकास खण्डवार कृषि से सम्बन्धित मुख्य सुविधाए (वर्ष 1981—2001)

विकास खण्ड	पशु सेवाकेन्द्र		कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र		कृषि ऋण सहकारी समितियाँ		जिला सहकारी बैक		क्षेत्रीय ग्रामीण बैक	
	1981	2001	1981	2001	1981	2001	1981	2001	1981	2001
1 गौरीबाजार	1	2	-	-	8	13	1	2	2	3
2 बैतालपुर	-	3	-	-	3	11	-	1	3	4
3 देसही देवरिया	-	3	-	-	3	8	1	1	3	3
4 पथरदेवा	1	3	-	1	5	13	1	2	5	8
5 रामपुर कारखाना	-	2	—	-	2	9	-	1	3	5
6 देवरिया सदर	2	4	1	1	7	15	2	2	3	3
7 रुद्रपुर	1	2	-	1	8	13	1	2	1	3
8 भलुअनी	1	2	-	—	9	14	1	3	2	3
9 बरहज	1	3	-	1	9	13	-	1	1	1
10 भटनी	-	3	-	-	10	13	-	1	1	2
11 भाटपाररानी	-	2	-	1	8	12	-	1	1	2
12 बनकटा	-	2	-	-	7	11	-	1	4	4
13 सलेमपुर	-	1	-	1	8	18	1	1	-	1
14 भागलपुर	-	2	-	-	9	12	-	1	2	4
15 लार	1	3	-	1	7	13	-	1	3	3
योग जनपद	8	37	1	7	103	184	8	21	34	59

स्रोत— साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया—2001 पृ— 70—71 78—79 81—82 106 एव जिला गजेटियर देवरिया— 1988 पृष्ठ 78—131 तथा जिला जनगणना हस्त पुस्तिका देवरिया— 1981 से सगणित पृष्ठ— 7—19 495—500 640—661

देवरिया मे एक मात्र मण्डी समिति है। इनकी स्थापना तहसील स्तर पर करते हुए सख्या बढाना चाहिए।

(7) पशुचिकित्सालय पशु सेवाकेन्द्र एव कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र

पशुपालन को जनपद मे कृषि के पूरक कार्य के रूप मे तथा दूग्ध उत्पादन हेतु किया जाता है। पहले जब कृषि मे यत्रीकरण का प्रयोग सीमित था तब यह कृषि कार्य का प्रमुख आधार हुआ करता था। पर अब जैसे-जैसे कृषि मे ट्रैक्टर हारवेस्टर थ्रेसर इत्यादि यत्रो का प्रयोग बढने लगा है वैसे-वैसे कृषि मे पशुपालन की भूमिका सिमटते हुए केवल दूध उत्पादन तक रह गयी है। एक ओर जहॉ कृषि मे यत्रीकरण के कुछ लाभ हुए है वही फसल और पशुपालन साहचर्य के बिगडने से कृषि उत्पादकता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पडा है क्योकि पशुधन के गोबर से प्राप्त होने वाले खाद की मात्रा कम हो गयी है जिससे भूमि की उर्वरता प्रभावित हुयी है।

पशुओ को उचित चिकित्सासुविधा उपलब्ध कराने तथा उनके गर्भाधान के लिए जनपद मे अनेक चिकित्सालय पशु सेवाकेन्द्र एव कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र की स्थापना की गयी। जहॉ 1981 मे पशु चिकित्सालय पशुसेवाकेन्द्र एव कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र की सख्या क्रमश 9 8 और 1 थी वही 2001 तक इनकी सख्या बढकर क्रमश 25 37 और 7 हो गयी है। ये केन्द्र जनपद के विभिन्न सेवाकेन्द्रो पर स्थापित है। पशु सेवाकेन्द्रो पर कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा उपलबध नही है जबकि पशु चिकित्सालयो पर पशु चिकित्सा के साथ ये सुविधा भी उपलब्ध है। जनपद के सभी विकास खण्डो मे पशु चिकित्सालय स्थापित है,- ये है- देवरिया सदर बैरौना गौरी बाजार देसही देवरिया बैतालपुर, पहाडपुर भटनी बनकटा, रामपुर कारखाना भलुअनी खुखुन्दू, पकडी बाजार नोनार पाण्डे तरकुलवॉ सलेमपुर सोहनाग लार पिण्डी भागलपुर मईल रुद्रपुर बरहज पथरदेवा भाटपार एव पचलडी (रुद्रपुर)। इन सेवाकेन्द्रो से सेवाकेन्द्र पशु चिकित्सा सम्बन्धी सेवाये सेवाक्षेत्र को प्रदान करते है।

(8) सहकारी समितियॉ एव बैकिग

जनपद के प्रगति मे सहकारी क्षेत्र एव बैकिग का विशेष योगदान रहा है। ये वित्तीय सस्थाये कृषको को विभिन्न प्रकार के ऋण प्रदान कर उन्हे कृषि कार्य मे पर्याप्त सहयोग प्रदान करती है। 1981 मे इन समितियो मे *कृषि ऋण सहकारी समितियॉ जिला सहकारी बैक* एव *क्षेत्रीय ग्रामीण बैक* सर्वप्रमुख थे, जिनकी सख्या क्रमश 103, 8 और 34 थी। वर्तमान समय (2002) मे *प्रारभिक कृषि सहकारी समितियो* की सख्या बढ़कर 184 हो गयी है, जिसमे सदस्यो की सख्या 3 52 लाख है। इसके अतिरिक्त 21 *सयुक्त कृषि समितियॉ* 289 *दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियॉ* 31 *मत्स्य सहकारी समितियॉं*, 5 *क्रय-विक्रय सहकारी समितियॉं* तथा 11 *गन्ना सहकारी समितियॉं* कार्यरत हैं, जिसमे सदस्य के रूप मे जनपद के विभिन्न व्यक्ति कृषि कार्य हेतु सहयोग प्राप्त करते हैं। सहकारी विभाग का एक शीतगृह तथा 5000 मी क्षमता का एक गोदाम भी जनपद मे स्थित है।

वर्तमान समय मे जनपद मे *सहकारी बैको* की कुल 21 शाखाएँ कार्यरत है जो अपने सदस्यो को विभिन्न प्रकार के अल्पकालीन एव मध्यकालीन ऋण उपलब्ध कराते हैं। तीन *कृषि ग्रामीण सहकारी बैक* तीन तहसीलो क्रमश *देवरिया रुद्रपुर* तथा *सलेमपुर* मे स्थित है। वर्तमान समय मे जनपद मे *क्षेत्रीय ग्रामीण बैक* की कुल 59 शाखाये कार्यरत है। ये सभी बैक कृषि एव गैर कृषि कार्यो हेतु मध्य कालीन एव दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराते है कृषि से सबधित उपरोक्त मुख्य सुविधाओ को सख्या एव वर्ष के साथ सारणी (5 7) मे प्रस्तुत किया गया है।

5 6 कृषि विकास की प्रवृत्ति एव प्रतिरूप

कृषि कार्य के सहायक इकाइयो की विभिन्न केन्द्रो पर स्थापना का कृषि विकास पर प्रभाव–कृषि प्रतिरूप उत्पादन उत्पादकता गहनता शस्य साहचर्य फसल–चक्र पशुपालन–मत्स्यपालन का कृषि के साथ सयोजन आदि के रूप मे परिलक्षित होने लगता है। अत इनकी प्रवृत्ति एव प्रतिरूप के विश्लेषण से कृषि विकास को स्पष्ट किया जा सकता है।

(क) फसल प्रतिरूप

फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत फसलो के स्थानिक एव कालिक वितरण का अध्ययन किया जाता है। अनेक फसलो के स्थानिक और कालिक वितरण से बने स्वरूप को *फसल प्रतिरूप* कहते है।[10] फसल प्रतिरूप पर भौतिक, आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक तथा सस्थागत कारको का प्रभाव पडता है। अध्ययन क्षेत्र के फसल प्रतिरूप वितरण के लिए कालिक पक्ष को अपनाया गया है। क्योकि इसमे स्थानिक प्रतिरूप का स्वत समावेश हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र मे खरीफ रबी दो मुख्य फसले है। इसके अलावे गन्ना की फसल भी ली जाती है। जायद की फसल सबसे कम क्षेत्र मे बोयी जाती है। जायद मे केवल कुछ सब्जियो एव उडद की फसल ही उगायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के खरीफ रबी एव जायद फसलो के अतर्गत समाहित कृषि क्षेत्र को सारणी (5 8) एव चित्र– 5 3 मे प्रदर्शित किया गया है।

(अ) खरीफ–फसल

जून–जुलाई मे मानसून के आगमन के समय बोई जाने वाली फसल को *खरीफ* फसल कहते हैं। *धान, गन्ना, कपास, ज्वार बाजरा मक्का, जूट मूँगफली, तिल तम्बाकू, मूँग, अरहर, उडद* तथा *मोठ* आदि खरीफ की फसले हैं। अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक क्षेत्रफल (160366 हे) पर खरीफ की कृषि की जाती है, जो सकल बोये गए क्षेत्र का 50 46 प्रतिशत है। विकास खण्डवार सकल कृषित क्षेत्र के सर्वाधिक भाग मे विकास खण्ड *बनकटा* मे खरीफ की कृषि की जाती है सारणी (5 8)। खरीफ फसल के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल *धान* की कृषि का (38 03 प्रतिशत) है। धान के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र क्रमश *पथरदेवा गौरी बाजार, भलुअनी, देवरिया सदर रुद्रपुर* विकास खण्ड मे हैं। खरीफ की दूसरी महत्वपूर्ण फसल *गन्ना* है जो सकल कृषित क्षेत्र के 5 73 प्रतिशत भू–भाग पर की जाती है। *अरहर* 3 45 प्रतिशत तथा *मक्का* 1 91 प्रतिशत सकल कृषि

DISTRICT DEORIA CROPPING PATTERN 2001
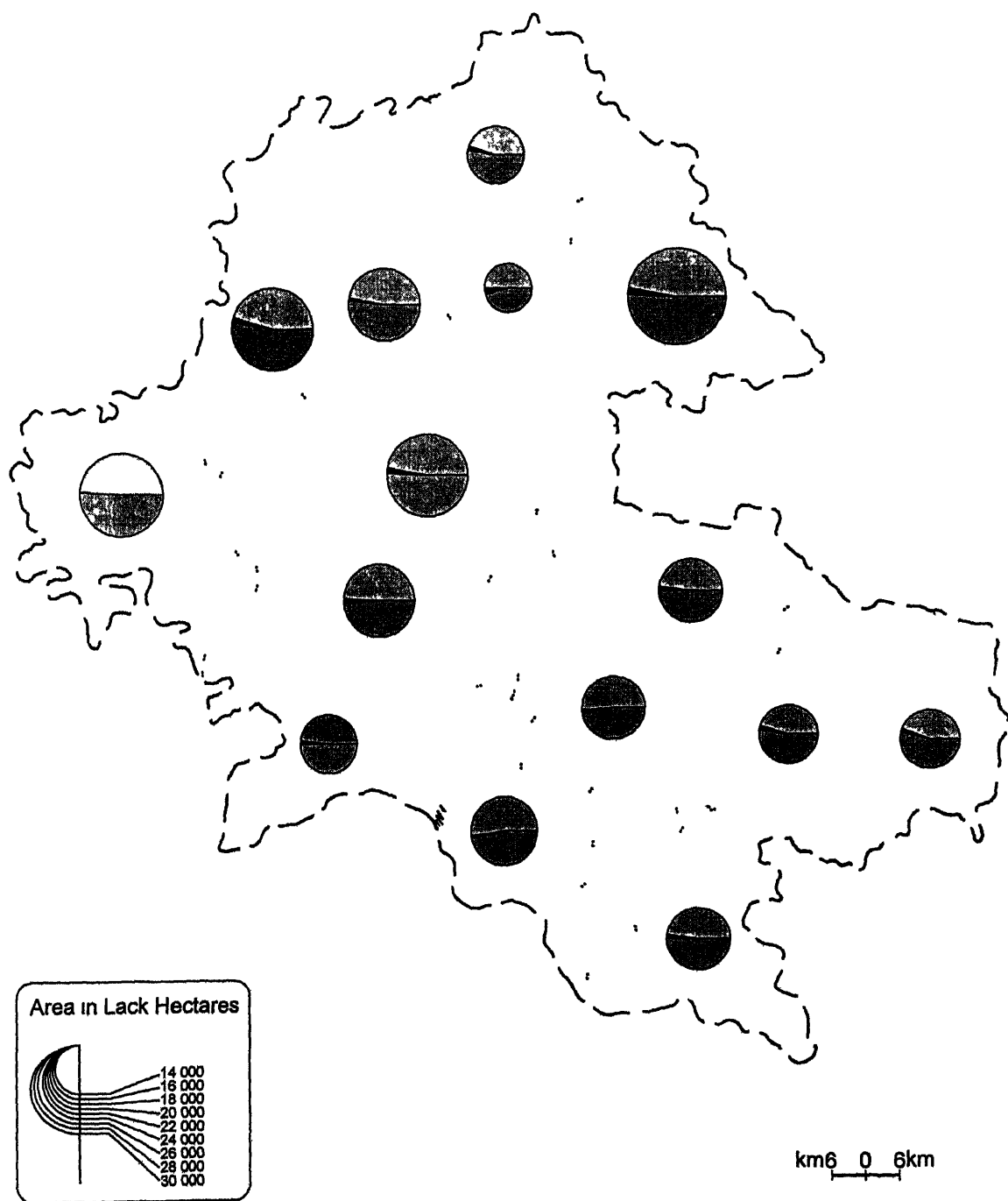
Fig. 5 : 3

क्षेत्र के भाग पर की जाती है। सकल कृषित क्षेत्र की सर्वाधिक भूमि ***मक्का*** के अन्तर्गत क्रमश — *भटनी रुद्रपुर रामपुर कारखाना लार पथरदेवा* विकास खण्डो मे तथा ***गन्ना*** के अतर्गत क्रमश *पथरदेवा देसही देवरिया बैतालपुर गौरीबाजार बनकटा रामपुर कारखाना,* एव *देवरिया* सदर विकास खण्डो मे है। ***अरहर*** के अतर्गत *रुद्रपुर लार* एव भलुअनी विकास खण्डो मे सर्वाधिक क्षेत्र पाया जाता है। विभिन्न फसलो के अतर्गत क्षेत्रफल एव सकल कृषित क्षेत्र का प्रतिशत सारणी 5 9 एव आरेख (5 4) मे प्रदर्शित है।

(ब) रबी—फसल

रबी के फसलो की बुवाई अक्टूबर से दिसम्बर माह तक होती है तथा कटाई मार्च—अप्रैल माह मे होती है। इन फसलो की उत्पादकता प्रमुखत सिचाई पर निर्भर करती है। गेहॅ जौ चना मटर सरसो आलू, मसूर अलसी तथा बरसीम आदि मुख्य रबी की फसले है। अध्ययन क्षेत्र मे खरीफ फसलो की तुलना मे रबी की फसलो के अतर्गत कम क्षेत्र (151114 हे) 47 55 प्रतिशत है। इसका प्रमुख कारण है इसकी सिचाई पर निर्भरता सारणी— (5 8)। सकल बोए गए क्षेत्र का विकास खण्ड वार रबी फसल मे बोए गए क्षेत्र का क्रम सारणी (5 8) मे प्रस्तुत है।

रबी की प्रमुख फसले क्रमश *गेहूँ, मटर सरसो, जौ मसूर, चना* है। जिनका सकल बोए गए क्षेत्र मे प्रतिशत क्रमश— 43 32 0 87 0 65, 0 48, 0 41 0 25 है। ***गेहूँ*** के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र क्रमश *भलुअनी, पथरदेवा, देवरिया सदर गौरीबाजार रुद्रपुर* मे है। ***मटर*** के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र क्रमश *सलेमपुर भलुअनी, रुद्रपुर* विकासखण्डो मे तथा ***सरसो*** के अतर्गत *पथरदेवा बैतालपुर, देवरिया सदर रुद्रपुर* विकासखण्डो मे सर्वाधिक क्षेत्र है। ***जौ*** की कृषि प्रमुख रूप से *रुद्रपुर लार बरहज एव भलुअनी* विकास खण्डो मे तथा ***मसूर*** की कृषि के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र क्रमश *रुद्रपुर लार, पथरदेवा, देसही देवरिया* विकसखण्डो मे है। ***चना*** के अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र— *भलुअनी* एव *रुद्रपुर* मे है।

(स) जायद—फसल

खरीफ तथा रबी के ग्रीष्मकालीन सक्रमण कालावधि मे जायद की कृषि की जाती है जिसमे उडद मूॅग, मक्का, खरबूज तरबूज ककडी तथा सब्जियो का उत्पादन होता है। इसके अतर्गत अध्ययन क्षेत्र मे मात्र 5778 हे क्षेत्र ही समाहित है। जो सकल कृषित भूमि का 1 81 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र मे जायद के अतर्गत खाद्यान्न मे ***मक्का*** की कृषि सकल कृषित क्षेत्र के 0 04 प्रतिशत भाग मे की जाती है। इसके अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र *पथरदेवा, रामपुर कारखाना भटपाररानी बैतालपुर, देसही देवरिया* विकासखण्डो मे पाया जाता है। ***मूँग*** जायद की सर्वप्रमुख फसल है जो सकल कृषित क्षेत्र के 0 13 प्रतिशत भाग पर की जाती है। इसके अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र *पथरदेवा रामपुर कारखाना, बैतालपुर, देसही देवरिया, गौरीबाजार* विकसखण्डो मे पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र मे जायद फसल के अतर्गत सब्जियो का उत्पादन भी प्रमुख रूप से किया जाता है। सिचाई

चित्रारेख स (5 4)

जनपद देवरिया
विभिन्न फसलो के अतर्गत क्षेत्र प्रतिशत– 2001
(Percentage of area under different crops 2001)
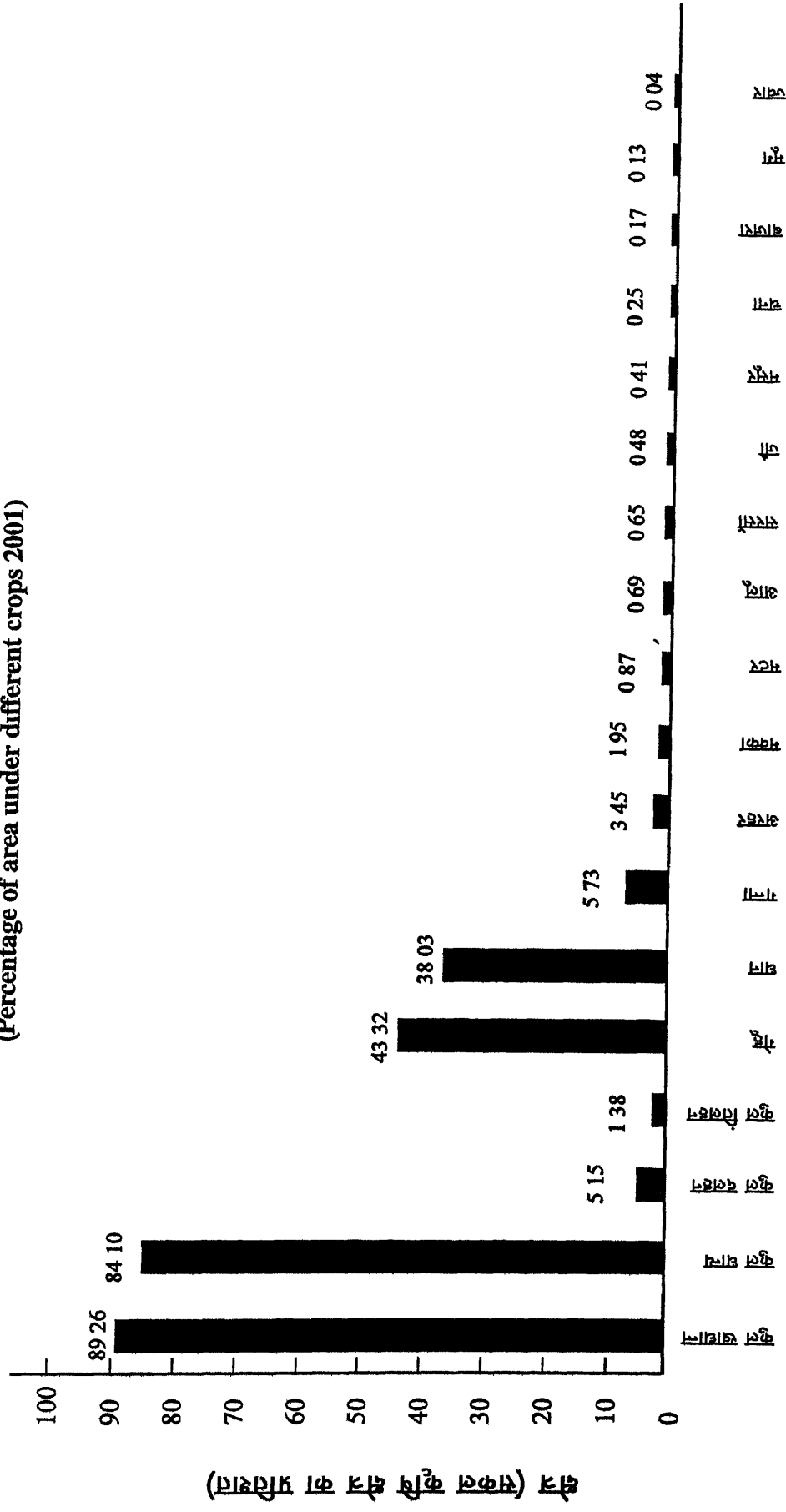
सारणी 5 8

विभिन्न फसलो के अतर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) –2001

विकास खण्ड	सकल कृषित क्षेत्र	रबी के अतर्गत क्षेत्र	प्रतिशत	खरीफ के अतर्गत क्षेत्र	प्रतिशत	जायद के अतर्गत क्षेत्र	प्रतिशत	गन्ना के अतर्गत तैयार क्षेत्र	प्रतिशत
1 गौरीबाजार	25604	11591	45 27	13557	52 94	398	1 55	58	0 22
2 बैतालपुर	22988	10701	46 55	11901	51 77	346	1 50	40	0 17
3 देसही देवरिया	18453	8249	44 70	9936	53 84	261	1 41	7	0 03
4 पथरदेवा	29875	13960	46 72	15270	51 11	582	1 94	63	0 21
5 रामपुर कारखाना	14403	7180	49 85	6688	46 43	464	3 22	71	0 49
6 देवरिया सदर	24520	11617	47 37	12442	50 74	381	1 55	80	0 32
7 रुद्रपुर	24718	12081	48 87	12357	49 99	265	1 07	15	0 06
8 भलुअनी	24352	11829	48 57	11998	49 26	500	2 05	25	0 10
9 बरहज	16937	8077	47 68	8457	49 93	381	2 24	22	0 12
10 भटनी	17362	8261	47 58	8733	50 29	350	2 01	18	0 10
11 भाटपाररानी	16852	7642	45 25	8917	52 91	269	1 59	24	0 14
12 बनकटा	18128	7898	43 56	9835	54 25	373	2 05	22	0 12
13 सलेमपुर	18493	9481	51 26	8626	46 64	374	2 02	12	0 06
14 भागलपुर	22198	11493	51 77	10337	46 56	329	1 48	39	0 17
15 लार	19142	9253	48 33	9524	49 75	360	1 88	5	0 02
योग जनपद	**317759**	**151114**	**47 55**	**160366**	**50 46**	**5778**	**1 81**	**501**	**0 15**

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 42–43 से सगणित।

सारणी 5 9

खरीफ, रबी एव जायद फसलो के अतर्गत प्रयुक्त भूमि का प्रतिशत विवरण (2001–02)

फसल	क्षेत्रफल (हेक्टेयर मे)	सकल कृषित क्षेत्र (317759 हे0) का प्रतिशत
कुल खाद्यान्न	283641	89 26
कुल धान्य	267245	84 10
कुल दलहन	16396	5 15
कुल तिलहन	4405	1 38
गेहूँ	137653	43 32
धान	120846	38 03
गन्ना	18227	5 73
अरहर	10982	3 45
मक्का	6242	1 95
मटर	2767	0 87
आलू	2221	0 69
सरसो	2080	0 65
जौ	1537	0 48
मसूर	1326	0 41
चना	797	0 25
बाजरा	542	0 17
मूँग	419	0 13
ज्वार	133	0 04

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया– 2001 पृष्ठ– 42–56

सुविधा की कमी इस फसल को निरुत्साहित करती है। कुछ नगरीय क्षेत्रो के आस–पास सब्जियो का उत्पादन होता है।

आलू की कृषि–अध्ययन क्षेत्र मे सकल कृषित क्षेत्र के 0 69 प्रतिशत भाग (2221 हे) पर आलू की कृषि की जाती है इसके अतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र क्रमश *रुद्रपुर, भलुअनी भटनी, गौरीबाजार सलेमपुर* विकासखण्डो मे पाया जाता है।

(ख) फसल प्रतिरूप मे परिवर्तन

सारणी (5 10) मे 1971–72 तथा 2001 का फसल प्रतिरूप परिवर्तन प्रदर्शित किया गया है। इसे आरेख स (5 5) मे भी प्रस्तुत किया गया है। सारणी एव आरेख से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के फसल प्रतिरूप में विगत तीस वर्षो मे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस परिवर्तन के प्रमुख कारणो मे शुद्ध बोए गये क्षेत्र मे विस्तार सिचाई सुविधाओ मे वृद्धि तथा अन्य कृषि निष्टियो (सहायक एव उत्प्रेरक तत्वो) एव विधियो के विकास तथा कृषको द्वारा उन्हे अपनाया जाना शामिल है। सारणी से स्पष्ट है कि 1971–72 मे जहाँ खरीफ सर्वप्रमुख फसल थी और इसमे धान

चित्ररेख (5 5)

जनपद देवरिया
फसल प्रतिरूप परिवर्तन– 1971–2001
(Changing of cropping pattern in Deoria District- 1971-2001)
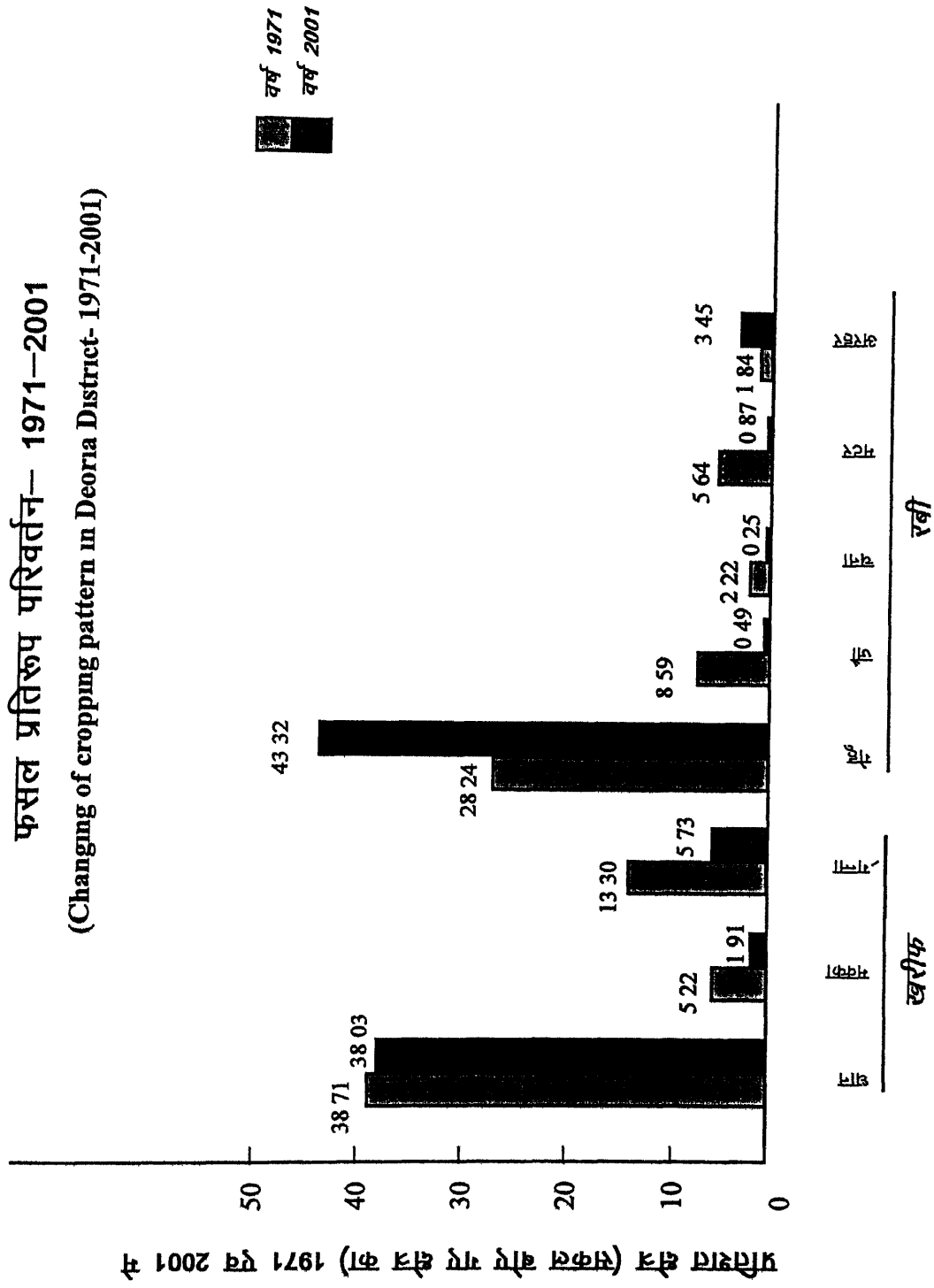
एव गन्ना की सर्वप्रथम भूमिका थी वही 2001 मे सम्पूर्ण खरीफ फसलो के प्रतिशत क्षेत्र मे गिरावट हुयी। परन्तु धान के अतर्गत प्रतिशत क्षेत्र लगभग समान बना रहा। इससे एक बात और स्पष्ट होती है कि 1971–72 मे जहाँ धान प्रमुख फसल थी और यह सकल कृषित क्षेत्र के 38 71 प्रतिशत भाग पर बोयी जाती थी तथा गेहूँ का प्रतिशत क्षेत्र 28 24 था वही 2001 मे ये स्वरूप उलट गया और गेहूँ प्रमुख फसल हो गयी। इस वर्ष गेहूँ सकल कृषित क्षेत्र के 43 32 प्रतिशत भाग पर बोयी गयी। सर्वाधिक परिवर्तन भी गेहूँ के फसल क्षेत्र मे ही हुआ। खरीफ के अतर्गत गन्ना का प्रतिशत क्षेत्र कम हुआ है। जिसका प्रमुख कारण मिलो का बीमार होना और गन्ने के पैसे का किसानो को समय से भुगतान न हो पाना है। 1971–72 मे जायद फसल के अतर्गत कोई क्षेत्र नही था पर 2001 मे जायद के अतर्गत सकल कृषित क्षेत्र का 1 81 प्रतिशत क्षेत्र समाहित हो गया जिसे सारणी (5 8) मे देखा जा सकता है। सारणी (5 10) से एक बात और स्पष्ट होती है कि 1971–72 से 2001 तक के कृषि विकास कालावधि मे फसल प्रतिरूप *विविधीकरण* से *विशेषीकरण* की ओर उन्मुख हुआ है। 1971–72 मे जहाँ सभी फसल कमोबेस मात्रा मे बोए जाते थे वही 2001 मे उनके क्षेत्र *धान* एव *गेहूँ* की फसल के अतर्गत समाहित हो गये।

सारणी 5 10

जनपद मे फसल प्रतिरूप मे परिवर्तन (1971 एव 2001)

फसल	सकल बोये गए क्षेत्र का प्रतिशत 1971–72	सकल बोये गए क्षेत्र का प्रतिशत 2001–00	परिवर्तन
खरीफ	***53 50***	***50 46***	***– 3 04***
धान	38 71	38 03	– 0 68
मक्का	5 22	1 91	– 3 31
ज्वार	0 08	0 04	– 0 04
बाजरा	0 30	0 17	– 0 13
गन्ना	13 30	5 73	– 7 57
रबी	***46 49***	***47 55***	***+ 1 06***
गेहूँ	28 24	43 32	+ 15 08
जौ	8 59	0 48	– 8 11
चना	2 22	0 25	– 1 97
मटर	5 64	0 87	– 4 77
अरहर	1 84	3 45	+ 1 61
मसूर	0 74	0 41	– 0 33

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका, जनपद देवरिया– 2001 एव जिला गजेटियर जनपद देवरिया, 1988 से सगणित।
क्रमश पृ– 45 से 56 एव गजेटियर पृ0 87 91

(ग) उत्पादकता

कृषि विकास के उत्प्रेरक एव सहायक तत्वो का सीधा प्रभाव उत्पादकता पर परिलक्षित होता है। अत उत्पादकता में परिवर्तन को ज्ञात कर हम सेवाकेन्द्रो पर स्थापित सहायक तत्वो के

कृषि विकास पर पडने वाले प्रभाव का आकलन कर सकते है। उत्पादकता कृषि क्षमता का मापक है। इसके आकलन का प्राथमिक सम्बन्ध इकाई क्षेत्र मे प्रति हे उत्पादन से है जो सभी भौतिक एव मानवीय कारको के सम्बन्धो एव अत सम्बन्धो की देन है। *प्रो० स्टैम्प* [11] के अनुसार किसी इकाई क्षेत्र की कृषि उत्पादकता जलवायु एव अन्य प्राकृतिक अनुकूलित तत्वो तथा कृषि सक्षमता की देन है। *प्रो शफी* [12] ने कृषि उत्पादकता को किसी विशिष्ट इकाई क्षेत्र की कृषि क्षमता का ही मापक के रूप मे बताया है। किसी भी क्षेत्र की कृषि उत्पादकता उस क्षेत्र विशेष की कृषि सक्रियता कृषि गहनता और कृषि कुशलता पर निर्भर करती है। यदि इनमे कमी आती है तो उत्पादकता कम हो जाती है। इस प्रकार कृषि उत्पादकता इकाई क्षेत्र के प्रति हेक्टेयर उत्पादन से सम्बन्धित है जिसमे *भौतिक मानवीय आर्थिक सास्कृतिक तकनीकी* और *सस्थागत* कारको का योग रहता है।

सारणी 5 11 मे प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के उत्पादकता परिवर्तन को देखने से स्पष्ट होता है कि विगत 30 वर्षो मे कृषि उत्पादकता मे भारी वृद्धि हुयी है। इन वर्षों मे कुछ विशेष फसलो मे सर्वाधिक वृद्धि हुयी जैसे– *मक्का* मे 1561 प्रतिशत *ज्वार* मे 718 *बाजरा* मे 380 प्रतिशत। अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख फसलो जैसे *धान गेहूँ* एव *गन्ना* मे ये वृद्धि अपेक्षाकृत कम हुयी। ये वृद्धि मक्का ज्वार एव बाजरा की तुलना मे क्रमश 267 प्रतिशत, 169 प्रतिशत एव 44 7 प्रतिशत रही। परन्तु इनके अन्तर्गत क्षेत्र मे वृद्धि के कारण उत्पादन मे भारी बढोत्तरी हुयी। आरेख (5 6) के माध्यम से उत्पादकता पर कृषि निष्टियो के प्रभाव को स्पष्ट किया गया है।

सारणी 5 11

विभिन्न फसलो का उत्पादकता परिवर्तन (कुन्तल/हे)

फसल	विभिन्न फसलो का उत्पादकता (कुन्त /हे)		परिवर्तन		
	1971–72	2001			
गेहूँ	10 80	29 05	18 25	168 98	%
जौ	7 65	22 69	15 04	196 60	%
चना	7 14	13 53	6 39	89 49	%
मटर	6 31	14 18	7 87	124 7	%
मसूर	5 62	8 88	3 26	58 0	%
अरहर	6 58	9 04	2 46	37 3	%
धान	6 83	25 08	18 25	267 2	%
मक्का	0 88	14 62	13 74	1561 3	%
ज्वार	1 78	14 56	12 78	717 9	%
बाजरा	4 00	19 22	15 22	380 5	%
उड़द	3 45	5 00	1 55	44 9	%
मूँग	1 92	5 00	3 08	160 4	%
गन्ना	325 75	471 58	145 83	44 76	%

स्रोत– गजेटियर, देवरिया जनपद 1988 पृष्ठ–90 एव सामाजार्थिक समीक्षा, जनपद देवरिया–2000–2001 पृष्ठ– 19–20, गन्ना के लिए– साख्यिकी पत्रिका 2001– पृ 28

जनपद देवरिया
विभिन्न फसलो की उत्पादकता– 1971–2001
(Productivity of different crops, in Deoria District- 1971-2001)
फसलो की उत्पादकता (कुन्तल/हेक्टेयर)
500
400
300
200
30
20
10
0
वर्ष 1971
वर्ष 2001
10 80
29 05
7 65
22 69
7 14
13-53
6 31
14 18
5 62
8 88
6 58
9 04
6 83
25 08
0 88
14 62
1 78
14 56
4 00
19 22
3 43
5 00
1 92
5 00
325 75
471 58
गेहूं
जौ
चना
मटर
मसूर
अरहर
धान
मक्का
ज्वार
बाजरा
उड़द
मूंग
गन्ना
विभिन्न फसले
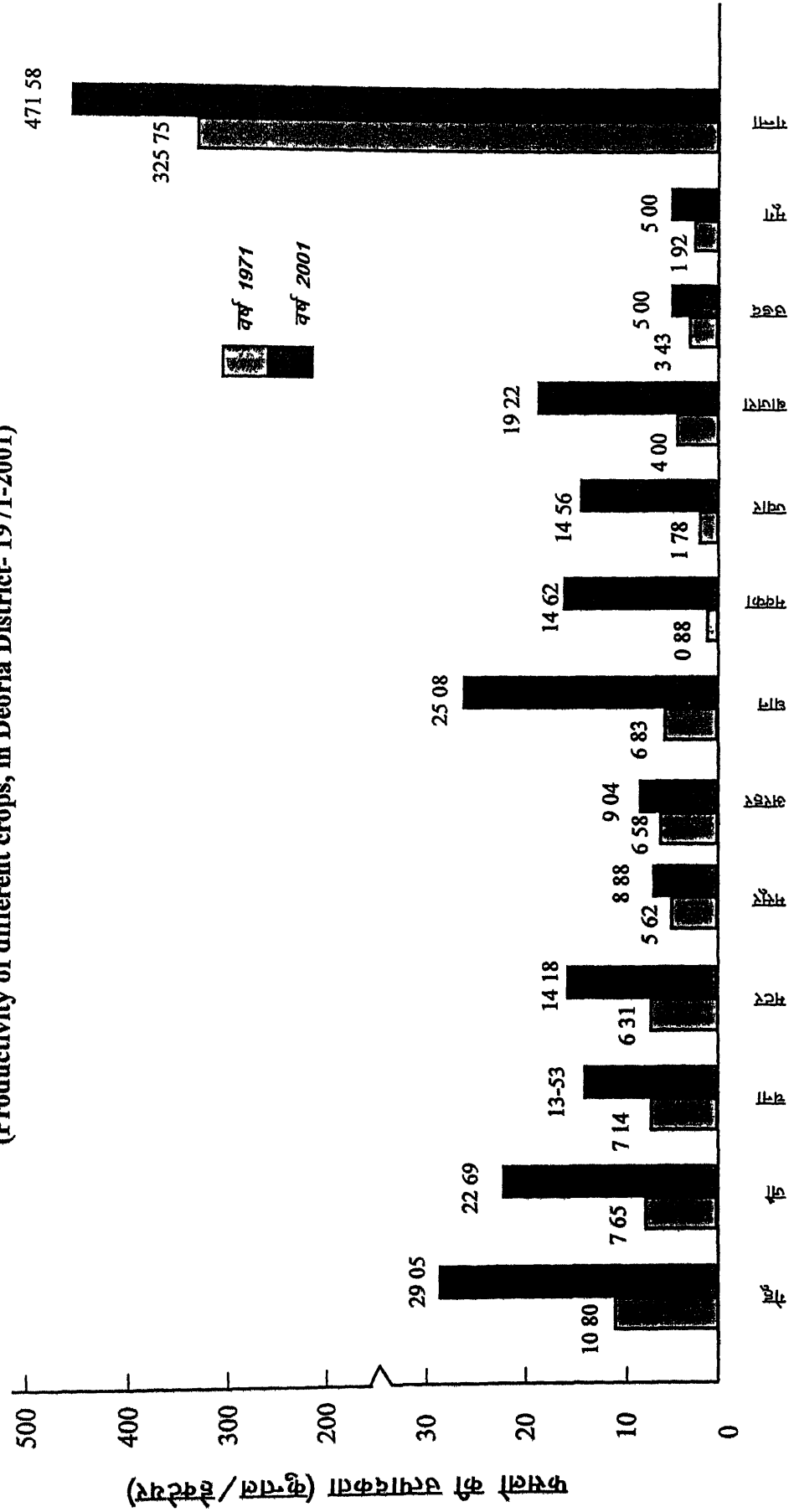
(घ) शस्य–गहनता

शस्य गहनता से अभिप्राय कृषि क्षेत्र मे फसलो की आवृत्ति से है अर्थात् एक निश्चित कृषि क्षेत्र पर एक फसल वर्ष मे कितनी बार फसले उत्पन्न की जाती हैं अर्थात् फसलो की आवृत्ति उस क्षेत्र विशेष की गहनता कहलाती है। यह एक प्रकार से किसी भू–भाग मे शुद्ध बोये गये क्षेत्र तथा सफल कृषित क्षेत्र का आनुपातिक सम्बन्ध है। किसी प्रदेश मे शुद्ध बोये गये क्षेत्र की अपेक्षा सकल कृषित क्षेत्र का अधिक होना गहन शस्य–क्रम का परिचायक है। यह (शस्यक्रम गहनता) वह सामयिक बिन्दु है जहॉ भूमि श्रम पूँजी प्रभुत्व तथा प्रबन्धन का सम्मिश्रण सर्वाधिक लाभप्रद होता है।[13] इस प्रकार शस्य–क्रम गहनता प्राकृतिक दशाओ सामाजिक–आर्थिक एव सस्थागत तथ्यो से प्रभावित होता है। इस आधार पर हम शस्य–क्रम गहनता के आकलन से 1971–72 से 2001 के मध्य कृषि विकास के स्वरूप को समझ सकते है। प्रस्तुत अध्ययन मे शस्य गहनता सूचकाको की गणना निम्न सूत्र के माध्यम से की गयी है–

$$\text{शस्य गहनता सूचकाक} = \frac{\text{सकल कृषित क्षेत्र}}{\text{शुद्ध कृषित क्षेत्र}} \times 100$$

सारणी 5 12

शस्य गहनता सूचकाक (2001)

क्रम सख्या	प्रखण्ड विकास खण्ड	शस्य गहनता
1	भागलपुर	181 8
2	देवरिया	168 5
3	देसही देवरिया	168 0
4	पथरदेवा	165 7
5	गौरीबाजार	161 8
6	बैतालपुर	159 7
7	भलुअनी	155 8
8	लार	154 1
9	बनकटा	150 5
10	रुद्रपुर	150 1
11	भाटपाररानी	149 1
12	भटनी	148 7
13	बरहज	144 9
14	सलेमपुर	144 6
15	रामपुर कारखाना	123 7
	योग जनपद	155 63

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ 165

1971–72 मे अध्ययन क्षेत्र मे शस्य गहनता 116 98 थी। उस समय एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र शुद्ध कृषित क्षेत्र का 31% था। इसके अतर्गत केवल वही क्षेत्र शामिल थे जिनपर गन्ना अरहर और धान की फसले बोयी गयी थी।[14]

2001 मे अध्ययन क्षेत्र मे शस्य गहनता बढकर 155 63 हो गयी। इस समय एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का शुद्ध क्षेत्र से प्रतिशत 55 63 था। इस समय कृषि की प्रवृत्ति मे सबसे बडा अतर ये आया कि जहॉ 1971–72 मे एक बार से अधिक बोए गए फसल क्षेत्र मे केवल गन्ना और अरहर ही शामिल थी वही अब जायद फसल के अतर्गत क्षेत्र विस्तार हुआ तथा गन्ना अरहर के अलावे सब्जी मक्का मूँग आदि फसलो सहित सरसो लाही फसले भी उगाही जाने लगी। 2001 मे सर्वाधिक शस्य गहनता भागलपुर मे तथा न्यूनतम शस्य गहनता *रामपुर कारखाना* मे पायी जाती है। जनपद के सभी विकासखण्डो मे फसल गहनता को सारणी 5 12 के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

(ड) शस्य–विविधता

शस्य विविधता से आशय एक समय विशेष मे किसी क्षेत्र मे बोयी जाने वाली फसल सख्या से है। इससे विभिन्न फसलो के मध्य तीव्र प्रतिस्पर्धा का पता चलता है। यह प्रतिस्पर्धा जितनी तीव्र होती है शस्य विविधता का परिणाम उतना ही अधिक होता है इसके विपरीत अल्प प्रतिस्पर्धा से विशेषीकरण को प्रोत्साहन मिलता है। *शस्य विशेषीकरण* आज स्थिर कृषि एव आधुनिक कृषि पद्धति की प्रमुख विशेषता है जिसके प्रोत्साहन मे सिचाई उर्वरको उन्नतशील बीजो कीटनाशको और कृषि के आधुनिक यन्त्रो के प्रयोग आदि का विशेष योगदान है। इसके विपरीत मौसम की अनिश्चितता तथा पारम्परिक कृषि व्यवस्था से शस्य विविधता मे सदैव वृद्धि देखी जाती रही है। वास्तव मे भौतिक–सामाजिक एव आर्थिक दशाओ से प्रेरित होकर कृषक कृषि प्रतिरूप मे विविधता को अपनाता है। यही कारण है कि किसी क्षेत्र मे शस्य प्रतिरूप के अध्ययन मे शस्य विविधता की जानकारी विभिन्न प्रकार से सहायक होती है।

शस्य विविधता के आकलन के लिए *भाटिया (1965)* महोदय ने निम्न सूत्र बताया है–

$$\text{शस्य विविधता सूचकाक} = \frac{\text{फसलो के अतर्गत बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत}}{\text{फसलो की सख्या}}$$

उपर्युक्त सूत्र के प्रयोग द्वारा अध्ययन क्षेत्र मे 1971–72 एव 2001 के शस्य विविधता क्रम की गणना करने पर स्पष्ट होता है कि 1971–72 मे जहॉ अध्ययन क्षेत्र मे शस्य विविधता उच्च थी, वही 2001 मे ये कम हुयी, अर्थात 1971–72 से 2001 की कालावधि मे कृषि प्रतिरूप शस्य विविधता से विशेषीकरण की ओर प्रवृत्त हुआ है। 1971–72 मे किसान एक ही खेत मे एक से अधिक फसलों को बोते थे। इसके पीछे प्रमुख कारण था प्रतिकूल मौसम मे भी उत्पादन प्राप्त

करना तथा कीटो और बिमारियो से बचाव। उस समय अरहर के साथ ज्वार उडद तिल मूँगफली बोयी जाती थी बाजरा के साथ उडद अरहर या मूगफली चना और गेहूँ, मटर और सरसो जौ और चना या मटर मक्का और उडद मूँगफली और ज्वार सामान्यत एक साथ बोये जाते थे। आलू के साथ प्याज एव मेथी तथा गन्ना के साथ मूँग बोया जाता था।

वर्तमान समय मे यद्यपि अध्ययन क्षेत्र मे फसल प्रतिरूप मे विशेषीकरण की प्रवृत्ति मिलती है परन्तु क्षेत्रीय स्तर पर ये उन्ही जगहो पर दृष्टिगोचर होती हैं जहाँ धरातल समतल है मृदा उर्वर है सिचाई के उत्तम साधन है तथा परिवहन एव बाजार की सुगमता है। जहाँ सिचाई के साधन उपलब्ध नही है साथ ही भौगोलिक स्थितियाँ अनुकूल नही है वहाँ फसल विविधता का स्तर मध्य एव उच्च काटि का है।

(च) शस्य–सयोजन

कृषि भूमि उपयोग सम्बन्धी अध्ययन मे शस्य सयोजन सम्बन्धी अध्ययन कृषि प्रादेशीकरण हेतु अपरिहार्य एव आवश्यक है। इसके अन्तर्गत क्षेत्र विशेष मे उत्पन्न की जाने वाली फसलो का अध्ययन होता है। किसी इकाई क्षेत्र मे एक प्रमुख फसल के साथ अनेक गौण फसले भी पैदा की जाती है। प्राय कृषक खाद्यान्न दलहन तिलहन मुद्रादायिनी एव सब्जी आदि फसलो की खेती करते है। इस प्रकार किसी इकाई क्षेत्र मे उत्पन्न की जाने वाली प्रमुख फसलो के समूह को *शस्य सयोजन* कहते है। इसकी सहायता से फसलो के प्रतिरूप तथा कृषि की क्षेत्रीय विशेषताओ को सुगमता पूर्वक पहचाना जा सकता है साथ ही कृषि की प्रकृति पद्धति एव उनकी विशेषताओ के आधार पर कृषि प्रादेशिकरण हेतु उपागम प्राप्त किया जा सकता है जिसके आधार पर वर्तमान कृषि समस्याओ के निराकरण हेतु समुचित सुझाव दिए जा सकते हैं।[15] शस्य सयोजन प्रदेशो का निर्धारण उन फसलों के स्थानिक वर्चस्व के आधार पर किया जाता है जिनमे क्षेत्रीय सहसम्बन्ध पाया जाता है एव जो साथ–साथ विभिन्न रूपो मे उगायी जाती है।[16] किसी भी क्षेत्र के शस्य सयोजन का स्वरूप मुख्यत उस क्षेत्र विशेष के भौतिक (धरातलीय स्वरूप जलवायु जलप्रवाह ढाल एव मृदा) तथा सास्कृतिक (आर्थिक सामाजिक एव सस्थागत) वातावरण की देन होता है। इस प्रकार किसी भी प्रदेश का शस्य सयोजन मानव की क्रियाशीलता तथा भातिक वातावरण के सम्बन्धो को प्रदर्शित करता है।[17]

फसल सयोजन तथा फसल सयोजन प्रदेश के निर्धारण हेतु अनेक विद्वानो ने अनेक साखियकीय विधियो को प्रस्तुत किया है। इनमे *जानसन*[18] *थामस,*[19] *वीवर,*[20] तथा *अय्यर*[21] द्वारा निर्धारित साख्यिकीय विधियाँ महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त औद्योगिक सरचना के विश्लेषण मे *दोई*[22] द्वारा अपनायी गयी विधि काफी महत्वपूर्ण है। इनमे *वीवर* तथा *दोई* द्वारा अपनायी गयी साख्यिकीय विधियाँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं तथा कुछ सुधारो के साथ अनेक विद्वानो द्वारा अपनायी जा रही हैं। प्रस्तुत अध्ययन में *दोई* की विधि के आधार पर जनपद स्तर पर एव प्रखण्ड

स्तर पर शस्य सयोजन का निर्धारण किया गया है।

दोई ने भी *वीवर* की भॉति यह माना है कि कृषित भूमि सभी फसलो मे समान रूप से वितरित है। सैद्धान्तिक एव वास्तविक प्रतिशतो का अतर भी उसी तरह ज्ञात किया जाता है। इन दोनो प्रविधियो मे अतर सिर्फ इतना है कि *वीवर* के *प्रसरण सूत्र* $\Sigma d^2/N$ के स्थान पर *दोई* महोदय ने अतरो के वर्ग अर्थात Σd^2 को ही शस्य सयोजन का आधार माना है।

दोई के उपरोक्त सूत्र के आधार पर सर्वप्रथम 1971–72 एव 2001 मे जनपद स्तर पर शस्य सयोजन ज्ञात किया गया है ताकि इन तीस वर्षों मे शस्य सयोजन पर कृषि विकास के उत्प्रेरक तत्वो के प्रभाव को स्पष्ट किया जा सके। इस क्रम मे 1971–72 एव 2001 मे फसल प्रतिरूप सारणी– 5 13 मे प्रस्तुत है।

सारणी– 5 13

फसल प्रतिरूप (1971–72——2001)

फसल	1971–72	फसल	2001
धान	38 71	गेहूँ	43 32
गेहूँ	28 24	धान	38 03
गन्ना	13 30	गन्ना	5 73
जौ	8 59	अरहर	3 45
मटर	5 64	मक्का	1 95
मक्का	5 22	मटर	0 87
चना	2 22	आलू	0 69
अरहर	1 84	सरसो	0 65
मसूर	0 74	जौ	0 48
बाजार	0 30	मसूर	0 41
ज्वार	0 08	चना	0 25
		बाजरा	0 17
		मूँग	0 13
		ज्वार	0 04

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका देवरिया–2001 एव गजेटियर जनपद देवरिया– 1988 से सगणित

शस्य सयोजन परिकलन– 1971–72

एक फसल = $(100-39)^2$ = **3721**

दो फसल = $(50-39)^2 + (50-28)^2$ = **605**

* तीन फसल = $(33\ 3-39)^2 + (33\ 3-28)^2 + (33\ 3-13)^2$ = **472 67**

चार फसल = $(25-39)^2 + (25-28)^2 + (25-13)^2 + (25-9)^2$ = **605**

पॉच फसल = $(20-39)^2 + (20-28)^2 + (20-13)^2\ (20-9)^2 + (20-6)^2$ = **814**

इस प्रकार 1971–72 मे तीन फसलो का शस्य सयोजन–*धान गेहूँ, गन्ना* (RWS) प्राप्त हुआ।

शस्य सयोजन परिकलन– 2000–2001

एक फसल = $(100-43)^2$ = *3249*

* दो फसल = $(50-43)^2 + (50-38)^2$ = **193**

तीन फसल = $(33\ 3-43)^2 + (33\ 3-38)^2 + (33\ 3-6)^2$ = **861**

चार फसल = $(25-43)^2 + (25-38)^2 + (25-6)^2 + (25-3)^2$ = **1338**

पॉच फसल = $(20-43)^2 + (20-38)^2 + (20-6)^2 + (20-3)^2 + (20-2)^2$ = **1662**

वर्ष 2001 मे उपर्युक्त परिकलन द्वारा दो फसलो का शस्य सयोजन प्रापत हुआ। ये है *गेहूँ धान* (WR)

उपर्युक्त दोनो समय के शस्य सयोजन परिणामो की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि 1971–72 मे जहॉ *चावल* सर्वप्रमुख फसल थी वही *गेहूँ* और *गन्ना* का प्रतिशत भी अधिक था। पूरे क्षेत्र मे तीनो ही फसलो का साहचर्य था। 2001 तक आते आते ये साहचर्य परिवर्तित होकर मात्र *गेहूँ* और *धान* का (दोफसली) रह गया। ये कृषि विशिष्टीकरण की ओर सकेत करता है। चूँकि दोनो वर्षो मे धान का प्रतिशत क्षेत्र अपरिवर्तित रहा है और *गेहूँ* का प्रतिशत क्षेत्र बढा है अत स्पष्ट है कि पहले जहॉ खरीफ फसल केवल मानसून पर निर्भर थी धीरे–धीरे सिचाई साधनो तथा अन्य सहयोगी तत्वो के विकास के कारण रबी का प्रतिशत क्षेत्र बढा। इसी कारण *गेहूँ* 2001 मे सर्वप्रमुख फसल हो गयी। *गन्ना* प्रारम्भ मे तीसरी प्रमुख फसल थी, परन्तु चीनी मिलो की जर्जर स्थितियो मूल्य भुगतान मे अनियमितता एव अनिश्चिता आदि का प्रभाव गन्ना के कृषि प्रतिरूप पर पडा है। इन्ही कारणो से गन्ना के लिए कृषि क्षेत्र के अनुकूल भौतिक दशाओ सिचाई साधनो के पर्याप्त विकास एव स्वय एक नकदी फसल होने के बावजूद न सिर्फ इसका कृषि प्रतिशत क्षेत्र घटा है बल्कि 2001 के शस्य साहचर्य से भी ये गायब हो गया है।

दोई की उपर्युक्त साख्यिकी विधि का उपयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक विकास खण्ड के फसल प्रतिरूप एव शस्य साहचर्य का परिकलन किया गया है जो सारणी (5 14) मे प्रस्तुत है।

उपरर्युक्त परिकलन मे उन्ही फसलो को सम्मिलित किया गया है जिनका विकासखण्ड स्तर पर सकल कृषि क्षेत्र से प्रतिशत न्यूनतम 2 तक है। इससे नीचे के अक क्रम वाले फसलो को छोड दिया गया है। विकासखण्ड के कृषि प्रतिरूप के आधार पर विभिन्न विकास खण्डो के शस्य *साहचर्य* को *दोई* की साख्यिकी प्रविधि का उपयोग करते हुए ज्ञात किया गया है। इससे जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे हैं– ***तीन फसली साहचर्य*** वर्तमान में केवल *देसही देवरिया* और *रामपुर*

सारणी 5 14

विकास खण्डवार शस्य प्रतिरूप एव शस्य सयोजन (2000–01)

विकास खण्ड	1		2		3		4		5		6		शस्य सयोजन	
1 गौरीबाजार	चा	43	गे	42	ग	8	अ	2		-	-	-	चा गे	[RW]
2 बैतालपुर	गे	44	चा	35	ग	9	मूँ	4	अ	3	-	-	गे चा	[WR]
3 देसही देवरिया	गे	42	चा	40	ग	12	—	-		-	-	-	गे चा ग	[WRS]
4 पथरदेवा	चा	43	गे	39	ग	10	—	-		-	-	-	चा गे	[RW]
5 रामपुर कारखाना	गे	49	चा	34	ग	10	म	4		-	-	-	गे चा ग	[WRS]
6 देवरिया सदर	गे	45	चा	40	ग	4	अ	2	मूँग	2	-	-	गे चा	[WR]
7 रुद्रपुर	गे	43	चा	38	अ	6	म	4	मसूर	3	जौ	2	गे चा	[WR]
8 भलुअनी	गे	49	चा	43	ग	4	अ	4		-	-	-	गे चा	[WR]
9 बरहज	गे	40	चा	35	अ	6	ग	3	म	2	-	-	गे चा	[WR]
10 भटनी	गे	43	चा	35	म	6	ग	5	अ	5	-	-	गे चा	[WR]
11 भाटपाररानी	गे	43	चा	36	ग	6	म	6	अ	5	-	-	गे चा	[WR]
12 बनकटा	गे	40	चा	31	ग	9	अ	3	—	-	-	-	गे चा	[WR]
13 सलेमपुर	गे	46	चा	36	अ	5	ग	3	मट	2	-	-	गे चा	[WR]
14 भागलपुर	गे	40	चा	30	अ	3	—	-	—	-	-	-	गे चा	[WR]
15 लार	गे	43	चा	33	अ	7	ग	2	म	2	-	-	गे चा	[WR]

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 42–54 से सगणित

सकेत– *चा – चावल अ – अरहर मसू – मसूर*

गे – गेहूँ जौ – जौ मट – मटर

ग – गन्ना म – मक्का मूँ – मूँगफली

BLOCK WISE CROP-COMBINATION PATTERN IN DEORIA DISTRICT
2000-01
N
INDEX
WHEAT RICE
RICE WHEAT
WHEAT RICE SUGERCANE
FIG 57
6 0 6 KM
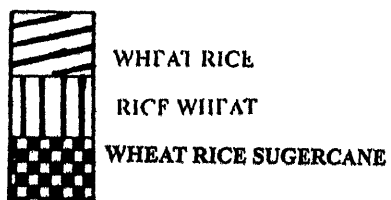
कारखाना मे ही पाया जाता है। बाकी सभी विकासखण्डो मे ***दो फसली साहचर्य*** है। इसमे *गौरी बाजार* और *पथरदेवा* मे ये साहचर्य चावल और गेहूँ के रूप मे है तथा शेष सभी मे गेहूँ की प्रधानता के साथ चावल के साथ। उपर्युक्त आधार पर *शस्य सयोजन प्रदेश* चित्र (5 6) मे प्रदर्शित है।

(छ) फसल—चक्र

फसल चक्र से आशय फसलो का एक वर्ष दो वर्ष या तीन वर्ष मे किसी क्षेत्र मे क्रम बदलने से है। इससे उत्पादकता और उत्पादन के साथ—साथ मृदा उर्वरता का सकारात्मक सम्बन्ध होता है। किसी भी क्षेत्र का सम्बन्ध मूलत कृषक की पारम्परिकता अनुभव ज्ञान वैज्ञानिकता एव कृषि—जलवायु बोध द्वारा एव आर्थिक—सामाजिक स्तर द्वारा निर्धारित होता है और गौणत क्षेत्र की भौतिक दशा द्वारा नियत्रित होता है। अत विभिन्न कालो—1971—72 एव 2001 मे क्षेत्र के फसल चक्र के अध्ययन एव विश्लेषण द्वारा कृषि के प्रति किसानो की जागरूकता वैज्ञानिकता व्यावसायिकता एव कृषि बोध को जाना जा सकता है। इससे कृषि क्षेत्र मे हुए उनके अनुभव एव विकास के साथ कृषि—सहायक तत्वो का पश्चप्रभाव भी ज्ञात हो जाएगा जो क्षेत्र विकास के नियोजन मे प्रभावी भूमिका निभाएगा।

1971—72 मे अध्ययन क्षेत्र मे फसल चक्र के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किसान अपने खेतो मे चक्रण के रूप मे विभिन्न फसलो को उगाते थे। इसके पीछे उनकी दृष्टि वैज्ञानिक नही थी बल्कि परपरा और अनुभवाधारित थी। उस समय क्षेत्र के विभिन्न भागो मे ये चक्र मृदा प्रकार और सिचाई सुविधा से नियत्रित था। उस समय मूलत *धान, गेहूँ एव गन्ना* ही बोयी जाती थी। इस समय सामान्य रूप से रबी और खरीफ का चक्र निम्न रूप मे था—

सारणी— 5 15

फसल चक्र— 1971—72

खरीफ	रबी	वर्ष क्रम
अगाती धान या मक्का	आलू/गेहूँ	एक वर्षीय
मक्का	आलू/गेहूँ/टमाटर	एक वर्षीय
भिण्डी	गेहूँ/सरसो/मटर	एक वर्षीय
पटुआ	गेहूँ / चना / जौ	एक वर्षीय
भिण्डी / तरोई	गेहूँ / जौ	एक वर्षीय

***स्रोत** – Uttar Pradesh District Gazetteers, Deoria- 1988, P-95*

वर्तमान समय में क्षेत्र के अधिकाश कृषक परपरा के आधार पर नही बल्कि वैज्ञानिकता एव लाभ को ध्यान मे रखकर फसल चक्र को अपना रहे हैं। वैसे यह प्रवृत्ति अभी भी शिक्षित और जागरूक किसानो मे ही पायी जाती है। फिर भी कृषि मे विशिष्टीकरण के प्रभाव के कारण ये फसल चक्र कुछ सीमित फसलो तक ही सिमट कर रह गया है। वर्तमान मे निम्न फसल चक्र पाये

जाते है यद्यपि इनमे क्षेत्रीय भिन्नता द्रष्टव्य है जो सिचाई सुविधाओ के विकास तथा मृदा की प्रकृति द्वारा नियत्रित होते है–

सारणी– 5 16

जनपद में फसल चक्र– 2001

क्रम	फसल चक्र	वर्ष क्रम
1	धान–गेहूँ	एक वर्षीय
2	मक्का–आलू	एक वर्षीय
3	मक्का–तोरिया–गेहूँ	एक वर्षीय
4	धान–गेहूँ–गन्ना	दो वर्षीय
5	धान–मक्का (रबी) उडद/मूँग	एक वर्षीय
6	धान–मटर	एक वर्षीय
7	धान–जौ	एक वर्षीय
8	मक्का–राई	एक वर्षीय
9	मक्का–आलू	एक वर्षीय
10	धान–गेहूँ–हरी खाद (ढैचा/सनई)	एक वर्षीय
11	धान–गेहूँ–उड़द/मूँग	एक वर्षीय

स्रोत– खरीफ फसलो की सघन पद्धतियाँ– 2001 कृषि विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ पृ 132

(ज) पशुपालन

पशुपालन का विकास विविधीकृत कृषि अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अग होता है। पशुधन की सख्या का प्रभाव न सिर्फ फसल के कुल उत्पादन पर पडता है, अपितु मृदा सरचना एव उर्वरता भी इससे अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। पशुधन की विभिन्न नस्लो मे चौपाए ही अधिक प्रमुख है। केवल इसलिए नही कि इनकी सख्या अधिक है बल्कि इसलिए भी कि ये पशु कृषि कार्यों और किसान की सम्पन्नता मे अधिक सहयोग देते है। कृषि के लगभग सभी कार्यो यथा– खेत जोतना, खाद लादना पानी प्राप्त करना, फसल मडाई और यातायात आदि मे पशुशक्ति प्रमुख भूमिका निभाते है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र मे यत्रीकरण के फलस्वरूप अब इनका महत्व निरन्तर कम हुआ है। मॉस खाल ऊन बाल और मुर्गीपालन को छोडकर पशुधन के अन्य सभी कामो मे चौपायो का महत्वपूर्ण स्थान है। पशुओ के गोबर से बने कम्पोस्ट खाद मे मृदा के मूल पोषक तत्वो (फास्फोरस पोटाश, नाइट्रोजन) के साथ सभी सूक्ष्म तत्व भी एक आदर्श अनुपात मे पाए जाते हैं। जो रासायनिक उर्वरक (डीएपी) मे नही पाए जाते हैं। इस दृष्टि से पशुओ का गोबर कृषि क्षेत्र की खाद की महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करता है। अध्ययन क्षेत्र मे ईधन के अन्य साधन न होने के कारण उपलब्ध गोबर का दो–तिहाई भाग ईंधन के रूप मे जला दिया जाता है। पशुओं से कृषि कार्य मे सहयोग के साथ ही साथ दूध की भी प्राप्ति होती है।

अध्ययन क्षेत्र मे वर्ष 1993 की पशुगणना के अनुसार जिले मे कुल पशुओ की सख्या

7 98 121 थी जिसमे कुल पशु आबादी का गौजातीय—38 4 प्रतिशत महिषवशीय— 17 91 प्रतिशत भेड— 1 62 प्रतिशत बकरा—बकरी— 29 2 प्रतिशत घोडे एव टट्टू— 0 04 प्रतिशत सुअर— 6 36 प्रतिशत एव अन्य पशु— 6 44 प्रतिशत थे। पशुगणना 1993 के अनुसार जनपद मे प्रति 100 हेक्टेयर क्षेत्र पर कुल पशुधन सख्या—316 थी। प्रति 1000 जनसख्या पर पशुधन सख्या—362 प्रति 100 जनसख्या पर दुधारू पशुओ की सख्या 7 एव प्रति 1000 जनसख्या पर कुक्कुटो की सख्या—80 रही है।

वर्ष 1997 की पशुगणना के अनुसार जनपद मे कुल पशुओ की सख्या 6,08 971 है जो वर्ष— 1993 की अपेक्षा काफी कम है। इन चार वर्षो मे सभी प्रकार के पशुओ की सख्या मे भारी कमी हुयी है। सर्वाधिक कमी भेड़ो एव गौजातीय पशुओ की सख्या मे हुयी है। इनमे कमी का प्रतिशत क्रमश 42 68 एव 42 15 है। उसके बाद घोडे एव टट्टू मे 10 2 प्रतिशत तथा महिषवशीय एव बकरा—बकरियो की सख्या मे क्रमश 2 55 एव 2 35 प्रतिशत कमी हुयी है। इसे सारणी— 5 17 मे देखा जा सकता है।

सारणी— 5 17

पशुधन सख्या परिवर्तन— (1993—1997), जनपद देवरिया

मद	पशुप्रजाति	सख्या (1993)	प्रतिशत	सख्या (1997)	प्रतिशत	प्रतिशत कमी (1993—1997)
1	2	3	4	5	6	7
1	गौजातीय	306834	38 4	177474	29 10	42 15
2	महिषवशीय	142877	17 9	139222	22 90	2 55
3	भेड	12973	1 6	7436	1 22	42 68
4	बकरा—बकरियॉ	232874	29 2	227382	37 34	2 35
5	घोडे—टटटू	372	0 04	334	0 05	10 20
6	सुअर	50781	6 36	50769	8 34	0 02
7	अन्य पशु	51410	6 44	6354	1 04	87 64

स्रोत— सामाजार्थिक समीक्षा जनपद देवरिया (200—2001) पृ— 28

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 1993 के पशुगणना के अनुसार वर्ष 1997 की पशुगणना मे दर्शायी गयी प्राय सभी पशुओ की सख्या मे कमी आयी है। इसका प्रमुख कारण पशुओ के महत्व की उपेक्षा करना है। 1993 से 1997 मे मध्य भेड एव गौजातीय पशुओ की सख्या मे भारी कमी के बावजूद 1997 तक गौजातीय पशुओ का महत्व बकरा एव बकरियो के बाद बना हुआ है। अभी भी कुल पशुओ की सख्या मे बकरा—बकरी के बाद गौजातीय (29 प्रतिशत) एव महिषवशीय (23 प्रतिशत) पशुओ की ही सख्या है।

जनपद में पशुधन विकास हेतु वर्ष 2000—2001 के अन्त तक 25 पशु चिकित्सालय, 37

पशुधन विकास केन्द्र 32 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र एव उपकेन्द्र कार्य कर रहे है। इसके अतिरिक्त 8 सुअर विकास केन्द्र 22 17 पिगरी यूनिट तथा 298 पोल्ट्री यूनिट स्थापित है। खराब नस्ल के साढो के स्थान पर उन्नत नस्ल के सॉढो को कम दर पर वितरण कर कृत्रिम गर्भाधान माध्यम की क्रिया से मादा पशुओ को गर्भित कर नस्ल सुधार कार्य को सफल बनाया जा रहा है। पशुओ को उत्तम स्वास्स्य हेतु चारा उत्पादन कार्यक्रम जनपद मे पूरे जोर के साथ चलाया जा रहा है। कुक्कुट विकास कार्यक्रम का जनपद मे एक महत्वपूर्ण स्थान है। वर्ष 1993 मे जहॉ कुल कुक्कुटो की सख्या 178057 थी वही वर्ष 1997 मे कुल सख्या बढकर 283512 हो गयी।

जनपद के आर्थिक समस्या के समाधान मे पशुपालन का एक महत्पूर्ण स्थान है। दूग्ध उत्पादन घी एव खाद उत्पादन मे जनपद के आर्थिक स्थिति को मजबूत करने मे पशुधन का सक्रिय सहयोग रहा है। 31 मार्च 2001 तक जनपद मे 289 दूग्ध उत्पादक सहकारी समितियॉ कार्यरत है।

(झ) मत्स्यपालन

मानव शरीर के पोषण एव विकास के लिए सतुलित आहार की आवश्यकता होती है। विभिन्न खाद्य पदार्थों को उचित मात्रा मे मिलाकर सतुलित आहार की पूर्ति करके शरीर की आवश्यकताओ को पूरा किया जा सकता है। सामान्यतया शरीर को स्वस्थ रखने हेतु विभिन्न पोषक तत्व जैसे– *प्रोटीन वसा कार्बोहाइड्रेट विटामिन खनिज* और *लवण* इत्यादि की आवश्यकता होती है किन्तु स्वस्थ शरीर के निर्माण मे प्रोटीन की अधिक मात्रा मे आवश्यकता होती है क्योकि यह हमारी मॉसपेशियो तन्तुओ तथा शरीर के द्रव्य तत्वो की सरचना करती है और प्रोटीन मुख्य रूप से मछली मॉस, अण्डे, दूध दाल इत्यादि मे प्रचुर मात्रा मे पायी जाती है। मछली के मास मे उच्च कोटि के प्रोटीन के साथ–साथ कार्बोहाइड्रेड खनिज लवण तथा विभिन्न तत्व जैसे– कैल्शियम फास्फोरस, लोहा आदि भी सामान्य रूप से पाया जाता है। इस दृष्टि से मछली एक प्रोटीन युक्त सुपाच्य आहार है। जलीय खेती अर्थात् *'एक्वाक्ल्चर'* एव *'पीसीकल्चर'* को अपनाकर जहॉ एक ओर जनसामान्य को प्रचुर मात्रा मे प्रोटीन युक्त एव सुपाच्य मछली उपलब्ध कराया जा सकता है वही दूसरी ओर ग्रामीण अचल मे उपलब्ध अकृष्य एव जलमग्न भूमि के सदुपयोग के साथ–साथ इसे एक व्यवसाय के रूप मे विकसित करके इस व्यवसाय से जुडे ग्रामीणो को रोजगार का अवसर प्रदान करके उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार लाया जा सकता है। इस जनपद मे मत्स्य पालन कार्यक्रम को बढावा देने तथा मत्स्य पालको को प्रोत्साहित करने के दृष्टिगत वर्ष 1982 से भारत सरकार–राज्य सरकार के समन्वित सहयोग से *मत्स्य पालक विकास अभिकरण* की स्थापना की गयी है। इसके मुख्य उद्देश्य उपलब्ध जल क्षेत्र का विकास तथा मत्स्य पालको का ज्ञानवर्धन कर अधिकाधिक मत्स्य उत्पादन सुनिश्चित करना है।

इस जनपद के ग्रामीण अचल मे तालाब, पोखर के रूप मे ग्राम पचायत के स्वामित्व के

अन्तर्गत विभिन्न आकार के कुल 1835 तालाब (जलक्षेत्र 866 हे) उपलब्ध है जिन्हे शासन द्वारा निर्धारित वरीयता क्रम मे मछुआ समुदाय को पटटे पर आवटित कर इनके विकास यथा—गहरा करने बधो की मरम्मत एव जल आवागमन द्वार के निर्माण व्यावसायिक बैको से ऋण तथा अभिकरण की ओर से रु 18000/— से 22 500/— प्रति हे की दर से अनुदान की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत प्रारम्भ वर्ष 1982 से अब तक कुल 802 तालाबो (जल क्षेत्र 508 406 हेक्टेयर) का सुधार कार्य पूर्ण कराया गया है तथा अभिकरण के सौजन्य से निजी क्षेत्र मे अकृषक भूमि पर कुल 285 तालाब (जलक्षेत्र 161 769 हेक्टेयर) का निर्माण कराया गया है। इसके अतिरिक्त प्रगतिशील मत्स्य पालको द्वारा अपने स्वय ससाधनो से 434 तालाबो (जलक्षेत्र 216 918 हेक्टेयर) का निर्माण कराया गया है। इस प्रकार इस जनपद मे कुल 1521 तालाबो (जल क्षेत्र 887 093 हेक्टेयर) विकसित जलक्षेत्र के रूप मे उपलब्ध हैं जिसमे तकनीकी विधि से मत्स्य पालन कार्य सम्पादित किया जा रहा है।

मत्स्य पालको को गुणवत्तायुक्त मत्स्य बीज उपलबध कराने के दृष्टिगत विभागीय मत्स्य प्रक्षेत्र खुखुन्दू पर मिनी *हैचरी* की स्थापना के साथ—साथ निजी क्षेत्र मे शासकीय सहायता एव स्वय ससाधनो से 4 मिनी हैचारियो की स्थापना की गई है जिससे वर्तमान वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत 130 08 लाख मत्स्य बीज उत्पादित एव वितरित किया जा चुका है।

मत्स्य पालको के तकनीकी ज्ञानवर्द्धन हेतु राजकीय मत्स्य प्रक्षेत्र खुखुन्दू पर निर्मित प्रसार प्रशिक्षण भवन मे 10 दिवसीय अल्पकालिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार इस योजना के सचालन के फलस्वरूप प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष मत्स्य उत्पादन का स्तर 600 किग्रा से बढकर 2800 किग्रा प्रति हेक्टेयर के स्तर पर पहुँच चुका है।

औद्योगिक विकास

5 7 सकल्पनात्मक पृष्ठभूमि

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास मुख्यत औद्योगिक विकास पर ही निर्भर है। इसलिए इसे मानव जाति के विकास की कुजी भी कहा जाता है। सभ्यता के आरम्भ से ही उद्योग मानव का सबसे बडा सहयोगी रहा है। प्रगति के अनेक सोपानो का निमार्ण करते हुए इसने मानव को आदिम गुफाओ से चन्द्रमा तक पहुँचाया। उद्योग मानव जीवन का अभिन्न अग है। मानव प्रयासो के जिन—जिन क्षेत्रो की ओर हम दृष्टि करते हैं हमे औद्योगिक गतिविधियो की अमिट छाप देखने को मिलती है। गत पॉच दशको मे हुई औद्योगिक प्रगति भारतीय आर्थिक विकास की एक महत्वपूर्ण घटना है। इस अवधि मे औद्योगिक उत्पादन मे गुणात्मक, परिमाणात्मक व विविधता की दृष्टि से द्रुत गति से विकास हुआ है तथा औद्योगिक आधार मे काफी विविधता आयी है।[23] साधारणत आर्थिक भूगोल मे *'उद्योग'* शब्द का व्यवहार वस्तु निर्माण के लिए किया जाता है।

शाब्दिक अर्थ मे *'उद्योग'* किसी भी व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध कार्य को कहते है।[24] कच्ची सामग्री को सशोधित और परिवर्द्धित करके परिष्कृत सामग्री तैयार करना *उद्योग* कहलाता है।[25] विनिर्माण प्रक्रिया के अन्तर्गत वे सभी कार्य आते है। जिनके द्वारा मानव कच्चे माल का स्वरूप परिवर्तित करके उसको अधिक उपयोगी बनाता है। ऐसे परिवर्तन कार्य कारखानो मे होते हैं जहॉ अनेक स्थानो से कच्चा माल लाकर एकत्र किया जाता है।[26] *मिलर*[27] तथा *एलेक्जेडर*[28] ने वस्तुओ को अधिक मूल्यवान स्वरूप मे परिवर्तन को ही विनिर्माण उद्योग कहा है। उनके अनुसार विनिर्माण उद्योग का तात्पर्य उन विभिन्न प्रक्रियाओ से है जिनकी सहायता से व्यापार मे बिकने वाली वस्तुओ का निर्माण किया जाता है।

5 8 औद्योगिक स्वरूप

आज के युग मे किसी भी समाज की औद्योगिकरण की स्थिति का सीधा सम्बन्ध उसकी अर्थव्यवस्था से है। वास्तव मे औद्योगिकरण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन गया है। यही नही औद्योगिकरण से कृषि के क्षेत्र मे भी अभिवृद्धि हुई है। अत यह अत्यन्त आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था सुदृढ करने के लिए और विकास स्तर को बढाने के लिए औद्योगिकरण की ओर सरकार द्वारा विशेष ध्यान देने के साथ–साथ प्राथमिकता भी दी जाये।[30] औद्योगिकरण के महत्व को सभी स्वीकारते है किन्तु इसके स्वरूप के बारे मे एक मत नही है। ऐतिहासिक दृष्टि से औद्योगिक स्वरूप तीन अवस्थाओ से गुजरा है। *प्रथम अवस्था* का सम्बन्ध प्राथमिक वस्तुओ से माल तैयार करना है। *द्वितीय अवस्था* का सम्बन्ध कच्चे माल के रूप परिवर्तन से है तथा *तृतीय अवस्था* मे उन मशीनो तथा पूँजी यन्त्रो का निर्माण होता है जो प्रत्यक्ष रूप से किसी तात्कालिक आवश्यकताओ की सन्तुष्टि नही करती वरन् भावी उत्पादन क्रिया को सुविधाजनक बनाती है।

औद्योगिक विकास के *रूसी सरचना* मे सीधे प्रथम अवस्था से द्वितीय अवस्था मे प्रवेश किया गया किन्तु *ब्रिटिश* ढॉचे मे धीरे–धीरे विकास किया गया। इसी प्रकार पिछड़े क्षेत्रो मे अपनी आर्थिक परिस्थितियो के अनुसार औद्योगिकरण के विभिन्न स्वरूप विकसित किए जा सकते हैं। पिछडे क्षेत्रो एव देशो के औद्योगिकरण के स्वरूप मे पूँजी अभाव को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। श्रम की अधिकता को देखते हुए श्रम प्रधान औद्योगिक स्वरूप अधिक उपयुक्त होता है। अत्यन्त पिछडे क्षेत्र को विकसित करने के उद्देश्य से चयनित उद्योग ही लगाना चाहिए जिससे वास्तविक रूप मे क्षेत्र विकास हो सके। राष्ट्रीय स्तर पर आयात–प्रतिस्थापक एव निर्यात सवर्धन उद्योग मे सतुलन स्थापित करना चाहिए। वास्तव मे किसी भी देश या क्षेत्र का औद्योगिक स्वरूप नियोजको के नियोजन व प्राथमिकता तथा ससाधनो पर आश्रित है।

अध्ययन क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। यहॉ पर गिनी–चुनी मात्र कुछ औद्योगिक ईकाइयॉ हैं। ये भी कृषि आधारित उद्योग ही है। चूँकि जनपद सिन्धु–गगा मैदान के जलोढ निक्षेपो तथा *राप्ती, घोटी गण्डक* एव इनकी शाखाओ द्वारा निर्मित कृषि प्रधान मैदानी क्षेत्र है अत यहाँ कृषि प्रधान उद्योग ही विकसित हुए।

किसी भी क्षेत्र का औद्योगिकरण मुख्यत वहॉ प्राप्त प्राकृतिक ससाधनो एव ऊर्जा उपलब्धता पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र प्राकृतिक ससाधन की दृष्टि से निर्धन है परन्तु कृषि क्षेत्र मे समृद्ध है। अत मूलत यहॉ कृषि आधारित उद्योग ही प्रोत्साहित हुए। औद्योगिक पिछडेपन की दृष्टि से शासन द्वारा इस जनपद को सी श्रेणी मे रखा गया है।

5 9 उद्योगो का वर्गीकरण

अध्ययन क्षेत्र मे औद्योगिक इकाइयॉ सीमित है तथा उनमे विविधता का अभाव है। प्राय सभी इकाइयॉ कृषि आधारित उद्योग ही है। अत आकार के अनुसार इन्हे तीन प्रकारो मे विभक्त किया जा सकता है।

(अ) वृहद् उद्योग

(ब) लघु उद्योग

(स) कुटीर एव ग्रामीण उद्योग

(अ) वृहद् उद्योग

इस प्रकार के उद्योगो मे उर्जा चालित मशीनो का प्रयोग होता है तथा श्रमिक व पूॅजी की अधिक आवश्यकता होती है। अध्ययन क्षेत्र मे वृहद् उद्योग के अतर्गत चीनी मिलो एव पेपर मिल को रखा जा सकता है। देश स्तर पर वृहद् उद्योगो के अतर्गत जिन इकाइयो को रखा जाता है उस दृष्टि से इन इकाइयो को *वृहद्–मध्यम वर्गीय* उद्योग की श्रेणी मे ही रखा जा सकता है। सारणी– 5 18 एव चित्र (5 8) मे इनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

(क) चीनी उद्योग का विकास

जनपद मे गुड तथा खाडसारी उद्योग 18वी शताब्दी मे विकसित थे। इसका केन्द्र *रामपुर कारखाना* था। इस स्थान पर प्राचीन समय मे 500 कारखाने खाडसारी उद्योग के रूप मे विकसित थे। यहॉ के जमीदारो ने चीनी निर्माण हेतु बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ आदि स्थानो के कारीगरो को लाकर यहॉ बसाया था। उस समय *देवरिया* (सम्प्रति मुख्यालय) चीनी रखने के गोदाम के रूप मे ही जाना जाता था। देवरिया शहर से 40 किमी दूर *बरहज* शहर भी चीनी के गोदामो के लिए प्रसिद्ध था। यहॉ से नावो द्वारा चीनी विदेशो मे निर्यात की जाती थी।

20वी शताब्दी के तीसरे दशक मे जनपद मे चीनी उद्योग के लिए बड़े–बडे कारखानो की स्थापना की गयी। अग्रेजी शासन के समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बडे उद्योगो को प्रोत्साहन दिया गया। धीरे–धीरे ये चीनी उद्योग के कारखाने जनपद मे महत्वपूर्ण उद्योग के रूप मे बदल गये पर इसके विकास के साथ ही खाडसारी उद्योग नष्ट हो गया।

पूरे अध्ययन क्षेत्र मे चीनी उद्योग हेतु अनुकूल स्थितियाँ सुलभ हैं। क्षेत्र में *गन्ना* की उच्चतम

सारणी 5 18

वृहद् एव मध्यम वर्गीय उद्योग देवरिया– 2001

इकाई का नाम व पता	अवस्थिति	उत्पादित वस्तु एव उत्पादन क्षमता	विद्युत खपत	पूँजी विनियोजन (करोड रु में)	रोजगार	स्थापना वर्ष
सार्वजनिक क्षेत्रक						
1 दी यू.पी. स्टेट सुगर कारपोरेशन लि देवरिया	देवरिया	चीनी 914 TCD	1054 KVA	2 20	861	1932
2. दी यूपी स्टेट सुगर कारपोरेशन लि बैतालपुर	बैतालपुर	चीनी 914 TC.D	900 K.W 500 K.V A	5 70	735	1929
3 दी यूपी स्टेट सुगर कारपोरेशन लि भटनी देवरिया	भटनी	चीनी 1016 TCD	816 K.V A	3 66	870	1932
निजी क्षेत्रक						
4 मे कानपुर सुगर मिल्स लि गौरीबाजार देवरिया	गौरीबाजार	चीनी 950 TCD	1080 K.W	5 00	744	1932
5. दी प्रतापपुर सुगर मिल्स प्रतापपुर देवरिया	प्रतापपुर	चीनी 1500 TCD	432 V H.P	10 97	783	1932
6 मे. देवरिया पेपर मिल्स लि हाटारोड नरायनपुर देवरिया	हाटा रोड नरायनपुर	पेपर 4000 M.T A	750 K.V A	1 26	73	1995

स्रोत– *निर्देशिका जनपद देवरिया मे स्थापित लघु/मध्यम/वृहद्स्तरीय औद्योगिक इकाइयॉ जिला उद्योग केन्द्र देवरिया– 2000–2001 पृ–5*

पैदावार है घनी जनसख्या सस्ते श्रमिक उपलब्ध कराती है तथा ईंधन के रूप मे खोइया का प्रयोग होता है। स्थानीय क्षेत्रो से लकडियॉ भी उपलब्ध हो जाती है। कोयला झारखण्ड से प्राप्त किया जाता हे तथा रिहन्द बॉध योजना से जल–विद्युत सुलभ हो जाता है। जनपद की सभी मिले या तो नदियो के किनारे या नालो के किनारे स्थित है जिससे शुद्ध जल की प्राप्ति हो जाती है। चूना गन्धक आदि की प्राप्ति नजदीकी स्थानो से हो जाती है। देवरिया मुख्यालय की *उत्तर–पूर्व रेलवे पर अवस्थिति* तथा *राष्ट्रीय राजमार्ग सख्या–28* से निकटता के कारण चीनी के निर्यात एव व्यापार के लिए इसे एक आदर्श परिवहन जाल प्राप्त है। अत इन सभी अवस्थापन तत्वो की उपलब्धता के कारण जनपद मे चीनी उद्योग का विकास हुआ।

वर्तमान समय मे यहॉ का चीनी उद्योग सकट के दौर से गुजर रहा है। चीनी उद्योग को सरकार द्वारा अनिवार्य लाइसेसिग से मुक्त करने (1998), तथा जनवरी 2000 से लेवी व खुली बिक्री अनुपात 40 60 से घटाकर 30 70 किए जाने के बावजूद इस उद्योग की समस्या बढती ही जा रही है। चीनी गोदामो मे ही पडा हुआ है तथा किसानो के गन्ने का भुगतान भी नही हो पा रहा है। चीनी उद्योग की समस्या को बढाने मे प्रमुख भूमिका सरकार की आयात नीति की भी रही। इधर के वर्षो मे देश मे चीनी की पर्याप्त उपलब्धि के बावजूद सरकार ने अतर्राष्ट्रीय बाजार से चीनी का आयात किया, जिससे घरेलू चीनी अपेक्षाकृत महगी हो गयी। इन सब का प्रभाव घरेलू चीनी के व्यापार पर पडा।

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है जिसकी प्रमुख नकदी फसल गन्ना है। इसी आधार पर यहॉ का औद्योगिकरण भी चीनी उद्योग के रूप मे हुआ। इस प्रकार कृषि स्तर पर गन्ना से एव औद्योगिक स्तर पर चीनी उद्योग से क्षेत्र के कृषको की आय मूलत निर्धारित एव प्रभावित होती है। *कृषि–कृषक एव उद्योग* की इस परस्पर सम्बद्धता के कारण चीनी उद्योग की इस समस्या का दुष्प्रभाव समूचे कृषि प्रतिरूप मे *गन्ना क्षेत्र का ह्रास कृषक का गिरता आय स्तर एव अतत ह्रासोन्मुख आर्थिक एव सामाजिक विकास* के रूप मे दिख रहा है। क्षेत्र की चीनी मिलो का विवेचन निम्नवत् प्रस्तुत है–

(1) प्रतापपुर सुगर मिल, *प्रतापपुर*

यह मिल बनकटा विकासखण्ड के प्रतापपुर स्थान पर 1932 मे स्थापित हुआ। यह जनपद का **सबसे बडा** चीनी मिल है। यह *गोरखपुर–छपरा रेल लाइन* पर बिहार सीमा पर स्थित है। इस मिल मे चीनी तथा शीरा का उत्पादन होता है।

(2) कानपुर सुगर मिल *गौरीबाजार*

इसकी स्थापना 1932 मे गौरीबाजार विकासखण्ड के मुख्यालय पर हुयी। यह जनपद के बागर क्षेत्र मे अवस्थित है तथा सडक एव रेल लाइन से जुडा है। इसमे चीनी तथा शीरा का उत्पादन होता है।

MAJOR INDUSTRIES OF DEORIA, 2001-02
N
गौरी बाजार
नारायणपुर
बैतालपुर
देवरिया
भटनी
प्रतापपुर
SUGER INDUSTRY
PAPER-INDUSTRY
6 0 6 KM
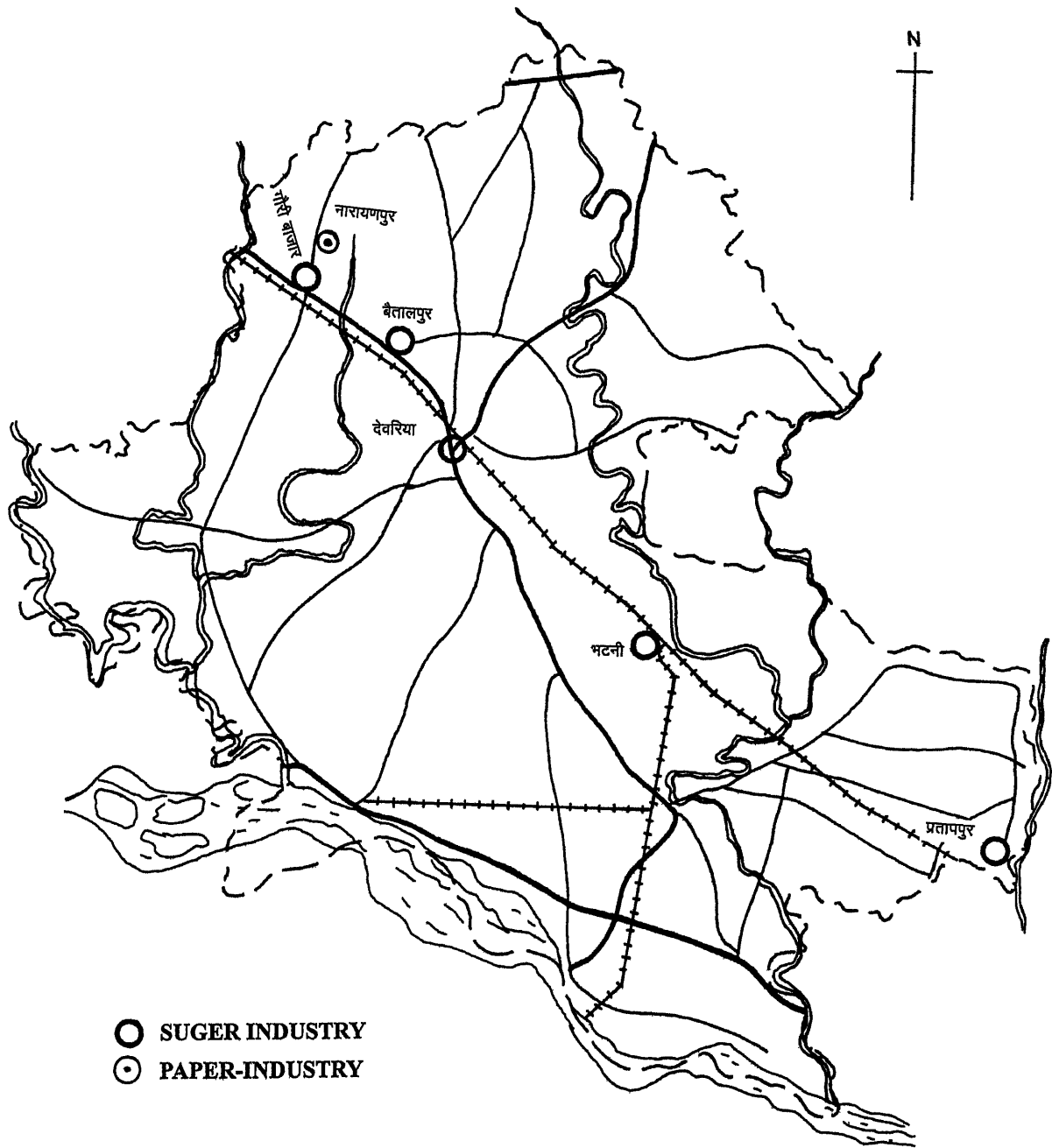
FIG 58

(3) यू पी स्टेट सुगर कारपोरेशन *भटनी*

इस चीनी मिल की स्थापना 1932 मे भटनी विकासखण्ड मे की गयी। यह रेललाइन द्वारा जुडा हुआ है। यहॉ मुख्यत चीनी और शीरा पैदा होता है।

(4) यू पी स्टेट सुगर कारपोरेशन *देवरिया*

इस चीनी मिल की स्थापना जनपद मुख्यालय पर 1932 मे की गयी। यह भी सडक और रेल मार्ग से सम्बद्ध है तथा चीनी और शीरा का उत्पादन होता है।

(5) यू पी स्टेट सुगर कारपोरेशन, *बैतालपुर*

यह मिल 1929 मे बैतालपुर विकास खण्ड मुख्यालय पर स्थापित हुयी। यह भी सडक और रेलमार्ग से सम्बद्ध है तथा चीनी के साथ शीरा का उत्पादन होता है।

(ब) लघु उद्योग

लघु उद्योग की परिभाषा विभिन्न औद्योगिक नीति मे भिन्न–भिन्न रही है। फरवरी 1999 मे लघु क्षेत्र मे निवेश की सीमा को 1 करोड रुपया किया गया। लघु उद्योग किसी क्षेत्र के विकास मे अहम् भूमिका का निर्वाह करते हुए बेरोजगारी की समस्या को हल करने मे योगदान करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र इस प्रकार के उद्योग मे भी पिछडा हुआ है। इसके अतर्गत धान की उपलब्धता की दृष्टि से जनपद मे बहुत अधिक मात्रा मे *मिनी राइस मिले* ही स्थापित है। इसके अलावे इजीनियरिंग वर्क्स, फूड स्टफस ऑयल इण्डस्ट्रीज गुड़ उद्योग विद्युत वल्ब प्लास्टिक उद्योग प्रिटिग प्रेस आदि विकसित है। लघु उद्योग के विकास के लिए पूँजी एव तकनीकी ज्ञान दिए जा रहे है। जनपद मे लघु पैमाने के निम्नलिखित उद्योग विकसित है–

(क) कृषि पर आधारित उद्योग

जनपद मे कृषि पर आधारित उद्योग ही मुख्य रूप से विकसित है। इनमे चावल और आटा मिल सर्वप्रमुख है। जनपद मे बडे पैमाने की दो चावल की मिले हैं। एक *सलेमपुर* मे तो दूसरी जनपद मुख्यालय से 5 किमी दूर कसया रोड पर *गौरा* ग्राम मे– *माडर्न राइस मिल गौरा*। इस मिल की धान कूटने की क्षमता 20 क्विटल प्रति घण्टा है। कच्चे माल के रूप मे धान स्थानीय क्षेत्रो से तथा गोरखपुर महाराजगज, सिद्धार्थनगर, आजमगढ़ जनपद आदि स्थानो से ट्रक द्वारा मगाया जाता है। सम्प्रति यह मिल कुछ कारणो से बद है। *लक्ष्मी फ्लोर मिल* जनपद मुख्यालय पर 1989 मे स्थापित की गयी। इसमे सूजी तैयार करने की आधुनिक मशीने लगी है। इसके अलावे कृषि पर आधारित फ्लोर मिल गुड और खाडसारी जनपद के मुख्य उद्योग है जो नगरीय केन्द्रो चौराहो, बड़े ग्रामो मे विकसित हैं।

(ख) दफती एव कागज उद्योग

कृषि पर आधारित इस उद्योग की दो इकाइयॉ *गौरी बाजार* विकासखण्ड मे तथा

एक–एक इकाइयॉ *देवरिया* एव *लार* मे स्थापित है। गन्ने की खोई एव पुआल इसके प्रमुख कच्चा माल है। चीनी उद्योग के समस्याग्रस्त होने एव बद होने से ये उद्योग भी प्रभावित हो रहा है।

(ग) लकडी पर आधारित उद्योग

जनपद के प्रमुख सेवाकेन्द्रो– *देवरिया रुद्रपुर बरहज सलेमपुर भाटपार गौरीबाजार* आदि स्थानो पर यह उद्योग विकसित है। इन केन्द्रो पर फर्नीचर हेतु बाहर से लकडी मगायी जाती है।

(घ) पशुओ पर आधारित उद्योग

जनपद के *गौरीबाजार बरहज, सलेमपुर लार* आदि सेवाकेन्द्रो तथा विकासखण्डो के प्रमुख सेवाकेन्द्रो पर यह उद्योग विकसित है। इसमे *बरहज* तथा *गौरीबाजार* बोन फर्टिलाइजर के लिए प्रसिद्ध है। पशु सम्पदा मे सम्पन्न जनपद के विभिन्न क्षेत्रो मे कच्चे माल (हड्डी) की प्राप्ति हो जाती है। *बरहज* एव *गौरीबाजार* मे बूचडखाना भी है। बोन फर्टिलाइजर मे 25 प्रतिशत खाद तथा 75 प्रतिशत चूना पैदा किया जाता है।

(ड) हैण्डलूम उद्योग

जनपद के *भाटपाररानी कपरवार घाट लार रुद्रपुर मदनपुर भलुअनी, बरहरा* आदि स्थानो पर यह उद्योग विकसित है।

(च) रसायन उद्योग

जनपद मे प्लास्टिक, चाक स्याही आदि उद्योग जनपद मुख्यालय पर विकसित है। *बरहज, लार भाटपाररानी* आदि स्थानो पर रसायन उद्योग के केन्द्र हैं।

(छ) इजीनियरिग उद्योग

जनपद *मुख्यालय, बरहज भाटपार रानी लार गौरी बाजार, रामपुर कारखाना* आदि स्थानो पर इजीनियरिंग विकसित है। यहॉ मशीनो के औजार, कृषि यन्त्र आलमारी बाक्स लोहे के दरवाजे आदि निर्मित किये जाते है।

(ज) रेशम उद्योग

कुशीनगर के जनपद बन जाने से रेशम उद्योग अब नाम मात्र का रह गया है, क्योकि रेशम उद्योग के अधिकाश केन्द्र कुशीनगर मे जा चुके है। जनपद मे देसही देवरिया विकास खण्ड मे *बराव सेमरा* (1982) मे रेशम उद्योग विकसित है।

(झ) ईंट उद्योग

समस्त जनपद मैदानी क्षेत्र है, अत ईट उद्योग जनपद के सभी विकासखण्डो मे विकसित है। व्यक्तिगत स्वामित्व के कारण श्रमिको और उपभोक्ताओ का शोषण होता है। प्रत्येक मट्ठे

पर झारखण्ड राज्य के रॉची से श्रमिक आकर यहॉ कार्य करते है जिनमे महिलाये अधिक है।

(ञ) प्रिटिग प्रेस

जनपद मुख्यालय मे पिटिग प्रेस की बहुलता है। यहॉ से छ दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते है– *दैनिक ग्राम स्वराज हिन्दुस्थान का स्वरूप आकाशमार्ग जगत आशा सीमा रेखा*। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होते है।

(स) कुटीर एव ग्रामीण उद्योग

ग्रामीण एव कुटीर उद्योग को साधारणतया एक समान माना जाता है। यद्यपि काल एव स्थान के अनुसार इनमे सूक्ष्म भेद बताया जाता है। कुटीर उद्योग ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आधुनिक निर्माण उद्योग का आधार है। इसके अन्तर्गत दस्तकार अपनी पैतृक दक्षता के आधार पर अपने परिवार के सदस्यो की सहायता से घर मे ही वस्तुए बनाता है। इस उद्योग की प्रमुख विशेषता स्थानीय कच्चे माल का प्रयोग है। इसके उत्पादो की उपादेयता स्थानीय लोगो के लिए अधिक होती है। इन उद्योगो का उत्पादन छोटे स्तर पर होता है तथा बहुत साधारण उपकरणो का प्रयोग किया जाता है।[31] विस्तृत अर्थो मे ग्रामीण एव कुटीर उद्योगो मे उन सभी उद्योगो को सम्मिलित किया जा सकता है जो ग्रामीणो द्वारा आशिक या पूर्णकालिक व्यवसाय के रूप मे किये जाते है। ये उद्योग जातिगत या परम्परागत उद्योग के रूप मे हो सकते है।[32]

1997 से कुटीर एव ग्रामीण उद्योग मे निवेश की उच्चतम सीमा 25 लाख रूपये कर दी गई है। भारतीय प्रशुल्क कमीशन ने इन उद्योगो को दो वर्गो मे रखा है– *1 ग्रामीण कुटीर उद्योग 2 नगरीय कुटीर उद्योग।*

जनपद के लगभग सभी सेवाकेन्द्रो पर ग्रामीण बाजारो मे तथा बडे ग्रामो मे यह उद्योग विकसित है। **साबुन उद्योग**– लार देवरिया मे विकसित है। **तेल उद्योग**, गुड उद्योग भुजिया चावल उद्योग जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड मे विकसित है।

चमडे का उद्योग–भलुअनी कोइलगडहा सलेमपुर लार आदि स्थानो पर विकसित है।

इसी प्रकार लकडी पर आधारित उद्योग कुर्सी मेज स्टूल, कृषि औजारो मे प्रयुक्त होने वाले सामानो के उद्योग भाटपार रानी, सलेमपुर बरहज रुद्रपुर लार आदि स्थानो पर विकसित है।

मिट्टी के बर्तन के उद्योग प्रत्येक बाजार केन्द्रो बडे ग्रामो और नगरीय केन्द्रो पर विकसित है।

खादी उद्योग– लार, बडहरा गरेड आदि ग्रामो मे विकसित है। रस्सी उद्योग पटसन और मूँज पर आधारित है। डलिया मुनिया दौरा आदि ग्रामीण औरते अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए करती हैं।

मत्स्य पालन उद्योग अनेक विकास खण्डो मे विकसित किया जा रहा है। इसके अलावा नदी तालाबो से मछलियॉ पकडी जाती है।

ग्रामीण एव कुटीर उद्योगो का महत्व

निरन्तर बढती जनसख्या को रोजगार उपलब्ध कराने, गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाली जनसख्या का जीवन–स्तर उठाने आर्थिक विषमता को कम करने एव बढती शहरीकरण की समस्या के समाधान का एकमात्र विकल्प है– ग्रामीण एव कुटीर उद्योग का विकास। तेजी से बढती हुई ग्रामीण जनसख्या को कृषि क्षेत्रो मे रोजगार के सीमित अवसर को देखते हुए सबको काम नही दिया जा सकता। अत इन उद्योगो का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यही है कि प्राकृतिक रूप से श्रमिको को अपने अनुकूल वातावरण मे कार्य मिल जाता है। इससे उनके सामर्थ्य इच्छा और रुचि के अनुरूप तथा व्यक्तिगत योग्यता एव प्रवृत्ति के अनुसार व्यवसाय चलाने की सम्भावना भी बन जाती है। अध्ययन क्षेत्र मे कच्चा माल स्थानीय योग्यता और स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप ग्रामीण एव कुटीर उद्योगो को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र मे श्रम के बाहुल्य तथा पूॅजी के अभाव को देखते हुए कुटीर उद्योगो का महत्व निम्न तथ्यो के कारण लगातार बढता जा रहा है।

(1) गॉव के कच्चे माल पर आधारित ग्रामीण एव कुटीर उद्योग ग्रामीण क्षेत्रो के विकास के लिए उपयुक्त है।

(2) ग्रामीण क्षेत्रो मे इन उद्योगो की स्थापना करके ग्रामीण क्षेत्र की जनसख्या को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर अर्द्ध बेरोजगारी, अदृश्य बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है।

(3) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आय–स्तर को सुधारने हेतु क्षेत्रीय–प्राकृतिक और मानवीय ससाधनो का अनुकूलतम उपयोग किया जा सकता है।

(4) इन उद्योगो की स्थापना से बहुसख्यक ग्रामीणो की क्रय–शक्ति मे सुधार होगा फलस्वरूप उद्योगो पर आधारित वस्तुओ की मॉग मे वृद्धि होगी और उनके जीवन–स्तर मे सुधार होगा।

(5) ग्रामीण क्षेत्रो मे ग्रामीण एव कुटीर उद्योगो की स्थापना करके गॉवो से नगरो की ओर जनसख्या के पलायन को रोका जा सकता है।

(6) इन उद्योगो की स्थापना से कृषि एव उद्योगो के समन्वित सहयोग से सतुलित विकास की प्राप्ति हो सकेगी।

(7) ग्रामीण एव कुटीर उद्योगो की स्थापना से कुछ सीमा तक उद्योगो का विकेन्द्रीकरण

किया जा सकता है।

(8) धन एव आय की विषमता को कम किया जा सकता है।

(9) चूँकि इनकी अवस्थापना मे कम–पूँजी एव कम तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है। अत इन्हे शीघ्र अतिशीघ्र प्रारम्भ कर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

5 10 औद्योगिक अवस्थापन सुविधाये

अध्ययन क्षेत्र मे औद्योगिकरण को प्रोत्साहित करने तथा औद्योगिक कार्यकुशलता को बढाने के उद्देश्य से औद्योगिक आस्थान एव प्रशिक्षण केन्द्रो के रूप मे कुछ सुविधाओ की स्थापना एव विकास किया गया है। इनमे प्रमुख है– औद्योगिक आस्थान औद्योगिक क्षेत्र मिनी औद्योगिक आस्थान एव प्राविधिक/औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान (सारणी–5 19)। ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु विद्युत सब स्टेशन की स्थापना की गयी है तथा वित्तीय सहायता जनपद के बैको के माध्यम से प्रदान की जाती है।

5 11 समस्या एव विकास नियोजन

कषि प्रधान अध्ययन क्षेत्र मे तथा उस पर आधारित औद्योगिकीकरण के तमाम प्रयासो के फलस्वरूप नि सन्देह क्षेत्र का विकास गतिमान हुआ है। परन्तु विकास की दशा और दिशा के क्षेत्रीय ससाधन आवश्यकता से मेल न होने से न सिर्फ विकास को अनुकूल गति नही मिल पायी बल्कि कई नवीन समस्याओ का उद्भव हो गया। अत इन समस्याओ का समाधान करने तथा क्षेत्र के समन्वित विकास हेतु क्षेत्रीय ससाधनो के आधार पर नियोजित विकास रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। ताकि विकास को सही दिशा और गति मिल सके। इन समस्याओ को कृषि एव औद्योगिक क्षेत्र मे विभक्त कर इनका विकास नियोजन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

(अ) कृषि समस्या एव विकास नियोजन

कृषि क्षेत्र का विकास एव सेवाकेन्द्रो के अध्ययन एव विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्रीय विकास के लिए विकास पूँज सेवाकेन्द्रो से ही प्रस्फुटित होकर क्षेत्र मे प्रसारित होती हैं और सेवाकेन्द्रो पर ये विकास उर्जा या तो सरकार द्वारा उपलब्ध करायी जाती है या विकास क्रम मे स्वत इनका केन्द्रो पर जनन और प्रस्फुटन हो जाता है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र का समग्र विकास कृषि विकास मे गति प्राप्त किए बिना सम्भव ही नही है। अत कृषि विकास के लिए आवश्यक है कि उसके विकास के लिए उत्तरदायी विभिन्न अवयवो को नियोजित ढग से विकसित किया जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति सुसगठित प्रयासो से ही सम्भव है जिसमे प्रशासक और योजना निर्माता शोध करने वाले वैज्ञानिको प्रसार कार्यकताओ, वित्तीय ऋण उपलब्ध कराने वाली

सारणी 5 19

औद्योगिक अवस्थापन सुविधाऍं देवरिया जनपद– 2001

अवस्थापन सुविधा का नाम	क्षेत्रफल (एकड)	शेड स	विकसित प्लाट स	आवटन की स्थिति
(क) औद्योगिक आस्थान				
1 औद्योगिक आस्थान देवरिया	15 08	19	39	39
2 औद्योगिक आस्थान, सलेमपुर	5 00	5	16	16
(ख) औद्योगिक क्षेत्र				
1 औद्योगिक क्षेत्र– उसरा बाजार	147 00		55	38
(ग) मिनी औद्योगिक आस्थान,				
1 मिनी औद्योगिक आस्थान गौरी बाजार	2 29		32	32
2 मिनी औद्योगिक आस्थान रुद्रपुर	2 50		36	19
3 मिनी औद्योगिक आस्थान बरहज	2 34		29	
4 मिनी औद्योगिक आस्थान पथरदेवा	2 50	—	44	44
5 मिनी औद्योगिक आस्थान भाटपार रानी	4 66	—	52	—

(घ) प्राविधिक/औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान एव अन्य	सख्या
1 प्राविधिक शिक्षण सस्थान ..	1
2. औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान	1
3 ग्रामीण औद्योगिक प्रशिक्षण एव प्रसार केन्द्र	1
4 राज्य निर्यात निगम एव अखिल भारतीय हस्तकला मण्डल द्वारा सचालित कालीन प्रशिक्षण केन्द्र	1

स्रोत– *निर्देशिका जनपद देवरिया मे स्थापित लघु/मध्यम/वृहद्स्तरीय औद्योगिक इकाइयॉं जिला उद्योग केन्द्र देवरिया– 2000–2001 पृ–2–4*

एजेसियो जनसचार माध्यमो तथा कृषको के सहयोग की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र के कृषक की सहनशीलता उल्लेखनीय तथ्य है। लगातार बाढ– सूखा का शिकार होने के बावजूद कृषक देव–अधीन कृषि कार्य करने मे लगे हुए है।

अध्ययन क्षेत्र की समृद्धि बढाने के लिए समन्वित फसल पशुधन मत्स्यपालन तथा बागवानी जैसे उद्यमो के जरिये कृषि मे विभिन्नता लाकर कृषि आमदनी को अधिक से अधिक बढाना होगा। कृषि के क्षेत्र मे सामान्य वृद्धि से ग्रामीण क्षेत्रो की गरीबी पर सीधे आक्रमण करने की नीति अपनाकर एक सचेष्ट परिवर्तन लाना होगा क्योकि कृषि विकास के बिना अध्ययन क्षेत्र की गरीबी को दूर करने की कल्पना ही नही की जा सकती। हमे कृषि विकास को केवल और अधिक अनाज उपजाने के साधन के रूप मे ही नही लेना है बल्कि गॉवो की आमदनी बढाने और रोजगार के और अधिक अवसर उपलब्ध कराने के माध्यम के रूप मे भी लेना है। कृषि विकास नियोजन के लिए भूमि–सुधार कृषि–यन्त्रीकरण पशुधन एव डेयरी विकास दलहन एव तिलहन विकास औद्योगिक फसलो का विकास मिश्रित खेती शुष्क भूमि कृषि खरपतवार नियन्त्रण सिचाई सुविधाओ का विस्तार तथा कृषि रसायनो एव उर्वरको के प्रयोग पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त वित्तीय ऋण उपलब्ध कराने बचत को प्रोत्साहन देने तथा महाजनी ऋण जाल से मुक्ति प्रदान करने के लिए बैकिग सुविधाओ मे वृद्धि करने की आवश्यकता है। क्षेत्र की कृषीय समस्याओ एव उनका विकास नियोजन निम्नवत प्रस्तावित है–

(1) भूमि/मृदा एव सिचाई सम्बन्धित

भूमि ससाधन विकास का मूलाधार है। हमारा उत्तरदायित्व है कि हम इसको केवल अक्षुण्ण रूप मे ही नही बल्कि सुधरे हुए रूप मे आगामी पीढियो को सौपे। इसके लिए कृषि विकास की प्रक्रिया मे भूमि ससाधन की वहन क्षमता तथा इसके सामर्थ्य और पर्यावरण सुरक्षा के पहलुओ की ओर हमे अवश्य ध्यान देना चाहिए। भूमि तथा जल–चक्रो के बीच ताल–मेल बनाने के लिए कार्यक्रम तैयार करने की, उपलब्ध भूमि की उत्पादकता बढ़ाने उत्पादकता पुन प्राप्त करने, भूमि का सुधार करने और कम उपजाऊ भूमि का विकास करने व ग्रामीण क्षेत्रो मे जीवन स्तर मे सुधार लाने की आवश्यकता है। भूमि ससाधन के अनुकूलतम उपयोग तथा सामाजिक–आर्थिक उद्देश्यो के सरक्षण आवश्यकताओ को लेकर कृषि तथा इसके अन्य आनुषगिक माध्यमो से अध्ययन क्षेत्र के लोगो के लिए समृद्धि लायी जा सकती है।

(क) उसर भूमि की समस्या

अध्ययन क्षेत्र मे 3,692 हे भूमि उसर एव कृषि के अयोग्य है। अत उसर सुधार द्वारा कृषि क्षेत्र मे 1 46 प्रतिशत की वृद्धि की जा सकती है। उसर सुधार हेतु क्षेत्र के लिए सस्तुत *जिप्सम (25 प्रतिशत जीआर + एफवाईएम 10 टन/हे)* की आधी मात्रा तथा 10 टन प्रति हे *गोबर की खाद* अथवा 10 टन *प्रेसमड (सल्फीटेशन प्लान्ट)* अथवा 10 टन *फ्लाईऐश* प्रति हेक्टेयर की

दर से किया जाय। यदि गोबर की खाद प्रेसमड तथा फ्लाईऐश उपलब्ध न हो तो जिप्सम की सस्तुत पुरी मात्रा का प्रयोग किया जाय। इसके बाद प्रथम फसल *धान* की ली जाय। धान क्षारीयता के प्रति सहनशील है अत दो तीन वर्षो तक खरीफ मे *धान* की अनवरत फसल ही ली जाय क्योकि यह जैविक क्रिया के फलस्वरूप एक प्रकार का जैविक अम्ल उत्पन्न करता है साथ ही भूमि मे सोडियम तत्व का अवशोषण अधिक मात्रा मे होने से भूमि मे विनिमयशील सोडियम की मात्रा कम हो जाती है और भूमि की भौतिक तथा रासायनिक गुणवत्ता मे धीरे–धीरे सुधार हो जाता है। इसके बाद अध्ययन क्षेत्र के लिए *धान–गेहूँ–हरी खाद* का फसल चक्र सस्तुत किया गया है।

(ख) सिचाई समस्या

जनपद का कुल सिचित क्षेत्रफल वर्तमान मे 158937 हे है। वर्तमान सिचाई क्षेत्र का 80 प्रतिशत क्षेत्र केवल *नलकूपो* द्वारा सीचा जाता है जो विद्युत आपूर्ति पर निर्भर है। इसके अलावे सिचाई साधनो के अभाव मे अभी–भी 2359 हे भूमि बजर भूमि के रूप मे पडी हुयी है। अत बन्द नलकूपो को ठीक कर तथा विद्युत आपूर्ति को नियमित कर सिचाई क्षेत्र का विकास किया जा सकता है। रबी के फसलो के उत्पादन मे सिचाई का विशेष महत्व है। अत समय से सभी नलकूप चलाए जॉय साथ ही नहरो को रोस्टर के अनुसार चलाया जाय।

(ग) बाढ की समस्या

अध्ययन क्षेत्र बाढ की दृष्टि से काफी सवेदनशील है। इसमे जनपद का रुद्रपुर तहसील का अधिकाश भाग नदियो से आच्छादित रहने के कारण साथ ही *राप्ती* एव *घाघरा* नदी के बीच पतला कछार क्षेत्र है। यह प्राय प्रत्येक वर्ष बाढ की चपेट मे आता है जिससे प्रत्येक वर्ष कृषि एव पशुओ की क्षति के साथ–साथ जनजीवन को गम्भीर खतरा बना रहता है। इस जनपद मे *छोटी गण्डक राप्ती गोर्रा घाघरा* नदियो के अलावा *मझना नाला नकटा नाला* तथा *कुर्ना* एव *खनुआ, बथुआ नाला* जो प्राय वर्षा के दिनो मे नदी का रूप ले लेते है इनसे भी काफी क्षति होती है।

बाढ नियत्रण हेतु बाढ खण्ड विभाग देवरिया उत्तरदायी है। जिसके द्वारा रुद्रपुर एव सलेमपुर तहसील के अतर्गत पडने वाली *राप्ती, गोर्रा, घाघरा* नदियो से बचाव कार्य किया जाता है। बाढ सुरक्षा हेतु *गण्डक नहर–3* एव बाढ सुरक्षा हेतु *34 बन्धो* का निर्माण किया गया है परन्तु इससे बाढ़ की आवृत्ति मे कोई उल्लेखनीय सुधार अभी तक नही हुआ है। अत आवश्यकता है बॉधो की मरम्मत तथा पक्के बॉध निर्मित किए जॉय।

(घ) मृदा–उर्वरक साहचर्य एव मृदा परीक्षण

मृदा ही कृषि का मूलाधार है, जिसमे प्रत्येक फसल के लिए पोषक तत्व मौजूद होते है।

इन पोषक तत्वो मे मृदा की प्रकृति और प्रकार के अनुसार स्थानिक भिन्नता पायी जाती है। साथ ही प्रत्येक फसल के लिए पोषक तत्वो की आवश्यकता मे भी फसली स्तर पर भिन्नता होती है। मृदा मे पोषक तत्वो की इस कमी को कृत्रिम रूप से उर्वरको के सहारे पूरा किया जाता है। अत यदि किसान को अपने भूमि के पोषक तत्वो का ज्ञान नही है तथा तत्व विशेष का फसल के लिए आवश्यकता का बोध नही है तो कृत्रिम रूप से डाले गये उर्वरक का फसल एव उत्पादन पर कोई सकारात्मक प्रभाव नही होगा और वह लागत ही बढायेगा। इस प्रकार मृदा–उर्वरक के साहचर्य का ज्ञान किसान को होना चाहिए तथा उनकी भूमि मे *नाइट्रोजन फास्फोरस* एव *पोटाश* की कितनी मात्रा है उसी के अनुसार उर्वरक प्रयोग करे। इसके लिए भृदा परीक्षण अनिवार्य है। वर्तमान समय मे मात्र देवरिया मुख्यालय पर ही परीक्षण केन्द्र मौजूद है। इसे प्रत्येक प्रखण्ड पर स्थापित कर किसानो को इसके प्रति जागरूक बनाया जाय।

(ङ) मृदा–क्षरण एव सरक्षण

जनपद की कृषि योग्य भूमि का एक बडा भू–भाग प्रतिवर्ष बाढ सिचाई अतिरेक एव मृदा अपरदन से ग्रस्त होता है। जिसका कृषि–उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। अत मृदा सरक्षण हेतु 1993–94 से *'राष्ट्रीय जलागम विकास कार्यक्रम'* की शुरूआत हुयी। यह योजना भारत सरकार के कृषि मत्रालय द्वारा वित्त पोषित है जिसमे केन्द्र एव राज्य भार अनुपात 3 1 है। योजना के अन्तर्गत एकीकृत जलागम पबन्धन के आधार पर कृषि–भूमि सरक्षण उद्यान पशुपालन वानिकी आदि कार्य समेकित रूप से सम्पादित किये जाते है। यह कार्यक्रम वर्तमान मे *बैतालपुर* एव *गौरी बाजार* विकासखण्डो तक ही सीमित है। इसका विस्तार सभी विकासखण्डो तक होना चाहिए।

(2) उर्वरक एव कीटनाशक प्रयोग सम्बन्धित

हरितक्राति के प्रमुख आधारो मे उर्वरको एव कीटनाशको का कृषि क्षेत्र मे प्रयोग शामिल है। परन्तु वर्तमान मे इसका उपयोग बिना समुचित ज्ञान के धड़ले से हो रहा है। किस मृदा एव फसल के लिए कौन सा उर्वरक दिया जाय तथा कितनी मात्रा मे दिया जाय साथ ही कीटनाशको के प्रयोग की समय और विधि कौन सी उपयुक्त है? इसके ज्ञान के अभाव मे ये सारे कार्य न सिर्फ लागत बढा रहे है। वरन् ये प्राकृतिक पर्यावरण को भी विभिन्न रूपो मे क्षति पहुँचा रहे है। अनियमित और अनियत्रित रासायनिक उर्वरक एव कीटनाशक प्रयोग पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। वर्तमान समय मे आवश्यकता है न्यूनतम लागत मे मृदा उर्वरता गुणो को अक्षुण्ण रखते हुए उत्पादकता वृद्धि की।

(क) उर्वरको की पहचान

खेती मे प्रयोग मे लाए जाने वाले कृषि निवेशो मे सबसे महगी सामग्री रासायनिक उर्वरक है। उर्वरको के शीर्ष उपयोग की अवधि हेतु खरीफ एव रबी के पूर्व उर्वरक विनिर्माता फैक्ट्रियो

तथा विक्रेताओ द्वारा नकली एव मिलावटी उर्वरक बनाने एव बाजार मे उतारने की कोशिश होती है। इसका सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन और किसानो पर पडता है। नकली एव मिलावटी उर्वरको की समस्या से निपटने के लिए यद्यपि सरकार प्रतिबद्ध है फिर भी यह आवश्यक है कि किसान अपने स्तर पर भी उर्वरको की शुद्धता को परखे। इसकी शुद्धता की जॉच हेतु *कृषक सेवाकेन्द्रो* पर *टेस्टिग किट* उपलबध है। परन्तु जनपद मे मात्र 16 ही कृषक सेवाकेन्द्र है। अभी भी *बैतालपुर देसही देवरिया पथरदेवा रुद्रपुर बरहज भटनी भाटपाररानी एव भागलपुर* विकासखण्डो मे कोई कृषि सेवाकेन्द्र नही है। अत सभी विकास खण्ड मुख्यालयो पर इसकी सुविधा उपलब्ध करायी जाय।

(ख) सस्तुत उर्वरक उपयोग

उत्पादन एव उत्पादकता की दृष्टि से सतुलित उर्वरको के प्रयोग का विशेष महत्व है। नवीनतम अनुसधानो से प्राप्त परिणामो के अनुसार *नाइट्रोजन फास्फोरस* एव *पोटाश* का अनुपात 4 3 1 होना चाहिए। जबकि जनपद मे ये अनुपात 22 5 1 मे है। अत आवश्यकता है कि सस्तुत भाग मे उर्वरको के प्रयोग हेतु फास्फोरस एव पोटाश के प्रयोग पर बल दिया जाय। दलहनी एव तिलहनी फसलो मे फास्फेट एव पोटाश के प्रयोग पर अवश्य ही बल दिया जाय।

(ग) जैव उर्वरक, हरित खाद एव कम्पोस्ट प्रयोग

हमारा उद्देश्य कृषि उत्पादकता मे वृद्धि के द्वारा उत्पादन वृद्धि प्राप्त करना है। परन्तु यह वृद्धि *मृदा उर्वरता पर्यावरण एव परिस्थितिकी* की कीमत पर नही होनी चाहिए बल्कि इसे अक्षुण्ण रखते हुए होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि कृषिक्षेत्र मे रासायनिक उर्वरको के स्थान पर *जैव उर्वरक हरीखाद* एव *गोबर* की *खाद* के प्रयोग को प्राथमिकता प्रदान की जाय।

सभी प्रकार के पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए *मुख्यत 16 तत्वो* की आवश्यकता होती है जिनमे *नाइट्रोजन फास्फोरस* एव *पोटाश* अति आवश्यक तथा प्रमुख पोषक तत्व है। ये पौधो मे चार प्रकार से उपलब्ध होती है–

1 रासायनिक खाद द्वारा

2 गोबर की खाद/कम्पोस्ट द्वारा

3 नाइट्रोजन स्थिरीकरण एव फास्फोरस घुलनशील जीवाणु द्वारा एव

4 हरी खाद द्वारा

जैव उर्वरक

भूमि मात्र एक भौतिक माध्यम नही है, बल्कि यह एक *जीवित क्रियाशील तन्त्र* है। इसमे

सूक्ष्मजीवी बैक्ट्रिया फफूँदी शैवाल प्रोटोजोआ आदि पाये जाते है। इनमे से कुछ सूक्ष्मजीव वायुमण्डल मे स्वतत्र रूप से पायी जाने वाली 78 प्रतिशत नाइट्रोजन जिन्हे पौधे सीधे उपयोग करने मे अक्षम होते है को *अमोनिया* एव *नाइट्रेट* तथा फास्फोरस को उपलब्ध अवस्था मे बदल देते है। जैव उर्वरक इन्ही सूक्ष्म जीवो का पीट लिग्नाइट या कोयले के चूर्ण मे मिश्रण है जो पौधो को नाइट्रोजन एव फास्फोरस आदि की उपलब्धता बढाता है। जैव उर्वरक पौधो के लिए वृद्धि कारक पदार्थ भी देते है पादप रोगो की रोकथाम करते है तथा पर्यावरण को स्वच्छ रखने मे सहायक है। ये भूमि जल एव वायु को प्रदूषित किये बिना उत्पादन स्तर मे स्थायित्व लाते है। इन्हे *जैव कल्चर जीवाणु खाद इनाकुलेन्ट* आदि कहते है।

जैव उर्वरक निम्न प्रकार के उपलब्ध है–

(1) राइजोबियम कल्चर (2) एजेटोबेक्टर कल्चर (3) एजोस्पाइरिलम कल्चर (4) नील हरित शैवाल (वी जी ए) (5) फास्फेटिका कल्चर (6) एजोला फर्न (7) माइकोराइजा।

गोबर की खाद/कम्पोस्ट

अध्ययन क्षेत्र पशु ससाधन की दृष्टि से सम्पन्न है। परन्तु पशुओ के गोबर का अधिकाश ईंधन पूर्ति मे जला दिया जाता है। अत ईधन के वैकल्पिक साधनो का प्रयोग कर गोबर से खाद बनाना ज्यादा लाभकर होगा, साथ ही कूडा–कचडा को गढो मे सडा–गलाकर कम्पोस्ट तैयार किया जा सकता है क्योकि अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान होने के कारण धान के पुआल गेहूँ के भूसे गन्ना खोई आदि के रूप मे कम्पोस्ट निर्माण हेतु पर्याप्त सामग्री सम्पन्न है। इन खादो मे कृषि के प्रमुख पोषक तत्वो के साथ–साथ अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व भी एक निश्चित अनुपात मे मौजूद रहते है। अत यह कृषि की दृष्टि से फायदेमन्द है।

हरीखाद

भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए हरे पौधो को अथवा उनके किसी भाग को खेत मे पलटकर सडा दिया जाता है, इससे हरी खाद बनती है। यह दो प्रकार से तैयार की जाती है–

(क) खेत मे हरी खाद उगाकर पलटना

(ख) अन्यत्र उगाये गये पेड पौधो की हरी पत्तियॉ तथा मुलायम शाखाएँ काटकर उन्हे खेत मे डालकर मिट्टी मे दबा दिया जाता है।

हरीखाद के लिए प्रयुक्त होने वाली फसले निम्न सारणी (5 20) मे प्रस्तुत है।

सारणी– 5 20

हरी खाद विवरण

क्रम सख्या	फसल	बीज की मात्रा (किग्रा /हे)	पलटाई का समय	प्रति हे0 सस्थापित (नाइट्रोजन (किग्रा)
1	सनई	90–100	42 दिन पर	82
2	ढैचा	25–30	42 दिन पर	76
3	मूँग	20–25	फली तोडने के बाद 65 दिन पर	38
4	उडद	25–30	85–90 दिन पर फली तोडने के बाद	42
5	लोबिया	35–40	60 दिन पर	55

स्रोत–विकास के बढते कदम देवरिया सूचना एव जनसपर्क विभाग–2002 पृ0– 50

हरी खाद के लाभ

1 भूमि को जीवाश पदार्थ मिलता है।

2 भूमि की भौतिक एव रासायनिक दशा सुधरती है।

3 हरी खाद से पोषक तत्वो की उपलब्धता बढती है।

4 दलहनी वर्ग के हरी खाद के पौधो की जडो मे पायी जाने वाली राइजोबियम बैक्टीरिया वातावरण से भूमि मे नाइट्रोजन इकटठा करती हैं।

(घ) एकीकृत नाशीजीव प्रबन्ध (इटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेट)

प्रदेश मे कृषि के प्रति वाछित आकर्षण पैदा करने एव उसको कम खर्चीला और अधिक लाभकारी बनाने के लिए जिन उपायो पर गौर किया जा रहा है उनमे प्रमाणित एव उपचारित बीजो की उपलब्धि, उर्वरको का सतुलित उपयोग, अच्छा जल प्रबन्धन एव 'इटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेन्ट मुख्य हैं।

कृषि मे कीटो, रोगो, चूहो एव खरपतवारो से फसलो की उपज प्रभावित होती है। अभी तक इनके समाधान हेतु केवल रसायनो का ही सहारा लिया जाता रहा है जो खर्चीला होने के साथ–साथ पर्यावरण अवनयन के प्रमुख कारक हैं। इनसे कई प्रकार की दुर्घटनाएँ घटती है तथा इनका दुष्प्रभाव खाद्य–श्रृखला के माध्यम से मानव सहित सम्पूर्ण पारिस्थितिक तत्र पर पडता है। इनके निरतर प्रयोग से कई कीटो मे प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो गया है जो एक नई समस्या खडा कर रहे है। अत उक्त समस्याओ के प्रभावी निदान एव उपर्युक्त खतरो से बचने के लिए अब जिस पद्धति पर जोर दिया जा रहा है उसे *'इटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेन्ट'* या *एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन* कहा जाता है। इस पद्धति मे कीटो, रोगो और खरपतवारो आदि के उन्मूलन के बजाय उनके प्रबन्धन की बात की जाती है। इसके अतर्गत– समुचित फसल चक्र अपनाना, फसल के

प्रतिरोधी प्रजातियो को बोना शोधित बीज ही बोना समय से बुआई एव पौधो के बीच वाछित दूरी रखना सतुलित उर्वरक प्रयोग समुचित जल प्रबन्ध निराई–गुडाई कीडो के अण्डो इल्लियो को नष्ट करना तथा मित्र कीटो को बाहर से लाकर खेतो मे छोडना आदि सम्मिलित है।

(3) कृषि प्रविधि प्रशिक्षण एव ज्ञान से सबधित

कृषि प्रविधि का कृषि लागत और उत्पादकता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। नवीन तकनीक और वैज्ञानिक प्रविधि न सिर्फ उत्पादकता मे वृद्धि करती है बल्कि ये भूमि की गुणवता मे भी ह्रास नही आने देती है। इस प्रविधि का किसानो तक प्रसार विभिन्न प्रशिक्षण सस्थानो एव अनुभवो से होता है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान है पर यहॉ कृषि प्रशिक्षण सस्थानो का नितान्त अभाव है जो कम से कम सभी प्रखण्ड मुख्यालयो पर अवश्य स्थापित होने चाहिए। उपयुक्त ज्ञान के अभाव मे किसान असतुलित कृषि करते हैं जो लागत बढाने के साथ पर्यावरण की भी क्षति करती है। इसके लिए निम्न उपाय प्रस्तावित है–

(i) बीज शोधन

फसलो को रोग से बचाने हेतु बीज शोधन अति आवश्यक है। ये उन बीजो के लिए आवश्यक है जो किसान घर का बीज बोते हैं। इसके लिए प्रशासनिक स्तर पर सयुक्त रसायन थीरम कैप्टान एग्रोसेन जी एन आदि की आवश्यकता का परीक्षण विकास खण्डवार कराया जाय तथा आवश्यक रसायन की समय से उपलब्धता भी सुनिश्चित कर किसानो को प्रेरित कर बीज शोधित कराकर ही बुआई कराई जाय।

(ii) वैज्ञानिक कृषि, फसलचक्र

कृषि उत्पादकता को बढावा देने हेतु वैज्ञानिक कृषि द्वारा तकनीक हस्तान्तरण कार्यक्रम 1995–96 से जनपद मे चलाया जा रहा है। प्रत्येक तहसील के एक ग्राम का चयन कर कृषि की दृष्टि से उसे विकसित किया जा रहा है। उक्त ग्राम मे मृदा परीक्षण के आधार पर सतुलित मात्रा मे उर्वरको का प्रयोग एव सूक्ष्म तत्वो के प्रयोग पर बल दिया जाता है। इसे प्रखण्ड स्तर पर किया जाय।

अध्ययन क्षेत्र मे प्रति हेक्टेयर अधिक उत्पादन प्राप्त करने एव मृदा की उर्वरता बनाये रखने के लिए सही फसल चक्र का ज्ञान कृषको के लिए लाभदायक होता है परन्तु निरक्षरता, आर्थिक विपन्नता सिचाई एव परिवहन की असुविधा तथा परम्परागत कृषि पद्धति के कारण आज भी अध्ययन क्षेत्र के कृषक खाद्यान्न प्रधान पारम्परिक फसल चक्र को ही अपना रहे हैं। यद्यपि हाल के वर्षों मे फसल चक्र मे कुछ नवीनता आयी है, परन्तु उसमे अभी–भी शस्य सतुलन एव कृषि–पद्धति की वैज्ञानिकता मे अभाव मिलता है। अध्ययन क्षेत्र की भौतिक एव सामाजिक आर्थिक परिस्थितियो को देखते हुए निम्नलिखित फसल चक्र सस्तुत किया जा सकता है–

1	धान—गेहूँ	एक वर्षीय
2	मक्का—आलू—सूरज मुखी	एक वर्षीय
3	मक्का—तोरिया—गेहूँ	एक वर्षीय
4	धान—गेहूँ—गन्ना	दो वर्षीय
5	धान—मक्का (रबी) उडद/मूँग	एक वर्षीय
6	धान—मटर	एक वर्षीय
7	धान—जौ	एक वर्षीय
8	मक्का—राई	एक वर्षीय
9	मक्का—आलू	एक वर्षीय
10	धान—गेहूँ—हरीखाद (ढैचा/सनई)	एक वर्षीय
11	धान—गेहूँ—उडद/मूँग	एक वर्षीय

(iii) पारम्परिक अनुभवो उक्तियो का उपयोग

प्राचीन काल से कुछ ऐसी उक्तियॉ लोक प्रचलन मे रही है जिनके आधार पर किसान मौसम की सूचना पाते थे और कृषि करते थे। आज के वैज्ञानिक युग मे भी अपनी मौलिकता तथा सत्य के करीब होने के कारण ये प्रासगिक बनी हुयी हैं। अत उन उक्तियो का कृषि कार्य मे उपयोग अपेक्षित है। उदाहरण स्वरूप कृषि पडित **घाघ'** की उक्ति बहुत ही वैज्ञानिक लगती है—

(i) दिन मे गर्मी रात मे ओस। कहे घाघ वर्षा सौ कोस।

(ii) नीचे ओद ऊपर बदराईं कहे घाघ तब गेरुई आईं।

(iii) गोबर मैला नीम की खली। इससे खेती दूनी फली।

(iv) जेकरे खेत परै ना गोबर। उहि किसान को जानो दूबर।

(v) धान गिरै सुभागे का। जौ गेहूँ गिरै अभागे का।

(vi) चित्रा गेहूँ, आद्रा धान न ओ के गेरुई न ओके घाम।

(vii) गेरुई—गेहूँ, गधी—धान । बिना अन्न के मरे किसान।

(viii) पूसै—माघ बहे पुरवाईं तब सरसो को माहो खाईं।

(iv) कृषि—पशु साहचर्य विकास

ग्रामीण अर्थ—व्यवस्था मे पशुधन का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय कृषि मे प्रारम्भ से ही पशुश्रम की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि कृषि यन्त्रीकरण की अभिनव प्रवृति के बावजूद पशुधन को अस्वीकार नही किया जा सकता है। जब कभी इनकी सख्या मे ह्रास हुआ है कृषिगत अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पडा है। अध्ययन क्षेत्र यद्यपि पशुधन सम्पन्न है पर इसमे निरन्तर ह्रास हो रहा है। अत क्षेत्र मे किसानो को कृषि—पशु साहचर्य के लाभ को बताने की आवश्यकता

है क्योकि पशुओ से दूध मॉस चमडे अण्डे आदि सुलभ होते हैं। साथ ही पशुओ से प्राप्त होने वाली खाद खेत के लिए काफी लाभकारी होती है। गोबर से किसान कम्पोस्ट खाद तैयार कर फसलो के उत्पादन मे वृद्धि करते हैं।

(4) कृषि—वित्त एव सुरक्षा सबधित

अध्ययन क्षेत्र पिछडी अर्थव्यवस्था वाला कृषिक्षेत्र है। सिचाई उर्वरक डीजल बिजली आदि के निरन्तर महगे होते जाने से कृषि लागत बढती जा रही है। पूँजी के अभाव मे किसान नयी तकनीक को नही अपना पा रहे है। लागत प्रधान इस कृषि मे किसानो को फसल की क्षति होने पर भारी क्षति होती है। अत फसल सुरक्षा तथा कृषि कार्य के लिए पूँजी उपलब्ध कराना अनिवार्य हो जाता है। साथ ही नवीन कृषि उपकरणो को खरीदने के लिए तरह—तरह से किसानो को सहायता और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसमे सरकार द्वारा कुछ प्रयास हो रहे है पर वह पर्याप्त नही है।

(i) किसान क्रेडिट कार्ड

किसानो को समय से पर्याप्त वित्तीय सुविधा पहुँचाने के लिए *क्रेडिट कार्ड योजना* 1997 से सारे देश मे प्रारम्भ की गयी। इस योजना मे किसानो को समस्त कृषि एव पारिवारिक आवश्यकताओ हेतु 5000 रूपये या उससे अधिक के ऋण बैको से उपलब्ध कराये जाते है। जनपद मे ये कार्ड सरकारी बैको एव व्यावसायिक बैको के माध्यम से बनाये जा रहे है। ये एक सराहनीय प्रयास है। इसे और तीव्र और व्यापक करने तथा इसमे छोटे—बडे सभी किसानो को समाहित करने से इसकी उपादेयता और बढ जायेगी।

(ii) बीमा योजनाएँ

किसानो को फसल क्षति से राहत प्रदान करने के लिए जनपद मे *खलिहान दुर्घटना बीमा योजना* तथा कृषि विभाग की *राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना* चलाई जा रही है। यद्यपि इन योजनाओ के आकर्षक लाभ हैं परन्तु दुर्भाग्य से इसका लाभ बहुत ही थोडे किसानो को मिल पाता है। इसका प्रमुख कारण है लोगो मे इसकी जानकारी का अभाव और बीमा के भुगतान के समय अनावश्यक देरी। अत बीच के इन व्यवधानो को दूर करने तथा इसके अतर्गत अधिक से अधिक किसानो को समाहित करने का प्रयास होना चाहिए।

(iii) किसान मित्र योजना

किसानो को कृषि सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध कराने तथा उन्नतशील बीज के लिए अनुदान देने के लिए जनपद मे *किसान मित्र योजना* चलाई जा रही है। जिसमे दो मदे है—

1— *कृषक मित्र प्रशिक्षण* और 2— *उन्नतशील बीज व्यवस्था*। इसमे कृषक मित्र प्रशिक्षण नि शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इसका प्रसार समूचे जनपद मे तथा सभी किसानो तक होना चाहिए। इसके माध्यम से कृषि सम्बन्धित सभी जानकारियों (नवीन तकनीक, सतुलित उर्वरक

उपयोग जैव उर्वरक के लाभ समन्वित कीट प्रबन्धन) से किसानो को अवगत कराने का उद्देश्य होना चाहिए। उन्नतशील बीज व्यवस्था मे 25 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर धान गेहूँ के बीज उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है पर अभी भी इसका लाभ मात्र कुछ कृषको तक ही सीमित है। इसका प्रसार होना चाहिए।

(ब) औद्योगिक समस्यायें, संभावनाएँ एव विकास नियोजन

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान है। इसलिए यहॉ जो थोडा बहुत औद्योगिकरण हुआ वे सभी कृषि पर ही आधारित है। परन्तु ये उद्योग भी कई समस्याओ का शिकार हो गये और सकट की स्थित से गुजर रहे है। प्राचीन समय मे यहॉ गन्ना पर आधारित खाडसारी उद्योग सपन्न अवस्था मे था। बाद मे चीनी मिलो की स्थापना ने इन उद्योगो पर प्रतिकूल प्रभाव डाला और आज यहॉ चीनी उद्योग भी सकट के दौर से गुजर रहा है। यहॉ का सबसे प्रमुख उद्योग चीनी उद्योग ही है जिसकी पॉच मिले हैं परन्तु इसमे से मात्र तीन मिले ही चल रही है। गन्ना किसानो का बकाया सभी मिलो पर है और ये मिले गन्ना के मूल्य का भुगतान नही कर पा रही है।

परन्तु अभी भी इस क्षेत्र मे औद्योगिक दृष्टि से पर्याप्त सभाव्यताएँ मौजूद है। यदि इनका सुनियोजित रणनीति के द्वारा विकास किया जाय तो यह क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न हो सकता है। कृषि सम्पन्न क्षेत्र होने के कारण यहॉ कृषि उपजो को सशोधित करने हेतु अनेक उद्योगो की स्थापना की आवश्यकता है। यहॉ पयर्टन उद्योग के विकास की भी पर्याप्त सभावना है। अध्ययन क्षेत्र मे कृषि ससाधनो को देखते हुए यहॉ लघु एव कुटीर उद्योग ही विकसित किये जा सकते है। परन्तु क्षेत्र मे वित्तीय अनुप्लब्धता की समस्या है। अत समुचित वित्त प्रबन्धन द्वारा औद्योगिकरण को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(1) कृषि आधारित उद्योग

जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ मुख्य मुद्रादायिनी फसल गन्ना है। धान गेहूँ की अच्छी फसल होती है। अत जनपद मे गन्ने की खोई, धान का पुआल गेहूँ के भूसा पर आधारित उद्योग विकसित हो सकते हैं। खाडसारी उद्योग भी विकसित किये जा सकते है।

(2) फलाधारित उद्योग

जनपद मे केला आम पपीता जामुन अमरूद के फल पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त होते है। *देवरिया* तथा *सलेमपुर* मे फल सरक्षण केन्द्र स्थापित हैं। इन पर आधारित फलो से जूस निकालने के उद्योग तथा अचार बनाने के उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(3) पशुधन आधारित उद्योग

पशुधन मे जनपद धनी है। ग्रामीण जनता पशुपालन करती है। पशुओ से प्राप्त दूग्ध पर आधारित मिठाई उद्योग विकसित किया जा सकता है। भेड़–बकरी के बालो पर आधारित वस्तु

उद्योगो का विकास हो सकता है। जनपद मे दूग्ध एकत्रीकरण केन्द्र का अभाव है अत प्रत्येक प्रखण्ड मुख्यालयो पर इसकी स्थापना कर प्रत्येक सेवाकेन्द्र पर दूग्ध वितरण कार्य किया जा सकता है। पशुओ के मृत्यु के बाद हडडी व चमडे पर आधारित उद्योग के विकास की भी पर्याप्त सभावनाएँ है।

(4) पर्यटन उद्योग

जनपद प्राचीन काल से ही एक आध्यात्मिक एव धार्मिक क्षेत्र रहा है। धार्मिक केन्द्र आज भी जनपद मे पर्यटको के आकर्षण के केन्द्र बने हुए है। इन केन्द्रो पर अवस्थापनात्मक सुविधाओ का विस्तार एव विकास कर जनपद पर्यटन उद्योग मे अग्रणी भूमिका निभा सकता है। यहॉ के प्रमुख धार्मिक एव आध्यात्मिक स्थल है– खुखुन्दु, सोहनाग लार बरहज, दीर्घेश्वरनाथ दुग्धेश्वरनाथ आदि। इनमे से मात्र *दीर्घेश्वर नाथ* को ही उत्तर–प्रदेश सरकार ने *पर्यटन केन्द्र* के रूप मे घोषित किया है। अत बाकी सभी स्थलो को पर्यटन के रूप मे धोषित कर यहॉ पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सकता है।

References

1 *सिह बी एन 'कृषि भूगोल (2000) प्रयाग पुस्तक भवन पृ–1*

2 *वही पृष्ठ– 1–2*

3 *वही पृष्ठ– 35*

4 *Fox, K and Tanber, R, 'Spatıal Equılıbrıum Models of the Lıvestock feed Economy', Amerıcan Economıc Revıew, as, 1955 pp 801-802*

5 *Chandan, D S, 'Studıes ın Utılızatıon of Agrıculture Land', 1966, p 171*

6 *Venzettı, C, 'Land use and Natural Vegetatıon ın Internatıonal Geography', edıted by W Peter Adams and Frederıck, M Helleıener, Toronto Unıversıty, 1972, pp 1105-1106*

7 *Wood, H,A, 'A Classıficatıon of Agrıcultural Land use for Development plannıng', Internatıonal Geogr (22, I G U, Canada), Unıv of Toronto Press 1972, p 1106*

8 *मिश्र एस के–पुरी वी के, भारतीय अर्थव्यवस्था' (2000) हिमालय पब्लिशिग हाऊस– पृष्ठ– 315*

9 *रबी उत्पादन कार्यक्रम वर्ष 2000–2001 कृषि विभाग देवरिया पृष्ठ–4*

10 *सिह ब्रज भूषण 'कृषि भूगोल ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर, 1988 पृष्ठ 165*

11 *Stamp, L D, 'Our Developıng world', Faber & Faber, London, 1968, pp 105-125*

12 *Shafi, M 'Perspective on the Measurement of Agricultural Productivity' The Geographer, 1974 Vol 30, No -1 pp 15-23*

13 *Tandon, R K and Dhondyal, S P 'Principles and Methods of Farm Management, 1967 p 60*

14 *Uttar Pradesh District Gazetteers Deoria, 1988 p 87*

15 *Hussain M 'Crop Combination in India', 1982, p 61*

16 *Dayal, E , 'Crop Combination Region A study of the Punjab plain' Tej dschrift voor Economical social Geography 1967, Vol 58 p 39*

17 *Ahmad, A and Sidhiqui M F 'Crop Associations Pattern in the Luni Basin', The Geographer- 1967, Vol XIV, p 68*

18 *Johnson, B L C 'Crop Combination Region in East Pakistan', Geography 43, 1958, pp 86-103*

19 *Thomas, D , 'Agriculture in works during the Neopleanic war' Cradiff 1963 pp- 80-81*

20 *Weaver, J C , 'Crop Combination Regions in the Middle west', Geographical Review, 44 1954, p 175*

21 *Ayyar, N P , 'Crop Regions of Madhya Pradesh A Study in Methodology', Geographical Review of India, 31 1 1969, pp 1-19*

22 *Doi, K , 'The Industrial Structure of Japanese prefecture', Proceedings of I G U Regional conference in Japan, 1957-59, pp 310-316*

23 *भारत' प्रकाशन विभाग नई दिल्ली 2000—01 पृष्ठ 388*

24 *सिह काशीनाथ एव सिह जगदीश आर्थिक भूगोल के मूल तत्व' वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर (1984) पृ—296*

25 *कौशिक एस डी आर्थिक भूगोल के सरल सिद्धात' रस्तोगी पब्लिकशन मेरठ 1980—81 पृष्ठ—188*

26 *Richards, T , 'The Geography of Economic Activity', Mc Graw Hill Book Co, Inc 1962, P 456*

27 *Miller, E Willard, 'A Geography of Manufacturing', prentice Hall, Inc Englewood Cliffs, N J 1962 p 1*

28 *Alexander, J W , 'Economic Geography', p 288*

29 *Jarret, N R., 'A Geography of Manufacturing' (Second edition), Macdonald and Erans Estover Plymouth, 1977, p 7*

30 *'उत्तर प्रदेश वार्षिकी' सूचना एव जनसपर्क विभाग उत्तर—प्रदेश 2000—01 पृष्ठ—109*

31 *कुरैशी एम एच, भुगोल के सिद्धान्त' भाग—2 एन सी ई आर टी नई दिल्ली 1989 पृ 78—79*

32 *सिह इकबाल 'भारत मे ग्रामीण विकास' एन सी ई आर टी नई दिल्ली 1986 पृ 75*

अध्याय-छः

6

सेवाकेन्द्र परिवहन–संचार एवं विकास

(क) परिवहन व्यवस्था

6 1 सेवाकेन्द्र–परिवहन सम्बद्धता एव विकास

परिवहन तत्र आर्थिक विकास की रीढ है। सेवाकेन्द्रो पर क्षेत्रीय जनसख्या को विभिन्न प्रकार के कार्य एव सेवाये प्रदान करने वाली इकाइयॉ केन्द्रीभूत रहती हैं। इनसे सेवाओ एव कार्यो का सचरण परिवहन मार्गो के सहारे ही चतुर्दिक क्षेत्र मे सचरित हो पाती है। सेवाक्षेत्र से सेवाकेन्द्र के मध्य विभिन्न वस्तुओ और सेवाओ का आदान–प्रदान परिवहन साधनो की सुलभता पर ही निर्भर करता है। इस प्रकार किसी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का उद्भव विकास एव अस्तित्व परिवहनीय सम्बद्धता पर ही निर्भर करता है। परिवहनीय दृष्टि से जिस सेवाकेन्द्र की सम्बद्धता जितनी ही अच्छी होती है उसका सेवाक्षेत्र तथा पदानुक्रम उतना ही ऊँचा होता है। इस प्रकार कह सकते है। कि परिवहन तत्र वह मार्ग जाल है जिससे होकर विकास प्रवाहित होता है।

देश मे लगभग 6 लाख गॉव है। इनके विकास के लिए इनकी अच्छी परिवहन प्रणाली से सम्बद्धता आवश्यक है परन्तु अभी तक देशभर के ग्रामीण क्षेत्रो मे सडको की लम्बाई पॉच लाख किलोमीटर ही है। जो गॉव सडको से जुडे हैं उनकी सामाजिक–आर्थिक गतिविधियॉ इन्ही सडको के सहारे चलती है। आज *शहरी* और *'ग्रामीण भारत'* के बीच भारी अतर का प्रमुख कारण सडको की सम्बद्धता ही है। प्रगति की राह मे शहर के साथ गॉव साथ–साथ कदम इसीलिए नही उठा सके, क्योकि वे शहरो की भॉति सडको से सम्बद्ध नही थे। यही कारण है कि व्यापार रोजगार शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे वे राज्य काफी पिछडे हुए हैं जहॉ ग्रामीण सम्पर्क सडके कम है। कहना न होगा कि इसमे *उत्तरप्रदेश उत्तराचल, झारखण्ड, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश छत्तीसगढ पश्चिमबगाल, उडीसा ऑध्रप्रदेश* जैसे राज्य भी शामिल हैं।[1] परिवहन स्वय उत्पादन प्रक्रिया का एक चरण है। क्योकि विभिन्न प्रकार के उत्पादो को देश भर मे फैले हुए उपभोक्ताओ तक पहुँचाना होता है जो कि परिवहन के साधनो से ही सम्भव है।[2] विकसित परिवहन व्यवस्था से कृषि विकास और औद्योगिकरण मे भी सहायता मिलती है। प्राय परिवहन के साधनो का पर्याप्त विकास होने पर देश के सामाजिक जीवन मे कुछ ऐसे परिवर्तन होते हैं जिनसे आर्थिक वातावरण के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है।[3] इस प्रकार किसी भी देश प्रदेश या क्षेत्र के सतुलित विकास के लिए एकीकृत परिवहन तन्त्र की आवश्यकता होती है। परिवहन एव सचार माध्यमो से *क्षेत्रीय विशिष्टीकरण'* का लाभ पिछडे क्षेत्रो को भी मिल जाता है। इस प्रकार परिवहन जाल,

पिछडे क्षेत्रो मे भी ससाधनो के उपयोग को बल देकर वृद्धि एव विकास की स्थिति उत्पन्न करेगा।[4] आर्थिक विलगन राजनैतिक विखण्डन और सामाजिक दूरियो को एकीकृत एव समन्वित परिवहन–सचार माध्यमो से खत्म किया जा सकता है। उपभोग एव उत्पादन बिन्दुओ मे सयोजन गॉव एव शहर से सम्बन्ध स्थापित करने तथा प्राकृतिक आपदा के समय ये बहुत ही सार्थक सिद्ध होते है। परिवहन तन्त्र न केवल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को एकीकृत करता है वरन् स्थानीय बाजारो को राष्ट्रीय बाजार से और राष्ट्रीय बाजार को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जोडता है।[5] सडके ग्रामीण क्षेत्र मे हो या शहरी क्षेत्र मे उन पर विकास का सारा दारोमदार रहता है। ये अर्थव्यवस्था की रीढ है। विश्व स्तर पर आर्थिक विकास एव परिवहन साधनो के विकास मे समानता मिलती है।[6] यही कारण है कि बुनियादी ढॉचे मे सुधार के लिए सडको पर अब विकासशील देश जोर देने लगे है। विकसित देशो मे *'एक्सप्रेस हाइवे'* ने वहॉ की अर्थव्यवस्था को भी *'एक्सप्रेस वे'* दिया है। इसे हमने देर से स्वीकार किया लेकिन उसमे अब अपेक्षित गति व प्रगति दिखाई देने लगी है। यद्यपि उसकी गति धीमी ही है क्योकि ठेकेदार सरकारी अधिकारी व स्थानीय राजनीति के त्रिकोण मे अपेक्षित लक्ष्य पाना कठिन होता जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र देवरिया जनपद विकास की दृष्टि से पिछडा क्षेत्र है किन्तु विकास के लिए उत्तरदायी ससाधनो की प्रचुरता है। अन्य स्थितियो के अलावे विकास के मुख्य प्रेरक तथा ससाधनो के प्रमुख सयोजक तत्व परिवहन एव सचार का अपेक्षाकृत अभाव है। प्राय अध्ययन क्षेत्र के जिन भागो मे सडको एव रेलमार्गो का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है वे आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं अध्ययन क्षेत्र मे जल परिवहन की पर्याप्त सभावना है विशेषकर मध्यवर्ती क्षेत्र मे *छोटी गण्डक* नदी के माध्यम से तथा दक्षिणी भागो मे *राप्ती* एव *घाघरा* नदियो के माध्यम से। प्राचीन काल मे क्षेत्र मे व्यापार का प्रमुख माध्यम जल–परिवहन मार्ग ही था। बरहज प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। वायु परिवहन के माध्यम नही हैं। रेलमार्ग कुछ विकसित है पर लाइन इकहरी है। समतल मैदान होने के कारण विकसित–अविकसित सडके ही परिवहन के मुख्य साधन है।

6 2 परिवहन माध्यम–प्रतिरूप

'माध्यम' का अर्थ *'मार्ग'* जैसे सडक, रेल समुद्र नदी, वायु मार्ग माना गया है, जबकि *साधन* का प्रयोग यातायात हेतु प्रयुक्त विविध वाहनो यथा– बस ट्रक कार रेलगाडी नाव जलयान, ट्रैक्टर आदि के लिए किया जाता है। आधुनिक युग मे तीनो मण्डलो (स्थल जल एव वायुमण्डल) का उपयोग परिवहन के लिए किया जा रहा है। स्थल मण्डल मे रेलमार्ग सडकमार्ग रज्जुमार्ग तथा भूमिगत नलिकाएँ (टनेल पाइप लाइन्स) परिवहन के माध्यम हैं। जल मण्डल मे समुद्र के साथ नौगम्य नदियो तथा नहरो का प्रयोग परिवहन माध्यम के रूप मे होता है तो वायुमण्डल मात्र वायुयान परिवहन तक ही सीमित है। स्थानीय यातायात के लिए इन माध्यमो में रेलमार्ग एव

सडको का विशेष महत्व है। इनके द्वारा ही क्षेत्र मे सामाजिक सेवाओ को पहुँचाने का कार्य सर्वाधिक किया जाता है।[7] जनपद देवरिया मे परिवहन माध्यमो का विवरण इस प्रकार है–

(अ) जल परिवहन

जल परिवहन एक सस्ता परिवहन माध्यम है जो भारी सामान ढोने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।[8] समतल क्षेत्र तथा जनपद के मध्य मे बहने वाली *छोटी गण्डक* नदी तथा दक्षिणी भाग मे प्रवाहित होने वाली *राप्ती* एव *घाघरा* नदियो मे जल परिवहन की पर्याप्त सम्भावनाएँ है। इन मार्गो का उपयोग छोटी दूरी के परिवहन के लिए किया जाता है। प्राचीनकाल मे व्यापार का प्रमुख माध्यम ये जलमार्ग ही थे। दक्षिणी भाग मे स्थित सेवाकेन्द्र क्रमश *बरहज* एव *भागलपुर* के विकास मे इन मार्गो की विशेष भूमिका है। ये ही प्राचीन काल के प्रमुख व्यापारिक स्थल थे क्योकि नदियो के किनारे स्थित प्रमुख पतन थे। बरसात के दिनो मे जब इन नदियो के बाढ का विस्तार पास के विस्तृत कृषि क्षेत्र पर हो जाता है उस समय सडक मार्ग जल समाधि ले लेता है वैसे मे जलमार्ग क्षेत्रीय सम्बद्धता मे विशेष भूमिका निभाते है। इनसे होकर वस्तुओ एव यात्रियो का परिवहन होता है।

(ब) रेल–परिवहन

जनपद मे रेल परिवहन मार्ग का निर्माण एव विकास अग्रेजी काल मे हुआ। यहॉ 1882 से रेलमार्ग का निर्माण आरम्भ हुआ जिसे 15, जनवरी 1885 को परिवहन के लिए खोल दिया गया। वर्तमान समय मे अध्ययन क्षेत्र मे 111 किमी लम्बी इकहरी ब्राडगेज की रेलवे लाइन है। ये सभी *उत्तरी–पूर्वी रेलवे जोन* के अतर्गत सम्मिलित है जिसका मुख्यालय गोरखपुर मे है। जनपद के औद्योगिक विकास मे रेलमार्ग की विशेष भूमिका है। प्रमुख उद्योग (चीनी उद्योग) की सभी इकाइयॉ रेलमार्गो के किनारे ही स्थापित है। इनके माध्यम से इन्हे गन्ने की प्राप्ति होती है। देवरिया जनपद मे 15 *विकासखण्ड* है। इनमे *गौरीबाजार, बैतालपुर देवरिया सदर भटनी, भाटपार बनकटा सलेमपुर, लार भागलपुर और गौराबरहज* विकासखण्डो मे रेलमार्गो का विस्तार है। रेलमार्ग का सर्वाधिक विस्तार *सलेमपुर* एव *भटनी* विकासखण्ड मे है। भटनी एव सलेमपुर रेलवे जक्शन हैं। जनपद मे सर्वाधिक विस्तार *गोरखपुर–सोनपुर रेललाइन* का है। यह मार्ग सबसे व्यस्त भी रहता है। इस पर जनपद मे गौरीबाजार बैतालपुर, देवरिया सदर अहिल्यापुर नूनखार भटनी जक्शन, नोनापार, भाटपार रानी बनकटा रेलवे स्टेशन है। ***भटनी जक्शन*** पर *औरिहार–इलाहाबाद मुख्य लाइन* आकर *गोरखपुर– सोनपुर लाइन* से मिलती है। ***सलेमपुर जक्शन*** *भटनी–औरिहार– इलाहाबाद लाइन* पर स्थित है। यहॉ से बरहज बाजार के लिए *बान्च लाइन* निकली है। बरहज बाजार पर रेललाइन समाप्त हो जाती है जिससे इसकी सम्बद्धता सीमित हो जाती है। इस प्रकार रेल मार्ग जनपद के 10 विकासखण्डो मे विस्तृत है। क्षेत्रीय विकास मे अपना योगदान कर रेलवे ने सराहनीय कार्य किया है।

(स) सडक–परिवहन

अध्ययन क्षेत्र के समतल भू–भाग के कारण सडके सबसे प्राचीन परिवहन मार्ग है। अपेक्षाकृत कम लागत के कारण रेलमार्गों की तुलना मे सडको का अधिक विकास हुआ है। साथ ही रेलमार्ग से सभी सेवाकेन्द्रो को सम्बद्ध करना कठिन है किन्तु प्रत्येक सेवाकेन्द्र को सडको से जोडा जा सकता है। अत स्वतत्रता के पश्चात् विभिन्न नदियो पर पुलो का निर्माण सडको का निर्माण तथा उनको पक्का करने की गति मे तीव्रता आयी जिससे क्षेत्र मे सडको का जाल बिछ गया है। यद्यपि क्षेत्र मे नदी–नालो की अधिकता तथा बाढ के प्रभाव के कारण इसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पडा है। वर्तमान समय मे अध्ययन क्षेत्र मे राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर राज्य उच्च मार्ग मुख्य जिला मार्ग अन्य जिलामार्ग तथा पीण्डब्लूण्डी की सडके विकसित है। अध्ययन क्षेत्र मे पक्की सडको की कुल लम्बाई 1940 किमी है। इसमे 1813 किमी मे *राष्ट्रीय राजमार्ग* (4 किमी) *राज्य उच्चपथ* (68 किमी) *मुख्य जिला सडके* (134 किमी) *अन्य जिला मार्ग* (335 किमी) एव *ग्रामीण सडके* (1272 किमी) है। शेष मे जिला पचायत नगरपालिका सिचाई विभाग एव गन्ना विभाग की सडके विस्तृत है। सभी प्रकार की सडको सहित पक्की सडको की विकास खण्डवार लम्बाई सारणी 6 1 मे प्रस्तुत है। चित्र 6 1 मे देवरिया जनपद के परिवहन प्रतिरूप को प्रस्तुत किया गया है।

6 3 सडक परिवहन–महत्व

किसी भी क्षेत्र के विकास मे परिवहन मार्गों का महत्व रेखाकित हो चुका है। इसमे सडक सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। सडको का अपेक्षाकृत अधिक महत्व निम्न कारणो से है–

1 अपेक्षाकृत कम लागत के कारण रेलमार्गो की तुलना मे सड़क का विकास सुगमता पूर्वक किया जा सकता है

2 प्रत्येक सेवाकेन्द्र रेलमार्ग से नही जुड सकते, पर सडको द्वारा सभी को सम्बद्ध किया जा सकता है।

3 रेलमार्गों की तुलना मे सडको के माध्यम से वस्तुओ एव सेवाओ की आपूर्ति सेवाकेन्द्रो पर तथा सेवाकेन्द्रो से सेवाक्षेत्रो मे सुगमता पूर्वक की जा सकती है।

उपर्युक्त विशेषताओ के अलावे सडके सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से भी बहुत महत्पूर्ण हैं। जिन क्षेत्रो मे सड़क अभिगम्यता पर्याप्त है वहॉ अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक और सामाजिक सुविधाओ का प्रसरण होने लगता है जिससे क्षेत्र विकासशील हो उठता है। किसी भी क्षेत्र मे सिर्फ सडको का होना ही पर्याप्त नही है। बल्कि सडके अच्छी स्थिति मे होनी चाहिए। ऐसा नही होने पर इसका दुष्प्रभाव श्रखलाबद्ध रूप मे क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। जिन क्षेत्रो मे सडके टूटी–फुटी और बुरी स्थिति मे होती हैं, वहॉ वाहनो की दुर्गति होती है जिससे उनकी

TRANSPORT NETWORK OF DEORIA DIST (2002)
N
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
MAIN DISTRICT ROAD
& OTHER DISTRICT ROA
PWD ROAD
RAIL LINE
6 0 6 KM
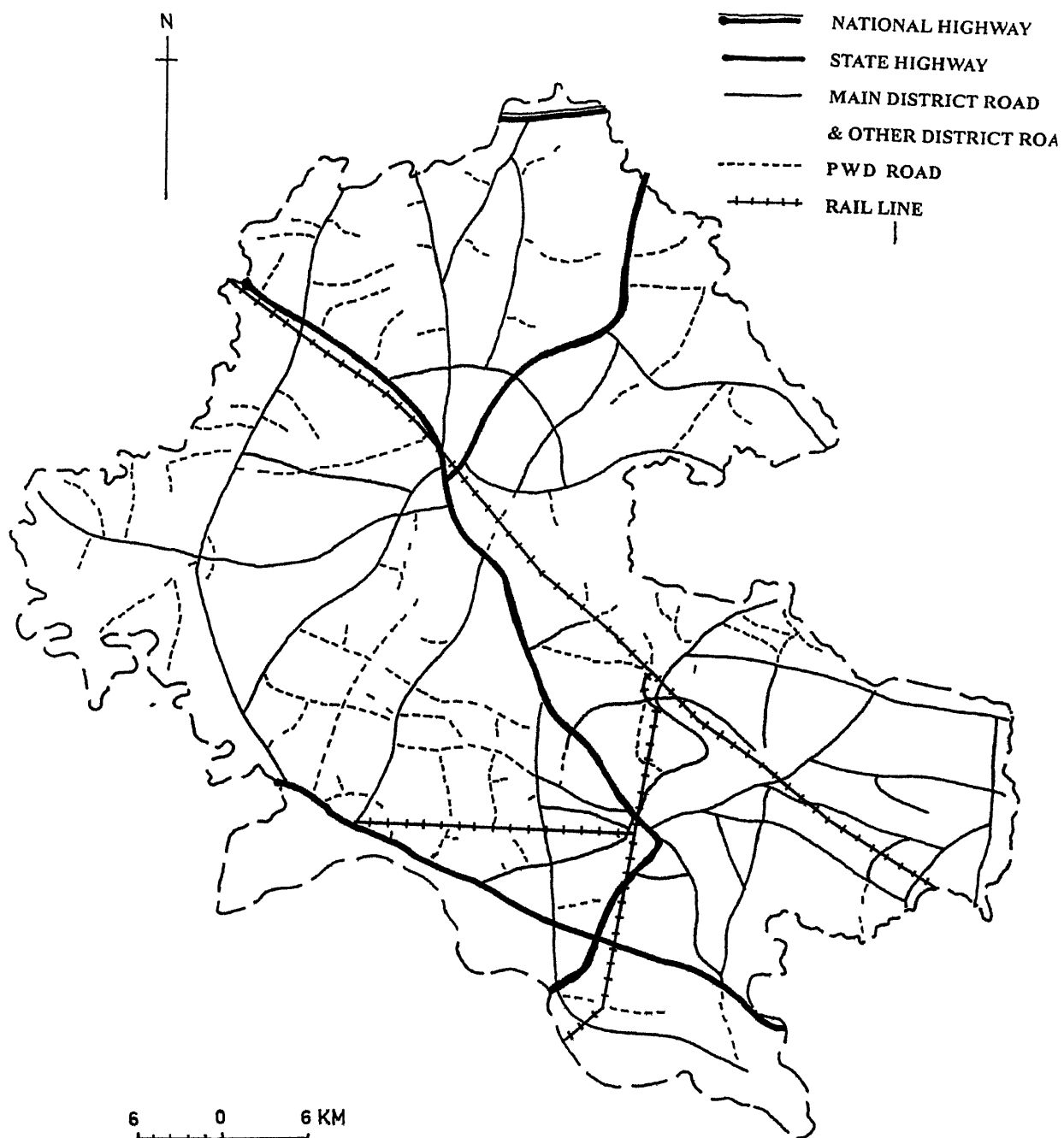
FIG 61

सारणी– 6 1

जनपद मे विकासखण्डवार पक्की सडको की लम्बाई (किमी) (2000–01)

विकास खण्ड	पक्की सडको की लम्बाई	सड़को से जुड़े ग्रामो की सख्या (जनसख्यावार)		
		1000 से कम वाले ग्राम	1000 से 1499 वाले ग्राम	1500 से अधिक वाले ग्राम
1 गौरीबाजार	168	36	13	7
2 बैतालपुर	137	17	22	9
3 देसही देवरिया	120	14	31	13
4 पथरदेवा	160	33	14	17
5 रामपुर कारखाना	109	40	12	13
6 देवरिया सदर	182	43	28	19
7 रुद्रपुर	94	57	17	14
8 भलुअनी	99	24	15	11
9 बरहज	102	20	18	9
10 भटनी	101	23	15	12
11 भाटपाररानी	107	61	21	16
12 बनकटा	112	29	21	12
13 सलेमपुर	134	51	34	20
14 भागलपुर	99	43	14	21
15 लार	110	23	29	14
योग ग्रामीण	**1834**	**514**	**299**	**207**
नगरीय	**106**			
कुल जनपद	**1940**	**514**	**299**	**207**

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका– 2001,

आयु कम हो जाती है। ग्रामीण क्षेत्रो मे अच्छी सडको के अभाव मे डीजल–पेट्रोल की औसत से ज्यादा खपत होती है। सडक परिवहन मत्रालय की एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार खराब सडको की वजह से वाहन पचास फीसदी तक ज्यादा डीजल खपत करते है। यह राष्ट्रीय क्षति है[9] भारत जैसे देश के लिए जो ऊर्जा सकट की समस्या से जूझ रहा है यह और भी गभीर समस्या है। इन्ही कारणो से ग्रामीण परिवहन तथा यातायात की स्थिति आज भी दयनीय है। भारत मे भी सुप्रीमकोर्ट के फैसले के बाद *यूरो–II मॉडल* के वाहन चलने लगे हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रो मे इनकी सारी उच्च गुणवत्ता सडको की खराब स्थिति के कारण धरी की धरी रह जाएगी। चूँकि सडके अच्छी नही है, इसलिए सब्जियॉ अनाज, दस्तकारी के सामान गॉवो से उचित समय पर बाजार तक नही पहुँच पाते। विपणन की दयनीय स्थिति के कारण ही आज ग्रामीण क्षेत्रो मे आर्थिक विकास उतना नही हो सका है, जितना हमारे बाद आजाद हुए चीन मे हुआ है।

देवरिया की अधिकाश जनसख्या कृषि पर आधारित है यहॉ का छोटा–बडा उद्योग भी कृषि

आधारित ही है। अत समतल भू–क्षेत्र वाले इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था मे विकास के लिए सडके विशेष लाभदायी हैं। विकास मे सडक की भूमिका यहॉ के अधिक सडक घनत्व वाले क्षेत्रो मे देखने से स्पष्ट हो जाती है। ये क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विकसित हैं।

6 4 सडक घनत्व

सडक परिवहन का अधिकाधिक प्रयोग अपेक्षाकृत कम दूरी के यातायात के लिए किया जाता है। पिछडे क्षेत्र के आर्थिक तन्त्र के प्रादेशिक सन्तुलन के लक्ष्यपूर्ति मे रेल की अपेक्षा सडक अधिक उपादेय सिद्ध होती है। किन्तु सडको की उपादेयता की विश्लेषण मे उनकी लम्बाई की अपेक्षा सघनता का प्रयोग अधिक समीचीन प्रतीत होता है। सडको की स्थिति (टूटी–फूटी या अच्छी स्थिति) एव चौडाई भी उपादेयता के प्रमुख निर्धारक तत्वो मे शामिल हैं परन्तु प्रस्तुत विश्लेषण मे इन्हे स्थिर मानकर *घनत्व* के आधार पर उपादेयता का विश्लेषण किया गया है। सडको के घनत्व का आर्थिक विकास क्षेत्रीय विस्तार जनसख्या तथा आर्थिक कार्यकलापो के वितरण प्रतिरूप एव वैकल्पिक परिवहन साधनो के विकास से घनिष्ट अतर्सम्बन्ध है। अध्ययन क्षेत्र मे सडक घनत्व अत्यधिक न्यून है। सापेक्षिक दृष्टि से सडक घनत्व उन्ही भागो मे अधिक है जहॉ जनसख्या एव आर्थिक कार्यकलाप की सघनता है।

प्रस्तुत अध्ययन मे सडक घनत्व की गणना दो प्रकार से की गयी है। *प्रथम* विकासखण्ड स्तर पर प्रति 1,000 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर तथा *द्वितीय* 1 00 000 की मानक जनसख्या पर (विकासखण्ड स्तर पर)। इसे सारणी (6 2) एव चित्र (6 2) मे प्रस्तुत किया गया है। इनसे सडक घनत्व को आसानी से प्रत्यक्षीकृत किया जा सकता है।

सारणी 6 2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे प्रति 1 000 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर पक्की सडको का घनत्व सर्वाधिक *देवरिया सदर* विकास खण्ड मे तथा न्यूनतम *भलुअनी* विकास खण्ड मे है। विकास खण्ड स्तर पर सड़को का घनत्व अवरोही क्रम मे क्रमश— देवरिया सदर गौरीबाजार देसही देवरिया, सलेमपुर बनकटा लार भाटपाररानी बैतालपुर, रामपुर कारखाना बरहज पथरदेवा भटनी भागलपुर रुद्रपुर और भलुअनी मे हैं। मानचित्र से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र का उत्तरी और पूर्वी क्षेत्र सडक घनत्व मे सम्पन्न क्षेत्र है जबकि दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्र अपेक्षाकृत कम घनत्व के क्षेत्र है। शेष भागो मे सडक घनत्व अपेक्षाकृत औसत है।

प्रतिलाख जनसख्या के आधार पर भी सडक घनत्व का लगभग यही प्रतिरूप उभरता है। *देवरिया सदर* सर्वाधिक घनत्व वाला विकासखण्ड है। जनसख्या के आधार पर सडक घनत्व का विकास खण्डवार अवरोही क्रम निम्नवत् है— देवरियासदर, देसही देवरिया बरहज, गौरीबाजार बनकटा, बैतालपुर, भागलपुर, सलेमपुर लार रामपुर कारखाना, भाटपाररानी पथरदेवा, भटनी रुद्रपुर, भलुअनी।

जनपद देवरिया का सडक घनत्व 2001
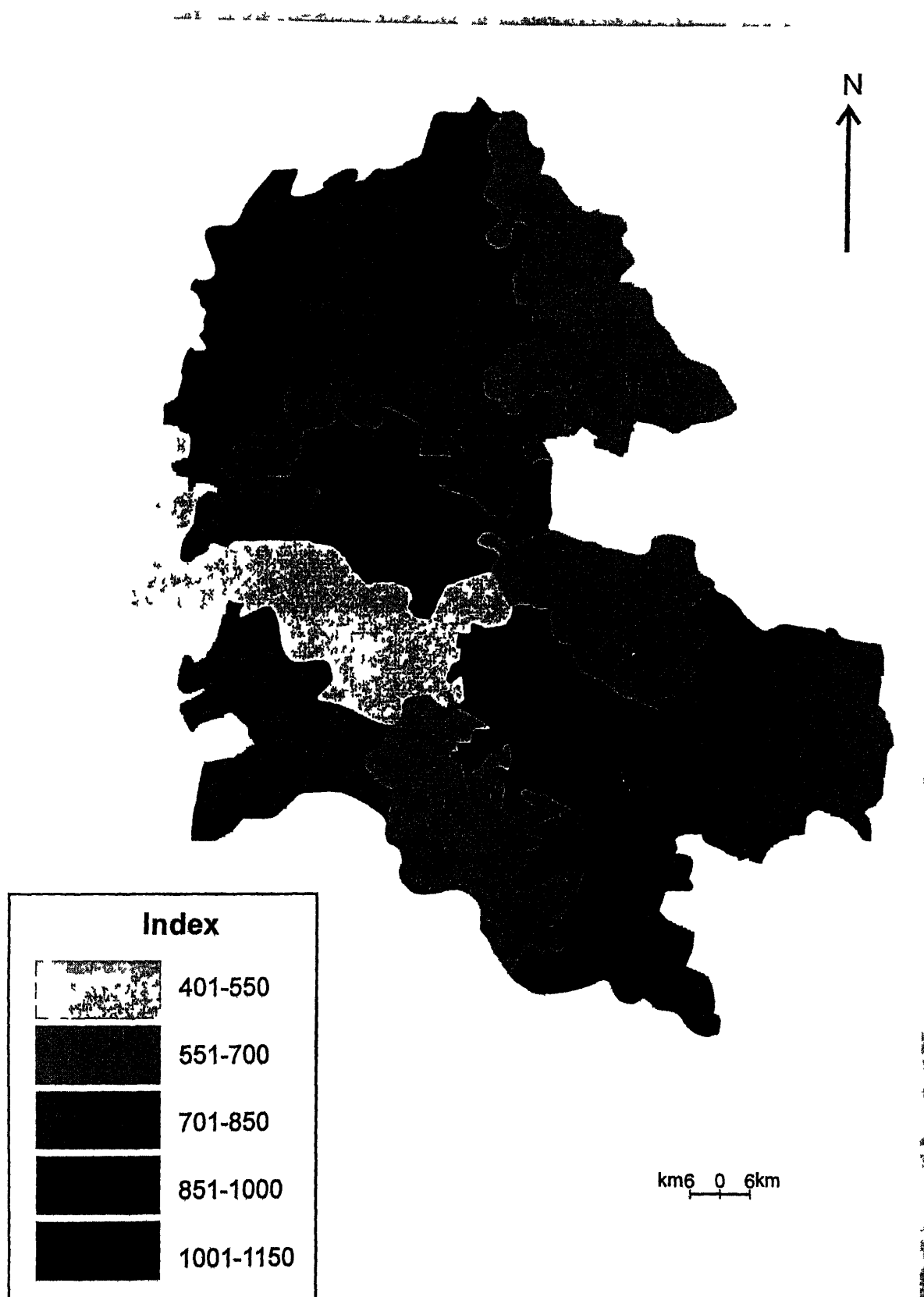
Fig 6 2

सारणी– 6 2

जनपद मे विकासखण्डवार सडको का घनत्व (क्षेत्रफल एव जनसख्या के आधार पर (2000–01)

विकास खण्ड	पक्की सडको की लम्बाई	प्रतिलाख जनसख्या पर कुल पक्की सडको की लम्बाई (किमी)–2000	प्रतिलाख जनसख्या पर लो नि वि द्वारा सधृत सडको की लम्बाई (किमी)–2000	प्रतिहजार वर्ग किमी पर कुल पक्की सडको की लम्बाई (किमी)–2000
1 गौरीबाजार	168	102 5	67 7	915 5
2 बैतालपुर	137	94 5	62 8	767 1
3 देसही देवरिया	120	106 9	69 5	904 3
4 पथरदेवा	160	84 1	63 1	695 3
5 रामपुर कारखाना	109	89 0	59 6	765 4
6 देवरिया सदर	182	113 8	61 9	1011 7
7 रुद्रपुर	94	73 7	56 4	489 8
8 भलुअनी	99	70 4	48 3	411 6
9 बरहज	102	105 4	78 5	744 5
10 भटनी	101	82 5	51 4	685 7
11 भाटपाररानी	107	88 9	77 3	795 5
12 बनकटा	112	96 0	60 8	821 7
13 सलेमपुर	134	93 6	73 4	897 5
14 भागलपुर	99	93 7	89 0	664 0
15 लार	110	91 3	56 4	814 8

स्रोत–साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया – 2001 पृ– 104, 167, 168 से सगणित

सारणी 6 2 को देखने से एक बात और स्पष्ट होती है, कि जिन विकासखण्डो मे सडक घनत्व अपेक्षाकृत कम है वे कम विकसित विकासखण्ड हैं। इनमे क्रमश *बरहज* (744 5) *भटनी* (685 7) *भागलपुर* (664), *रुद्रपुर* (489 8) और *भलुअनी* (411 6) विकासखण्ड शामिल हैं। इनमे प्रति हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर अपेक्षाकृत कम सड़के हैं। ये सभी विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी एव दक्षिणी क्षेत्र से सम्बद्ध है। यह क्षेत्र *राप्ती* और *घाघरा* नदियो के बाढ से सर्वाधिक प्रभावित रहता है। जिससे बरसात के दिनो मे इसका सडक सम्पर्क अन्य भागो से कट जाता है। बाढ के कारण खरीफ की फसले नही हो पाती है। रबी इन क्षेत्रो की प्रधान फसल है। अत इन क्षेत्रो मे पक्की सडको के विकास से क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

6 5 सडक अभिगम्यता

प्राय मानव अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे कम से कम समय तथा शक्ति का उपयोग करना चाहता है। लेकिन इसकी सम्भाव्यता सडको की अभिगम्यता की तीव्रता पर निर्भर है। सडक

अभिगम्यता का तात्पर्य यथा सम्भव कम समय तथा कम शक्ति के व्यय पर निर्वाध गति से सुगमता पूर्वक किसी सडक या सेवाकेन्द्र पर पहुँचने से है। सडको की अभिगम्यता से सडको की सघनता तथा गमनागमन की सुविधा का ज्ञान होता है। साथ ही इसकी तीव्रता से किसी क्षेत्र के विकास का स्तर एव सडक जाल की प्रभावोत्पादकता का मापन होता है। सामान्यतया मार्ग जाल की गम्यता परिवहन मार्गो से एक विशेष दूरी द्वारा प्रकट की जाती है। भिन्न–भिन्न क्षेत्रो मे एक ही दूरी को अभिगम्यता का मानक मापदण्ड नही माना जा सकता। अभिगम्यता का मापदण्ड साधारणतया व्यक्तिनिष्ठ होता है। अभिगम्यता बहुत कुछ सडक की स्थिति पर भी निर्भर करती है क्याकि यदि सडक रहे और टूटी–फूटी हालत मे हो तो अभिगम्यता पर प्रतिकूल असर पडता है। सडक तन्त्र के विकसित होने से अगम्य क्षेत्र लुप्त प्राय हो जाता है। भारत मे सडको के विकास के लिए अभिगम्यता मानदण्ड सर्वप्रथम 1943 मे *'नागपुर योजना'* के अन्तर्गत निर्धारित की गयी। उसके बाद *'बम्बई योजना'* के रूप मे इसे सशोधित रूप मे प्रस्तुत किया गया। इन दोनो योजनाओ द्वारा निर्धारित सडक अभिगम्यता मानदण्डो को सारणी 6 3 मे प्रस्तुत किया गया है।

सारणी– 6 3

नागपुर तथा बम्बई योजनाओ द्वारा निर्धारित सडक अभिगम्यता मानदण्ड

क्रम स0	क्षेत्र विवरण	किसी भी गाँव की अधिकतम दूरी (किमी)	
		किसी भी सडक से	मुख्य सडक से
1	**नागपुर योजना**		
	1 कृषि क्षेत्र	3 22	8 05
	2 कृष्येत्तर क्षेत्र	8 05	32 10
2	**बम्बई योजना**		
	1 विकसित कृषि क्षेत्र	2 41	6 44
	2 अविकसित कृषि क्षेत्र	8 05	19 31

राष्ट्रीय स्तर पर सडक परिवहन के विश्लेषण मे अधिकाशतया इसी मानदण्डो को ही अपनाया जाता रहा है। किन्तु कृषि प्रधान तथा दक्षिणी क्षेत्र बाढग्रस्त इस जनपद के लिए उक्त मानदण्ड उपयुक्त नही है। इसके दो प्रमुख कारण हैं। *प्रथम–* यह मानदण्ड आर्थिक विकास के स्तर से सम्बन्धित है, जबकि अध्ययन क्षेत्र मे सूक्ष्म स्तर पर आर्थिक विकास के स्तर के अतिरिक्त भौतिक सामाजिक एव सास्कृतिक स्तर पर विभिन्नता पायी जाती है। *द्वितीय–* यह मापदण्ड अत्यधिक प्राचीन है। अत आज के बदले हुए परिवेश मे देवरिया जनपद मे सड़को की अभिगम्यता मापन के लिए उपर्युक्त मापदण्ड उपयुक्त प्रतीत नही होती है। अत व्यावहारिक अभिगम्यता को देखते हुए इस भाग मे सडक अभिगम्यता के मापन के लिए निम्नलिखित को अभिगम्य माना जा सकता है–

1 मुख्य पक्की सडको से 3 किमी दूर तक स्थित बस्तियाँ,

सारणी– 6 4

देवरिया जनपद मे सडकमार्ग द्वारा अभिगम्य बस्तियॉ

विकास खण्ड	कुल आबाद ग्राम	बारहमासी सडको से सबद्ध ग्राम	कुल ग्राम से सबद्ध ग्राम का प्रतिशत	कुल ग्राम से असम्बद्ध ग्राम का प्रतिशत
1 गौरीबाजार	114	56	49 12	50 88
2 बैतालपुर	127	48	37 79	62 21
3 देसही देवरिया	86	58	67 44	32 56
4 पथरदेवा	150	64	42 66	57 34
5 रामपुर कारखाना	113	65	57 52	42 48
6 देवरिया सदर	155	80	51 61	48 39
7 रुद्रपुर	159	88	55 34	44 66
8 भलुअनी	171	50	29 23	70 77
9 बरहज	94	47	50 00	50 00
10 भटनी	107	50	46 72	53 28
11 भाटपाररानी	117	98	83 76	16 24
12 बनकटा	148	62	41 89	50 11
13 सलेमपुर	203	105	51 72	48 28
14 भागलपुर	122	78	63 93	36 07
15 लार	124	66	53 22	46 78
योग जनपद			52 13	47 87

स्रोत–साख्यिकी पत्रिका– 2001 पृ– 24, 104 से परिकलित

2 अन्य पक्की सडको से 2 किमी दूरस्थ तक की बस्तिया तथा

3 किसी भी खडन्जा मार्ग या कच्चे मार्ग से सम्बद्ध बस्तियॉ,

परन्तु ये मार्ग बारहमासी होने चाहिए।

उपर्युक्त मानदण्डो के आधार पर जनपद मे वर्षभर परिवहन योग्य सडको से सम्बद्ध एव अभिगम्य बस्तियो को सारणी 6 4 मे प्रस्तुत किया गया है तथा उक्त आधार पर अभिगम्यता मानचित्र (6 3) मे प्रदर्शित है। सारणी एव मानचित्र से स्पष्ट है कि जनपद की अभिगम्यता औसत है। उच्च जनघनत्व वाले इस क्षेत्र के लिए इस अभिगम्यता को सतोषजनक नही कहा जा सकता। जनपद का औसत 52 13 प्रतिशत क्षेत्र सडक मार्ग द्वारा अभिगम्य है जबकि शेष 47 87 प्रतिशत भाग आज भी सडक मार्ग से कटा हुआ है। अत क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए जनपद के प्रत्येक बस्ती को सडक से सम्बद्ध होना आवश्यक है। जनपद मे सर्वाधिक अभिगम्यता *भाटपाररानी* विकास खण्ड मे (83 76) है। उसके बाद क्रमश देसही देवरिया भागलपुर रामपुर कारखाना रुद्रपुर, लार, सलेमपुर देवरिया सदर, बरहज, गौरीबाजार भटनी, पथरदेवा, बनकटा बैतालपुर एव भलुअनी का स्थान है। *भलुअनी* में निम्नतम मात्र 29 23 गॉव ही सड़को द्वारा अभिगम्य हैं। इनमे से क्रमश भाटपार रानी देसही देवरिया, भागलपुर रामपुर कारखाना रुद्रपुर

चित्रारेख– 6 3

जनपद देवरिया सडक मार्ग द्वारा अभिगम्य बस्तियाँ– 2001
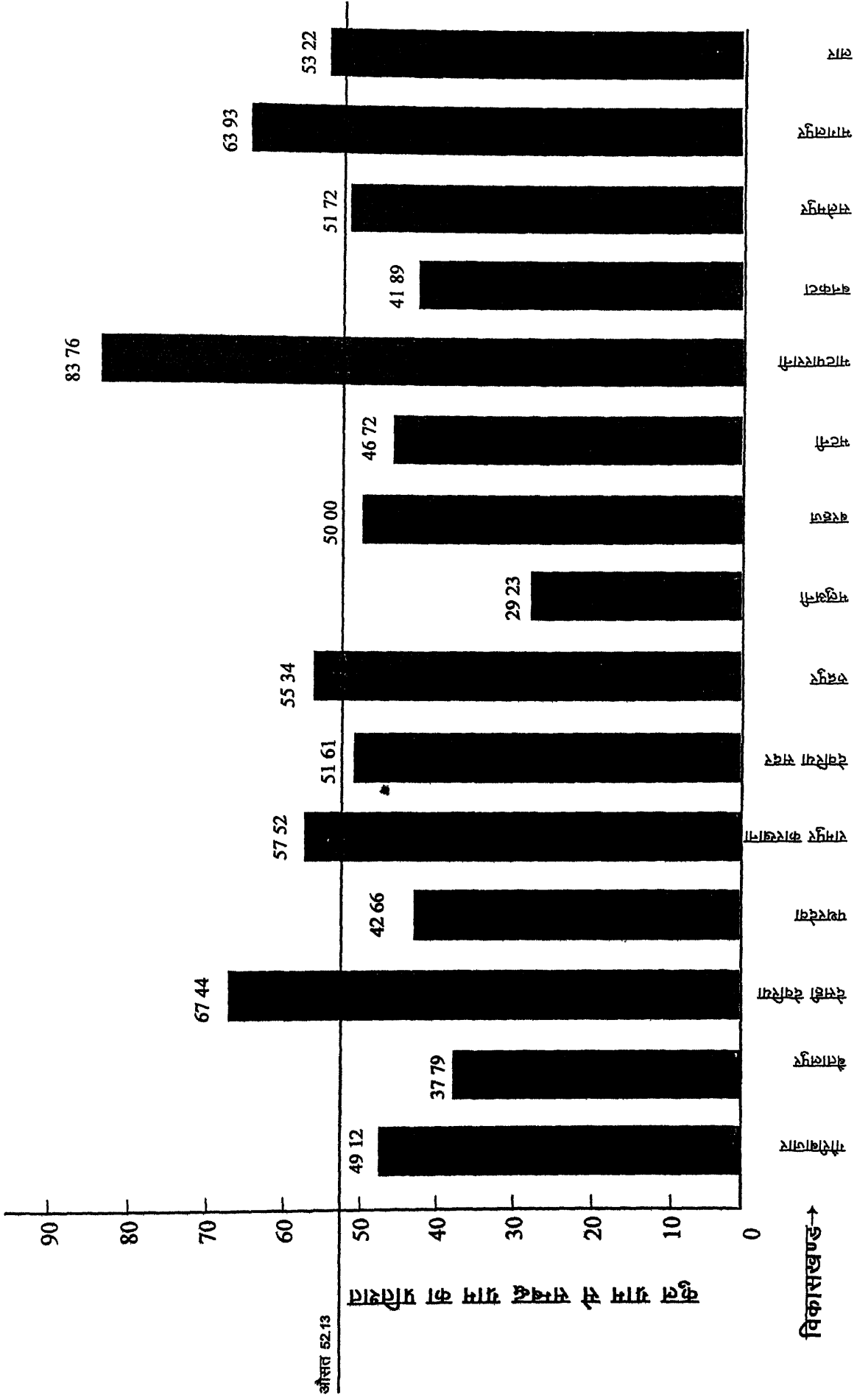
METALLED ROAD CONNECTIVITY MATRIX (Dist Deoria 2001)

सेवाकेन्द्र	SC	DR	SL	GB	BP	BT	BR	LR	RK	BP	RP	BK	TK	BH	IP	RL	MP	BL	MR	SP	BG	KP	BY	PD	BN	DD		SC	SERVICE CENTRE
देवरिया	DR		/	/	/		/	/	/		/		/	/				/				/	/		/		13	DR	DEORIA
सलेमपुर	SL	/				/		/		/				/					/	/	/						8	SL	SALEMPUR
गौरीबाजार	GB	/			/						/				/	/											5	GB	GAURI BAJAR
बैतालपुर	BP	/		/					/									/								/	5	BP	BAITAL PUR
भटनी	BT		/																								1	BT	BHATNI
बरहज	BR	/						/			/						/								/		5	BR	BARHAJ
लार	LR	/	/				/							/					/								5	LR	LAR
रामपुर	RK	/			/								/					/				/	/			/	7	RK	RAMPUR KARKHANA
भाटपार	BP		/																/		/						3	BP	BHATPAR
रुद्रपुर	RP	/		/			/								/	/	/										6	RP	RUDRA PUR
बनकटा	BK																			/							1	BK	BANKATA
तरकुलवाँ	TK	/							/													/					3	TK	TARKULWA
भागलपुर	BH	/	/					/																			3	BH	BHAGAL PUR
इन्दूपुर	IP			/							/					/											3	IP	INDU PUR
रामलछन	RL			/							/				/												3	RL	RAMLACHHAN
मदनपुर	MP						/				/																2	MP	MADANPUR
बलटीकरा	BL	/			/				/																		3	BL	BALTIKRA
मझौलीराज	MR		/					/		/										/	/						5	MR	MAJHAULI RAJ
सोहनपुर	SP		/									/							/								3	SP	SOHAN PUR
भिंगारी	BG		/							/									/								3	BG	BHINGARI
कचनपुर	KP	/							/				/											/			4	KP	KANCHAN PUR
बरियारपुर	BY	/							/																		2	BY	BARIYAR PUR
पथरदेवा	PD																					/					1	PD	PATHAR DEVA
भलुअनी	BN	/					/																				2	BN	BHALUANI
देसही देवरिया	DD				/				/																		2	DD	DESAI DEORIA
	T	13	8	5	5	1	5	5	7	3	6	1	3	3	3	3	2	3	5	3	3	4	2	1	2	2	98		

और लार विकास खण्डो मे ही अभिगम्यता *जनपद औसत* (52 13) से ऊँची है। शेष सभी विकास खण्डो की अभिगम्यता औसत से निम्न है।

6 6 सडक सम्बद्धता

सडको की आपस मे सम्बद्धता सडक परिवहन के विश्लेषण का एक अद्वितीय माध्यम है। परिवहन व्यवस्था की सुगमता सडक तन्त्र के विकास का स्तर तथा सघनता का बोध सडक सम्बद्धता से ही स्पष्ट होता है। जिन क्षेत्रो मे सम्बद्धता अधिक होती है उन क्षेत्रो मे सडको की सघनता तथा गम्यता अधिक होती है। पिछडी अर्थव्यवस्था के सडक जाल प्राय सुसम्बद्ध नही होते है। जबकि विकसित अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्रो मे सडक सम्बद्धता अधिक पायी जाती है। जहॉ सडके इस प्रकार वितरित हो कि कोई भी सडक किसी आतरिक बिन्दु पर जाकर अकस्मात समाप्त नही होती है वरन् उसके दोनो छोर अन्य सडको से सम्बन्धित हो तो उसे *सुसम्बद्ध सडक जाल* कहा जाता है। दूसरी ओर जहॉ प्रमुख सडको से आबद्ध क्षेत्र के मध्य अन्य सडके अकस्मात् किसी बिन्दु पर समाप्त हो जाती है अर्थात उनके द्वारा हर दिशा मे यात्रा बिना वापस लौटे नही की जा सकती तो उसे *असम्बद्ध सडक जाल* कहा गया है। इन दोनो के बीच की स्थिति को सामान्य सम्बद्धता की दशा मानी गयी है। जो सडक जाल जितना ही सुसम्बद्ध होगा उसमे परिक्रमता उतनी ही कम होगी।[10] अध्ययन क्षेत्र मे सम्बद्धता को तीन माध्यमो से तीन स्तरो पर ज्ञात किया गया है। **प्रथम**– *परिवहनीय सम्बद्धता* **द्वितीय**–*सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता* तथा **तृतीय**– *मार्ग जाल की सम्बद्धता*।

(अ)– परिवहनीय सम्बद्धता

इसके अतर्गत सडक मार्गो के दूसरे सडको से सम्बद्धता एव प्रत्येक सडक की अभिगम्यता को सयुक्त कर पहले जनपद मे पायी जाने वाली प्रत्येक सडक का मूल्य ज्ञात किया गया है। चूॅकि जनपद मे राष्ट्रीय राजमार्ग राजकीय राजमार्ग, जिला मार्ग अन्यजिलामार्ग तथा ग्रामीण मार्ग मिलकर एक सडक जाल का निर्माण करती है। अत इस सडक सरचना मे स्थित प्रत्येक प्रकार का सेवाकेन्द्र सड़क अभिगम्यता के मूल्य के अनुसार ही लाभ प्राप्त करेगा। राजकीय सडके एव जिला मार्ग ज्यादे अभिगम्य होती है, जबकि ग्रामीण मार्ग कम। इसी भॉति इनसे जुड़े सेवाकेन्द्रो का सेवाक्षेत्र भी कम या ज्यादे विस्तृत होता है। अत उक्त आधार पर चतुर्थ अध्याय मे परिवहनीय सम्बद्धता एव सेवाकेन्द्रो के सन्दर्भ मे परिवहनीय सम्बद्धता सूचकाक की गणना की गयी है। इसे सारणी 4 4 मे प्रस्तुत किया गया है। उक्त सारणी के आधार पर देवरिया सेवाकेन्द्र का सबसे अधिक सम्बद्धता मूल्य (55 33) है। इसके बाद क्रमश सलेमपुर (46 00), गौरी बाजार (38 0), बैतालपुर (31 16) आदि सेवाकेन्द्रो का स्थान है। सबसे कम मूल्य घाटी का (1 00) है।

(ब) सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता

सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि जनपद देवरिया के प्रमुख सेवाकेन्द्र आपस मे कितने सेवाकेन्द्रो से जुडे हुए है। इस सडक सम्बद्धता को ज्ञात करने मे केवल पक्की सडको को ही आधार बनाया गया है। यद्यपि कच्ची सडको द्वारा भी सेवाकेन्द्रो मे सम्बद्धता पायी जाती है किन्तु जनपद के दक्षिणी एव दक्षिणी पूर्वी भाग के बाढगस्त क्षेत्र होने के कारण तथा क्षेत्र मे अत्यधिक नालो के होने के कारण एव समुचित पुलो के अभाव के कारण वर्षा के दिनो मे सम्बद्धता भग हो जाती है। अस्तु सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता विश्लेषण मे समरूपता लाने के लिए कच्ची सडक एव खडजा मार्गो को छोड दिया गया है। अध्ययन क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता ज्ञात करने के लिए मानचित्र 6 1 के आधार पर *कनेक्टिविटी मैट्रिक्स'* बनाया गया है। जिसे सारणी 6 5 के रूप मे देखा जा सकता है। जनपद का सबसे सम्बद्ध सेवाकेन्द्र *देवरिया* है। यह प्रत्यक्षत 13 सेवाकेन्द्रो से जुडा है। इसके बाढ *सलेमपुर* 8 सेवाकेन्द्रो से सम्बद्ध है। *रामपुर कारखाना* की सम्बद्धता 7 तथा *रुद्रपुर* की सम्बद्धता 6 है। इसके बाद *गौरीबाजार बैतालपुर बरहज लार* और *मझौलीराज* सभी 5 सेवाकेन्द्रो से सम्बद्ध हैं। *कचनपुर* की सम्बद्धता 4 तथा *भाटपार तरकुलवा भागलपुर इन्द्रपुर रामलछन बलटीकरा सोहनपुर भिगारी* 3 सेवाकेन्द्रो से सम्बद्ध है। *मदनपुर बरियारपुर भलुअनी* और *देसही देवरिया* की सम्बद्धता 2 है। सबसे कम सबद्धता *भटनी बनकटा* और *पथरदेवा* सेवाकेन्द्र की मात्र एक सेवाकेन्द्र से है।

(स) मार्ग–जाल की सम्बद्धता

मार्ग जालो के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण के लिए कई मापको का उपयोग किया जाता है। इस विश्लेषण विधि मे किसी भी मार्ग जाल को एक ग्राफ के रूप मे माना गया है। जिसमे *बिन्दु (वर्टिक्स)* तथा बाहु *(एजेज)* दो मुख्य तत्व होते है। किसी भी परिवहन माध्यम के मार्ग जाल मे जितने भी उद्‌गम, सगम तथा अतिम या प्रमुख विकास केन्द्र होते है उन्हे *बिन्दु* तथा इनको सीधे सम्बन्धित करने वाले मार्गों को *बाहु* के रूप मे माना जाता है। इसमे दो बिन्दुओ के बीच की दूरी अर्थात् बाहुओ की लम्बाई पर ध्यान नही दिया जाता है। अध्ययन क्षेत्र मे पक्की सडको के जाल के सन्दर्भ मे प्रमुख *बिन्दुओ (v)* की सख्या– 43, *बाहुओ (e)* की सख्या 115 तथा *असम्बद्ध ग्राफ (g)* की सख्या 16 है। इन बिन्दुओ एव बाहुओ के माध्यम से सड़क जाल सम्बद्धता को प्रदर्शित करने वाले *अल्फा (α) बीटा (β)* तथा *गामा (γ)* निर्देशाकों की गणना की गयी है।

(i) अल्फा निर्देशाक (α)

इससे मार्ग जाल के सम्बद्धता स्तर का बोध होता है। इस निर्देशाक का मान 0–1 00 के मध्य होता है। पूर्णत असम्बद्ध मार्ग जाल का मान 0 होता है। पूर्णत सुसम्बद्ध मार्ग जाल का निर्देशाक 1 00 होता है। इस निर्देशाक की गणना निम्न सूत्र से की गयी है[11]–

$$\alpha = \frac{e-v+g}{2v-5}$$

जहाँ–

α = *अल्फा निर्देशाक*

e = *बाहुओ की सख्या*

v = *बिन्दुओ की सख्या तथा*

g = *असम्बद्ध ग्राफो की सख्या*

अध्ययन क्षेत्र के सडक जाल का यह निर्देशाक 0 69 है। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद की सडक जाल सम्बद्धता औसत से कुछ अच्छी है। इस निर्देशाक (0 69) मे 100 से गुणा करके इस सम्बद्धता को प्रतिशत मे भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। इस प्रकार जनपद का मार्ग जाल 69 प्रतिशत सम्बद्ध है, जो एक अच्छी स्थिति है।

(ii) बीटा निर्देशांक (β)

बीटा निर्देशाक से किसी मार्ग–जाल के बाहुओ एव बिन्दुओ के अनुपात का बोध होता है। इस निर्देशाक के अनुसार असम्बद्ध मार्ग जालो का मान 1 00 से कम होता है। एक ही चक्र मे विभिन्न केन्द्र बिन्दुओ को मिलाने वाले मार्ग जाल का मान 1 00 तथा केन्द्र बिन्दुओ के मध्य कई विकल्प वाले मार्ग जाल का मान 1 00 से अधिक होता है। इस निर्देशाक की गणना निम्न सूत्र के द्वारा की जाती है[12]–

$$\beta = \frac{e}{v}$$

जहाँ –

β = बीटा निर्देशाक

e = बाहुओ की सख्या तथा

v = बिन्दुओ की सख्या।

अध्ययन क्षेत्र के सडक जाल के इस निर्देशाक का मान 2 67 है, जिससे स्पष्ट है कि सडक जाल उत्तम ढग से सबद्ध है।

(iii) गामा निर्देशाक (γ)

इससे किसी मार्ग जाल के बाहुओ और बिन्दुओ के अनुपात का बोध होता है किन्तु यह बीटा निर्देशाक से भिन्न है। यह निर्देशाक विद्यमान बाहुओं का अधिकतम बाहुओ के गुणाक का द्योतक है। इस निर्देशाक की गणना निम्नलिखित सूत्र से की जाती है–[13]

$$\gamma = \frac{e}{3(v-2)}$$

जहाँ –

γ = *गामा निर्देशाक*

e = *बाहुओ की सख्या तथा*

v = *बिन्दुओ की सख्या।*

इस निर्देशाक का मान 0–1 00 के मध्य होता है। पूर्ण सम्बद्ध मार्ग जालों का मान 1 00 तथा अपूर्ण सम्बद्धता वाले मार्ग जालो का मान 1 00 से कम आता है। जनपद मे सडक जाल का *गामा निर्देशाक* 0 93 है। इसमे 100 का गुणा करने पर सम्बद्धता प्रतिशत मे ज्ञात हो जाती है। इस प्रकार सडक जाल सम्बद्धता 93 प्रतिशत है। जो अच्छी सम्बद्धता का द्योतक है। *गामा निर्देशाक* तथा *अल्फा निर्देशाक* के सम्बद्धता प्रतिशत मे अन्तर का कारण है अल्फा निर्देशाक उन्ही सडक जालो के लिए उपयुक्त है जिनमे कई असम्बद्ध ग्राफ हो।

इस प्रकार सडक सम्बद्धता के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे सडक सम्बद्धता तथा अभिगम्यता औसत से अच्छी है। परन्तु चूँकि इसमे केवल उन्ही मार्गो को आधार बनाया गया है, जो पक्की हैं, ग्रामीण सडको की उपेक्षा की गयी है, जबकि सेवाकेन्द्रो से सेवाक्षेत्रो को ग्रामीण सडके ही जोडती हैं साथ ही ग्रामीण क्षेत्रो से सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता के बिना सेवाकेन्द्रो के इस सम्बद्धता का कोई मूल्य नही रह जाता। अत आवश्यकता है प्रत्येक ग्राम को पक्की सडको द्वारा सेवा केन्द्रो से सम्बद्ध किया जाय, तभी क्षेत्र का समुचित विकास सम्भव है। अध्ययन क्षेत्र मे इस सम्बद्धता मे क्षेत्रीय स्तर पर काफी भिन्नता मिलती है। *भटनी पथरदेवा बनकटा, बैतालपुर* और *भलुअनी* विकास खण्डो मे सम्बद्धता बहुत ही निम्न स्तर की है। दक्षिणी भाग *राप्ती* और *घाघरा* के बाढ के कारण बरसात भर शेष क्षेत्र से असम्बद्ध हो जाता है। यहाँ बाढ सबसे बडा विकास मे बाधक है।

6 7 यातायात प्रवाह

यातायात प्रवाह से न केवल परिवहन की कार्यात्मक विशिष्टताएँ स्पष्ट होती है अपितु क्षेत्रीय आर्थिक कार्यकलाप आर्थिक अन्तर्सम्बन्ध प्रतिरूप एव आर्थिक विकास का स्तर भी ज्ञात होता है। साधारणत यातायात प्रवाह के अन्तर्गत वस्तुओ एव यात्रियो के आवागमन प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है। इस विश्लेषण के अन्तर्गत तीन बातो का अध्ययन किया जा सकता है। *प्रथम* वस्तुओ के उद्‌गम–गन्तव्य स्थलो पर आने–जाने से व्यापारिक स्वरूप का बोध होता है, *द्वितीय,* प्रतिदिन, प्रति सप्ताह या प्रतिमाह परिवहन मार्ग पर कुल यातायात घनत्व का पता चलता है, तथा *तृतीय* परिवहन के साधनो तथा परिवहित वस्तुओं की सरचना मे परिवर्तन का प्रभाव परिवहन साधनो पर पड़ता है।

यातायात प्रवाह के उपर्युक्त तथ्यो के विश्लेषण से इस क्षेत्र के वर्तमान यातायात प्रवाह के स्वरूप की व्याख्या की जा सकती है। परन्तु किसी निर्धारित मापदण्ड के अभाव मे यह निश्चित कर पाना कठिन है कि विद्यमान यातायात प्रवाह घनत्व की स्थिति पिछडी अर्थव्यवस्था का द्योतक है अथवा विकसित अर्थव्यवस्था का दूसरे ससाधनो की कमी के कारण समय के साथ वस्तुओ के प्रवाह के आकडो का सग्रहण भी सभव नही हो सका।

अध्ययन क्षेत्र के कृषि प्रधान होने कृषि आधारित उद्योग के विकास एव घनी जनसख्या बसाव के कारण यातायात प्रवाह का विशेष महत्व है। यहॉ खाद्यान्नो गन्ना सब्जियो तथा दूग्ध आदि की आपूर्ति विभिन्न शहरो एव औद्योगिक केन्द्रो पर सडक मार्ग से ही होता है। विभिन्न सेवाओ कार्यों एव वस्तुओ के क्रय–विक्रय के लिए यात्रियो के परिवहन का सर्वप्रमुख माध्यम सडकमार्ग ही है। जनपद से बाहर जाने वाली वस्तुओ तथा बाहर से जनपद मे आने वाली वस्तुओ के लिए ट्रको एव रेल गाडियो का उपयोग होता है। इनमे प्रमुखत चूना सीमेन्ट पेट रसायन रासायनिक उर्वरक आदि शामिल है। क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न सामानो की आपूर्ति ट्रैक्टर द्वारा पूरी की जाती है। इसके आलावे यात्रियो के आवागमन के लिए बसो ट्रैक्टरो जीप टैक्सी बैलगाडी रिक्सा स्कूटर, मोटरसाइकिल तथा साइकिल आदि का उपयोग होता है। मौसम के अनुसार यातायात मे परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। सामान्यत शादी–विवाह के अवसरो (मार्च अप्रैल से जून) पर इसकी आवृत्ति बढ जाती है।

यातायात प्रवाह के उपर्युक्त ऑकडो का एकत्रीकरण निश्चित समय के अन्दर सम्भव नही है दूसरे यातायात प्रवाह मे परिवर्तन बहुत अधिक होता है क्योकि यातायात प्रवाह मे परिवर्तन बहुत अधिक होता है। क्योकि यातायात प्रवाह अनेक परिवर्त्यों पर निर्भर करता है। इसलिए अध्ययन क्षेत्र के यातायात प्रवाह का विश्लेषण यात्रियो के आवागमन के आधार पर किया गया है। यात्रियो के इस प्रवाह का मापन सडको पर चलने वाले व्यक्तिगत तथा सरकारी बसो के माध्यम से किया गया है। सड़को पर चलने वाली सरकारो बसो की गणना देवरिया रोडवेज डिपो, तथा रुद्रपुर लार सलेमपुर, बरहज एव गौरीबाजार बस स्टैण्ड से एव निजी बसो की गणना विभिन्न सेवाकेन्द्रो पर व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर की गयी है। बसो की सम्पूर्ण सख्याओ का योग उनके (बसो के) आने व जाने के सन्दर्भ मे किया गया है। देवरिया मे बसो का प्रवाह मानचित्र (6 4) मे प्रदर्शित है।

देवरिया से प्रतिदिन लगभग 176 यात्री बसो का आवागमन होता है। इनमे 158 बसे विभिन्न मार्गों से देवरिया जनपद से बाहर की ओर जाती हैं। इनमे से *गौरीबाजार–गोरखपुर रूट* से 110 बसे, *गौरीबाजार–हाटा रूट* से 12 बसे, *हेतिमपुर रूट* से 2 बसे *तरकुलवॉ– पड़रौना* की ओर 16 बसे तथा *लार से बिहार* की ओर 10 यात्री बसो का आवागमन प्रतिदिन होता है। लम्बी दूरी की बसो मे *देवरिया से दिल्ली* 16 बसे, *देवरिया– कानपुर* 8 बसें, *देवरिया– लखनऊ* 8 बसे *देवरिया–*

DISTRICT DEORIA FREQUENCY OF BUSES 2002
N
110
98
12
30
12
2
2
4
6
2
2
22
16
10
2
40
10
6
6
8
32
2
4
2
26
12
8
4
4
4
2
2
22
12
10
10
4
6 0 6 KM
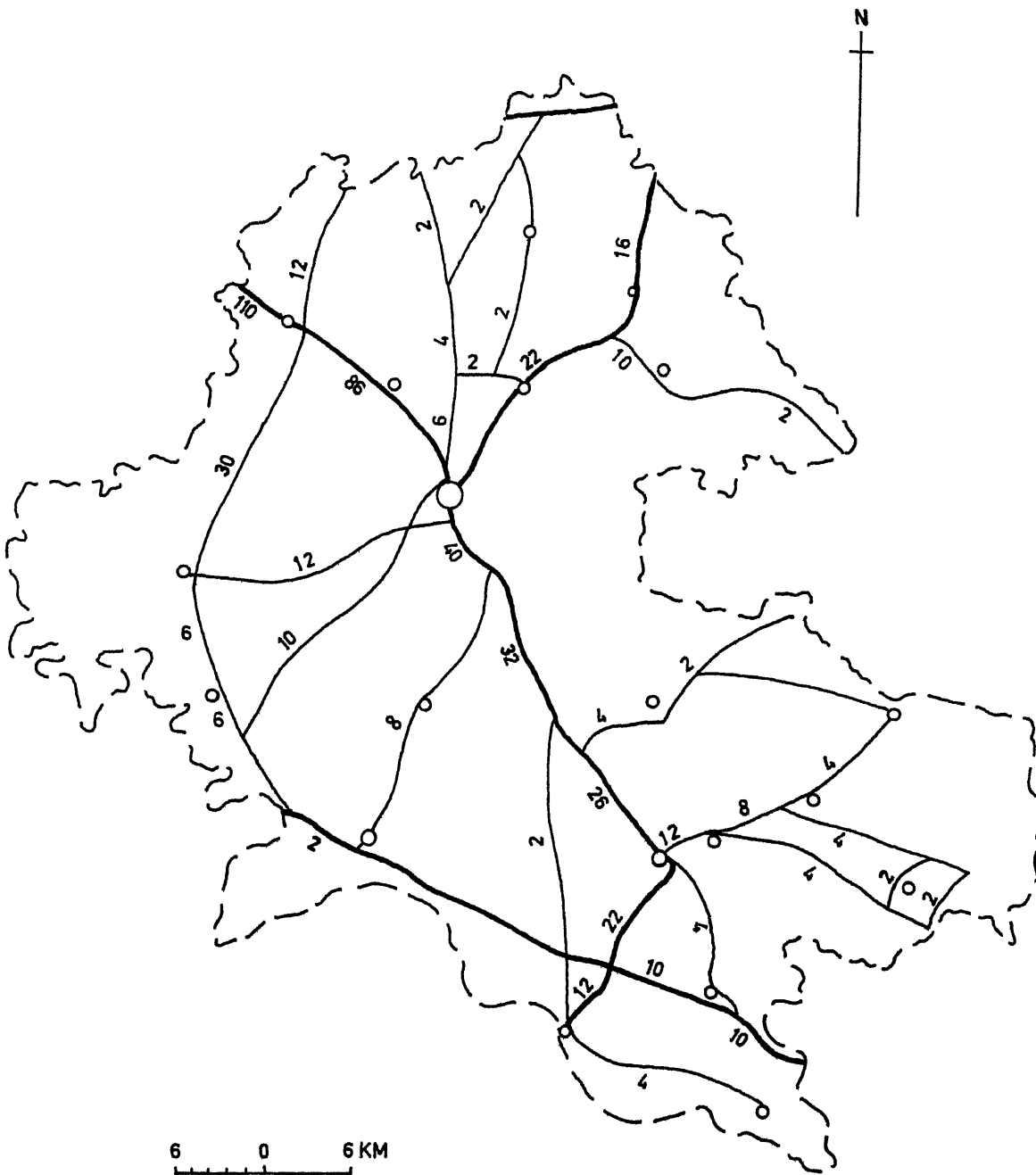
FIG 64

FLOW MAP OF BUSES, DISTRICT DEORIA
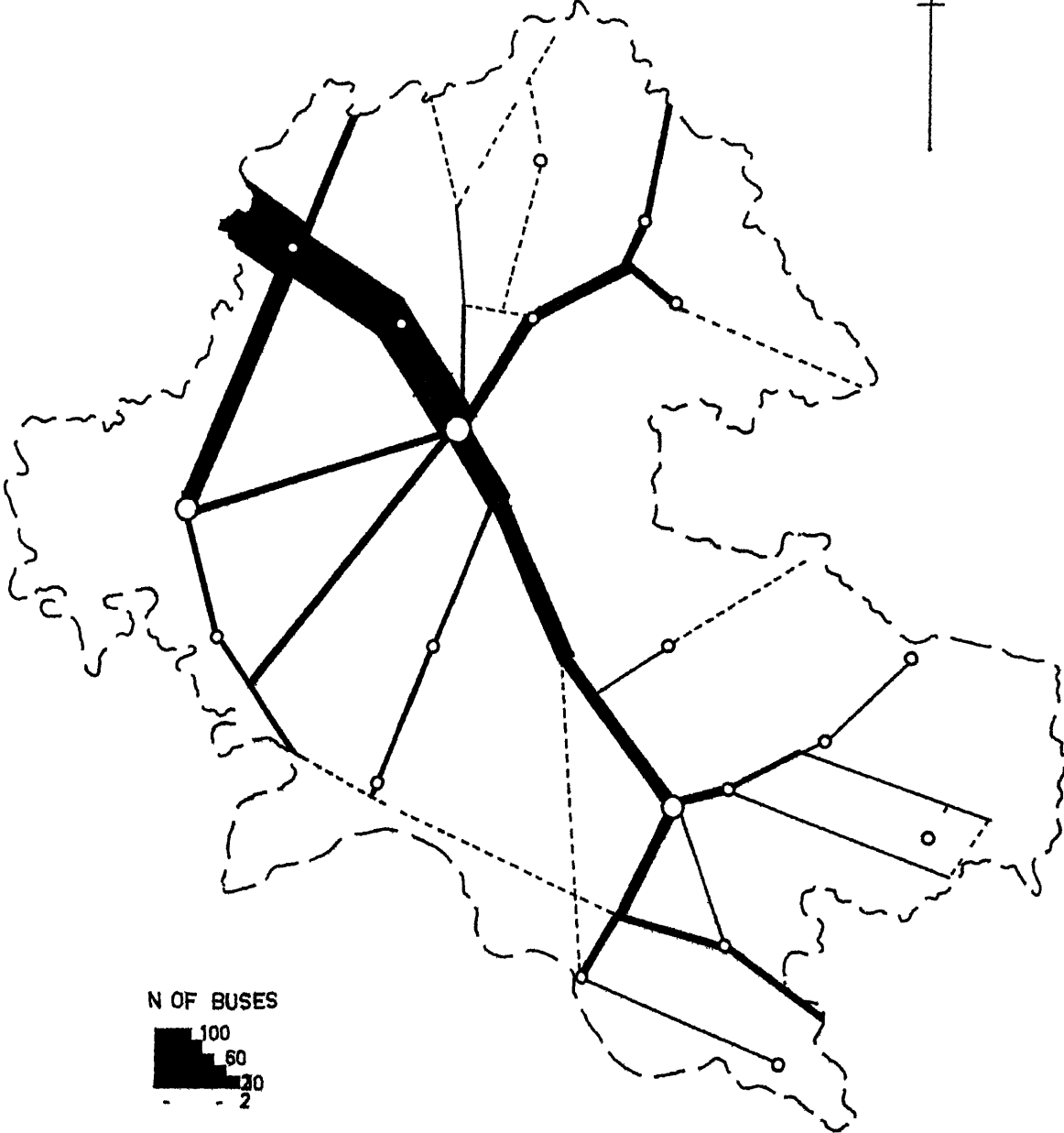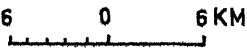
FIG 65

बलिया— 8 बसे, *लार—कानपुर* 8 बसे तथा *रुद्रपुर से गोरखपुर लखनऊ कानपुर* एव *दिल्ली* के लिए प्रतिदिन 16 बसो का आवागमन होता है। जनपद का सबसे व्यस्ततम मार्ग *सलेमपुर—देवरिया—गौरीबाजार* मार्ग है। यह मार्ग *राजकीय राजमार्ग स0—1 (एस एच 1)* है जो देवरिया को गोरखपुर से सम्बद्ध करता है। इस पर देवरिया से गोरखपुर की ओर बसो की सर्वाधिक आवृत्ति प्रतिदिन 110 तक पायी जाती है। गौरीबाजार और देवरिया के मध्य आवृत्ति 86 तथा देवरिया—सलेमपुर के मध्य 40—32 एव 26 पायी जाती है। रुद्रपुर से देवरिया के बीच 12 बसे तथा गौरीबाजार के बीच प्रतिदिन 30 बसे गुजरती हैं। बरहज से भलुअनी होते हुए देवरिया तक प्रतिदिन 8 बसे गुजरती है। जबकि देवरिया से कसया की ओर राजकीय उच्चपथ 79 *(एस एच 79)* से होते हुए 16 बसे गुजरती है। प्रमुख मार्गो से बसो के प्रवाह को चित्र (6 5) मे दिखाया गया है तथा उक्त पर आधारित आरेख चित्र (6 5) मे प्रदर्शित है।

(ख) संचार और सूचना प्रसार

6 8 महत्व एव विकास

सचार से आशय सदेश, विचार एव सूचनाओ इत्यादि के आदान—प्रदान से है। विकास के लिए सचार अपरिहार्य है पिछले एक दशक से विकास विश्व राजनीति और विश्व अर्थव्यवस्था की एक गभीर चिता बनकर उभरा है। वैसे विश्व के समक्ष विकास की चिता पहले भी रही परन्तु जिस शिद्दत से पिछले दस वर्षों मे सयुक्त राष्ट्र सघ की विकास योजना और विश्व बैंक तथा अतर्रराष्ट्रीय मुद्राकोष ने विकास के सवाल को उठाया हे वैसा पहले कभी देखने को नही मिला था।

विकास मे सूचना के प्रचार—प्रसार की आवश्यकता पहले भी महत्वपूर्ण मानी गयी थी लेकिन वैश्वीकरण के दौर मे सूचना का प्रचार—प्रसार स्वय एक बड़ा एजेडा बनकर उभरा है। यह माना गया कि विश्व तभी एक बडा बाजार बन सकता है जब दुनिया का छोटे से छोटा गॉव एक दूसरे से जुडा हो और उपभोक्ता वस्तुओ की जानकारी व्यापक तौर पर उपलब्ध हो। सभवत यही वजह थी कि पिछले तीन दशको मे एक ऐसी प्रौद्योगिकी क्राति हुई जिसने दुनिया की शक्ल काफी हद तक बदल दी। इस क्राति को हमने *'सूचना क्राति'* कहा।

सूचना क्राति के केन्द्र मे दूरसचार प्रौद्योगिकी रही है भले ही इस टेक्नोलॉजी का सबसे बेहतर उपयोग जनसचार के लिए ही हुआ। उपग्रह सचार का प्रयोग सम्प्रेषण के दो महत्वपूर्ण तरीको के लिए किया जा सकता था। पहला प्रयोग तो दूरदराज के क्षेत्रो तक टेलीफोन की सुविधाएँ उपलब्ध करवाकर और दूसरा उसका प्रयोग दूरदर्शन और आकाशवाणी के प्रसारणो को व्यापक बनाकर। 1982 मे एशियाई खेलो के दौरान दूरदर्शन के लिए तकरीबन हर रोज एक ट्रासमीटर लगाने का जो सिलसिला आरभ हुआ उसने जल्दी ही टेलीविजन प्रसारणो की पहुँच

देश के लगभग 98 प्रतिशत क्षेत्र तक कर दी।

1984 मे राजीव गॉधी के नेतृत्व मे जो टेक्नोलॉजी मिशन बने उनमे सबसे महत्वपूर्ण मिशन टेलीफोन सुविधा से सबद्ध था। जिसने अपना लक्ष्य हर गॉव तक टेलीफोन पहुँचाना रखा था। इसी लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए *'सी–डाट'* नामक सस्था ने देश मे ही आधुनिकतम टेलीफोन एक्सचेज बनाने की जिम्मेदारी ली थी। इस मिशन के प्रयासो से आज देशभर मे टेलीफोन के *'सार्वजनिक टेलीफोन केन्द्रो'* (पी सी ओ) का जाल फैल गया है। वर्ष 1996 तक प्रति हजार व्यक्ति 26 केन्द्रो तक पहुँचने का अनुमान है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी पी सी ओ केवल महानगरो और बडे शहरो तक ही सीमित नही है बल्कि आज देश के कोने–कोने मे, गॉव–गॉव मे पी सी ओ दिखलाई पडते है।

इसी दौरान योजना आयोग का एक कार्यालय *'राष्ट्रीय सूचना केन्द्र' (नेशनल इफोर्मेटिक सेटर)* देश के हर जिले को उपग्रह आधारित कप्यूटर सजाल से जोडने मे लगा हुआ है।

सन् 2001 की *विश्व विकास रिपोर्ट* से प्राप्त आकडो से पता चलता है कि हम अपनी तमाम उपलब्धियो के बावजूद विश्व के विकसित देशो से कही पीछे है। टेलीफोन के क्षेत्र मे *अमरीका* के पास सन् 2000 तक प्रति हजार व्यक्ति 700 टेलीफोन लाइने थी, *जर्मनी* मे 619 *आस्ट्रेलिया* मे 525 और *जापान* मे 586 लाइने थी, वही *भारत* मे इस शताब्दी के आरभ तक प्रतिहजार व्यक्ति कुल 32 लाइने ही थी।

दूर सचार विभाग के अनुसार सितम्बर 2001 से सितम्बर 2002 के बीच भारत सरकार ने लगभग 90 626 *ग्राम पचायत टेलीफोन* लगाए। *मोबाइल फोन* के करीब 32 5 लाख नये उपभोक्ता बने और *सीमित मोबाइल सेवा* लगभग 5 लाख नए उपभोक्ताओ तक पहुँची। पिछले एक वर्ष मे 1 लाख 22 हजार किलोमीटर से भी ज्यादा आप्टिकल फाइबर तार बिछाई गई। पिछले दिनो मे राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय टेलीफोन दरो मे भारी कमी की गई है जिससे लोगो के बीच बेहतर सम्प्रेषण की सभावना बढ़ी है।

जनसचार के क्षेत्र मे एक अन्य क्रातिकारी परिवर्तन तब हुआ जब खाड़ी युद्ध के दौरान भारत मे केबल टेलीविजन का अचानक प्रसार हुआ। उपग्रह और केबल के उस मेल के चमत्कार ने केवल शहरो को ही प्रभावित नही किया बल्कि देश के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रो मे भी हमे उलटी छतरियो के समूह दिखने लगे। उपग्रह और केबल टेलीविजन के इस विस्तार से जहॉ एक ओर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो मे उपभोक्ता वस्तुओ का एक साथ प्रचार आरम्भ हुआ वही दूसरी ओर हमारे ग्रामीण अचलो मे रहने वाले लोगो को ऐसी तमाम सूचनाएँ और जानकारियॉ भी मिलने लगी जिन पर पहले केवल शहरी सभ्रात वर्गो की ही पकड़ थी। इस अर्थ मे आजादी के बाद से ही पहले रेडियो और फिर टेलीविजन के प्रसार से सूचनाओ का जनतत्रीकरण हुआ।

सम्प्रेषण और सचार के लिए प्रौद्योगिकी की मौजूदगी के अलावा साक्षरता की भी आवश्यकता होती है। भारत मे आजादी के बाद शिक्षा और साक्षरता मे काफी सुधार हुआ है। हालॉकि देश की बढती हुई आबादी की वजह से इस क्षेत्र मे होने वाला विकास बहुत कम लगता है। साक्षरता के इस व्यापक प्रचार–प्रसार की वजह से जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हुई है वह है भारतीय भाषाो की पत्रकारिता मे तेजी से हुआ विकास।

सूचना प्रौद्योगिकी आज समाज की विभिन्न आवश्यकताओ का आधार बनती जा रही है। विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार भले ही भारत मे वर्ष 1998 तक प्रतिहजार व्यक्ति 2 7 कप्यूटर एव वर्ष 2000 तक प्रति दस हजार लोगो के बीच 0 23 इटरनेट कनेक्शन ही थे परन्तु इस सबके बावजूद देश के सामाजिक– आर्थिक विकास मे इसकी भूमिका की अनिवार्यता से देश का हर व्यक्ति परिचित हो चुका है।

इसमे कोई सन्देह नही कि आजादी के समय के गॉवो और आज के गॉवो मे सुविधाओ के नजरिये से जमीन–आसमान का अतर है लेकिन आज भी सचार और जनसचार की स्थितियॉ ग्रामीण क्षेत्रो मे बहुत अच्छी नही है। वही दूसरी ओर महानगरो और शहरो मे टेलीविजन दूरभाष मोबाइल–टेलीफोन, कम्प्यूटर और इटरनेट का प्रसार गॉवो की तुलना मे कही ज्यादा हुआ है। यही वजह है कि न केवल अमीर–गरीब के बीच की खाई बढी है बल्कि सुविधा सम्पन्न और सुविधा विहीन, विकास सम्पन्न और विकास रहित समाजो का अतर भी भारत मे स्पष्ट दिखाई देता है।

6 9 अध्ययन क्षेत्र मे सचार एव सूचना प्रसार

सचार माध्यमो को दो वर्गों मे वर्गीकृत किया जा सकता है ***प्रथम– व्यक्तिगत सचार माध्यम*** तथा ***द्वितीय जनसचार माध्यम***। व्यक्तिगत सचार माध्यम के अन्तर्गत डाक तार तथा दूरभाष आदि आते हैं। ये वैयक्तिक सेवाएँ प्रदान करने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार से कृषि कार्यों एव उद्योगो को बढावा देते हैं। रेडियो, टेलीविजन पत्र–पत्रिकाएँ तथा सिनेमा आदि जनसचार के माध्यम हैं जो सूचना, ज्ञान विचारो भावनाओ तथा शिल्प आदि का सकेत–चिन्हो शब्दो चित्रो तथा आरेखो द्वारा प्रभावशाली प्रसारण करते हैं।[14]

(अ) व्यक्तिगत सचार

सम्प्रति जनपद मे 276 डाकघर (ग्रामीण क्षेत्र मे– 258 एव नगरीय क्षेत्र मे 18) 21 तारघर (ग्रामीण क्षेत्र– 11 नगरीय क्षेत्र–10) 35– टेलीफोन एक्सचेज 668 पी सी ओ (ग्रामीण क्षेत्र– 407 एव नगरीय क्षेत्र–261) तथा 5931 टेलीफोन कनेक्शन हैं जिसमे ग्रामीण क्षेत्र मे 615 एव नगरीय क्षेत्र मे 5316 कनेक्शन हैं। इसे सारणी 6 6 मे विकास खण्ड स्तर पर प्रस्तुत किया गया है।

सारणी– 66

देवरिया जनपद मे उपलब्ध सचार सेवाएँ

वर्ष	डाकघर	तारघर	पी सी ओ	टेलीफोन
1997 98	276	21	657	5901
1998 99	276	21	668	5931
1999 00	276	21	668	5931
विकासखण्ड वार (1999–2000)				
1 गौरीबाजार	17		25	8
2 बैतालपुर	16	1	4	43
3 देसही देवरिया	16	1	10	22
4 पथरदेवा	20	1	74	76
5 रामपुर कारखाना	10		6	25
6 देवरिया सदर	23		65	45
7 रुद्रपुर	20	2	17	12
8 भलुअनी	20	1	6	5
9 बरहज	17	1	51	42
10 भटनी	13		32	38
11 भाटपाररानी	12		30	69
12 बनकटा	14	1	38	100
13 सलेमपुर	22		26	72
14 भागलपुर	17	1	3	5
15 लार	21	2	20	53
योग ग्रामीण	**258**	**11**	**407**	**615**
नगरीय	**18**	**10**	**261**	**5316**
कुल जनपद	**276**	**21**	**668**	**5931**

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया– 2001 पृ0 105

(1) डाक सेवा

भारत मे *आधुनिक डाक प्रणाली* सर्वप्रथम 1837 मे प्रारम्भ हुई। 1854 मे *डाक विभाग* तथा 1880 मे *मनीआर्डर प्रणाली* प्रारम्भ हुई। *रेलवे डाक सेवा* 1907 तथा *हवाई डाक सेवा* 1911 मे प्रारम्भ हुई। फलस्वरूप *द्रुत डाक सेवा रिकार्डेड डिलीवरी* और *द्रुतगामी डाक सेवा (स्पीड पोस्ट)* जैसे कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। देवरिया जनपद इस विकास से अछूता नही है। जनपद मे कुल डाकघरो की सख्या 276 है। इसमे ग्रामीण क्षेत्रो मे 258 डाकघर स्थित हैं। भारत मे एक डाकघर से जहाँ औसतन 4731 लोगो को सेवाएँ प्राप्त होती हैं वही जनपद में 2001 की जनगणना के आधार प्रति 9892 लोगो पर एक डाकघर है, अर्थात् एक डाकघर राष्ट्रीय औसत से लगभग दूनी जनसख्या को सेवा प्रदान करता है, जो बहुत ही निम्न स्तर है। इस दृष्टि से देवरिया जनपद पिछड़ा हुआ है।

डाकघर खोलने के लिए गॉवो के एक समूह को चुना जाता है और इस समूह मे से डाकघर की स्थापना के लिए उपयुक्त गॉव का चयन किया जाता है। गॉवो के समूह की कुल आबादी पहाडी पिछडे हुए और जनजातीय क्षेत्रो मे 1 500 या इससे अधिक तथा अन्य ग्रामीण क्षेत्रो मे 3 000 या इससे अधिक होनी चाहिए। अध्ययन क्षेत्र मे इस मानक के अतर्गत बहुत कम गॉव सम्मिलित है।

1995 से 2002 तक अध्ययन क्षेत्र मे डाकघरो की सख्या यथावत (276) बनी हुई है जबकि आबादी लगातार बढ रही है। अध्ययन क्षेत्र मे विकास खण्डवार *बरहज* की स्थिति सबसे अच्छी है यहॉ एक डाकघर 5 695 लोगो को सेवाएँ प्रदान करता है। परन्तु राष्ट्रीय औसत (4731) से यह भी काफी अधिक है। उसके बाद जनसख्या के आधार पर विकास खण्डो का क्रम क्रमश निम्नवत है– *लार भागलपुर सलेमपुर, देवरिया सदर देसही देवरिया, भलुअनी रुद्रपुर बनकटा बैतालपुर भटनी पथरदेवा गौरीबाजार भाटपाररानी* और *रामपुर कारखाना*। *रामपुर कारखाना* मे प्रति 12 248 लोगो पर एक डाकघर है जो सबसे बुरी स्थिति है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे डाकघर की सुविधा बहुत ही निम्न स्तर की है। जनसख्या साक्षरता कृषि उद्योग आदि मे निरन्तर वृद्धि हो रही है पर डाकघर मे उस अनुपात मे बढोतरी नही हो रही है। इसका नकारात्मक प्रभाव विकास पर पडता है। ये सब सेवाएँ विकास के प्रेरक हैं। अत इन के पिछडने से क्षेत्रीय विकास अधोगामी हो जाएगा।

(2) तारसेवा

अध्ययन क्षेत्र मे कुल तारघर की सख्या 21 है। इसमे 11 ग्रामीण क्षेत्र मे तथा 10 नगरीय क्षेत्र मे स्थित है। ग्रामीण क्षेत्रो मे भी क्रमश *रुद्रपुर* एव *लार* मे दो–दो तथा *बैतालपुर देसही देवरिया, पथरदेवा, भलुअनी बरहज, बनकटा* और *भागलपुर* मे एक–एक तारघर है। नगरीय क्षेत्रो मे– *देवरिया गौराबरहज, लार रुद्रपुर मझौलीराज, भटनी बाजार, सलेमपुर भाटपाररानी रामपुर कारखाना* और *गौरीबाजार* टाउनएरिया मे एक–एक तार घर हैं। उपर्युक्त तथ्य से तार सेवा की अभावग्रस्तता एव पिछड़ेपन का ज्ञान होता है।

(3) टेलीफोन सेवा

सचार के क्षेत्र मे हुए तीव्र विकास से देवरिया जनपद भी अछूता नही है पर विकास अभी प्रारभिक अवस्था मे ही है। राष्ट्रीय औसत से यहॉ वर्तमान विकासदर बहुत दूर है। वर्तमान समय मे जनपद मे 5931 टेलीफोन कनेक्शन है। इसमे 5316 नगरीय क्षेत्र मे तथा मात्र 615 ही ग्रामीण क्षेत्र मे है। आज राष्ट्रीय स्तर पर जहॉ प्रति हजार व्यक्तियो पर 32 टेलीफोन कनेक्शन उपलब्ध है वही जिले मे ये उपलब्धता मात्र 2 17 प्रति हजार ही है। ग्रामीण क्षेत्र मे सर्वाधिक कनेक्शन (100) *बनकटा* विकास खण्ड मे है जबकि *भागलपुर, भलुअनी* मे न्यूनतम पॉच–पॉच कनेक्शन ही उपलब्ध हैं। जनपद मे वर्तमान मे 35 टेलीफोन एक्सचेज विभिन्न क्षमता के स्थापित हैं। इनकी

कुल कनेक्शन क्षमता 31 832 है। अत वर्तमान क्षमता का यदि सम्पूर्ण विकास कर लिया जाय तब भी प्रति हजार व्यक्ति पर उपलब्धता 11 65 ही हो पायेगी, जो वर्तमान राष्ट्रीय औसत से 20 35 कम है। अत इस क्षेत्र मे तीव्र विकास की आवश्यकता है। नगरीय क्षेत्रो मे सर्वाधिक कनेक्शन देवरिया मे (4367) है जो कुल नगरीय क्षेत्र उपलबधता का 82 14 प्रतिशत है।

(4) पी सी ओ

जनपद मे सबसे कम विकास पी सी ओ का हुआ है। यहॉ कुल 668 पी सी ओ केन्द्र है। राष्ट्रीय स्तर पर जहॉ प्रति हजार जनसख्या पर केन्द्र की उपलब्धता 26 है वही जनपद मे एक हजार जनसख्या पर मात्र 0 24 प्रतिशत सेन्टर है। परन्तु नगरी एव ग्रामीण क्षेत्रो की दृष्टि से देखा जाय तो जहॉ नगरीय क्षेत्र मे 261 पी सी ओ केन्द्र हैं वही ग्रामीण क्षेत्र मे 407 केन्द्र स्थापित है। अथार्त कुल स्थापित केन्द्र को 60 9 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्र मे उपलबध हैं। इससे सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण रुझ्ाान व्यक्त होती है। जनपद मे स्थापित टेलीफोन एक्सचेज को उनकी क्षमता के साथ सारणी 6 7 मे प्रस्तुत किया गया है।

सारणी– 6 7

जनपद मे स्थापित टेलीफोन एक्सचेज एवं उनकी क्षमता (2002)

क	एक्सचेज का नाम	तहसील	पैरन्ट एक्सचेज	क्षेत्र	सस्थापित क्षमता
1	2	3	4	5	6
1	अहिरौली बघेल	सलेमपुर	सलेमपुर	R	184
2	बघउच	देवरिया	देवरिया	R	512
3	बैतालपुर	देवरिया	देवरिया	R	1000
4	बखरा	देवरिया	देवरिया	R	256
5	बलटीकरा	देवरिया	देवरिया	R	184
6	बगरा	भाटपाररानी	भाटपार	R	184
7	बरहज बाजार	बरहज बाजार	देवरिया	U	1400
8	बरियापुर	देवरिया	देवरिया	R	256
9	भागलपुर	सलेमपुर	सलेमपुर	R	184
10	भलुअनी	देवरिया	देवरिया	R	512
11	भटनी	भाटपाररानी	सलेमपुर	R	184
12	भाटपाररानी	भाटपाररानी	सलेमपुर	U	1000
13	भिगारीबाजार	भाटपाररानी	सलेमपुर	R	184
14	बिशुनपुरा	देवरिया	देवरिया	R	184
15	देवरिया	देवरिया	गोरखपुर	U	14000
16	देसही देवरिया	देवरिया	देवरिया	R	256
17	गौरीबाजार	देवरिया	देवरिया	U	1000
18	हेतिमपुर	देवरिया	देवरिया	R	256

19	खोराराम	देवरिया	देवरिया	R	256
20	खुखुन्दू	सलेमपुर	देवरिया	R	184
21	लार	सलेमपुर	सलेमपुर	U	1400
22	लार रोड	सलेमपुर	सलेमपुर	R	184
23	मदनपुर	रुद्रपुर	देवरिया	R	512
24	मईल	सलेमपुर	बरहजबाजार	R	256
25	ओलीपटी	देवरिया	देवरिया	R	184
26	पैना	बरहज	बरहज	R	256
27	पकडी बाजार	देवरिया	देवरिया	R	256
28	पथरदेवा	देवरिया	देवरिया	R	1000
29	प्रतापपुर	भाटपाररानी	सलेमपुर	R	184
30	रामलछन	रुद्रपुर	देवरिया	R	256
31	रामपुर कारखाना	देवरिया	देवरिया	R	512
32	रूद्रपुर	रुद्रपुर	देवरिया	U	1000
33	सलेमपुर	सलेमपुर	देवरिया	U	2400
34	सराव	देवरिया	देवरिया	R	256
35	सोनहुला रामनगर	देवरिया	देवरिया	R	1000
					योग— 31832

स्रोत— जिला प्रबन्धक दूरभाष जनपद देवरिया के कार्यालय से प्राप्त

(ब) जनसचार

इलेक्ट्रानिक तथा मुद्रण जनसचार के प्रमुख माध्यम हैं। इलेक्ट्रानिक्स के अन्तर्गत रेडियो दूरदर्शन तथा चलचित्र प्रमुख है। सगीत मनोरजन शिक्षा समाचार विज्ञापन, सवाद सूचना आदि के प्रसारण के लिए रेडियो एक सस्ता और सशक्त माध्यम है। खेलो स्वतत्रता दिवस गणतन्त्र दिवस व अन्य प्रमुख घटनाओ के ऑखो—देखा हाल का प्रसारण रेडियो को और जीवन्त बना देता है। देश मे रेडियो प्रसारण की शुरुआत सर्वप्रथम *बम्बई* और *कलकत्ता* के दो निजी स्वामित्व वाले ट्रासमीटरो की सहायता से 1927 मे हुआ। 1930 मे सरकार ने इसे अपने हाथ मे लेकर *'भारतीय प्रसारण* सेवा' प्रारम्भ किया। 1936 मे इसका नाम बदलकर *ऑल इण्डिया रेडियो'* रखा गया और 1957 के बाद से इसे *'आकाशवाणी'* कहा जाता है। देवरिया जनपद के सम्पूर्ण भाग पर रेडियो प्रसारण पहुँचता है। जनपद के पश्चिम मे स्थित गोरखपुर जनपद मुख्यालय पर आकाशवाणी का क्षेत्रीय केन्द्र है। यहाँ से तमाम सामाजिक—आर्थिक दृष्टि से लाभदायक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते है। जिसका आधार क्षेत्रीय सामाजिक सस्कृति ही होती है। अत जनपद के लोग ऐसे कार्यक्रमो मे विशेष रुचि लेते है। जनपद के प्राय सभी परिवार रेडियो का लाभ लेते हैं। गोरखपुर आकाशवाणी केन्द्र से कृषि से सम्बन्धित तमाम जानकारियाँ समय—समय पर प्रसारित होती हैं। इससे किसान अपनी कृषि से सम्बन्धित समस्याओ का समाधान पाते हैं। इसने परोक्ष रूप से कृषि विकास मे बड़ा लाभ पहुँचाया है।

(1) दूरदर्शन

दूरदर्शन जनसचार का एक सशक्त दृश्य–श्रव्य माध्यम है। भारत मे दूरदर्शन की शुरुआत सितम्बर 1959 मे हुई जब एक प्रायोगिक परियोजना के रूप मे दिल्ली मे दूरदर्शन केन्द्र खोला गया। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भाग दूरदर्शन प्रसारण के अतर्गत आता है। जनपद के समीपस्थ गोरखपुर मे दूरदर्शन का क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित हो जाने से अब दूरदर्शन प्रसारण मे क्षेत्रीय प्रसारणो को भी प्रमुखता मिलने लगी है जिनका आधार क्षेत्रीय समस्याएँ होती है। कृषि–दर्शन कार्यक्रम कृषको के लिए विशेष लाभकारी है। चूँकि दूरदर्शन सेट अपेक्षाकृत महगे हैं साथ ही अध्ययन क्षेत्र मे विद्युत का भी अभाव है। अत कुछ सम्पन्न वर्ग ही इस सुविधा का उपयोग कर पा रहे है।

(2) चलचित्र

चलचित्र भी जनसचार का सशक्त माध्यम है। इससे सामाजिक आर्थिक शैक्षणिक राजनीतिक व धार्मिक समस्याओ तथा निदान के अभिप्रेरण हेतु उसका चित्रण लोगो तक पहुँचाया जाता है। जनपद मे वर्तमान मे 16 चलचित्र गृह स्थापित है जिसमे सीटो की कुल सख्या 8338 है।

(3) समाचार पत्र

जनसचार का एक प्रमुख माध्यम मुद्रण भी है। हाल के वर्षो मे साक्षरता मे सुधार के कारण लोगो मे ये माध्यम काफी लोकप्रिय होने लगा है। क्षेत्र के लोगो मे राजनीति के प्रति दिलचस्पी के कारण इस माध्यम को और लोकप्रियता हासिल हुयी है। जनपद मे राष्ट्रीय स्तर का कोई भी समाचार पत्र उसी दिन या एक दिन बाद प्राप्त किया जा सकता है। प्राय प्रत्येक चाय की दुकानो होटलो आदि मे समाचार पत्रो के उपलब्धता से वहाँ आने जाने वाले लोग इसे पढ लेते है। फिर भी क्षेत्र की आर्थिक बदहाली और निम्न शैक्षणिक स्तर के कारण अपेक्षाकृत निम्न आयवर्ग के लोग एव श्रमिक वर्ग तक इसका लाभ नही पहुँच सका है। वर्तमान समय मे जनपद मे मुद्रणालयो की सख्या 48 है। ये सभी निजी क्षेत्र मे हैं।

6 10 परिवहन एव सचार का नियोजन

क्षेत्र के विकास मे परिवहन के विभिन्न साधनो तथा सचार के विभिन्न माध्यमो के विश्लेषण के उपरान्त विश्लेषण क्रम के अनुरूप ही क्रमश परिवहन एव सचार माध्यम प्रतिरूप के लिए नियोजन की परिकल्पना अपेक्षित है। वैसे इस दिशा मे सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलायी जा रही है परन्तु अभी भी कुछ क्षेत्र ऐसे है जिनतक योजनाओ का समुचित लाभ नही पहुँच पा रहा है। अत उपर्युक्त तथ्यो की समीक्षा करते हुए क्षेत्र के विकास के लिए नियोजन निम्नवत् प्रस्तुत है।

(क) परिवहन तत्र का नियोजन

अध्ययन क्षेत्र मे परिवहन तत्र के विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्षेत्रीय परिवहन मे सर्वप्रमुख सडक मार्ग एव रेलमार्ग ही है। इन दोनो मे सडक मार्ग की भूमिका क्षेत्रीय विकास मे महत्वपूर्ण है। अध्ययन क्षेत्र के समतल होने तथा सडको के पर्याप्त विकास के बावजूद अभी भी अनेक ऐसे सेवाकेन्द्र है जो पक्की सडको से सम्बद्ध नही है। 1999—2000 तक जनपद मे 101 ग्राम ऐसे थे जो पक्की सडको से 5 किमी की दूर पर स्थित है जिस कारण यातायात एव विपणन सम्बन्धी अनेक समस्याये उत्पन्न होती है। जहॉ तक कच्ची—पक्की सडको से ग्रामो की सम्बद्धता का प्रश्न है तो जनपद के 47 87 प्रतिशत गॉव अभी भी असम्बद्ध है। सबसे अधिक असम्बद्धता *भलुअनी* (70 77 प्रतिशत) एव *बैतालपुर* (62 21 प्रतिशत) विकास खण्डो मे पायी जाती हैं। जहॉ तक मार्ग—जाल की सम्बद्धता का सवाल है तो ग्रामीण मार्गो के स्तर पर यह बहुत ही निम्न है। जबकि सेवाकेन्द्रो का ग्रामीण विकास मे लाभ ग्रामीण सडको के माध्यम से ही प्राप्त होता है। यातायात प्रवाह सडक सम्बद्धता पर ही निर्भर करता है। सडक सम्बद्धता के अभाव मे यातायात प्रवाह भी निम्न स्तर का है। अत जनपद के समाकलित विकास के लिए परिवहन सुविधाओ का बढाया जाना अनिवार्य हे। इसके लिए एक समन्वित कार्य योजना अपेक्षित है।

(अ) रेलमार्ग नियोजन

अध्ययन क्षेत्र समतल भू—भाग तथा घना बसाव का क्षेत्र है। इसके बावजूद रेलमार्ग की जनपद मे लम्बाई मात्र 111 किमी ही है। ये रेललाइन भी इकहरी है। अत अध्ययन क्षेत्र मे अवस्थित सम्पूर्ण रेलवे लाइन को दोहरी लाइन मे बदलने की आवश्यकता है। इससे न सिर्फ यात्री परिवहन एव मालगाडी की परिचालन क्षमता बढेगी बल्कि सुदूर राज्यो मे स्थित कोयला खनिज आदि को जनपद मे मगाना भी सुगम हो जाएगा जिनमे यह क्षेत्र निर्धन है। फलत कई नये उद्योग अवस्थापन प्रोत्साहित होगे। इसके अलावे *सलेमपुर* से *बरहज* वाली लाइन का विस्तार *रुद्रपुर* तक करना अपेक्षित है। इससे क्षेत्र का विकास प्रोत्साहित होगा।

(ब) सडक मार्ग नियोजन

अध्ययन क्षेत्र मे सडक मार्ग परिवहनतत्र का आधार है। सर्वप्रथम वर्तमान पक्की सडको मे सुधार की आवश्यकता है। साथ ही व्यस्त सडको को चौडा करने की आवश्यकता है। इसके अतर्गत *देवरिया—तरकुलवा मार्ग (एस एच 79)* एव *राज्य उच्चपथ सख्या—1* जो *गौरी बाजार—देवरिया—सलेमपुर* से होकर गयी है को दोहरी करने की आवश्यकता है। इसी क्रम मे *सलेमपुर* से *लार* के मध्य अन्य जिलामार्ग को राज्य उच्चपथ जितनी ही चौड़ाई और गुणवत्ता की दृष्टि से बेहतर बनाना अपेक्षित है। *रुद्रपुर से गौरीबाजार* तथा *रुद्रपुर—देवरिया मार्ग* भी चौड़ा करने की जरूरत है।

जनपद के बनकटा विकास खण्ड का पूर्वी क्षेत्र बरहज भागलपुर लार एव रुद्रपुर

सारणी– 6 8

विकास खण्डवार विभिन्न प्रकार के सडको की लम्बाई

विकास खण्ड	सडक की कुल लम्बाई (किमी)				
	ऊपरी काली सतह (B-T)	पत्थर–बैसाल्ट कुटाई की सतह (WBM)	खडजा (Gravel)	कच्ची सतह (Track)	कुल
1 बैतालपुर	128 50	17 70	50 45	70 53	267 18
2 बनकटा	103 60	11 70	45 50	38 50	199 30
3 बरहज	69 80	4 30	19 70	19 50	113 30
4 भागलपुर	130 50	10 00	72 80	10 00	223 30
5 भलुअनी	85 29	9 40	53 00	26 25	173 94
6 भटनी	107 80	7 70	25 60	22 50	163 60
7 भाटपाररानी	100 74	9 76	60 75	40 55	211 79
8 देवरिया	124 50	6 20	39 80	22 60	193 10
9 देसही देवरिया	70 20	6 10	25 90	21 20	123 40
10 गौरीबाजार	119 25	25 80	28 50	22 00	195 55
11 लार	95 00	7 95	52 90	30 00	185 85
12 पथरदेवा	143 75	4 40	59 10	9 90	217 12
13 रामपुर कारखाना	122 17	8 00	23 80	36 15	190 12
14 रुद्रपुर	73 50	17 63	35 45	41 01	167 59
15 सलेमपुर	132 50	10 10	53 20	35 00	230 80
कुल योग	**1607 07**	**156 74**	**646 45**	**445 69**	**2855 94**

स्रोत– पी डब्लू डी विभाग देवरिया से प्राप्त

विकासखण्ड का दक्षिणी भाग *घाघरा* एव *राप्ती* के बाढ़ से बरसात मे काफी समस्याग्रस्त हो जाता है। जनपद के शेष भाग से इसका सडक सम्पर्क खडजा सडको एव कच्ची सडको के जल समाधि के कारण टूट जाता है। पूरे जनपद मे पत्थर और बैसाल्ट कुटाई वाली सडको की लम्बाई 156 45 किमी है। खडजा सडको की लम्बाई 646 45 किमी है। अत इन सभी सडको को पक्की सडको मे बदलने की आवश्यकता है क्योंकि बरसात के दिनो मे अपरदन से बस्तियो की सडको से अभिगम्यता और कम हो जाती है। विगत वर्षो मे *जवाहर रोजगार योजना* के अतर्गत अनेक गॉवो को खडजा मार्ग से पक्की सडको से जोडा गया। किन्तु मार्गों पर *जैविक अपरदन* (पशुओ से) व *यान्त्रिक अपरदन* (ट्रैक्टर व बैलगाडी से) होने से उद्देश्यो को पूरा करने मे असफल है। अत इन सभी लघु सम्पर्क मार्गो को पक्की सडक मे बदलने की जरूरत है। अध्ययन क्षेत्र की पक्की सडको खडजा सडको एव कच्ची सडको की विकास खण्डवार लम्बाई सारणी 6 8 मे प्रस्तुत है।

(स) ग्रामीण सडक मार्ग

ग्रामीण सडक ग्रामीण विकास का आधार है। अध्ययन क्षेत्र की 90 14 प्रतिशत ग्रामीण जनसख्या को नगरो औद्योगिक केन्द्रो विकास केन्द्रो तथा मुख्य सडको से जोड़ने के लिए सडको का जाल होना आवश्यक है। कृषि उपज तथा कुटीर उद्योगो के उत्पादो की विपणनीय सुविधाएँ ग्रामीण सडको पर बहुत निर्भर करती है। गॉवो को सडको द्वारा मण्डियो से जोडकर गॉवो का बहुमुखी विकास किया जा सकता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के पिछडेपन को ग्रामीण सडको के अभाव ने और पिछ्डा बना दिया है।

ग्रामीण बस्तियो की सेवाकेन्द्रो एव पक्की सडको से सम्बद्धता की विकास के लिए अनिवार्यता महसूस करते हुए जनपद मे सरकारी स्तर पर अनेक योजनाएँ चलायी जा रही है। इनमे 1000 से अधिक आबादी वाले ग्रामो को पक्की सडको से जोडने हेतु जिला योजना *पूर्वान्चल विकास निधि* के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही है। इसी सन्दर्भ मे राज्य सरकार की एक योजना– *पडित दीनदयाल उपाध्याय सम्पर्क मार्ग* के अन्तर्गत जनपद के विभिन्न भागो मे 19 10 किलोमीटर मार्गनिर्माण का कार्य चल रहा है।[15] इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रो को सेवाकेन्द्रो एव पक्की सडको से सम्बद्ध कर सडको की अभिगम्यता एव सबद्धता वृद्धि द्वारा गॉवो के विकास के लिए केन्द्र सरकार की *प्रधानमत्री ग्राम सडक योजना'* जनपद मे क्रियान्वित हो रही है।

प्रधानमत्री ग्राम सडक योजना

यद्यपि पिछले पॉच दशको से ग्रामीण क्षेत्रो मे सम्पर्क हेतु सडको का लगातार विकास हुआ है। इसके बावजूद खुद सरकार ने माना है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे बारहमासी सडको की कमी देश के वास्तविक विकास मे बडी बाधा है। आजादी के 54 वर्षो बाद भी देश के 40 फीसदी गॉव अभी भी बारहमासी सडक सम्पर्क से कटे है। बारहमासी सडक सम्पर्क से वचित गॉवो की सख्या 2 5 लाख से ज्यादा है। इनको सम्पर्क मार्ग से जोडने के लिए ही 25 अक्टूबर 1999 को *'प्रधानमत्री ग्राम सडक योजना'* की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रो मे सडको का निर्माण करना है।[16]

इसके लिए धन जुटाने के उद्देश्य से सरकार ने अप्रैल–2000 मे कैबिनेट के फैसले के अनुरूप डीजल की बिक्री पर 1 रूपये का अधिभार लगाया जिसका 50 प्रतिशत *प्रधानमत्री ग्राम सडक योजना* के लिए रखा जाना तय था। इस प्रकार 2000–2001 के वित्तीय बजट मे इस मद मे 60 हजार करोड रूपये की रकम रखी गयी। इस रकम को केन्द्र सरकार राज्य सरकारो को देकर केन्द्रीय ग्रामीण विकास मत्रालय की निगरानी मे योजना को कार्यान्वित करा रही है। इसके लिए आरम्भ हुए सडक–निर्माण कार्य को 9 से 12 माह के भीतर पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। निर्धारित समय सीमा मे पूरा न करने वाले राज्यो पर अनुदान मे कटौती के रूप मे दण्डात्मक प्रावधान भी किया गया है।[17]

सारणी– 69

प्रधानमत्री ग्राम सडक योजना (2002) (स्वीकृत/मार्गों की सूची)

क्र स	पैकेज सख्या	मार्ग का नाम	स्वीकृत लम्बाई (किमी)	स्वीकृत लागत (लाख रु)	ब्लाक का नाम
1	2603	जमुआ मगहरा से मधवापुर	2 400	52 61	सलेमपुर
2	2603	आनन्दनगर देसही देवरिया से कवलाछापर मार्ग	2 000	47 96	देसही देवरिया
3	स्पे पै 26	मदनपुर देवकली जयराम से सेहुदामानस	6 300	121 84	रुद्रपुर/भलुअनी
4	स्पे पै 26	देवरिया पकडी से सिसवा मार्ग	2 500	45 69	भलुअनी
5	2604	हेतिमपुर रम्हौली–सहोदरपटी–रामपुर जगदीश मार्ग	3 100	87 50	देसही दवरिया
6	2604	गोरखपुर देवरिया से कालाबवन मार्ग	2 100	47 75	गौरीबाजार
7	2604	बाबा मोहन से समोगर	1 000	18 63	बरहज
8	2604	पकडी बगरा–मिश्रौली–नोनार कपरवार मार्ग	1 600	43 96	बनकटा
9	2604	पुरुषोत्तमा करमेल से बर्दगोनिया मार्ग	2 606	47 70	गौरीबाजार
10	2605	मदनपुर से केवटलिया मार्ग	2 700	67 21	रुद्रपुर
11	2605	बगरा महुआरी से शाहपुर पुरैनी मार्ग	2 000	39 48	पथरदेवा
12	2605	बघौचघाट सेमरी से बसडीला जद्दूघोडी मार्ग	2 000	48 03	पथरदेवा
13	2605	अमारी गोठा से रसूलपुर सुरचक मार्ग	2 000	45 05	बैतालपुर/देसही
14	2605	बारीहपुर शिवाजी चौराहा–आमघाट चौहान टोला मार्ग	2 600	54 91	देवरिया रामपुर कारखाना

स्रोत– पीडब्ल्यूडी विभाग जनपद देवरिया से प्राप्त सितम्बर 2002

इस योजना के तहत उत्तरप्रदेश को सर्वाधिक 315 करोड रुपये की राशि 2000–2001 के दोरान प्राप्त हुयी है।[18] इस योजना के अतर्गत जनपद के विभिन्न भागो मे ग्रामीण सडको के निर्माण का कार्य प्रस्तावित है। वर्तमान मे 14 मार्गों (34 90 किमी) पर मार्ग निर्माण की स्वीकृति मिल चुकी है। ये निम्न हैं– (सारणी न 69 मे)।

ग्रामीण क्षेत्रो मे मूलभूत सुविधा मुहैया कराने की इस महत्वपूर्ण योजना को पचायतो के माध्यम से लागू किया जा रहा है। लेकिन प्रशासनिक लालफीताशाही स्थानीय राजनीतिक गुटबाजी और बदहाल ठेकेदारी से इस योजना का पूरा लाभ मिल पाने मे सन्देह है। पिछले दिनो इसी योजना के तहत झारखण्ड प्रदेश के गोड्डा जिले मे बनी ग्राम सडक बरसात मे एक भी मौसम नही झेल पायी और आठ लाख रूपये की लागत से बनी यह सडक एक झटके मे *'परनाला'* मे तब्दील हो गयी। पिछडे और आदिवासी बहुल ग्रामीणो ने सडक की बदहाली के किस्से प्रशासन तक पहुँचाने के लिए सडक पर ही धान के पौधे रोप दिए। यदि जनपद मे ग्रामीण सडको के निर्माण की समीक्षा करे तो यह प्रवृत्ति यहॉ भी दिखायी देती है। बाढ की आवृत्ति वाले क्षेत्रो मे बनी सडको मे घोर घॉधली होती है। बाढ के बाद जब सडक का अस्तित्व समाप्त हो जाता है तो उसे आसानी से बाढ का ग्रास साबित कर दिया जाता है। इस प्रकार यहाँ के अधिकारी,

इन्जीनियर और ठेकेदार योजनाओ के लिए आवटित पैसे से लाल हो रहे है तथा विकास ठूँठ बना हुआ है।

इस प्रकार ये महत्वपूर्ण है कि कैसे इस योजना का लाभ ग्रामीणो तक पहुँचाया जाय। गोडडा जिले की एक घटना तो वहॉ के ग्रामीणो के चलते उजागर हो गयी पर यह महत्वपूर्ण है कि गोडडा की तरह कितने गॉवो के लोग अपना मामला उठाएगे? इसके लिए जागरूकता एव नीतिगत उपाय करने होगे। इस योजना के अतर्गत 2003 तक 1000 की जनसख्या वाले प्रत्येक गॉव को तथा 2007 तक 500 की जनसख्या वाले गॉवो को बारहमासी अच्छी सडको से जोडने की योजना है। ग्रामीण सडको से सम्बन्धित निम्न सुझाव प्रस्तुत है–

1– जो भी सडके बने उन्हे परिवहन मानको के अनुसार बनाया जाय।

2– गॉवो को मुख्य सडक से जोडने वाली सभी सहायक खडजा सडको को पक्की सडको मे बदला जाय।

3– गॉवो मे परिवहन के साधनो मे मोटर परिवहन का तेजी से विकास हो रहा है अत सडको की मरम्मत की व्यवस्था नियमित होनी चाहिए।

4– सडक जाल इस प्रकार होनी चाहिए कि सभी गॉवो का सम्पर्क सेवाकेन्द्रो से हो जाय।

5– सडको के विकास के लिए ऐच्छिक श्रम अर्थात् श्रमदान को प्रोत्साहित किया जाय।

6– राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण सडको के निर्माण मे स्वैच्छिक सस्थाओ का सहयोग प्राप्त किया जाय तथा रखरखाव की नियमित जिम्मेदारी बॉट दी जाय। इस कार्य मे ग्राम पचायतो एव सहकारी सस्थाओ का व्यापक सहयोग लिया जा सकता है।

7– सडक निर्माण की लागत गुणवता और कार्य के प्रति ठेकेदार समेत अधिकारी और अभियन्ता को जवाबदेह बनाया जाय, ताकि उसका वास्तविक लाभ ग्रामीणो तक पहुँच सके।

(ख) सचार तत्र का नियोजन

किसी भी क्षेत्र के विकास की सकल्पना मे सचार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनपद मे सचार माध्यमो की उपलब्धता बहुत ही निम्न स्तर की है। अत क्षेत्र के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए प्रथमत सुनियोजित सचार तत्र की स्थापना अनिवार्य है। इसमे सचार के प्राचीनतम माध्यम (डाक तार आदि) एव नवीनतम तकनीकी माध्यमो (टेलीफोन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट दूरदर्शन रेडियो) का इस प्रकार समन्वय हो कि ये परस्पर एक दूसरे के पूरक बन सके,

क्योकि विकास मे सबके लिए एक सुनिश्चित भूमिका है। इन सभी माध्यमो का विकास कई प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष कारको से अर्तसम्बन्धित है। जैसे– शिक्षा–साक्षरता का विकास सुसम्बद्ध एव अभिगम्य परिवहन तत्र एव बिजली की पर्याप्त उपलब्धता। अत प्रथमत उपर्युक्त सुविधाओ का जनपद मे विकास किया जाय तथा उसके बाद जनसख्या की विभिन्न आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए उपर्युक्त सुविधाओ की क्षेत्र मे स्थापना की जाय। जैसे– अध्ययन क्षेत्र मे डाकघरो एव तारघरो की सख्या अपेक्षित स्तर तक नही है। अत प्रत्येक ग्राम को सडको से सम्बद्ध कर अपेक्षित स्तर तक डाकघरो की स्थापना की जाय साथ ही पत्रो का नियमित वितरण सुनिश्चित की जाय। इसमे ग्रामप्रधान का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

यद्यपि टेलीफोन पीसीओ की सुविधा नगरो की अपेक्षा गॉवो मे अधिक है फिर भी इनकी सख्या कम है। अत प्रत्येक ग्राम मे टेलीफोन की सुविधा उपलब्ध करायी जाय इसके लिए जनपद मे अपेक्षित टेलीफोन एक्सचेज की स्थापना कर क्षमता मे वृद्धि अपेक्षित है। टेलीफोम कनेक्शनो की सख्या जनसख्या के अधिकाश भागो तक पहुँचे इसके लिए केन्द्रीय स्तर भी आयोजना मे सुधार की आवश्यकता हे। प्राय टेलीफोन प्रसार का ठेका किसी व्यावसायिक कम्पनी को ही दिया जाता है। अत जहॉ सरकार की प्राथमिकता अधिकतर लोगो तक टेलीफोन की सुविधा पहुँचाना होता है वही कम्पनियो की प्राथमिकता अधिकतम लाभ कमाना होता है जिस कारण वह शहरो मे व्यवसाय करने मे दिलचस्पी लेती है। फलत गॉव सुविधा से वचित रह जाता है। अत किसी भी कम्पनी को बडे शहरो मे दूरसचार का ठेका इस शर्त के साथ दिया जाय कि वह आस–पास के गॉवो के एक निश्चित क्षेत्रफल को भी अपनी सेवाये मुहैया कराऍगे। सूचना के आधुनिकतम प्रौद्योगिकी माध्यम विद्युत सुलभता एव शिक्षा के विकास पर भी अवलम्बित है, अत जनपद मे शिक्षा एव विद्युत उपलब्धता की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाय। इसके लिए प्रत्येक गॉव तक पहले बिजली को पहुँचाया जाय। वर्तमान मे कुल आबाद गॉवो (1990) मे से 1437 गॉवो तक ही बिजली पहुँची है। अर्थात अभी भी 27 78 प्रतिशत गॉव अधेरे मे जी रहे है।

शिक्षा के विकास से ही सम्बन्धित एक और सूचना माध्यम है वह है *समाचार पत्र*। अध्ययन क्षेत्र मे औद्योगिकरण एव नगरीकरण के बावजूद आज भी वास्तविक *देवरिया* गॉवो मे ही बसा है। शिक्षा के अभाव मे समाचार पत्र सूचना का सशक्त–माध्यम नही बन पाया है। इसके पीछे अन्य कारणो के अलावा एक कारक सीधे समाचार पत्र के उद्देश्य एव गुणवत्ता से ही सम्बन्धित है। आज समाचार पत्रो का उद्देश्य लोकहित तथा लोक कल्याण से सम्बन्धित समस्याओ को उजागर करना न होकर व्यावसायिक होता जा रहा है। इसके पीछे रिपोर्टिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राय सभी पत्रो मे चुनाव किसान रेलियो एव राजनीतिक समाचारो को ही प्रमुखता मिलती हे। इनके साथ–साथ गॉव के लोगों विशेषकर वहॉ के कमजोर वर्गों की वास्तविक सामाजिक–आर्थिक समस्याओ की ओर ध्यान दिलाना तथा उन उपायो का मूल्याकन करना ग्रामीण रिर्पोटिग का मुख्य

उद्देश्य होना चाहिए जो इन समस्याओ को हल करने और कमजोर वर्गो की सामाजिक आर्थिक दशा सुधारने के लिए किये जा रहे है।

सचार आयोजना के लिए जरूरी है कि हमे अपनी सास्कृतिक विरासत विशिष्टता और प्रभुसत्ता का सदा भान रहे। इसमे आधुनिकता और सामाजिक परिवर्तन की ग्राह्यता के साथ–साथ परम्परा की निरन्तरता को जीवन्त बनाए रखने की क्षमता भी होनी चाहिए। यद्यपि रेडियो दूरदर्शन और फिल्म के विपरीत प्रेस जैसे सशक्त माध्यम को स्थापित होने मे कुछ समय लगेगा क्योकि आधारभूत ढॉचे का विस्तार मात्र ही इसके विकास के लिए आवश्यक नही है बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है प्रकाशित सामग्री को पढने के लिए क्षमता और रुचि का विकास करना। इसके लिए प्रथमत साक्षरता को उच्च्य स्तर तक विकसित करना होगा। इस प्रकार जनसम्पर्क माध्यम और सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी प्रासगिक और लचीली गैर विशिष्ट वर्गीय और सहभागिता के दृष्टिकोण वाली होनी चाहिए। पिछडे क्षेत्र के लोगो को सहभागी लोकतन्त्र के लिए सक्षम बनाने तथा विकासोन्मुखी समाज की शुरुआत करने के लिए सचार नियोजन और जनसम्पर्क माध्यमो की नीति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

References

1 कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2002 पृष्ठ 36

2 कुरैशी एम एच भारत का भूगोल ससाधन तथा प्रादेशिक विकास एन सी ई आर टी 1978 पृ 100

3 मिश्र एस के व पुरी वी के भारतीय अर्थव्यवस्था' 2000 पृ 867

4 कुरैशी एम एच भारत ससाधन और प्रादेशिक विकास' एन सी ई आर टी 1990 पृ 102

5 वही पृ 101

6 सिह जगदीश परिवहन तथा व्यापार भूगोल 1977 पृ 4

7 *Thomas, R L 'Transporation and Development of Malaya', A A A G Vol 65, No 2, p 67*

8 *Qureshı M H , 'Indıa Reources and Regıonal Development', N C E R T, New Delhı, 1990, p-67*

9 'कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2002 पृ 38

10 *Sıngh, J 'Parıvahan and Vyapar Bhoogol', Uttar Pradesh Hındı Sansthan Lucknow 1977, p-149*

11 *Babu, R , 'Mıcro-level Plannıng- A case study of chhıbramu Thasıl', Unpublıshed Ph D Thesıs, Geography Deptt , Allahabad Unıversıty, 1981, p 244*

12 *Ibıd, p 245*

13 *Ibıd, p 246*

14 *Parakh, Bhalchandra Sadashıve, 'Indıa Economıc Geography', N C E R T, New Delhı, p 151*

15 मुख्यमत्री की साप्ताहिक समीक्षा से सम्बन्धित 33— बिन्दुओ का प्रगति विवरण जनपद— देवरिया फरवरी— 2002

16 'कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2002 पृष्ठ— 36

17 वही— पृष्ठ— 37

18 वही— पृष्ठ— 37

अध्याय-सात

सेवाकेन्द्र तथा सामाजिक सुविधाओं का विकास

7 1 सेवाकेन्द्र एव सामाजिक बुनियादी क्षेत्र

किसी भी क्षेत्र का विकास दो स्तरो पर प्रतिबिबित होता है– *प्रथम* मानवीय विकास स्तर पर तथा *द्वितीय* क्षेत्रीय विकास के स्तर पर। दोनो क्षेत्रो के विकास स्तर मापन के अपने–अपने प्राचल है परन्तु सर्वांगीण विकास दोनो के सतुलित विकसित स्वरूप से ही झलकता है। मानवीय विकास के बिना क्षेत्रीय विकास विरोधाभास पैदा करता है जिससे विकास बाधित होता है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए बुनियादी क्षेत्र मे निवेश अनिवार्य होता है। उपर्युक्त आधार पर इसे दो क्षेत्रो मे बॉटा जा सकता है– *आर्थिक बुनियादी क्षेत्र* और *सामाजिक बुनियादी क्षेत्र*। **आर्थिक बुनियादी क्षेत्र** मे निवेश मुख्यत आर्थिक गतिविधियो को समर्थन और बढावा देता है। इसके घटक बिजली दूरसचार सडक बदरगाह परिवहन जलापूर्ति तथा स्वच्छता है। जबकि **सामाजिक बुनियादी क्षेत्र** मे स्वास्थ्य और मानव ससाधन विकास सामाजिक–सास्कृतिक वैधानिक और प्रशासनिक प्रणाली तथा वाणिज्यिक एव सस्थागत ढॉचा शामिल है। ये दोनो क्षेत्र न सिर्फ एक–दूसरे के पूरक है। बल्कि कृषि और खनन जैसे बुनियादी क्षेत्र और उत्पादन जैसे द्वितीय क्षेत्र को आगे बढाने मे एक दूसरे पर निर्भर है। चूँकि बुनियादी क्षेत्र आम आदमी को सेवाएँ उपलब्ध कराता है। इसलिए जीवन–स्तर के निर्धारण मे इसका सीधा हस्तक्षेप है। इस तरह बुनियादी क्षेत्र किसी राष्ट्र की आर्थिक तथा सामाजिक–सास्कृतिक गतिविधियो का स्तर तथा प्रकृति को प्रभावित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विकास के कुछ ऐसे मुद्दे जो बुनियादी क्षेत्र के उपयुक्त समर्थन के बिना पूरे नही हो सकते है निम्न हैं–[1]

1 उत्पादन मे विविधता और व्यापार का विस्तार।

2 जनसख्या नियन्त्रण और निर्धनता मे कमी लाना, रोजगार के अवसर बढाना।

3 ससाधनो का प्रभावी आबटन और

4 पर्यावरण की स्थिति मे सुधार लाना।

पिछले अध्याय के अतर्गत विकास मे *आर्थिक बुनियादी क्षेत्र* की भूमिका का विश्लेषण किया जा चुका है। प्रस्तुत अध्याय मे विकास मे *सामाजिक बुनियादी क्षेत्र* की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत है। मानवीय विकास के बिना क्षेत्रीय विकास अधूरा है, अत मानवीय विकास के लिए सामाजिक क्षेत्र मे निवेश तथा स्थितियो की पडताल अपेक्षित है।

सामाजिक क्षेत्र मे निवेश का लाभ प्रत्यक्ष नही मिलता है इसीलिए इसे प्राय अनुत्पादक विनियोग भी कह दिया जाता है। यह अप्रत्यक्ष विनियोग ही विकास का आधार स्तम्भ है तथा विकास की दीर्घकालीन रणनीति इन्ही विनियोगो पर आश्रित होती है। प्रधान रूप मे इसके अतर्गत शिक्षा स्वास्थ्य तथा मनोरजन जैसी सामाजिक सुविधाओ को ही शामिल किया जाता है। प्रस्तुत अध्याय मे विकास का विश्लेषण इन्ही प्रमुख सुविधाओ के सन्दर्भ मे किया गया है। इनमे विनियोग मनुष्य की कार्यकुशलता की वृद्धि मे अभिप्रेरण होने के कारण इस महत्वपूर्ण तथा उत्पादक विनियोग के अतर्गत गिना जाने लगा है।[2] इन सामाजिक सुविधाओ को विकास का सूचक माना गया है। इसलिए सामाजिक सुविधाओ के विकास को सम्पूर्ण विकास का एक महत्वपूर्ण अग माना जाता है। मानव का सास्कृतिक एव भौतिक विकास प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा एव स्वास्थ्य से सम्बन्धित सुविधाओ से प्रभावित होता रहता है। ये सुविधाएँ सेवाकेन्द्रो द्वारा उपलब्ध करायी जाती है क्योकि इनकी इकाइयॉ सेवाकेन्द्रो पर ही स्थापित होती है। उपर्युक्त तथ्यो को दृष्टिगत रखते हुए सविधान निर्माताओ ने शिक्षा एव स्वास्थ्य से सम्बन्धित तथ्यो को *मौलिक अधिकारो* एव *राज्य की नीति निर्देशक तत्वो* के अन्तर्गत समाहित किया है।[3]

मनुष्य की मूल आवश्यकताओ– भोजन कपड़ा और मकान– के बाद शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रमुख स्थान है। उत्तम स्वास्थ्य व शिक्षा से ससाधनो का अधिकतम उपयोग किया जा सकता है सीमित ससाधनो को विकसित किया जा सकता है तथा नये ससाधनो को खोजा जा सकता है। अत प्रस्तुत अध्ययन मे इन्ही दो तथ्यो (शिक्षा एव स्वास्थ्य) को अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ मे विश्लेषित किया गया है।

(क) शिक्षा विकास

7 2 शिक्षा–महत्व एव विकास

शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक और भावात्मक विकास का एक अनवरत प्रयास है जिससे उसकी कार्यक्षमता बढे दृष्टिकोण सतुलित और सकारात्मक बने और वह एक उपयोगी एव उत्तरदायी व्यक्ति बनकर परिवार समाज ओर देश के जीवन मे अपनी भूमिका निभा सके। *महात्मागॉधी* ने इसी उद्देश्य से कहा– *शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे या प्रौढ के शरीर, मन और आत्मा मे विद्यमान सर्वोत्तम गुणो का सर्वागीण विकास करना है।*[4]

शिक्षा विकसित समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। विश्व के लगभग सभी समाजो और सभी कालो मे शिक्षा का महत्व स्वीकार किया गया न केवल स्वीकार ही किया गया बल्कि उसके प्रसार के लिए समुचित ओर वास्तविक व्यवस्था भी की गई। जिन समाजो मे शिक्षा का आलोक नही फैला वे कूप–मडूक और अतीत जीवी बने रहे।

वस्तुत शिक्षा हमे आधुनिक सभ्यता की उपलब्धियो को जानने समझने ओर उन्हे आत्मसात् करने के योग्य बनाती है अपनी समृद्ध सास्कृतिक विरासत के साथ–साथ आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियो से जोडती है। और चाहे हम किसी भी कार्य व्यापार से सम्बद्ध क्यो न हो– उनसे जुडी उपयोगी तकनीक के दैनिक जीवन मे प्रयोग को प्रोत्साहित करती है। यह हमारी विश्लेषण क्षमता और तर्क बुद्धि का विकास करती है और सही–गलत का निर्णय कर पाने का विवेक पैदा करती है।

55 वर्ष पूर्व स्वतत्रता प्राप्ति के समय अन्य क्षेत्रो की तरह शिक्षा के मामले मे भी हमारी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। 1951 मे देश की मात्र 18 33 प्रतिशत आबादी साक्षर थी लेकिन विगत आधी शताब्दी के सुनियोजित प्रयास से इस स्थिति मे काफी बदलाव आया है। सविधान के *नीति–निर्देशक सिद्धान्तो के अनुच्छेद 45* से अर्जित शक्ति और प्रेरणा से अनुप्राणित सर्वशिक्षा की *93 वे सविधान सशोधन* तक की इस यात्रा मे अनेक महत्वपूर्ण पडाव आए है जहॉ ठहर कर हमारे नीति–निर्माताओ ने हासिल उपलब्धियो और शेष लक्ष्य का मुआयना किया अनुभवजनित सशोधन किए और पुन लक्ष्योन्मुख हुए। *राष्ट्रीय शिक्षानीति 1968* 1976 का सविधान सशोधन जिसके द्वारा शिक्षा को *राज्य सूची* से निकालकर *समवर्ती सूची* मे लाया गया *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986* और *93 वॉ सविधान सशोधन 2001* जिसके द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चो को अनिवार्य रूप से स्कूल भेजना माता–पिता और अभिभावको का उत्तरदायित्व बना दिया गया है [5]– ये इस यात्रा के महत्वपूर्ण पडाव हैं। अब शिक्षा प्राप्त करना न केवल सरकार की वरन् माता–पिता और सरकार दोनो की सम्मिलित जिम्मेदारी है।

इन प्रयासो का ही परिणाम है कि 1991 से 2001 के दशक मे साक्षर नागरिको की सख्या मे आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई है और 1991 के 52 21 प्रतिशत से बढकर 2001 मे साक्षरो की कुल आबादी 65 38 प्रतिशत हो गई है। मात्र एक दशक मे 12 46 प्रतिशत की वृद्धि बीती सदी के अन्य किसी भी दशक की तुलना मे सर्वाधिक है। उल्लेखनीय है कि *पहली बार देश के कुल निरक्षर लोगो की सख्या मे कमी आयी है* अन्यथा अब तक निरक्षर लोगो के प्रतिशत मे तो कमी आती थी लेकिन आबादी बढने के साथ–साथ प्रत्येक दशक मे निरक्षरो की कुल सख्या बढती ही जाती थी। यह अपने आप मे एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। शिक्षा और साक्षरता के प्रसार की यह गति पूरे देश मे एक जैसी अग्रगामी नही है। 1991–2001 के दौरान जहॉ *राजस्थान* तथा *दादरा* और *नागर हवेली* मे साक्षरो की सख्या दोगुनी से भी अधिक हो गई है, वही अनेक राज्यो की प्रगति अधोगामी रही है। *उत्तरप्रदेश* मे 80 प्रतिशत से अधिक की बढोत्तरी दर्ज की गई है।

7 3 साक्षरता–परिभाषा एव प्रयास

न्यूनतम शैक्षिक निपुणता को *साक्षरता* कहते है। साक्षरता के आधार एव परिभाषा भिन्न–भिन्न देशो मे भिन्न–भिन्न अपनायी गयी है किन्तु सर्वत्र निम्न दो तथ्यो मे से किसी न किसी को अवश्य स्वीकार किया गया है। *प्रथम*– विद्यालयी शिक्षा अवधि तथा *द्वितीय*–किसी भी प्रचलित भाषा मे समझ के साथ पढने व लिखने की योग्यता। *'सयुक्त राष्ट्र सघ जनसख्या आयोग'* ने किसी भी भाषा मे साधारण सदेश को समझ के साथ पढने और लिखने की योग्यता को साक्षरता निर्धारण का आधार माना है।[6] भारतीय जनगणना मे लगभग इसी परिभाषा को स्वीकारोक्ति के साथ कहा गया है कि जो व्यक्ति किसी भी भाषा मे लिखना पढना ओर गणित की दृष्टि से 1 से 100 तक गिनना और सरल जोड घटाव गुणा और भाग जानता हो वह साक्षर है।[7] इस प्रकार वह व्यक्ति जो केवल पढ सकता हे लिख नही सकता साक्षर नही है। 1981 की जनगणना की परिभाषा के अनुसार 0–4 आयु समूह के बच्चो को निरक्षर माना गया था। किन्तु 1991 और 2001 की जनगणना मे 0–6 आयु समूह के बच्चो को निरक्षर माना गया है। भारत सरकार की वर्तमान नीति के अन्तर्गत 15 से 35 वर्ष के आयुवर्ग के लोगो क लिए सन् *2005 तक सम्पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य* रखा गया है। इसके लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारो द्वारा कई योजनाएँ चलायी जा रही है। केन्द्रीय योजनाओ मे *राष्ट्रीय साक्षरता मिशन* (1988 से आरभ) *मध्यान्ह भोजन योजना* (1995 से आरम्भ) तथा प्राथमिक विद्यालय को साधन सम्पन्न बनाने के उद्देश्य से 1987–88 मे *आपरेशन ब्लैक बोर्ड* प्रारम्भ की गयी। इनके अतिरिक्त हाल ही मे भारत सरकार द्वारा घोषित *'सर्व शिक्षा अभियान'* के अन्तर्गत प्रदेश मे विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने हेतु विशेष प्रयास किये जाने का निर्णय लिया गया है।

साक्षरता मे वृद्धि के लिए प्रदेश स्तर पर कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसमे प्रदेश भर के 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चो को स्कूल लाने का अभियान जुलाई 2001 से *'स्कूल चलो अभियान'* के नाम से आरभ की गयी है। इस अभियान की सफलता से प्रेरित होकर राज्य सरकार इसे सम्पूर्ण प्रदेश मे क्रियान्वित कर रही है। *'सभी के लिए शिक्षा परियोजना'* के अतर्गत प्रदेश मे 49 जिलो मे विभिन्न प्रकार की बाह्य सहायता योजनाएँ सचालित की गई है। इन योजनाओ मे *बेसिक शिक्षा परियोजना* तथा *जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम* प्रमुख हैं। *'शिक्षा गारटी योजना'* के अन्तर्गत प्रदेश मे अभी तक प्राथमिक विद्यालय से वचित प्रत्येक गॉव मे ग्राम पचायतो के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय खोलने के प्रयास किए गए है। प्राथमिक विद्यालयो मे शिक्षा की कमी को पूरा करने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा *'शिक्षा मित्र योजना'* भी सचालित की गई है। इस वर्ष (2002) प्रदेश सरकार द्वारा *'प्रदेश शिक्षा नीति'* तैयार की जा रही है। प्रदेश की अपनी शिक्षा नीति बन जाने से प्रदेश मे समुचित शैक्षिक विकास के लिए आवश्यक वित्तीय ससाधनो की व्यवस्था, विभिन्न क्षेत्रो एव वर्गों की आवश्यकताओ के अनुरूप उपयोगी योजनाएँ, गुणात्मक शिक्षा के लिए

समुचित प्रयास समुचित शैक्षिक विकास हेतु उपयुक्त प्रकार से शैक्षिक नियोजन उत्तरदायित्वपूर्ण शैक्षिक प्रबधन एव परीक्षा पद्धति मे सुधार लाने हेतु विशेष प्रयास किया जाना सभव हो सकेगा।

7 4 अध्ययन क्षेत्र मे शिक्षा एव साक्षरता विकास

जनपद मे 1991 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण जनसख्या का 59 7 प्रतिशत पुरुष तथा 20 9 प्रतिशत स्त्री एव नगरीय जनसख्या का 75 1 प्रतिशत पुरुष तथा 48 5 प्रतिशत स्त्री साक्षर रही है। इस प्रकार 1991 मे जनपद मे कुल जनसख्या का 61 4 प्रतिशत तथा 23 4 प्रतिशत स्त्री साक्षर थी। कुल साक्षरता का प्रतिशत 42 3 था जबकि उस समय प्रदेश का साक्षरता प्रतिशत 42 42 था परन्तु वर्तमान समय मे वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जहाँ प्रदेश की साक्षरता दर 57 36 प्रतिशत है वही जनपद की साक्षरता दर 59 84 प्रतिशत हो गयी है। वर्तमान मे प्रदेश मे पुरुष और स्त्री साक्षरता का प्रतिशत क्रमश 70 23 और 42 98 है जबकि ये प्रतिशत जनपद मे क्रमश– 76 31 और 43 56 है। इस प्रकार 1991 से 2001 के मध्य जनपद की साक्षरता मे व्यापक वृद्धि दर्ज की गयी है। इस बीच कुल साक्षरता मे 17 54 प्रतिशत पुरुष साक्षरता मे 14 91 प्रतिशत एव स्त्री साक्षरता मे 20 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि इस बीच प्रदेश की कुल साक्षरता मे वृद्धि मात्र 14 94 प्रतिशत ही रही। इस प्रकार जनपद मे साक्षरता बढाने के कार्यक्रमो का परिणाम सकारात्मक रहा है। निम्न तालिका के माध्यम से जनपद की साक्षरता की तुलना 2001 की जनगणना के आधार पर प्रदेश और देश की साक्षरता से प्रस्तुत है।

सारणी–7 1

देश, प्रदेश एव जनपद मे साक्षरता स्थिति (1991–2001)

(साक्षरता कुल जनसख्या के प्रतिशत में)

देश / प्रदेश / जनपद	वर्ष	कुल साक्षरता	पुरुष साक्षरता	स्त्री साक्षरता
देश –	1991	52 21	64 13	39 29
	2001	65 38	75 85	54 16
वृद्धि		**17 17**	**11 72**	**14 87**
प्रदेश	1991	40 71	54 82	24 87
	2001	57 36	70 23	42 98
वृद्धि		**16 65**	**15 41**	**18 11**
जनपद	1991	42 30	61 40	23 4
	2001	59 84	76 31	43 56
वृद्धि		**17 54**	**14 91**	**20 16**

स्रोत– भारत की जनसख्या – 2001, आँकडे एव तथ्य, उपकार प्रकाशन, आगरा एवं साख्यिकी पत्रिका–2001, देवरिया जनपद।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि **कुल साक्षरता** की वृद्धि प्रतिशत जहॉ *देश* मे 17 17 *प्रदेश* मे 16 65 रही वही *जनपद* मे कही अधिक 17 54 प्रतिशत बढी। इसमे **पुरुष साक्षरता** मे वृद्धि का प्रतिशत *देश* मे 11 72 रहा वही *प्रदेश* मे 15 41 रहा। *जनपद* मे अपेक्षाकृत कम वृद्धि 14 91 प्रतिशत दर्ज की गयी। परन्तु **स्त्री साक्षरता** मे वृद्धि का प्रतिशत *जनपद* मे *देश* और *प्रदेश* दोनो के औसत से अधिक रहा। देश मे जहॉ स्त्री साक्षरता मे मात्र 14 87 प्रतिशत एव प्रदेश मे 18 11 प्रतिशत की ही वृद्धि हुयी वही जनपद मे 20 16 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। इस प्रकार जनपद मे साक्षरता की प्रगति सतोषजनक स्तर से हो रही है। वर्तमान समय मे जनपद मे साक्षरता कार्यक्रम के अतर्गत– *दीप शिखा– उत्तर साक्षरता कार्यक्रम*[8] चलाया जा रहा है।

जनपद स्तर पर साक्षरता की दृष्टि से एक सार्थक उपलब्धि हासिल करने के बावजूद अभी भी विकासखण्ड स्तर पर इसमे काफी भिन्नता है। 2001 की जनगणना के अनुसार आज भी 15 मे से मात्र 5 विकासखण्डो मे ही साक्षरता जनपद के औसत साक्षरता (59 84) से अधिक है। विकासखण्ड के स्तर पर उच्चतम साक्षरता *लार* मे (67 7) तथा निम्नतम स्तर *रुद्रपुर* मे (49 7) पायी जाती है। अर्थात इसमे 18 0 प्रतिशत का अतर है। विकासखण्ड स्तर पर पिछले दशक मे

सारणी 7 2

साक्षर व्यक्तियो का कुल जनसख्या से प्रतिशत एव साक्षरता वृद्धि (1991–2001)

विकास खण्ड	साक्षरता प्रतिशत (1991)	साक्षरता प्रतिशत (2001)	साक्षरता वृद्धि
1 लार	48 6 **	67 7**	19 1
2 सलेमपुर	47 6	66 2	18 6
3 भागलपुर	46 7	64 2	17 5
4 भटनी	42 4	62 2	19 8
5 बरहज	42 1	61 4	19 3
6 देवरिया सदर	40 9	56 8	15 9
7 भलुअनी	40 7	54 5	13 8
8 भाटपाररानी	39 8	59 8	20 0 **
9 देसही देवरिया	38 5	56 8	18 3
10 रामपुर कारखाना	38 1	57 3	19 2
11 बैतालपुर	36 6	52 5	15 9
12 बनकटा	36 2	49 9	13 9
13 रुद्रपुर	36 1	49 7*	13 6 *
14 गौरीबाजार	36 0	55 9	19 9
15 पथरदेवा	35 0 *	53 0	18 0

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 एव उत्तरप्रदेश एक अध्ययन–2003, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज क्रमश पृ 165 एव 32

** – अधिकतम

* – न्यूनतम

साक्षरता मे सर्वाधिक वृद्धि क्रमश भाटपार रानी (20 0) गौरी बाजार (19 9) भटनी (19 8) बरहज (19 3) रामपुर कारखाना (19 2) और लार मे (19 1) दर्ज की गयी। सारणी 7 2 एव चित्र (7 1) तथा रेखाचित्र (7 2) के माध्यम से विकासखण्ड स्तर पर 1991 से 2001 के मध्य साक्षरता मे वृद्धि के प्रतिरूप को स्पष्ट किया गया है।

7 5 औपचारिक शिक्षा का प्रतिरूप

औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत केवल स्कूली शिक्षा को सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत स्कूल से बाहर दी जाने वाली शिक्षा पद्धति नही आती है। इसमे प्रौढ शिक्षा स्त्री शिक्षा घरेलू प्रशिक्षण आश्रम शिक्षा तथा स्वयसेवी सस्थाओ आदि द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को समाहित नही किया गया है। प्रस्तुत अध्याय मे *औपचारिक शिक्षा* के अन्तर्गत जूनियर बेसिक स्कूल सीनियर बेसिक स्कूल हायर सेकेन्ड्री स्कूल तथा महाविद्यालय आदि का वर्णन किया गया है। ये इकाइयॉ ही सेवाकेन्द्र पर स्थित होती है तथा इन्ही इकाइयो के माध्यम से सेवाकेन्द्र क्षेत्रीय जनसख्या को शिक्षा सेवा उपलब्ध करा पाता है।

(अ) जूनियर बेसिक विद्यालय

शिक्षा विकास की आधारशिला है और शिक्षा की आधारशिला *प्राथमिक शिक्षा* है। इसी स्तर से शिक्षा व्यक्तित्व को गढना और परिष्कृत करना आरभ करती है, जिससे आगे चलकर व्यक्ति चमत्कृत होता है और एक समुन्नत समाज का निर्माण करता है। शिक्षा के विकास मे प्राथमिक शिक्षा की इस महत्ता को स्वीकारते हुए ही आर्थिक मानचित्र के शिखर पर बैठे विश्व के प्रमुख देश *जापान* और *कोरिया* प्राथमिक शिक्षा मे अधिकतम निवेश करके विकास के वर्तमान स्तर तक पहुँचे। परन्तु हमारे देश मे आज भी उच्च शिक्षा पर ही विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

सम्पूर्ण जनपद मे वर्ष 2000–01 मे जुनियर बेसिक स्कूलो की कुल सख्या 1813 थी। इसमे 55 विद्यालय नगरीय क्षेत्रो मे अवस्थित थे। कुल सख्या की दृष्टि से विद्यालयो की सर्वाधिक सख्या *पथरदेवा* विकासखण्ड मे (151) तथा न्यूनतम सख्या *देसही देवरिया* विकासखण्ड मे (81) थी। परन्तु शिक्षा पर प्रभाव विद्यालयो की सख्या से नही व्यक्त होता है वरन् जनसख्या एव विद्यालय के अनुपात से व्यक्त होता है। इस दृष्टि से प्रतिलाख जनसख्या पर जूनियर बेसिक स्कूलो की सर्वाधिक सख्या क्रमश *भागलपुर लार भाटपाररानी बरहज रुद्रपुर* विकासखण्डो मे हैं। न्यूनतम सख्या *गौरीबाजार* विकासखण्ड मे है यहॉ एक लाख जनसख्या पर मात्र 71 4 ही विद्यालय हैं। इस प्रकार जनपद मे विकासखण्ड स्तर पर प्रति लाख जनसख्या पर जूनियर बेसिक स्कूलो की सख्या मे 37 5 तक का अतर है। यह प्राथमिक शिक्षा के विकास मे अच्छी स्थिति नही है। प्रत्येक विकासखण्ड मे जनसख्या–स्कूल अनुपात बराबर होना चाहिए तथा प्राथमिक विद्यालयो की उपलब्धता बढनी चाहिए। यदि विद्यालयो की उपलब्धता को ग्रामीण एव नगरीय क्षेत्रो की दृष्टि से देखा जाय तो कुल ग्रामीण जनसख्या (19 87 509) पर 1758 जूनियर बेसिक स्कूल हैं तथा

जनपद देवरिया का साक्षरता प्रतिरुप (% मे) 2001

Fig 7 1

चित्रारेख– 7 2
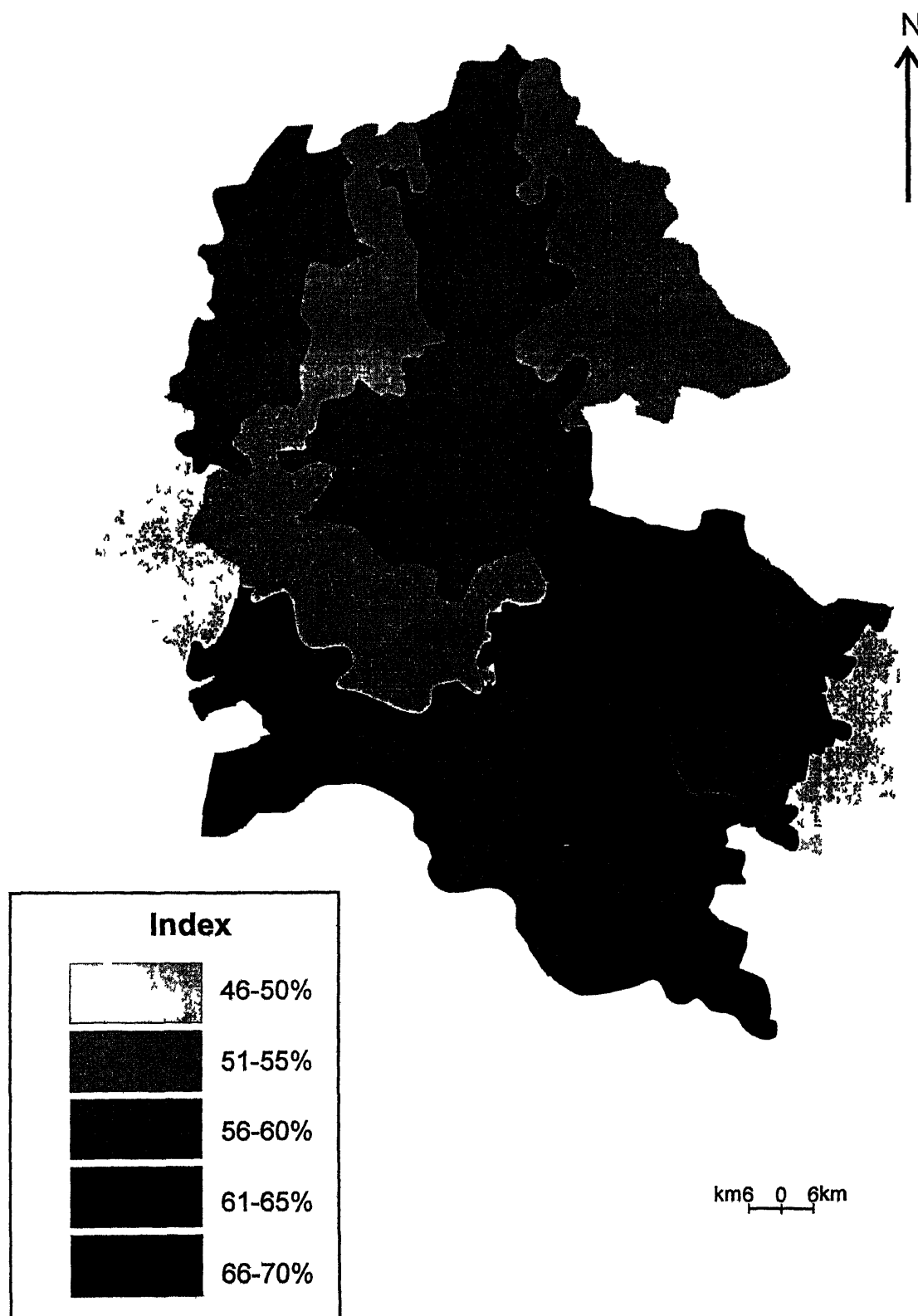
जनपद देवरिया मे साक्षरता प्रतिशत 1991–2001

सारणी 7 3
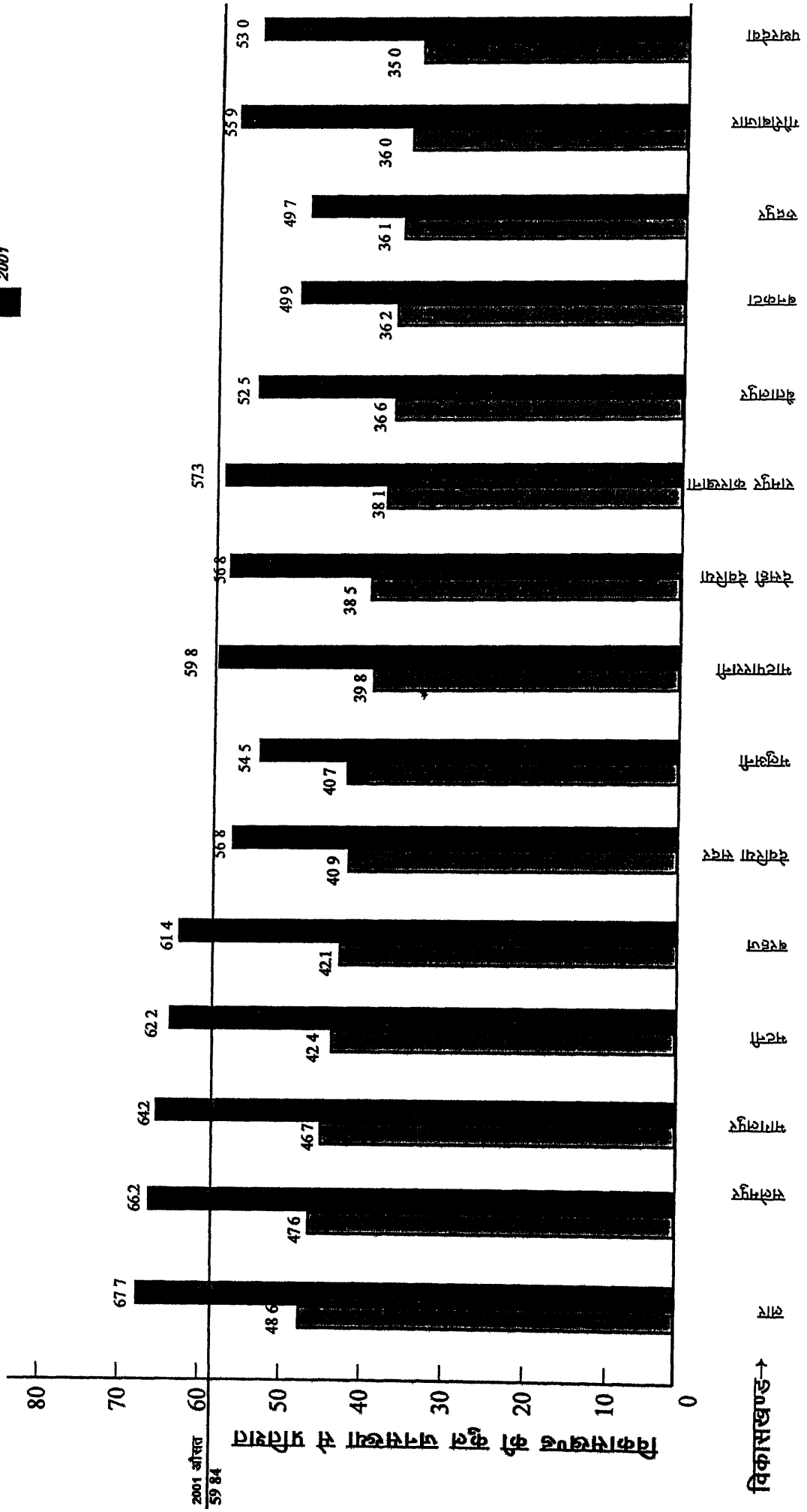
जनपद मे विकास खण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षण सस्थाओ की सख्या एव प्रति लाख जनसख्या पर उनकी सख्या– 2000–01

विकास खण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल		सीनियर बेसिक स्कूल		हायर सेकेन्ड्री स्कूल		महाविद्यालय सख्या
	सख्या	प्रतिलाख जनसख्या पर स	सख्या	प्रति लाख जनसख्या पर स	सख्या	प्रतिलाख जनसख्या पर स	
1 गौरीबाजार	117	71 4*	31	18 9	5	3 1*	1
2 बैतालपुर	105	72 4	25	17 2	6	4 1	-
3 देसही देवरिया	81	72 2	13	11 6 *	10	8 9	-
4 पथरदेवा	151	79 4	35	18 4	15	7 9	1
5 रामपुर कारखाना	114	93 1	22	18 0	7	5 7	-
6 देवरिया सदर	129	80 7	26	16 3	22	13 8	3
7 रुद्रपुर	126	98 8	26	20 4	7	5 5	1
8 भलुअनी	114	81 1	23	16 4	14	10 0	1
9 बरहज	101	104 3	25	25 8	10	10 3	1
10 भटनी	112	91 4	22	18 0	16	13 1	-
11 भाटपाररानी	126	104 7	26	21 6	7	5 8	1
12 बनकटा	108	92 6	16	13 7	11	9 4	1
13 सलेमपुर	131	91 5	50	34 9 * *	20	14 0 * *	1
14 भागलपुर	115	108 9* *	16	15 1	12	11 4	1
15 लार	128	106 2	27	22 4	9	7 5	2
योग ग्रामीण	1758		383		171		6
नगरीय	55		30		32		8
योग जनपद	1813		413				14

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया– पृ सख्या – 89 125 126 169 170 से सगणित।

** = अधिकतम

* = न्यूनतम

कुल नगरीय जनसख्या (2 17 363) पर मात्र 55 विद्यालय है। अर्थात् जहाँ ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्यालय–जनसख्या अनुपात 1 1131 है वही नगरीय क्षेत्र मे ये अनुपात 1 3952 है। इस प्रकार नगरीय क्षेत्रो मे इस सुविधा का अभाव प्रतीत होता है परन्तु नगरो मे निजी क्षेत्रो द्वारा *अधिकाधिक* सख्या मे स्कूलो की स्थापना हो रही है जिससे शिक्षा विकास पर इसका बुरा असर नही पड रहा है। इस प्रकार देखा जाय तो शहरो मे निजी क्षेत्रक द्वारा स्कूल/कान्वेन्ट स्थापना के लिए यह एक अप्रत्यक्ष कारण है।

(ब) सीनियर बेसिक विद्यालय

जनपद मे वर्ष 2000–01 मे सीनियर बेसिक स्कूलो की कुल सख्या 413 है। इसमे से 383 ग्रामीण क्षेत्रो मे तथा 30 नगरीय क्षेत्र मे अवस्थित है। कुल 413 विद्यालयो मे बालिकाओ के विद्यालयो की सख्या 86 है। इनमे से 8 नगरीय क्षेत्रो मे अवस्थित है। यद्यपि शिक्षा मे लडको और लडकियो मे भेद नही बरता जाना चाहिए तथा लडको और लडकियो के लिए समन्वित शिक्षा प्रणाली पर जोर देना उनके विकास के लिए हितकर होगा, न कि दानो के लिए पृथक–पृथक सस्थाओ की स्थापना करना। परन्तु नगरीय एव ग्रामीण क्षेत्रो मे स्कूलो और बच्चो की सख्या के मध्य एक सा अनुपात होना आवश्यक है। इससे दोनो क्षेत्रो का एक समान विकास प्रोत्साहित होगा। विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक सीनियर बेसिक विद्यालयो की सख्या (50) *सलेमपुर* मे पायी जाती है जबकि *देसही दवरिया* मे मात्र 13 ही विद्यालय हैं। विद्यालय एव जनसख्या के अनुपात की दृष्टि से भी सर्वोत्तम स्थिति *सलेमपुर* एव न्यूनतम स्थिति *देसही देवरिया* की ही है। इस प्रकार विकासखण्डो मे जहाँ प्रतिलाख जनसख्या पर अधिकतम सख्या 34 9 एव न्यूनतम सख्या 11 6 है वही दोनो के बीच का अतर 23 3 का है। अर्थात विकासखण्ड स्तर पर स्कूलो और जनसख्या के अनुपात मे भारी असतुलन है जो न्यूनतम स्कूल सख्या के लगभग दूना के बराबर है। अत यह जनपदीय शिक्षा प्रतिरूप का एक चिन्तनीय पहलू है। विभिन्न विकासखण्डो मे प्रतिलाख जनसख्या पर सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या को सारणी 7 3 मे प्रस्तुत किया गया है। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो की दृष्टि से स्कूल और जनसख्या का ग्रामीण क्षेत्रो मे अनुपात 1 5189 है तथा नगरीय क्षेत्रो मे 1 7245 है। इस प्रकार साक्षरता की दृष्टि से यहाँ भी विरोधाभास प्रतीत होता है, परन्तु नगरीय क्षेत्रो मे कन्वेन्ट स्कूलो की स्थापना से ये कमी दूर होती है।

(स) हायर सेकेन्ड्री विद्यालय

हायर सेकेन्ड्री विद्यालय के अन्तर्गत हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट दोनो प्रकार के विद्यालयो को सम्मिलित किया जाता है। जनपद मे हायर सेकेन्ड्री विद्यालयो की सख्या 1997 मे 153 थी जो 2000–2001 मे बढ़कर 203 हो गयी। इसमे 171 ग्रामीण क्षेत्र मे स्थित थे तथा नगरीय क्षेत्रो मे 32 सस्थाएँ अवस्थित थीं। इसमे 24 विद्यालय बालिकाओ के थे, जिसमे 14 ग्रामीण क्षेत्र मे एव 10 नगरीय क्षेत्र में स्थित थे। संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक विद्यालय *देवरिया सदर* मे (22) स्थित

है। *गौरीबाजार* मे मात्र 5 ही हायर सेकेन्ड्री स्कूल स्थित हैं। प्रतिलाख जनसख्या के हिसाब से सर्वाधिक सख्या *सलेमपुर* मे (14 0) है तथा न्यूनतम सख्या गौरीबाजार मे (3 1) है। जनपद मे अवरोही क्रम मे प्रतिलाख जनसख्या पर विद्यालयो की सख्या विकासखण्ड—वार क्रमश निम्नवत् है— *सलेमपुर देवरिया सदर भटनी भागलपुर बरहज भलुअनी बनकटा देसही देवरिया पथरदेवा लार भाटपार रानी रामपुर—कारखाना रुद्रपुर बैतालपुर गौरीबाजार*। विकासखण्ड स्तर पर जनसख्या और विद्यालय अनुपात मे भारी अतर है जो 10 9 है। ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्यालय—जनसख्या अनुपात 1 11622 एव नगरीय क्षेत्रो मे ये अनुपात 1 6792 है। इस प्रकार इस अनुपात मे ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो मे लगभग दूने का अतर है जो शिक्षा के सतुलित विकास के प्रतिकूल है।

(द) उच्च शिक्षा केन्द्र

उच्च शिक्षा से सम्बन्धित जनपद मे 14 महाविद्यालय है। इनमे दो महिला महाविद्यालय है जो क्रमश *देवरिया सदर* एव *लार* विकासखण्ड मे स्थित है। पूरे जनपद मे स्थित महाविद्यालयो के नाम एव स्थिति निम्नवत् है—

1— राजकीय कन्या महाविद्यालय —*देवरिया सदर*

2— बाबा राघवदास पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज —*देवरिया*

3— सन्त विनोबा डिग्री कॉलेज —*देवरिया*

4— स्वामी देवानद डिग्री कॉलेज —*मठलार*

5— फुदैजा मखदूम बीवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज —*मठलार*

6— मदनमोहन डिग्री कॉलेज —*भाटपाररानी*

7— रामजीसहाय डिग्री कॉलेज —*रुद्रपुर*

8— बाबा राघवदास— भगवानदास डिग्री कॉलेज —*बरहज*

9— बुद्ध महाविद्यालया रतसिया कोठी —*बनकटा*

10— डिग्री कॉलेज खुखुन्दू —*भलुअनी*

11— डिग्री कॉलेज —*सलेमपुर*

12— राजकीय डिग्री कॉलेज —*इन्दूपुर*

13— रविन्द्र किशोर शाही डिग्री कॉलेज —*पथरदेवा*

14— राजकीय डिग्री कॉलेज —*भागलपुर*

विकासखण्डवार डिग्री कॉलेजो की सख्या सारणी 7 3 मे प्रस्तुत है। जनपद मे ग्रामीण क्षेत्रो मे महाविद्यालय एव जनसख्या अनुपात 1 3 31 251 एव नगरीय क्षेत्र मे ये अनुपात 1 27 170 है जो असतुलित है *(साख्यिकीय पत्रिका जनपद– देवरिया– 2001 पृ0 89 से)*।

7 6 जनपद मे शिक्षण सस्थाओ की *शिक्षक–विद्यार्थी* सरचना

शिक्षा मे शिक्षण सस्थाओ की भूमिका पहले ही स्पष्ट की जा चुकी है। प्रस्तुत चरण मे जनपद मे स्थित शिक्षण सस्थाओ का विश्लेषण *शिक्षक–विद्यार्थी* की सख्या के आधार पर किया गया है। शिक्षण सस्थाओ मे शिक्षा की गुणवता विकास और प्रभावशीलता पर विद्यालयो मे विद्यार्थियो की सख्या तथा उनपर उपलब्ध शिक्षको की सख्या का स्पष्ट प्रभाव पडता है। यह सामान्य तौर पर स्वीकार किया जाता है कि शिक्षक और विद्यार्थियो का उच्च अनुपात शिक्षा के उच्च स्तर से सम्बन्धित है तथा शिक्षक–विद्यार्थियो के निम्न अनुपात से शिक्षा की ग्राह्यता कम हो जाती है। जिससे शिक्षा के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। जनपद स्तर पर शिक्षक एव विद्यार्थियो का अनुपात विभिन्न स्तर के शिक्षण सस्थाओ मे भिन्न–भिन्न है। *जूनियर बेसिक स्कूल* मे ये अनुपात 1 57 है। इसमे भी ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो मे भारी भिन्नता है। ये अनुपात ग्रामीण क्षेत्रो मे 1 54 और नगरीय क्षेत्रो मे 1 135 है। *सीनियर बेसिक स्कूल* मे शिक्षक एव विद्यार्थियो के बीच अनुपात जूनियर बेसिक स्कूल के जनपदीय अनुपात से भी निम्न है। यहॉ प्रति शिक्षक पर विद्यार्थियो की सख्या 86 है जबकि जूनियर बेसिक स्कूल ये सख्या 57 है। सीनियर बेसिक विद्यालयो मे ग्रामीण क्षेत्रो मे ये प्रति शिक्षक विद्यार्थियो की सख्या 84 है जबकि नगरीय क्षेत्र मे एक शिक्षक पर 116 विद्यार्थियो का भार है। *हायर सेकेन्ड्री स्कूल* मे इस अनुपात मे प्रत्येक क्षेत्र मे सुधार दृष्टिगत होता है। यहॉ ग्रामीण क्षेत्र मे प्रति शिक्षक विद्यार्थियो की सख्या–48 नगरीय क्षेत्र मे–20 तथा सम्पूर्ण जनपद मे औसतन प्रति शिक्षक 41 विद्यार्थियों की सख्या है। शिक्षक–विद्यार्थियो के इस अनुपात को ग्रामीण क्षेत्र नगरीय क्षेत्र जनपदस्तर तथा विकासखण्ड स्तर पर सारणी 7 4 मे प्रस्तुत किया गया है। विकासखण्ड स्तर पर इनका विश्लेषण विभिन्न शिक्षण सस्थाओ के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत किया गया है।

(अ) जूनियर बेसिक स्कूलो की *शिक्षक–विद्यार्थी* सरचना

जनपद मे जूनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 1813 है, (सारणी–7 3)। प्रति लाख जनसख्या पर सर्वाधिक सख्या भागलपुर विकासखण्ड मे है परन्तु शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात की दृष्टि से *भागलपुर* की स्थिति सभी विकासखण्डो मे सबसे बुरी है। यहॉ प्रतिशिक्षक विद्यार्थियो की सख्या अधिकतम 89 है जो जनपद औसत से भी 32 अधिक है। जनपद मे शिक्षक विद्यार्थी का अपेक्षाकृत अनुकूलतम अनुपात *देसही देवरिया* विकासखण्ड मे है। यहॉ प्रतिशिक्षक विद्यार्थियो की सख्या मात्र 29 है। जनपद मे शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात मे विकास खण्डस्तर मे भारी अन्तर है। जनपदीय औसत से अधिक प्रतिशिक्षक–विद्यार्थियो की सख्या वाले विकासखण्डो मे क्रमश *सलेमपुर* (1 75)

सारणी 7 4

जनपद मे विकासखण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षण सस्थाओ मे शिक्षक– विद्यार्थी अनुपात–2000–2001

विकास खण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात	सीनियर बेसिक स्कूल शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात	हायर सेकेण्ड्री स्कूल शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात
1 गौरीबाजार	1 37	1 28*	1 47
2 बैतालपुर	1 51	1 57	1 50
3 देसही देवरिया	1 29*	1 102	1 49
4 पथरदेवा	1 45	1 63	1 66
5 रामपुर कारखाना	1 47	1 77	1 38
6 देवरिया सदर	1 50	1 65	1 89**
7 रुद्रपुर	1 57	1 80	1 53
8 भलुअनी	1 57	1 72	1 29*
9 बरहज	1 67	1 125	1 44
10 भटनी	1 56	1 130**	1 43
11 भाटपाररानी	1 42	1 82	1 33
12 बनकटा	1 51	1 88	1 59
13 सलेमपुर	1 75	1 82	1 52
14 भागलपुर	1 89	1 127	1 58
15 लार	1 69**	1 79	1 46
ग्रामीण क्षेत्र –	1 54	1 84	1 48
नगरीय क्षेत्र –	1 135	1 116	1 20
जनपद –	1 57	1 86	1 41

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृष्ठ–90 91 93 से सगणित

** – अधिकतम
* – न्यूनतम

लार (1 69) और *बरहज* (1 67) शामिल है। *भागलपुर* मे अधिकतम (1 89) सख्या पायी जाती है *रुद्रपुर* और *भलुअनी* विकासखण्डो मे ये अनुपात जनपदीय अनुपात के ही बराबर हैं। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो के आधार पर इस अनुपात का विश्लेषण करने पर एक विरोधाभास दृष्टिगत होता है। ग्रामीण क्षेत्रो मे जहॉ प्रतिशिक्षक विद्यार्थियो की सख्या 54 है, जो जनपदीय औसत से भी 3 कम है वही नगरीय क्षेत्र मे एक शिक्षक पर 135 विद्यार्थियो का भार है।

(ब) सीनियर बेसिक स्कूलो की *शिक्षक–विद्यार्थी* संरचना

जनपद मे कुल 413 सीनियर बेसिक स्कूल हैं। इनमें मात्र 30 ही नगरीय क्षेत्र मे स्थित हैं शेष सभी ग्रामीण क्षेत्रो मे अवस्थित है। प्रतिलाख जनसख्या पर सर्वाधिक विद्यालयो की सख्या *सलेमपुर* विकासखण्ड मे है (सारणी–7 3)। परन्तु इसके आधार पर यदि शिक्षक–विद्यार्थियो के अनुपात का विकास खण्डवार विश्लेषण करे तो सबसे अनुकूल स्थिति *गौरीबाजार* विकासखण्ड की है। यहॉ प्रति शिक्षक विद्यालयो मे विद्यार्थियो की सख्या 28 है। जबकि भटनी मे प्रतिशिक्षक 130 विद्यार्थी हैं। इस प्रकार इसमे सर्वाधिक 102 विद्यार्थियों का अतर है। शिक्षक–विद्यार्थी का

जनपदीय औसत 1 86 है। इसमे ग्रामीण क्षेत्र आर नगरीय क्षेत्रो मे भारी अतर है। ग्रामीण क्षेत्रो मे जहाँ ये अनुपात 1 84 है जो लगभग जनपदीय औसत के बराबर है वही नगरीय क्षेत्रो मे प्रतिशिक्षक 116 विद्यार्थी है। *देसही देवरिया बरहज भटनी बनकटा* और *भागलपुर* विकासखण्ड प्रति शिक्षक जनपदीय औसत (1 86) से अधिक विद्यार्थियो की सख्या हे। शेष विकास खण्डो की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है।

(स) हायर सेकेन्ड्री विद्यालयो की *शिक्षक–विद्यार्थी* सरचना

जनपद मे हायर सेकेन्ड्री विद्यालयो की सख्या 203 है जिसमे 171 ग्रामीण क्षेत्र मे एव 32 नगरीय क्षेत्र मे स्थित है। प्रतिलाख जनसख्या पर अधिकतम सख्या *सलेमपुर* विकासखण्ड मे पायी जाती है (सारणी–7 3)। जनपद मे प्रति–शिक्षक विद्यार्थियो की सख्या के साथ इसका विश्लेषण करने पर भिन्न प्रतिरूप उभरता है। जनपद मे शिक्षक–विद्यार्थी का औसत अनुपात 1 41 है। ये अनुपात ग्रामीण क्षेत्र मे 1 48 और नगरीय क्षेत्र मे 1 20 है। इस प्रकार ये अनुपात जूनियर बेसिक स्कूल और सीनियर बेसिक स्कूल से अच्छा है। प्रति लाख जनसख्या पर विद्यालयो की सख्या से तुलना करने पर स्पष्ट होता हैं कि जहाँ इस दृष्टि से अनकूलतम स्थिति *सलेमपुर* की है वही शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात की दृष्टि से *भलुअनी* की स्थिति सबसे अनुकूल है। यहाँ प्रति शिक्षक विद्यार्थियो की सख्या 29 है जबकि *देवरिया सदर* मे प्रतिशिक्षक सर्वाधिक 89 विद्यार्थी है। जनपदीय अनुपात 1 41 से प्रति शिक्षक कम विद्यार्थियो की सख्या *रामपुर कारखाना, भलुअनी भाटपाररानी* विकासखण्डो मे है। शेष सभी विकासखण्डो मे विद्यार्थियो की शिक्षको से अनुपातिक सख्या जनपदीय औसत अनुपात से अधिक है।

7 7 अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए *छठी पचवर्षीय योजना* से भारत सरकार के सहयोग से प्रदेश मे वर्ष 1979–80 से *अनौपचारिक शिक्षा योजना* अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के पूरक के रूप मे आरम्भ की गयी। इस योजना के अन्तर्गत 9 से 14 वर्ष के ऐसे बालक–बालिकाओ को शिक्षा दने की व्यवस्था की गयी है जो सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य किन्ही कारणो से विद्यालयी शिक्षा नही प्राप्त कर सकते है। अथवा किन्ही परिस्थितियो के कारण प्राइमरी अथवा मिडिल स्तर की शिक्षा पूरी किये बिना ही पढाई छोडने के लिए विवश हो गए हे। ऐसे बालक–बालिका शिक्षा से सदैव वचित न रह जाए इसके लिए उन्हे उनके स्थान एव समय की सुविधानुसार शिक्षा देने की व्यवस्था इस योजना के अतर्गत की गयी है। अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अतर्गत अशकालिक शिक्षण की भी व्यवस्था की गयी है। अनुदेशको की नियुक्ति के लिए एक मापदण्ड निर्धारित है जिसके अन्तर्गत स्थानीय महिलाओ को प्राथमिकता प्रदान किये जाने का प्रावधान किया गया है।

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो मे नामाकित छात्रो को नि शुल्क पाठ्यपुस्तको अभ्यास पुस्तिकाएँ

स्लेट–पेन्सिल आदि प्रदान की जाती है। केन्द्र का सचालन करने के लिए प्रत्येक केन्द्र को टाट–पटटी चार कुर्सी फोल्डिग एक उपस्थिति रजिस्टर दो स्टाक रजिस्टर दो शिक्षक डायरी दो पटरी दो चाकू दो डाट पेन दो ताला एक मानचित्र (प्राकृतिक एव राजनीतिक) उत्तर प्रदेश भारत तथा विश्व का एक–एक तथा चाक का डिब्बा एक एव डस्टर एक दिया जाता है। अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमो मे प्रमुख रूप से जनपद मे जुलाई 2001 से आरभ *'स्कूल चलो अभियान* *'सभी के लिए शिक्षा परियोजना'* *'शिक्षा गारण्टी योजना'* एव *दीप शिखा उत्तर साक्षरता कार्यक्रम'* चलाया जा रहा है। इनके अतिरिक्त हाल ही मे भारत सरकार द्वारा घोषित *'सर्व शिक्षा अभियान'* के अन्तर्गत प्रदेश मे विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने हेतु विशेष प्रयास किए जाने का निर्णय लिया गया है।

अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत ही प्रौढ शिक्षा द्वारा राष्ट्र के सभी नागरिको को राष्ट्रीय विकास मे समान रूप से सहभागी बनाने के लिए सचालित किया गया है। इसका उद्देश्य साक्षरता दक्षता तथा सामाजिक चेतना को बढाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्देशो के अनुसार और एक्शन प्लान मे बताए गए कार्यक्रमो को कार्यान्वित करने के लिए सरकार ने प्रौढ शिक्षा का एक विशद प्रारूप तैयार किया है जिसका नाम है– *'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन* यह 1988 से देश भर मे लागू हुआ। जनपद मे यह जिला शिक्षा समितियो के द्वारा स्वैच्छिक सस्थाओ के माध्यम से चलाया जा रहा है। अवधारणा यह है कि जिले के बुद्धिजीवी समाजसेवी स्वैच्छिक कार्य करने वाले लोग समिति बनायेगे और साक्षरता कार्यक्रम को एक अभियान के रूप मे चलाएगे।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अतर्गत 1992–2000 मे राज्य और सघीय क्षेत्रो मे 2 92 लाख केन्द्र चल रहे थे और उनमे 73 लाख बच्चे पढ रहे थे[10] सन् 2000 से यह योजना *'शिक्षा गारटी स्कीम'* के रूप मे चल रही है और जिन गॉवो मे एक किमी तक के दायरे मे कोई विद्यालय नही है वहॉ विद्यालय खोले जा रहे है। अध्ययन क्षेत्र मे अनौपचारिक शिक्षा का प्रसार सामान्य हुआ है।

(ख) जनस्वास्थ्य विकास

7 8 स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

स्वच्छता एव स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। स्वच्छता मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है तथा स्वास्थ्य से यह प्रत्यक्षत सम्बन्धित है। व्यापक सन्दर्भ मे देखे तो हमारे यहॉ तन की स्वच्छता से अधिक मन की स्वच्छता को अहमियत प्रदान की गयी है, लेकिन स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन निवास करता है। अत तन की स्वच्छता भी प्रमुख है। तन की स्वच्छता का सीधा सम्बन्ध स्वास्थ्य से है इसलिए स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता अनिवार्य है, फिर चाहे वह शहरी स्वच्छता हो या ग्रामीण स्वच्छता। ग्रामीण स्वच्छता की बात चलती है तो स्वच्छता शरीर तथा

घर–परिवार तक ही नही सिमट जाती बल्कि व्यक्तिगत स्वच्छता के अतिरिक्त गली मोहल्ला गॉव समाज तक फैल जाती है। इसलिये ये जानना जरूरी है कि ग्रामीण परिवेश मे स्वच्छता के क्या मायने है? क्या मापदण्ड है और वर्तमान मे ग्रामीण स्वच्छता की वास्तविक स्थिति क्या है?

लगभग छह लाख गॉवो मे सम्पूर्ण भारत की 75 प्रतिशत आबादी बसती है। यहॉ साफ–सफाई पेयजल आपूर्ति कूडा–कचरा गदे पानी कीचड़ भरी नालियॉ मल की गदगी खानपान की सफाई तथा दूषित–प्रदूषित वातावरण के चलते स्वच्छता का स्वरूप और स्थिति आज भी बदतर है। अध्ययन क्षेत्र भी इसी ग्रामीण भारत की प्रतिमूर्ति है। यहॉ 90 प्रतिशत से अधिक आबादी गॉवो मे बसती है। हालॉकि स्वच्छता के प्रति ग्रामीणो की सोच मे व्यापक बदलाव आया है मगर यह बदलाव गॉव के कुछ ही परिवारो विशेषकर समृद्ध परिवारो के लोगो मे देखने को मिलता है। 1986 मे केन्द्र सरकार ने *केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम* शुरू किया था। यह कार्यक्रम राज्य सरकारो के सहयोग से अमल मे लाया जाना था। शुरूआत मे इसका उद्देश्य ग्रामीणो के जीवनस्तर मे सुधार लाना और महिलाओ को गोपनीयता तथा मर्यादा प्रदान करना था बाद मे इस कार्यक्रम मे कई बाते शामिल की गई जो निम्न है–

- जागरूकता सृजन और स्वास्थ्य शिक्षा के जरिये मॉग सृजित करना।
- ग्रामीण क्षेत्रो की कवरेज की गति बढाना।
- जल और स्वच्छता से जुडी बीमारियो पर प्रभावी नियत्रण तथा
- ग्रामीण क्षेत्रो मे सामान्य जीवन स्तर मे सुधार लाना।

इस कार्यक्रम के तहत ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वच्छता के प्रति लोगो मे जागरूकता शिक्षा और उनके जीवन स्तर मे सुधार लाने के प्रयास किये गये जिनका परिणाम भी निकला, लेकिन स्वास्थ्य के क्षेत्र मे उतना लाभ नही पहुँचा। क्योकि केन्द्र सरकार राज्य सरकार और गैर सरकारी सगठनो को ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रमो के क्रियान्वयन मे कई कठिनाइयो का सामना करना पडा। यही कारण है कि गॉवो मे 75 प्रतिशत से अधिक बीमारियॉ पर्यावरण के स्वच्छ न होने के कारण हो रही है। इन सब कारणे से नौवी योजना मे इस कार्यक्रम मे कुछ बदलाव करते हुए ग्रामीण स्वच्छता को व्यापक आधार पर जनोपयोगी व्यावहारिक और परिणामोन्मुख बनाने के लिए केन्द्र सरकार ने एक और नया कार्यक्रम *'सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान'* के रूप मे चलाया है। इस अभियान के अतर्गत 2001–2002 के लिए अभी मात्र देश के 200 जिलो का चयन किया गया है।

व्यावहारिक समस्याएँ

देश की जहॉ दो–तिहाई जनसख्या ग्रामीण है वही जनपद की 90 प्रतिशत जनता गावो मे ही बसती है, जो 10 प्रतिशत तथाकथित नगरो मे बसती है वह भी सही अर्थों मे विकसित गॉव ही कहे जा सकते हैं क्योकि नगरो की सम्पूर्ण सुविधाओ का यहॉ भी अभाव है। इस प्रकार ग्रामीण

विकास हेतु सरकार के तमाम कार्यक्रमो एव परियोजनाओ के बावजूद आज भी यह ग्रामीण क्षेत्र बुनियादी सेवाओ की राह देख रहा है। इस क्षेत्र मे स्वच्छता मे प्रभावी सफलता हासिल नही कर पाने मे कई कारण हैं। जिनमे प्रमुखत निरक्षरता है। जहॉ विश्व का हर तीसरा निरक्षर व्यक्ति भारतीय है वही जनपद मे *प्रति पॉच व्यक्तियो मे तीन निरक्षर है*। इससे अदाजा लगाया जा सकता है कि बिना ज्ञान के स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का क्या मतलब है।

साफ सफाई से ही बेहतर स्वास्थ्य और बेहतर जीवन की कल्पना की जा सकती हे। इसके लिए स्वच्छता के प्रति जागरूकता और जानकारी का स्तर बढाना आवश्यक है बिना जानकारी के ग्रामीण क्षेत्र मे लोगो को स्वच्छता कार्यक्रमो और उपायो की जरूरी जानकारी हासिल नही हो पाती लिहाजा ग्रामीण जनजीवन स्वच्छता के मामले मे पिछड जाता है। स्वच्छता की इन बुनियादी जरूरतो को समझने की और उनके कारगर उपायो के जरिये निपटने की आवश्यकता है तभी वास्तविक विकास सम्भव है।

7.9 जनस्वास्थ्य एवं विकास

आजादी के बाद से भारत सरकार न पूरी गभीरता क साथ स्वास्थ्य को सामाजिक और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक माना है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए आजादी के तुरन्त बाद सरकार ने जनोन्मुखी स्वास्थ्य नीति की योजना बनाई जो *भोर समिति'* की 1946 की रिपोर्ट पर आधारित थी। 1978 मे विश्व स्वास्थ्य सगठन की *अल्माअटा* घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाले देशो मे भारत भी शामिल था। इस वचनबद्धता के आलोक मे देशभर मे अनेक स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम ओर नीतियॉ बनाई और चलाई गईं। सत्तर के दशक के अतिम वर्षों और अस्सी के दशक मे सरकार की स्वास्थ्य नीति का पूरा जोर देशभर मे सर्वसुलभ बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओ का ढॉचा तैयार करना था। जिसकी वित्त व्यवस्था और प्रबन्धन सरकार की जिम्मदारी थी।

स्वास्थ्य रक्षा के प्रति सरकार की वचनबद्धता का प्रमाण इस एक तथ्य से मिल जाएगा। आजादी के समय पुरुषो और स्त्रियो की आयु सभाव्यता मात्र 32 वर्ष थी जो सन् 2002 मे बढकर पुरुषो के मामले मे 60 वर्ष और स्त्रियो के मामले मे 62 वर्ष हो गयी है। 1951 से मृत्युदर मे लगातार गिरावट आई है। 1951 मे 1000 लोगो पर मृत्युदर जहॉ 29 थी, 1993 मे वह केवल 9 रह गयी है। स्वतत्रता प्राप्ति के समय शिशु मृत्युदर 1000 नवजातो पर लगभग 200—225 होने का अनुमान था। *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण—2* के अनुसार 1998—99 मे महज 68 रह गया था। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रो मे शिशु मृत्युदर राष्ट्रीय औसत से अभी भी ऊपर (73 प्रति हजार) है। इसके बावजूद विगत 55 वर्षो के दौरान स्वास्थ्य के क्षेत्र मे सरकार द्वारा हासिल की गई उपलब्धियॉ आश्चर्यजनक हे। लेकिन निरन्तर बढ रही आबादी के कारण ये उपलब्धियॉ सतोषजनक स्थिति पैदा नही कर पा रही है। देश मे जहॉ 1991—2001 के दौरान जनसख्या की दशकीय वृद्धि

जहाँ 21 34 रही वही उत्तर प्रदेश मे 25 8 रही। हालॉकि जनपद मे ये वृद्धि ऋणात्मक अको मे (—38 5) दर्ज की गयी। पर इसका प्रमुख कारण *देवरिया* जनपद का विभाजन कर *कुशीनगर* नामक नया जनपद बनाया जाना था।

वर्तमान मे औसत आयु बढने के साथ—साथ जहाँ वृद्ध लोगो की सख्या मे बढोत्तरी हो रही है वही सक्रमित करने वाली बिमारियो के साथ—साथ सक्रमण न फैलाने वाले रोगो यथा— नाडी सम्बन्धी रोग रक्तचाप कैसर मधुमेह अधता आदि के मामलो मे भी वृद्धि हो रही है। इस प्रकार बडी जनसख्या की स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थितियो मे सुधार की जरूरत और उनकी स्वास्थ्य सबधी जरूरतो की पूर्ति धीमी गति से विकास के कारण एक बडी चुनौती है। खासकर तब जब देश की जनसख्या मे हर वर्ष लगभग 1 8 करोड की वृद्धि हो रही है।

अत इस मूल्याकन की विशेष जरूरत है कि सरकार ने स्वास्थ्य के क्षेत्र मे विभिन्न योजनाओ कार्यक्रमो द्वारा जनस्वास्थ्य के लिए जो तन्त्र विकसित किया है उनसे लक्ष्य प्राप्त करने मे वह कितनी सफल रही है। इस तरह का मूल्याकन ग्रामीण क्षेत्रो के सन्दर्भ मे और भी जरूरी है क्योकि ग्रामीण क्षेत्रो मे ही रोगगस्तता ओर इसके फलस्वरूप मृत्युदर अधिक पायी गई है। ग्रामीण आबादी भारत की कुल आबादी का लगभग तीन चौथाई है। 1991 की जनगणना मे यह हिस्सा 74 प्रतिशत था और वर्ष 2001 की जनगणना मे 72 प्रतिशत।

7 10 स्वास्थ्य सुविधाओ का प्रारूप

हमारे सामाजिक—आर्थिक क्रियाकलापो का समूचा जोर समाज और उसमे रहने वाले मनुष्य की शारीरिक और मानसिक बेहतरी की ओर उन्मुख होता है। वर्ष 1993 मे लागू की गई *राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति* मे एक एकीकृत दृष्टि अपनाई गई है। इसमे प्रतिरोधी और अरोग्य प्रदान करन वाले उपायो के साथ—साथ सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता अपनाने के उपाय शामिल हैं। *छठी पचवर्षीय योजना* मे राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति को शामिल किया जाना देश के स्वास्थ्य परिदृश्य मे एक उल्लेखनीय घटना थी। इसी दौरान *'सबके लिए स्वास्थ्य'* का लक्ष्य रखा गया था जिसे आगे की योजनाओ मे भी जारी रखा गया। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा तथा नागरिको को पूर्णतया स्वस्थ बनाये रखने की प्रतिबद्धता के कारण *न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम* के तहत सरकार ग्रामीण स्वास्थ्य सुविधाओ के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रही है ताकि ग्रामीण जन को जरूरी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलबध कराई जा सके। इस सन्दर्भ मे स्वास्थ्य सुविधाओ के लिए निम्नाकित प्रावधन किए गए है—

- एक हजार की आबादी वाले प्रत्येक गॉव के लिए एक ग्रामीण स्वास्थ्य गाइड का प्रावधान।
- पर्वतीय जनजातीय क्षेत्रो मे 3 000 की आबादी पर और मैदानी क्षेत्रो मे 5,000 की

आबादी पर एक स्वास्थ्य उपकेन्द्र।

- पर्वतीय जनजातीय क्षेत्रो मे 20 000 की आबादी पर तथा मैदानी क्षेत्रो मे 30 000 की आबादी पर एक जनस्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्था (पहले यह सीमा 1 लाख की आबादी की थी) और
- पर्वतीय जनजातीय क्षेत्रो मे 80 000 की आबादी तथा मैदानी क्षेत्रो मे 1 12 000 की आबादी पर एक पूर्णतया सुसज्जित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्था।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र 30 बिस्तरो वाला ग्रामीण अस्पताल होता है। यह चार जनस्वास्थ्य केन्द्रो की आबादी को कवर करेगा और औसतन एक उपकेन्द्र 24 वर्ग किमी के क्षेत्रफल मे रहने वाले लोगो को अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराएगा अर्थात् यह औसतन साढे चार गावो को अपनी सेवाएँ देगा। एक उपकेन्द्र से सेवा पाने वाले गॉव की अधिकतम औसत दूरी 2 8 किमी मानी गई।

उपर्युक्त मानदण्डो को आधार बनाये तो 1991 की जनसख्या के आधार पर देश मे 1 34 108 *उपकेन्द्र* 22 349 *जनस्वास्थ्य केन्द्र* और 5 587 *सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र* की व्यवस्था आवश्यक होगी। सरकारी ऑकडो के अनुसार 30 जून 1998 को देश मे 1,36,818 *उपकेन्द्र,* 22 991 *जनस्वास्थ्य केन्द्र* और 2 712 *सामुदायिक केन्द्र* थे।[11] इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य उपकेन्द्रो और जनस्वास्थ्य केन्द्रो की सख्या 1991 की हमारी राष्ट्रीय जरूरतो से कही अधिक और सभवतया 2001 की जनगणना के बाद जो आवश्यकता होती उसके अनुरूप थी। लेकिन सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो के मामले मे हमारी उपलब्धि आधे से भी कम रही है।

ऑकडो के अनुसार स्वास्थ्य सम्बन्धी बुनियादी सुविधाओ के मामले मे अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। 1991 के ऑकडो के अनुसार देश के मात्र एक तिहाई गॉवो मे स्वास्थ्य सुविधाए उपलबध हो पाई है। उत्तर प्रदेश की स्थिति अपेक्षाकृत कुछ अनुकूल है यहॉ 73 प्रतिशत गॉवो मे किसी न किसी प्रकार की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है।

7 11 स्वास्थ्य सुविधाओ की उपलब्धता

ग्रामीण क्षेत्रो मे उपलब्ध स्वास्थ्य रक्षा सुविधाओ की प्रकृति को समझने के ध्येय से यहॉ सक्षेप मे विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओ के नेटवर्क का वर्णन किया जा रहा है–

(क) चिकित्सालय

भारत के लगभग दो प्रतिशत गॉवो मे चिकित्सालय है। देशभर मे औसतन 10 000 की जनसख्या पर चिकित्सालयो मे सात बिस्तर उपलब्ध हैं। यह औसत 1981–91 के दशक मे लगभग अपरिवर्तित बना रहा है। लेकिन इस सन्दर्भ मे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो की तुलना करने पर चकित कर देने वाला फर्क दिखाई देता है। 1991 मे ग्रामीण क्षेत्रो मे यह सख्या मात्र 2 थी, जबकि शहरी क्षेत्रो मे यह सख्या 22 थी।[12] इससे भारत मे स्वास्थ्य सुविधाओ के मामले मे बडे पैमाने पर शहरी

पूर्वाग्रह को देखा जा सकता है। 1991 मे 10 000 की आबादी पर उपलब्ध शय्याओ का औसत उत्तर प्रदेश मे 3 4 था[13] जनपद मे 2001 की जनसख्या के आधार पर प्रति 10 000 की आबादी पर उपलब्ध शय्याओ का औसत 3 1 है। जनपद मे स्वास्थ्य सुविधा का प्रमुख केन्द्र जिला चिकित्सालय है। यहॉ स्वास्थ्य से सम्बन्धित सभी सुविधाए उपलब्ध हैं। इसके बाद 7 स्थानो पर *(रुद्रपुर भाटपार सलेमपुर लार गौरीबाजार पथरदेवा बरहज)* सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो की स्थापना का प्रमुख आधार जनसख्या है। 1 20 000 से अधिक की आबादी पर इसकी स्थापना की जाती है। इन केन्द्रो पर जिला स्तर की सभी सुविधाएँ उपलब्ध है। जनपद मे *क्षय रोग* का एक *कुष्ठ रोग* के तीन तथा *सक्रामक रोग* का एक स्वास्थ्य केन्द्र है।

(ख) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएँ सामुदायिक विकास खण्ड मे अवस्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो के जरिये प्रदान की जाती हैं। ग्रामीण जनसख्या का आधुनिक स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली से सम्पर्क का यह पहला स्तर होता है। गॉवो मे स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधा प्रदान करने का यह केन्द्रबिन्दु है। मगर राष्ट्रीय स्तर पर केवल तीन प्रतिशत गॉवो मे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की सुविधा और सात प्रतिशत गॉवो मे स्वास्थ्य उपकेन्द्र की सुविधा उपलब्ध है। स्वास्थ्य उपकेन्द्र प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और गॉव के बीच की कडी होता है।

जनपद देवरिया मे 30 000 से 1 20 000 की जनसख्या पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की स्थापना की गयी है। इनकी सख्या जनपद मे देवरिया मुख्यालय को छोडकर 71 है। नगरीय क्षेत्र मे 10 केन्द्र स्थित हैं। इस प्रकार कुल 81 केन्द्र जनपद मे स्थित हैं। इसमे 30 000 से कम जनसख्या के आधार पर स्थापित नये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की भी सख्या शामिल है। जनपद मे कुल स्वास्थ्य उपकेन्द्रो की सख्या 329 है।[14] इन सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो मे कुल शय्याओ की सख्या 848 है सारणी (7 5)।

(ग) नर्सिंग होम

नर्सिंग होम स्वास्थ्य रक्षा के क्षेत्र मे एक शहरी अवधारणा है इसलिए गॉवो मे इसका अनुपात बेहद गौण है। कुल मिलाकर देश मे एक प्रतिशत से भी कम गावो मे नर्सिंग होम की सुविधा उपलब्ध है। जनपद मे असहायताप्राप्त तथा आर्थिक सहायता प्राप्त निजी चिकित्सालयो की सख्या क्रमश दो और एक है।

(घ) परिवार एव मातृशिशु कल्याण केन्द्र, परिवार नियोजन केन्द्र आदि

भारत मे केवल दो प्रतिशत गॉवो मे मातृत्व गृह और बालकल्याण केन्द्र हैं जबकि उत्तर प्रदेश मे छ प्रतिशत गॉवों मे यह सुविधा उपलब्ध कराई गई है। देश के दो प्रतिशत गॉवो मे परिवार नियोजन केन्द्रो की सुविधा उपलब्ध है। जनपद मे सभी विकासखण्डो मे न्यूनतम एक परिवार एव मातृ–शिशु कल्याण केन्द्र एव उपकेन्द्र स्थापित है। जनपद मे इसकी कुल सख्या 20 है। परिवार

सारणी 7 5

जनपद मे विकास खण्डवार एलोपैथी चिकित्सा सेवा

क्रम सख्या	विकास खण्ड	एलोपैथिक चिकित्सालय औषधालय सख्या	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सख्या	समस्त उपलब्ध शैय्याओ की सख्या	समस्त मे कर्मचारी			परिवार एव मातृ–शिशु कल्याण केन्द्र/उपकेन्द्र	
					डाक्टर	पैरा मेडिकल	अन्य	केन्द्र	उपकेन्द्र
1	गौरीबाजार	-	5	20	10	78	1	1	26
2	बैतालपुर	-	5	20	5	68	1	1	23
3	देसही देवरिया	-	4	16	7	56	1	1	18
4	पथरदेवा	1	8	74	14	122	1	1	30
5	रामपुर कारखाना	-	4	16	5	55	1	1	19
6	देवरिया सदर	-	5	20	8	112	1	1	23
7	रुद्रपुर	-	5	42	8	74	1	1	21
8	भलुअनी	-	4	32	9	72	1	1	19
9	बरहज	-	5	62	8	66	1	1	17
10	भटनी	-	5	20	6	68	1	1	18
11	भाटपाररानी	1	4	50	10	67	1	1	20
12	बनकटा	—	4	28	5	63	1	1	19
13	सलेमपुर	-	5	46	12	84	1	1	22
14	भागलपुर	-	4	16	5	60	1	1	20
15	लार	-	4	52	7	63	1	1	22
	योग ग्रामीण	**2**	**71**	**514**	**119**	**1108**	**15**	**15**	**317**
	नगरीय	**6**	**10**	**334**	**32**	**140**	**22**	**5**	**1**
	योग जनपद	**8**	**81**	**848**	**151**	**1248**	**37**	**20**	**318**

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 98 एव 100

सारणी 76

जनपद मे विकास खण्डवार आयुर्वेदिक यूनानी होम्योपैथिक चिकित्सा सेवा

विकास खण्ड	आयुर्वेदिक			यूनानी			होम्योपैथिक		
	चिकित्सालय एव औषधालय	उपलब्ध शैय्याओ की सख्या	डाक्टरो की सख्या	चिकित्सालय एव औषधालय	उपलब्ध शैय्याओ की स	डाक्टरो की सख्या	चिकित्सालय एव औषधालय	उपलब्ध शैय्याओ की स	डाक्टरो की सख्या
1 गौरीबाजार	3	12	2	-	-	-	3	-	2
2 बैतालपुर	2	8	1	-	-	-	3	-	3
3 देसही देवरिया	4	8	3	-	-	-	1	-	-
4 पथरदेवा	1	4	-	-	-	-	3	-	3
5 रामपुर कारखाना	3	12	2	-	-	-	2	-	2
6 देवरिया सदर	3	12	2	1	-	1	2	-	1
7 रुद्रपुर	4	12	2	1	4	1	2	-	1
8 भलुअनी	3	8	1	-	-	-	2	4	2
9 बरहज	3	8	2	-	-	-	2	-	2
10 भटनी	2	4	2	-	-	-	-	-	-
11 भाटपाररानी	2	4	1	-	-	-	-	-	-
12 बनकटा	1	4	1	-	-	-	1	-	1
13 सलेमपुर	2	8	1	-	-	-	-	-	-
14 भागलपुर	2	8	-	-	-	-	2	-	1
15 लार	4	16	3	-	-	-	-	-	-
योग ग्रामीण	39	128	23	2	4	2	23	4	18
नगरीय	5	41	4	-	-	-	2	4	2
योग जनपद	44	160	27	2	4	2	25	8	20

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 99

एव मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्रो की सख्या 318 है जिनमे मात्र 1 नगरीय क्षेत्र मे है (सारणी–7 5)।

(ड) सामुदायिक स्वास्थ्यकर्मी

भारत के 18 प्रतिशत गॉवो मे सामुदायिक स्वास्थ्यकर्मियो की सेवाये उपलब्ध है। उत्तर प्रदेश मे 59 प्रतिशत गॉवो मे सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मियो की सुविधा है। जनपद स्तर पर भी कमोबेस यही अनुपात है।

(च) अन्य चिकित्सकीय सुविधाएँ

इसके अतर्गत वे चिकित्सा सुविधाएँ आती है जो प्राय स्वास्थ्य उपकेन्द्रो, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो औषधालय अस्पताल नर्सिग होम मातृगृह अथवा बाल कल्याण केन्द्रो आदि द्वारा प्रदान नही की जाती है। कह सकते है कि इसमे विभिन्न भारतीय चिकित्सा पद्धतियो द्वारा प्रदान की जाने वाली सवाये शामिल है। इस तरह की अन्य सुविधाओ की उपलबधता दर काफी कम है। राष्ट्रीय स्तर पर देश भर के लगभग एक प्रतिशत गॉवो मे ही यह सुविधा उपलब्ध है। जनपद मे इसके अतर्गत आयुर्वेदिक यूनानी एव होम्योपेथिक चिकित्सालयो एव औषधालयो को शामिल किया जा सकता हे। जनपद मे इनकी सख्या क्रमश 44 2 और 25 है। इनमे उपलब्ध शय्याओ की सख्या क्रमश 169 4 एव 8 है। यूनानी चिकित्सालय केवल *देवरिया सदर* एव *रूद्रपुर* मे है। *रुद्रपुर* मे मात्र 4 शय्याए है। होम्योपैथिक चिकित्सालय मे मात्र *भलुअनी* मे ही 4 शय्याओ की सुविधा है। विभिन्न प्रकार के चिकित्सालयो शय्याओ और डाक्टरो की सख्या को सारणी 7 6 मे प्रस्तुत किया गया है।

7 12 जनस्वास्थ्य प्रणाली का मूल्याकन

जनस्वास्थ्य राष्ट्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण घटक हे। प्रस्तुत अध्याय मे स्वास्थ्य सुविधाओ के विकास का मूल्याकन करने के लिए राष्ट्रीय स्तर एव जनपदीय स्तर पर जनस्वास्थ्य सुविधाओ का विश्लेषण किया गया है। जनपद स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओ के विश्लेषण के लिए जनपद में उपलब्ध मूल स्वास्थ्य सुविधाओ यथा– *प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की सख्या शैय्याओ की सख्या* तथा *चिकित्सको की सख्या* को प्रतिलाख जनसख्या पर उपलब्धता को आधार बनाया गया है। इससे विकासखण्ड स्तर पर इसकी तुलना सहज हो जाती है। फलस्वरूप इसका प्रतिरूप स्पष्ट हो जाता है। इसे सारणी 7 7 मे प्रति लाख जनसख्या के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर निवास स्थान के अनुरूप भारत मे स्वास्थ्य की स्थिति को सारणी 7 8 मे प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार जनपद एव राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओ के विश्लेषण से स्वास्थ्य प्रणाली का प्रतिरूप स्पष्ट हो जाता है।

सारणी 7 8 मे प्रस्तुत स्वास्थ्य सम्बन्धी ऑकडो तथा सारणी 7 7 में जनपद में मूल स्वास्थ्य सुविधाओ की उपलब्धता के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि समय–समय पर निर्धारित लक्ष्यो को प्राप्त करने मे अब तक सफलता नहीं मिल पायी है। विकास का एक प्रमुख घटक जनस्वास्थ्य है, इसीलिए सरकार ने निरतर इस पर अपना ध्यान केन्द्रित रखा। इसके बावजूद *'सन् 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य*

कार्यक्रम' सफल नही हो पाया। *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–2 (1998–99)* से स्पष्ट होता है कि सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र लोगो की स्वास्थ्य रक्षा सबधी आवश्यकताओ की पूर्ति नही कर पा रहे हैं। वे देश की महज 31 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को अपनी सेवाएँ उपलबध करा पाते हैं। अधिकाश ग्रामीण जनो (लगभग 66 प्रतिशत) को अपनी स्वास्थ्य सबधी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए निजी चिकित्सालयो की शरण लेनी पडती है (देखें सारणी न 78)। इस प्रकार कल्पना किया जा सकता है कि गॉवो मे रहने वाले निर्धनो के लिए शहर मे जाकर निजी चिकित्सको से अपना उपचार करवाना कितना दुष्कर हो सकता है। सारणी 77 से स्पष्ट होता है कि जनपद मे विभिन्न विकास खण्डो के स्तर पर प्रति लाख जनसख्या पर स्वास्थ्य केन्द्रो की उपलब्धता मे भारी अतर (23 केन्द्र) हैं जो लगभग दूने के करीब हैं। प्रतिलाख जनसख्या पर जनपद मे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो का औसत 36 है। इसमे ग्रामीण क्षेत्रो मे ये औसत 35 है जबकि नगरीय क्षेत्र मे 46 है। *बरहज* विकासखण्ड मे जनपद मे सर्वाधिक तथा नगरीय क्षेत्र के औसत से भी अधिक 51 स्वास्थ्य केन्द्र हैं। जबकि *भलुअनी* मे न्यूनतम 28 स्वास्थ्य केन्द्र ही एक लाख जनसख्या पर उपलबध हैं। जनपदीय औसत से अधिक स्वास्थ्य केन्द्रों की उपलब्धता केवल

सारणी 77

प्रतिलाख जनसख्या पर जनपद मे विकासखण्डवार स्वास्थ्य सुविधाओ की स्थिति

विकास खण्ड	प्रतिलाख जनसख्या पर प्रा स्वास्थ्य केन्द्र की सख्या	प्रतिलाख जनसख्या पर शैय्याओ की स	प्रतिलाख जनसख्या पर डाक्टर की सख्या
1 गौरीबाजार	30	122	61
2 बैतालपुर	34	138	34
3 देसही देवरिया	35	142	62
4 पथरदेवा	42	390	73
5 रामपुर कारखाना	32	130	40
6 देवरिया सदर	31	125	50
7 रुद्रपुर	39	329	62
8 भलुअनी	28	227	64
9 बरहज	51	640	82
10 भटनी	40	163	49
11 भाटपाररानी	33	415	83
12 बनकटा	34	240	42
13 सलेमपुर	35	321	83
14 भागलपुर	37	151	47
15 लार	33	431	58
ग्रामीण क्षेत्र	**35**	**258**	**60**
नगरीय क्षेत्र	**46**	**1536**	**147**
योग जनपद	**36**	**384**	**68**

स्रोत– साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ– 25 एव सारणी 75 से सगणित

पथरदेवा रुद्रपुर बरहज भटनी भागलपुर विकासखण्डो मे ही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रो के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वास्थ्य रक्षा ज्यादा असफल साबित हुई है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर गॉवो मे नवजात और शिशु मृत्युदर का औसत क्रमश 73 और 104 है जबकि शहरी क्षेत्रो मे यह 47 और 63 है। इसी प्रकार 10 000 शिशुओ के जन्म पर मातृ मृत्युदर गॉवो मे 62 है जबकि शहरो मे यह केवल 27 ही है। प्रजनन से जुडी स्वास्थ्य रक्षा सुविधाओ मे भी शहरो ओर गॉवो के बीच महत्वपूर्ण अतर है। हालॉकि शहरो मे पर्यावरण का क्षय अधिक हुआ है फिर भी ग्रामीण क्षेत्रो मे रोगग्रस्तता का स्तर शहरो के मुकाबले बहुत अधिक है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे जन्म के समय जीवन सभाव्यता शहरो के मुकाबले कम है।

यह एक दुखद तथ्य है कि भारत के गॉवो मे जनसख्या का तीन चौथाई हिस्सा निवास करता है लेकिन उनके हिस्से देश के कुल अस्पतालो का मात्र पॉचवा हिस्सा ही आता है उनके पास देश के कुल औषधालयो का 50 प्रतिशत से भी कम है। शहरो की 80 प्रतिशत जनसख्या को दो किमी की दूरी के भीतर चिकित्सा सुविधाओ का लाभ प्राप्त है जबकि गॉवो मे यह सुविधा महज 3 प्रतिशत जनसख्या को ही प्राप्त है। शहरो और गॉवो के बीच इतने बडे अतर का एक प्रमुख कारण यह रहा है कि स्वास्थ्य पर किया जाने वाला खर्च नगरोन्मुख ज्यादा रहा है।

गावो मे सार्वजनिक स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली द्वारा प्रदत्त सेवाओ के स्तर का मूल्याकन करने के ध्येय से प्रसव के दौरान माताओ को और मृत्यु से पूर्व बीमार लोगो को प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियो द्वारा प्राप्त सेवाओ के प्रतिशत को देखा जा सकता है। किसी भी समाज मे जन्म और मृत्यु सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना होती है। इन दोनो अवसरो पर सबको चिकित्सक और उसकी सेवाओ की आवश्यकता पडती है। प्रशिक्षित चिकित्साकर्मी की जरूरत कभी–कभी इतनी हो जाती है कि उसके अभाव मे अथवा समय पर उपलब्ध न होने पर कोई अकाल ही काल के गाल मे समा सकता है। यह किसी के साथ हो सकता है चाहे वह बीमार व्यक्ति हो या नवजात या फिर उसकी सद्य प्रसवा माता। इससे जुडे ऑकडो से ज्ञात होता है कि गॉवो मे प्रशिक्षित चिकित्साकर्मियो द्वारा दी जाने वाली सेवाऍ शहरो के मुकाबले अपर्याप्त है।

ग्रामीण इलाको मे प्रसव के दौरान केवल 21 प्रतिशत माताओ को ही प्रशिक्षित चिकित्साकर्मी की सेवा प्राप्त हो पाती है जबकि 27 प्रतिशत नागर स्त्रियो को यह सुविधा प्राप्त होती है। *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण*–2 के ऑकड़ो से यह स्पष्ट है कि देश के गॉवो मे होने वाले कुल प्रसव के 74 4 प्रतिशत घरो मे ही करा लिए जाते है जबकि शहरो मे घर मे कराए जाने वाले प्रसव का प्रतिशत मात्र 34 है। गॉवो मे केवल 23 प्रतिशत मामलो मे डाक्टर की सेवा उपलब्ध है जबकि शहरो की 56 प्रतिशत माताओ को प्रसव के दौरान चिकित्सक की सेवाऍ मिल जाती है,

सारणी 7 8

निवास स्थान के अनुरूप भारत मे स्वास्थ्य की स्थिति

	शहरी	ग्रामीण
बाल मृत्युदर		
* नवजात मृत्यु दर[1]	47 0	73 0
* 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चो की मृत्युदर[1]	63 0	104 0
जनस्वास्थ्य रक्षा के माध्यम		
* सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र	23 5	30 6
* निजी स्वास्थ्य क्षेत्र	74 8	66 2
स्वस्थ मातृत्व और महिलाओ मे पुनर्जनन सबधी स्वास्थ्य		
* माताओ की मृत्युदर (10 000 जीवित जन्म पर)	27 0	62 0
* गर्भ निरोध उपायो को अपनाने वाली विवाहित महिलाओ का प्रतिशत	58 2	44 7
प्रसव से पूर्व निम्नाकित का लाभ उठाने वाली माताओ का प्रतिशत[2]		
1 किसी स्वास्थ्यकर्मी से प्रसवपूर्व जाच	86 4	60 2
2 दो अथवा उससे अधिक *टिटनेस टाक्साइड* के टीके लगवाने वाले	81 9	62 5
3 जिन्होंने लौह अथवा कास्टिक एसिड की गोली या सीरप का सेवन किया	75 7	52 5
जिन माताओ को प्रसव के दौरान निम्नाकित सुविधाए प्राप्त हुई[2] उनका प्रतिशत		
1 चिकित्सक की सुविधा	55 8	23 0
2 एएनएम/नर्स/दाई/एलएचवी की सुविधाए	17 2	9 8
* कम से कम एक प्रजनन स्वास्थ्य सबधी समस्या के मामले का प्रतिशत[3]	39.2	44 2
* घर मे ही प्रसव कराने वालो का प्रतिशत	34 0	74 4
एड्स सबधी जागरूकता		
* ऐसी महिलाओ का प्रतिशत जिन्होने एड्स के बारे मे सुन रखा हो	70 3	29 7
रोगग्रस्तता		
* पिछले एक वर्ष के दौरान दमा यक्ष्मा पीलिया से पीड़ित तथा पिछले तीन महीनों के दौरान मलेरिया से पीड़ित लोगो का प्रतिशत	6 0	9 4
बाल स्वास्थ्य		
* तीन वर्ष तक की उम्र तक बच्चो को स्तनपान कराने की मध्यम अवधि	21 8	26 3
* ऐसे बच्चो का प्रतिशत जिन्हें निम्नलिखित टीके लगाए गए[4]		
अ बीसीजी	85 1	64 3
ब डीपीटी (तीन खुराक)	70 6	46 6
स पोलियो (तीन खुराक)	74 9	54 4
द चेचक	59 7	36 2
इ सभी टीके	51 9	29 3
ई कोई टीका नहीं	8 6	20 2
* पिछले दो हफ्तो मे डायरिया का शिकार हुए बच्चो का प्रतिशत	19 6	19 0
* पिछले दो हफ्तों में सास सबधी सक्रमण का गभीर रूप से शिकार हुए ऐसे बच्चों का प्रतिशत जिन्हें चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो पाई[5]	75 1	61 4
पोषण		
* किसी भी किस्म की रक्तल्पता की शिकार महिलाओं का प्रतिशत	45 7	53 9
* 6–35 महीने की आयुवर्ग में रक्तल्पता के शिकार शिशुओं का प्रतिशत	70 8	75 3
* कम वजन वाले शिशुओ का प्रतिशत	38 4	49 6

स्रोत राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–2 1998–99 पर आधारित मुबई आइआईपीएस और ओआरएस मैक्रो 2000

1 सर्वेक्षण से पूर्व के पाच वर्षों (1994–98) के लिए

2 पिछले तीन वर्षों के दौरान हुए जन्म के लिए

3 15–49 वर्ष की आयुवर्ग की विवाहित स्त्रियो मे

4 12–23 महीने की आयु वाले बच्चे

5 तीन वर्ष से कम उम्र वाले बच्चे

(सारणी—7 8)। ऐसी स्थिति मे गॉवो मे उच्च जच्चा—बच्चा मृत्युदर का पाया जाना स्वाभाविक ही है।

जनसख्या के ऑकडो से प्रकट होता है कि शहरो के 52 प्रतिशत के मुकाबले गॉवो के 37 प्रतिशत लोगो को ही गभीर बीमारियो के दौरान प्रशिक्षित चिकित्सक की सेवाएँ मिल पाती है। ऐसी बीमारियो मे समुचित चिकित्सा का अभाव मरीज की मृत्यु का कारण बनता है। इस सिलसिले मे देश मे उत्तरप्रदेश की स्थिति काफी बेहतर प्रतीत होती है। यहॉ 50—74 प्रतिशत गभीर रूप से बीमार ग्रामीणो को प्रशिक्षित चिकित्सक की सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती है। जनपद मे विकासखण्ड स्तर पर चिकित्सको की सर्वाधिक उपलब्धता *भाटपाररानी* एव *सलेमपुर* मे प्रतिलाख जनसख्या पर 8 3 है। न्यूनतम उपलब्धता *गौरीबाजार* मे (3 4) है। यहॉ नगरीय क्षेत्रो मे चिकित्सको की उपलब्धता जहॉ 14 7 प्रति लाख जनसख्या पर है। वही ग्रामीण क्षेत्रो मे ये सख्या 6 0 है। अर्थात् दूने से भी अधिक का अतर है। प्रतिलाख जनसख्या पर शैय्याओ की सर्वाधिक सख्या *बरहज* विकासखण्ड मे है जबकि *गौरीबाजार* मे न्यूनतम 12 2 शैय्या ही प्रतिलाख जनसख्या पर उपलब्ध है। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रो मे ये उपलब्धता क्रमश 153 6 और 25 8 है। अर्थात इसमे लगभग 6 गूने का अतर है।

7 13 स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली की असफलता के कारण

ग्रामीण अचलो मे सार्वजनिक जनस्वास्थ्य रक्षा प्रणाली की असफलता के अनेक कारण हैं। यहॉ न केवल विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य केन्द्रो की अपेक्षित और उपलब्ध सख्या मे अतर है बल्कि विशेषज्ञ डाक्टरो नर्सो मिडवाइफो रेडियो—ग्राफर फार्मासिस्ट पुरुष स्वास्थ्य सहायक महिला स्वास्थ्य सहायिका तथा सामान्य फिजिशियनो जैसे स्वास्थ्य कर्मियो की अपेक्षित और उपलब्ध सख्या मे भी भारी अतर है। दूसरी समस्या यह है कि इन स्वास्थ्य केन्द्रो मे जॉच और उपचार की सुविधाएँ उपलब्ध नही होती और सबसे बडी बात यह है कि इनमे तैनात स्वास्थ्य कर्मी अपने काम के प्रति समर्पित नही होते। कुछ स्वास्थ्यकर्मी अपने नियुक्ति वाले स्वास्थ्य केन्द्रो पर महीने मे एक या दो बार ही जाते है। चिकित्सको के अपने उपकेन्द्रो, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो मे न जाने की सबसे बडी वजह इन केन्द्रो मे दवाइयो और चिकित्सा के लिए अन्य सहयोगी सामग्रियो की अनुपलब्धता है। दवाइयो, चिकित्सा सामग्रियो और उपकरणो की कमी के कारण उन्हे मरीज के सामने शर्मिंदगी का सामना करना पडता है। प्राय ग्रामीण क्षेत्र मे नियुक्त डाक्टर भी शहर मे ही रहना पसद करते है ताकि वे नागर सुविधाओ का लाभ उठा पाएँ और साथ ही वहॉ निजी प्रैक्टिस कर अतिरिक्त कमाई भी कर पाएँ।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो द्वारा अपने लक्ष्य प्राप्त करने मे सफल न होने की एक दूसरी बडी वजह यह है कि उन्हे बडे क्षेत्र मे बिखरी हुई ग्रामीण आबादी को अपनी सवाएँ उपलब्ध करानी होती हैं। स्वास्थ्य केन्द्र के निकट स्थित गॉव के बासिदो को तो स्वाभाविक रूप स बेहतर सेवा

मिल जाती है लेकिन दूरस्थ गॉवो को यह उपलब्ध नही हो पाती। परिणामत दूर बसे गॉवो के लोग इन स्वास्थ्य केन्द्रो मे जाना पसद नही करते क्योकि इसके लिए उन्हे पैदल लम्बी दूरी तय करनी पडेगी। फिर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे पहुँचने पर यह आवश्यक नही कि उन्हे आवश्यक चिकित्सा सुविधाएँ मिल ही जाए। इस आशका की मुख्य वजह यही है कि कभी–कभार ही चिकित्सक अपनी ड्यूटी पर उपलब्ध होते है। यदि वे मिल भी जाएँ तो भी बुनियादी सुविधाओ के अभाव या काम के प्रति समर्पण के अभाव के कारण वे अपेक्षित उपचार नही उपलब्ध करा पाते है। यही वजह है कि लोग बडे अस्पतालो या निजी चिकित्सको के पास जाना ज्यादा पसद करते है।

देश के अधिकाश क्षेत्रो मे प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा का विस्तार करने पर अमल के मामले मे स्थिति बहुत अच्छी नही है। इस स्थिति के लिए यातायात की समुचित सुविधाओ की अनुपलब्धता कार्मिको को दैनिक और यात्रा भत्ते के भुगतान मे विलब आवासीय सुविधाओ का अभाव आकस्मिक घटनाओ के लिए अपर्याप्त कोष क्षरणशील कार्य सस्कृति और चिकित्सको तथा नर्सों का निजी प्रैक्टिस मे अधिकाधिक लिप्त होने जैसे कारण प्रमुख रूप से जिम्मेदार है। सरकार इस समस्या से पूरी तरह अवगत है फिर भी समूचे देश मे यह स्थिति बनी हुई है और अपनी जडे निरन्तर मजबूत करती जा रही है। उपकेन्द्रो और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो का उपयोग न हो पाने अथवा कम हो पाने के पीछे यही मूल कारण है।

लेकिन ग्रामीण जनसख्या को सुलभ हाने वाली स्वास्थ्य सुविधाओ की दयनीय स्थिति या उनके स्वास्थ्य की दयनीय स्थिति का कारण केवल स्वास्थ्य सबधी सरचनात्मक व्यवस्था का अपर्याप्त होना भर ही नही है। सेवा उपलब्ध कराने की अनुचित विधि, उनको अमली रूप देने मे बरती जाने वाली कोताही स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने वालो की निजी कमियॉ और उदासीनता तथा मरीजो और उनके सबधियो मे अशिक्षा आदि के कारण जागरूकता का अभाव भी इसके अन्य कारण बनते है। अशिक्षा के कारण ग्रामीणजन न तो अपने स्वास्थ्य से जुडी समस्याओ को समझ पाते है न ही वे स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने वाली व्यवस्था की कार्याविधि को जान पाते हैं। इस तरह स्वास्थ्यकर्मियो की उदासीनता और अरुचि की तरह वे भी इन सेवाओ के प्रति लगभग उदासीन बने रहते हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो की दयनीय स्थिति के कारण अलग–अलग अचलो मे भिन्न–भिन्न हैं। लेकिन इन सबमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण उनका ठीक तरीके से काम नही करना है।

7 14 सामाजिक सुविधाओ का नियोजन

(क) स्वास्थ्य सुविधाओ का नियोजन

स्वास्थ्य सुविधाओ का नियोजन, उनकी वर्तमान मात्रा एव अवस्थिति का निश्चित मानदण्डो से तुलना करके भविष्य की आवश्यकताओ तथा वर्तमान समस्याओ के परिप्रेक्ष्य मे किया गया है।

नियोजन को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त ससाधनो की आवश्यकता पडती है। ससाधनो का अनुमान तथा उसके निवेश की प्राथमिकता का निर्धारण सरकार करती है इसलिए ससाधनो की उपलब्धता व निवेश प्राथमिकता के परिप्रेक्ष्य मे नही किया गया है।

1993 से लागू *राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति* के अनुसार मैदानी क्षेत्र मे प्रति 1 12 000 की जनसख्या पर एक *सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र* होना चाहिए जिसमे कम से कम 30 बिस्तर उपलब्ध हो। जनपद मे वर्तमान मे मात्र 7 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र उपलब्ध है जबकि 2001 की जनसख्या (27 30 376) के आधार पर इसकी सख्या 24 होनी चाहिए। ये केन्द्र मात्र *रुद्रपुर भाटपार (जसुई मे) सलेमपुर लार गौरीबाजार पथरदेवा* और *बरहज* मे ही उपलब्ध हैं। अत कम से कम सभी विकासखण्ड मुख्यालयो पर इसकी उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के अनुसार न्यूनतम 30 000 की जनसख्या पर मैदानी क्षेत्रो मे एक *जनस्वास्थ्य केन्द्र* तथा 5,000 की आबादी पर एक *उपकेन्द्र* होना चाहिए। इन मानदण्डो के अनुसार जनपद मे वर्तमान मे क्रमश 91 *जनस्वास्थ्य केन्द्र* एव 546 *स्वास्थ्य उपकेन्द्र* होने चाहिए, जबकि वर्तमान मे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एव नये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो सहित *जनस्वास्थ्य केन्द्रो* की कुल सख्या 69 है एव *स्वास्थ्य उपकेन्द्रो* की सख्या 329।[15] इस प्रकार जनपद मे क्रमश 17 *सामुदायिक स्वास्थ्यकेन्द्र* 22 *जनस्वास्थ्य केन्द्र* तथा 217 *स्वास्थ्य उपकेन्द्रो* की स्थापना होनी चाहिए तब जाकर राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के अनुरूप स्थिति होगी। इन केन्द्रो की स्थापना मे उन स्थानो को वरीयता दी जानी चाहिए जो अपेक्षाकृत अधिक पिछडे है तथा जहॉ परिवहन एव शिक्षा सुविधाओ का विकास कम हुआ है। जनपद मे अभी भी 9 चिकित्सालय ऐसे है जिनमे एक भी चिकित्सक तैनात नही किए गये[16]। अत सभी चिकित्सालयो मे चिकित्सको की उपस्थिति अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। जनपद–वासियो का जडी–बूटी पर पर्याप्त विश्वास है। अत आयुर्वेदिक यूनानी एव होम्योपैथिक चिकित्सालय खोलने की और आवश्यकता है। साथ ही समस्त विकासखण्ड मुख्यालयो पर कम से कम 100 शय्याओ वाला एक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किया जाना चाहिए।

उत्तम स्वास्थ्य का सम्बन्ध केवल स्वास्थ्य सुविधाओ की उपलब्धि से ही नही है बल्कि स्वच्छ पर्यावरण से इसका सीधा सम्बन्ध है। अत पोष्टिक आहार शुद्ध वायु, शुद्ध पेय जल उचित सफाई व्यवस्था शुद्ध वातावरण की उपलब्धता तथा इसे बनाये रखने का प्रयास होना चाहिए। इनमे से अधिकाश की प्राप्ति स्वविवेक तथा जागरूकता से की जा सकती है। अपने शरीर सहित अपने परिवेश की स्वच्छता से न केवल रोगो से मुक्ति मिलती है बल्कि मन भी प्रसन्न रहता है, जो उत्तम स्वास्थ्य का सूचक है।

इन सब के अलावे ग्रामीण क्षेत्रो मे सचार और यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध कराया जाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। उतना ही जरूरी गॉवो मे डाक्टरो के काम करने के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना भी है। यह निर्धन ग्रामीणो के लिए भी आवश्यक है। स्वास्थ्य सुविधा प्रणाली

को विकेन्द्रित करना और इन केन्द्रो के प्रबन्धन मे पचायतो के मार्फत स्थानीय लोगो की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। यद्यपि इस दिशा मे प्रयास जारी है और नई स्वास्थ्य प्रणाली की जिम्मेदारी और अधिकार सौपने की इच्छा व्यक्त की गई है। इससे जिला स्तर के स्वास्थ्य अधिकारियो और खड तथा पचायतो के बीच समन्वय कर आवश्यक दवाइयो की आपूर्ति स्वास्थ्यकेन्द्रो मे डाक्टरो तथा अन्य स्वास्थ्यकर्मियो की अनुपस्थिति रोकने और स्वास्थ्य प्रणाली द्वारा कुशलता पूर्वक कार्य निष्पादन सुनिश्चित किया जा सकेगा। इससे प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी डाक्टरो और स्वास्थ्य कर्मियो की जबाबदेही भी सुनिश्चित की जा सकेगी अर्थात सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली के पुनर्गठन की जरूरत पडेगी। अत इस प्रणाली को ज्यादा स्वायत्तता और पर्याप्त कोष उपलब्ध कराना अपेक्षित होगा।

प्राय सरकार के कार्यक्रमो का उल्लेखनीय असर दिखाई न पडने का मुख्य कारण तेजी से बढ रही जनसख्या बताया जाता है। निश्चित रूप से जनसख्या विस्फोट गहरी चिता का विषय है लेकिन सरकार के समस्त कार्यक्रमो की असफलता के लिए एक मात्र इसे ही जिम्मेदार नही ठहराया जा सकता है। वस्तुत यदि केवल महिलाओ और बच्चो की स्वास्थ्य की स्थिति मे सुधार आ जाए तो जनसख्या वृद्धि पर अकुश लगने लगेगा। इसी प्रकार महिलाओ की साक्षरता के स्तर मे सुधार से सामाजिक कुप्रथाओ को नियत्रित करने के साथ–साथ जनसख्या नियत्रण मे भी मदद मिलेगी। अब जबकि स्वतत्रत रूप से एक स्वास्थ्य नीति और एक जनसख्या नीति अपनाई जा चुकी है जनसख्या और स्वास्थ्य रक्षा के इस अर्तसम्बन्ध को समझना और तदनुरूप कार्यक्रम तैयार करना आसान होगा।

(ख) शैक्षणिक नियोजन

जनपद मे साक्षरता की स्थिति शिक्षण सस्थाओ के प्रतिरूप एव उनकी निश्चित जनसख्या पर उपलब्धता तथा शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात के विश्लेषण के दौरान शिक्षा के क्षेत्र मे कई कमियॉ दृष्टिगत हुयी है। जनपदीय साक्षरता राष्ट्रीय साक्षरता औसत से 5 54 प्रतिशत कम है। इसमे स्त्री साक्षरता की स्थिति सबसे चिताजनक है। इस दृष्टि से (स्त्री साक्षरता) राष्ट्रीय साक्षरता और जनपदीय साक्षरता का अतर 10 6 प्रतिशत है। जनपद मे जनसख्या के अनुसार शिक्षण सस्थाओ की अपर्याप्तता है जो शिक्षण सस्थाएँ हैं भी उनमे शिक्षक और विद्यार्थी का अनुपात सतोषजनक नही है। *जूनियर बेसिक स्कूल मे यह अनुपात 1 57, सीनियर बेसिक स्कूल मे 1 86 तथा हायर–सेकेण्डरी मे 1 41 है।* अत अध्ययन क्षेत्र मे शैक्षणिक नियोजन को उपर्युक्त सन्दर्भ मे ही प्रस्तुत किया जा सकता है ताकि शिक्षा का विकास जनपद के विकास मे सहभागी बन सके। इसके अतर्गत दो स्तरो पर नियोजन अपेक्षित है– *पहला* साक्षरता के विकास हेतु चलाये गए विभिन्न अभियानो के सदर्भ मे तथा *दूसरा* विभिन्न शिक्षण सस्थाओ के स्तर पर।

पहला– देश मे प्रदेश मे तथा जनपद मे साक्षरता के विकास हेतु अनेक कार्यक्रम और

परियोजनाएँ चलायी जा रही है परन्तु इनका सार्थक और अनुकूलतम परिणाम नही प्राप्त हो रहा है। साक्षरता प्रतिशत को यदि छोड दे और गुणवत्ता पर निगाह डाले तो साक्षरता की स्वीकृत परिभाषा के अनुसार जिन व्यक्तियो को ऑकडो के लिए साक्षर मान लिया गया है उनमे सभी सार्थक अर्थ मे साक्षर नही है। कई तो महज अपना नाम लिखना भर जानते हैं फिर भी ऑकडो की टोकरी मे ही उन्हे रखा गया है। 1988 से चल रहा साक्षरता साक्षरता अभियान *केरल* के *अरनाकुलम* जिले मे मिली सफलता से प्रेरित होकर सम्पूर्ण देश मे लागू हुआ बिना इसे ध्यान मे रखे कि सम्पूर्ण भारत केरल जैसा सजग नही है। परिणामत साक्षरता कार्यक्रम अभियान का रूप नही ले सका और महज सरकारी कार्यक्रम बनकर रह गया। अत साक्षरता कार्यक्रम मे आई शिथिलताओ पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। निरक्षरता मुख्यत—

* ग्रामीण क्षेत्रो मे है।
* ग्रामीण क्षेत्रो के अभिवचित वर्गो मे है।
* निरक्षरो मे महिलाओ की बहुतायत है।
* अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाओ मे साक्षरता न्यूनतम स्तर पर है।

साक्षरता इन वर्गो तक पहुँचे इसके लिए बहुत बड़े प्रयास की आवश्यकता है। इसके लिए निम्न सुझाव दिए जा सकते है—

1— अभी पढाने वाले मुख्यत स्कूल के विद्यार्थी होते हैं उन्हे पारिश्रमिक की व्यवस्था की जाये।

2— साक्षरता कार्यक्रम के कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व ग्राम पचायतो को दे दिया जाय। ग्राम पचायत ही निरक्षरो का सर्वेक्षण कर कार्यक्रम बनाकर कौन पढाएगे? कहॉ पढाएगे? यह सब तय करे।

3— जिला साक्षरता समिति अपने को निरीक्षण और पर्यवेक्षण तक ही सीमित रखे।

4— निरक्षरो की सख्या के आधार पर ग्राम पचायतो को इस कार्यक्रम के लिए धन आवटित कर दी जाये, तथा खर्च करने की प्राथमिकता का निर्धारण भी स्वय पचायत ही करे।

5— राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का मार्गदर्शन केवल मुद्दो तक सीमित रहे कि किन—किन मदो पर राशि खर्च की जा सकती है।

6— प्रत्येक पचायत मे पुस्तकालय की स्थापना हो जिसमे सरल भाषा मे लिखी कृषि पशुपालन पर्यावरण स्वास्थ्य जैसे ग्रामीण जीवन के लिए उपयोगी विषयो पर पुस्तके रहे कुछ अखबार और पत्रिकाएँ भी रहे जिससे साक्षरता अभियान सतत् शिक्षा मे प्रभावकारी रूप से अपने को ढाल सके। आगे चलकर उन्हे और सुदृढ़ किया जा सकता

है। सरकार सकल्प दिखाए तो स्थिति बदल जाएगी। लोकजीवन मुरझाया हुआ है मगर जीवित है। अवसर मिलते ही लोग आगे आ जाएँगे पुस्तकालयो के निर्माण और सचालन मे सहयोग देगे ज्ञान प्राप्त करेगे अपना जीवन उन्नत बनाएगे। लोगो को अपने पर आश्रित बनाकर सरकार ने लोकशक्ति को सुला दिया है। साक्षरता और शिक्षा अभियान मे सरकार की भूमिका सहायक की रहनी चाहिए, निर्णायक की नही। तभी लोग आगे आएँगे स्वय सेवी सस्थाएँ जीवत बनेगी लोकशक्ति जागेगी और विकास के मार्ग खुलेगे।

दूसरा— नियोजन—शिक्षा मे निवेश शिक्षण सस्थाओ की स्थापना शिक्षण सस्थाओ मे सुधार और सरचना से सम्बन्धित है। आज विश्व के आर्थिक मानचित्र के शिखर पर बैठे देश *जापान कोरिया सयुक्तराज्य अमेरिका* आदि प्राथमिक शिक्षा मे अधिकतम निवेश करके ही विकास के वर्तमान स्तर तक पहुँचे किन्तु हमारे देश मे उच्च शिक्षा पर ही विशेष ध्यान दिया जाता रहा। आज भी जनपद मे 53 प्रतिशत बालिकाओ को 5 किमी या उससे अधिक दूरी तय करके सीनियर बेसिक स्कूल मे शिक्षा ग्रहण करने हेतु जाना पडता है। शिक्षण सस्थाओ का वितरण अपर्याप्त है एव उनमे प्राय योग्य शिक्षको का अभाव है। अत जनपद के प्रत्येक गॉव मे कम से कम प्राथमिक विद्यालय की स्थापना होनी चाहिए तथा माध्यमिक एव उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो की सख्या भी बढाई जाय। इनकी स्थापना मे उन क्षेत्रो को प्राथमिकता प्रदान की जाय जो अपेक्षाकृत पिछडे है तथा जहॉ कोई विद्यालय नही है। अतिरिक्त शिक्षको की नियुक्ति कर सरचनात्मक दोषो को दूर किया जाय तथा शिक्षण सुविधाओ का विकास किया जाय। वर्तमान मे जनपद मे इण्टर कालेजो/उ मा वि की सख्या (सहायता प्राप्त एव असहायता प्राप्त) 236 है। परन्तु इनमे से अधिकाश केवल कागज तक ही सीमित हैं। वास्तविक रूप मे भूमि पर एक कमरे के अलावा इनमे और कोई शिक्षण ससाधन नही। अत ऐसी सस्थाओ से ऑकडे भले ही दुरुस्त लगे परन्तु इनसे सेवा मे कोई योगदान नही होता। ऐसे सस्थानो की सख्या विकास खण्डवार भटनी—21 लार—14 सलेमपुर—29 देवरिया सदर—37 बैतालपुर—9 रामपुर मारखाना—9 देसही देवरिया—10 पथरदेवा—20 भाटपार रानी—17 बनकटा—11 रुद्रपुर—12 गौरीबाजार—4 बरहज—11 भलुअनी—18 भागलपुर—14 है।[17] इन सस्थानो का वास्तविक धरातल पर कामयाब बनाने का प्रयास होना चाहिए साथ ही जनसख्या के अनुपात मे शिक्षण सस्थाओ की स्थापना होनी चाहिए।

जनपद मे वर्तमान मे 14 डिग्री कॉलेज है जबकि 2001 की जनगणना के अनुसार जनसख्या 27 लाख से अधिक हो चुकी है। अर्थात 1 95 लाख जनसख्या पर एक डिग्री कॉलेज है जो शिक्षा की समुचित जरूरत एव विकास के अनुकूल नही है। यदि प्रतिलाख जनसख्या पर भी एक डिग्री कॉलेज की स्थापना की जाय तो जनपद मे अभी और 13 कॉलेज खोलना अपेक्षित है। ग्रामीण क्षेत्रो मे जनसख्या और कॉलेजो का अनुपात और भी विरोधाभास पूर्ण है। नगरीय क्षेत्रो मे जहॉ

27 हजार जनसख्या पर ही एक डिग्री कॉलेज है वही ग्रामीण क्षेत्रो मे इसके लिए जनसख्या आधार 3 3 लाख है जो बहुत अधिक है। अत अब जो भी डिग्री कॉलेज स्थापित हो उन्हे ग्रामीण क्षेत्रो मे ही स्थापित किया जाय। इससे ग्रामीण एव नगरीय क्षेत्रो का अतर मिटेगा। इन सबके अलावे नगरीय क्षेत्र मे स्थित सभी महाविद्यालयो को स्नातकोत्तर स्तर तक किया जाना चाहिए।

References

1. *योजना 'गणतत्र दिवस'— 98 विशेषाक प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मत्रालय भारत सरकार पटियाला हाउस नई दिल्ली पृ— 14—15*
2. *Thapalıyal, B K and Ramanna, D V, 'Planning for Social Facilities' 10th Course on DRD, NKD, Hyderabad 1977, Sept-Oct , p-1 (Unpublished paper)*
3. *वही पृष्ठ—1*
4. *'कुरुक्षेत्र' अक्टूबर 2002 प्रकाशन विभाग ग्रामीण विकास मत्रालय भारत सरकार रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली पृ 17*
5. *कुरुक्षेत्र सितम्बर 2002 प्रकाशन विभाग ग्रामीण विकास मत्रालय भारत सरकार रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली— पृ 5*
6. *चॉदना आर सी 'जनसख्या भूगोल' कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली 1987 पृ 179६*
7. *सदर्भ— 4 पृ 16*
8. *सामाजार्थिक समीक्षा जनपद देवरिया 2000—2001 पृ 9*
9. *वही पृ 9*
10. *कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2002 प्रकाशन विभाग ग्रामीण विकास मत्रालय भारत सरकार रामकृष्ण पुरम् नई दिल्ली— पृ 20*
11. *वही पृ 6*
12. *वही पृ 7*
13. *वही पृ 9*
14. *मुख्य चिकित्सापदाधिकारी देवरिया के कार्यालय से प्राप्त ऑकडो पर आधारित*
15. *वही*
16. *मुख्यमत्री की साप्ताहिक समीक्षा से सबधित 33 बिन्दुओ का प्रगति विवरण प्रोफार्मा सख्या—28 चिकित्सालयो मे चिकित्सको की उपस्थिति— वर्ष 2001—02 माह फरवरी जनपद देवरिया।*
17. *जिला विद्यालय निरीक्षक (DIOS) जनपद देवरिया के कार्यालय से प्राप्त सूचना पर आधारित*

अध्याय-आठ

ऊर्जा–अवधारणा एवं समन्वित क्षेत्र–विकास

'समन्वित क्षेत्र–विकास' की सकल्पना एक व्यापक सकल्पना है। किसी क्षेत्र के विकास का तात्पर्य केवल कुछ सुविधाओ की वृद्धि करना ही नही है वरन् समग्र विकास करना है। पिछले अध्यायो मे अध्ययन क्षेत्र के कृषि उद्योग परिवहन सचार शिक्षा तथा स्वास्थ्य से सबधित प्रवृतियो प्रतिरूपो एव समस्याओ को विश्लेषित कर उनका विकास–नियोजन प्रस्तुत किया गया है। परन्तु किसी क्षेत्र का समग्र विकास इसके अलावे अन्य कारको पर भी निर्भर करता है यथा– आवास स्वच्छता प्रौद्योगिकी विकास विकसित मानव ससाधन, पर्यावरण सतुलन मनोरजन के साधन सामाजिक सद्भाव तथा चरित्र निर्माण आदि। इनके बिना समग्र विकास की कल्पना की ही नही जा सकती। परन्तु इन सबमे सबसे महत्वपूर्ण है *ऊर्जा विकास,* क्योकि विकास के प्रत्येक क्षेत्र– चाहे कृषि उत्पादन मे सुधार हेतु, उद्योगो को चलाने अथवा दैनिक जीवन स्तर मे सुधार के लिए ऊर्जा उपलब्धता एक अनिवार्य शर्त है। किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास तथा लोगो के जीवन स्तर मे सुधार के लिए पोषण के बाद ऊर्जा ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। शायद इसी कारण किसी भी देश की सम्पन्नता के समुचित मापदड के रूप मे प्रति व्यक्ति ऊर्जा के औसत उपभोग के पैमाने को प्रयुक्त किया जाता है। परन्तु एक शोध–प्रबन्ध मे समग्र विकास के लिए आवश्यक सम्पूर्ण भौगोलिक सामाजिक, आर्थिक सास्कृतिक तथा राजनीतिक कारको का अध्ययन सम्भव नही है। इसके लिए शोध–श्रृखला की आवश्यकता है। एक शोधकर्ता के लिए समय ससाधनो तथा विशेषज्ञता के अभाव मे समग्र अध्ययन करना सभव नही है। अत प्रस्तुत अध्ययन मे क्षेत्र विकास से सम्बन्धित विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

जिस क्षेत्र की (जनपद देवरिया) 90 प्रतिशत जनसख्या ग्रामीण हो लगभग 40 प्रतिशत निरक्षर हो कृषि कार्य की प्रधानता हो, कुल कर्मकारो का 83 9 प्रतिशत कृषि कार्य मे सलग्न हो तथा मात्र 51 प्रतिशत बस्तियॉ ही सडको से अभिगम्य हो, ऐसे क्षेत्र के समग्र–विकास के लिए विकास के लिए उत्तरदायी सभी कारको को गतिशील करना होगा। इस सदर्भ मे विकास की सकल्पना क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति जनसख्या ससाधन तथा आवश्यकता के अनुरूप सापेक्षिक होनी चाहिए। क्योकि प्रत्येक क्षेत्र का विशिष्ट व्यक्त्वि होता है जिसके विकास के लिए उसकी विशिष्ट मॉंग होती है। समतल एव ऊपजाऊ भू–भाग वाले इस अध्ययन क्षेत्र मे कृषि की प्रधानता है जनसख्या गहनता अधिक है। अत स्वाभाविक रूप से औद्योगिकरण भी कृषि आधारित ही होगा क्योकि खनिज उपलब्धता शून्य है।

8 1 ऊर्जा की अवधारणा और समन्वित विकास मे इसकी भूमिका

ऊर्जा मानव जीवन का आधारभूत सबल है। प्रकृति की गोद मे जब मानव ने पहली बार अपनी ऑखे खोली तो उसे सर्वप्रथम ऊर्जा से ही गति मिली और तदुपरात गति ही जीवन का आधार बनी। इसी तरह के कई सदर्भ प्राचीन भारतीय ग्रथो मे मिलते हैं। आज ऊर्जा विकास का प्रतीक है। ग्रामीण विकास के रूप मे ऊर्जा मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकता है। यह न केवल आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण हे बल्कि बुनियादी घरेलू क्रियाकलापो मे भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र मे चाहे कृषि उत्पादन मे सुधार हेतु उद्योगो को चलाने अथवा दैनिक जीवन स्तर मे सुधार के लिए बडी मात्राा मे ऊर्जा की आवश्यकता है। ऊर्जा सबकी जरूरत है। अत समुचित ऊर्जा उपलब्धता समन्वित क्षेत्रीय विकास की पहली अनिवार्य प्राथमिकता हे। ऊर्जा की उपलब्धता से कृषि उद्योग शिक्षा चिकित्सा परिवहन, सचार आदि सभी क्षेत्र गतिशील हो जाऍगे जिससे अतत क्षेत्र का समन्वित विकास होगा।

ग्राम्य प्रधान अध्ययन क्षेत्र मे जहॉ शिक्षा चिकित्सा, आवागमन दूरसचार आदि सुविधाओ और साधनो का अभाव है, तो दूसरी ओर आए दिन ऊर्जा की कमी के कारण असहाय किसान अपने जीवनदायिनी कृषि सबधी कार्यो को भी समय पर पूर्ण नही कर पाते हैं। इस कारण उसका अपना नुकसान तो होता ही है, साथ मे देश को भी उस नुकसान से कठिनाइयो का सामना करना पडता है क्योकि खुद एक दुखद और निराशा से भरा जीवन जीने के बावजूद ये किसान ही अपनी खून–पसीने की मेहनत से देश की 100 करोड की आबादी का भरण–पोषण करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र मे ऊर्जा का प्रधान स्रोत पारपरिक ऊर्जा पर आधारित आयातित बिजली है। कृषि क्षेत्र मे डीजल और पेट्रोल का उपयोग विकल्प रूप मे करने के अतिरिक्त जनपद की सम्पूर्ण गतिविधियॉ (कृषिकार्य उद्योग सचार स्वास्थ्य शिक्षा सेवाऍ आदि) इसी आयातित विद्युत पर विकास की ओर सरकती हैं। वर्तमान (फरवरी–2002 की स्थिति) मे देवरिया मे 45 विद्युत फीडर है तथा 3 455 ट्रासफार्मर जिनमे 27 खराब है। वर्तमान मे लगभग 72 प्रतिशत ग्राम विद्युतीकृत हो चुके है परन्तु विद्युत उपलब्धता का औसत ग्रामीण क्षेत्र मे 11 05 घटे और नगरीय क्षेत्रो मे 14 45 घटे ही है। जनपद मुख्यालय पर विद्युत आपूर्ति औसतन 19 00 घटे है *(मुख्यमत्री की 33 बिन्दुओ की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा फरवरी–2002, जनपद देवरिया)*। इस प्रकार ऊर्जा के इस आधार पर क्षेत्र के समन्वित विकास की सकल्पना को साकार नही किया जा सकता। यह स्थिति तब है जब अभी 72 प्रतिशत गॉवो मे ही बिजली पहुॅची है (सारणी–8 1)। अत इसके लिए शेष 28 प्रतिशत गॉवो मे भी विद्युत को पहुॅचाना अनिवार्य होगा नही तो वे विकास मे पीछे छूट जाऍगे और क्षेत्रीय असतुलन को जन्म देगे जो स्वय मे एक समस्या है। सारणी 8 1 और आरेख 8 1 के माध्यम से प्रत्येक विकासखण्ड मे विद्युतीकृत ग्रामो की स्थिति एव विकास को स्पष्ट किया गया है।

सारणी 8 1

विद्युतीकृत ग्रामो का कुल आबाद ग्रामो से प्रतिशत एव विकास

विकास खण्ड	आबाद ग्राम सख्या	विद्युतीकृत ग्रामो का प्रतिशत	
		1990–91	2000–01
1 गौरीबाजार	114	69 0	72 8
2 बैतालपुर	127	64 8	74 8
3 देसही देवरिया	88	58 0	71 6
4 पथरदेवा	162	64 3	72 8
5 रामपुर कारखाना	113	65 2	71 7
6 देवरिया सदर	155	73 4	79 4
7 रुद्रपुर	159	51 0	52 2
8 भलुअनी	171	61 3	62 0
9 बरहज	94	67 4	70 2
10 भटनी	107	72 9	93 5**
11 भाटपाररानी	117	81 2	75 2
12 बनकटा	148	48 0 *	52 0*
13 सलेमपुर	203	81 3**	80 8
14 भागलपुर	122	74 2	79 5
15 लार	124	68 5	75 0
समस्त विकासखण्ड	2004	64 0	71 7

***स्रोत–** साख्यिकी पत्रिका जनपद देवरिया–2001 पृ 15 एव 40 से सगणित*

** – अधिकतम
* – न्यूनतम

सारणी 8 1 से स्पष्ट है कि 1990 से 2001 के मध्य जनपद मे विद्युतीकृत ग्रामो मे मात्र 7 7 प्रतिशत की ही वृद्धि हुयी तथा अभी भी *देसही देवरिया रुद्रपुर, भलुअनी बरहज बनकटा* विकासखण्डो मे विद्युतीकृत ग्रामो का प्रतिशत जनपदीय औसत (71 7) से भी कम है। सर्वाधिक प्रतिशत (93 5) *भटनी* विकासखण्ड मे पायी जाती है।

ग्रामीण विकास एक सतत् प्रक्रिया है जिसे अनत काल तक चलाए रखने के लिए वाछित ऊर्जा भी सतत् उपलब्ध और निरन्तर विद्यमान होनी चाहिए। अभी तक उद्योग कृषि, घरेलू उपभोग परिवहन आदि सभी क्षेत्रो को गतिमान बनाए रखने मे बिजली, कोयला एव पेट्रोलियम ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन ऊर्जा के इन परपरागत साधनो की कुछ सीमाएँ हैं जैसे–

* बढती जनसख्या एव ऊर्जा खपत के कारण इन स्रोतो के भण्डार कुछ सौ वर्षो बाद समाप्त होने की सभावना है।
* इन स्रोतो से प्राप्त ऊर्जा के लिए सम्बन्धित परियोजनाओ मे बड़े पैमाने पर पूँजी निवेश की आवश्यकता है जो विकासशील देशों के लिए बहुत बड़ी बाधा है।

चित्रारेख– 8 1

जनपद देवरिया मे कुल आबाद ग्रामो से विद्युतीकृत ग्रामो का प्रतिशत (1991–2001)
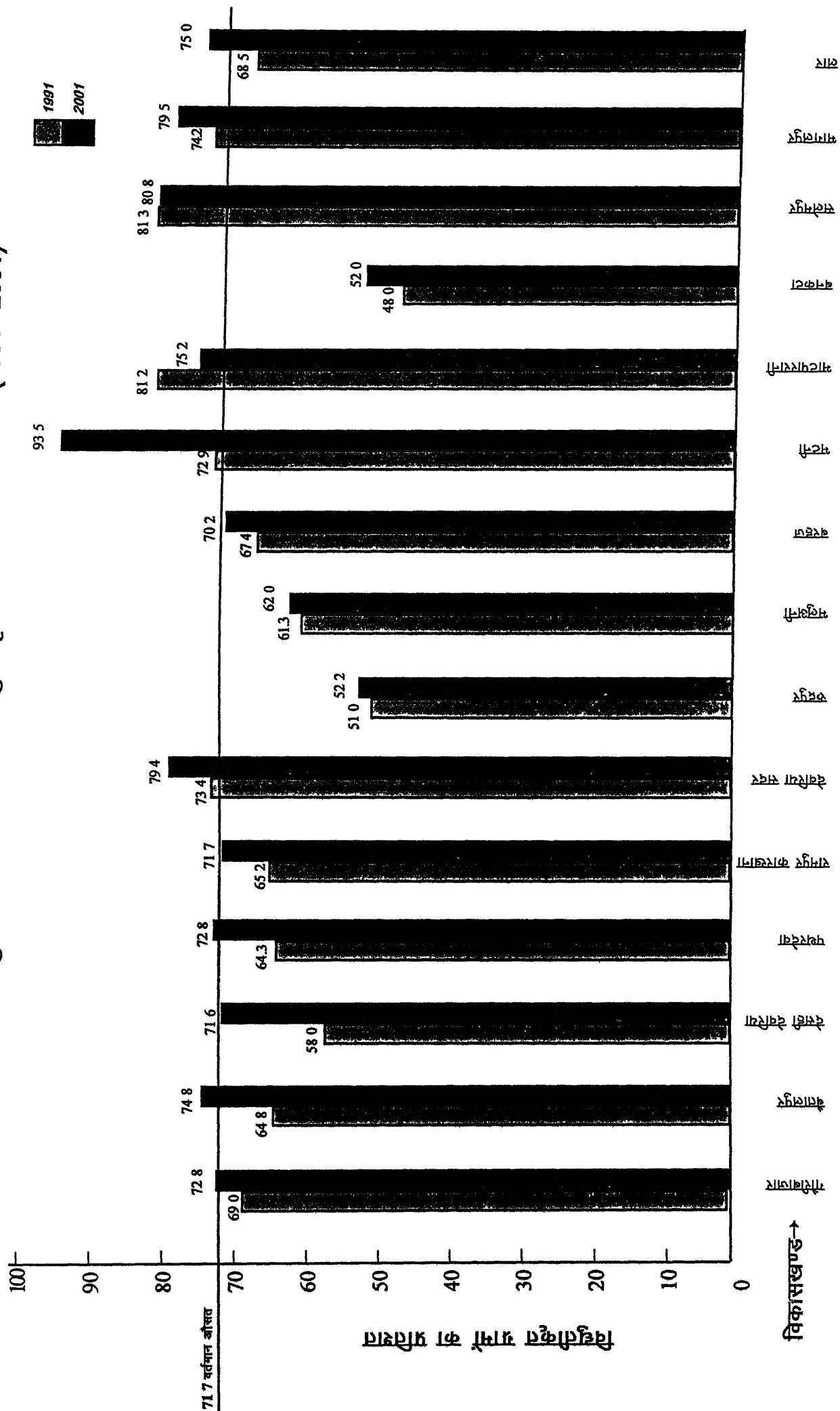
* ऊर्जा के परपरागत तौर पर उपलब्ध सभी रूप सामान्यत ऊर्जा के सकेन्द्रित रूप है ग्रामीण क्षेत्रो मे इनके वितरण के लिए एक पूरी विद्युत पारेषण प्रणाली विकसित करनी पडती है जो व्ययसाध्य है।
* इन स्रोतो से पर्यावरण के लिए गभीर खतरा पैदा हो रहा है और प्रदूषण के कारण मनुष्य का शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है।

इस प्रकार आज ग्रामीण विकास से सबधित कार्यो के प्रकार और उनका दायरा इतना बढ गया है कि समन्वित क्षेत्रीय विकास के लिए उन सबको सुचारू रूप से सचालित करने के लिए अब पहले की अपेक्षा कही अधिक ऊर्जा की आवश्यकता है। परन्तु विडबना यह है कि ऊर्जा के आधिक्य की जरूरत वाले ऐसे दौर मे ऊर्जा निरतर अपर्याप्त पडती जा रही है। ऐसे मे अन्य स्रोतो से भी ऊर्जा प्राप्त करना अनिवार्य है।

8 2 विकास मे गैर परपरागत ऊर्जा की अवधारणा

उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे ऊर्जा उत्पादन की समस्या का निदान गैर परम्परागत ऊर्जा ससाधनो मे ही है। गैर परपरागत ऊर्जा के रूप *गोबर गैस पवन ऊर्जा सौर ऊर्जा, कूडा–कचडा से ऊर्जा जैव ऊर्जा* आदि है। बढती जनसख्या कृषि गहनता से बढती तीव्रता तथा इसके साथ–साथ पारपरिक ऊर्जा का दिनो–दिन घटता भडार (टिकाऊ विकास तथा राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए) जैसे कारण गैरपरम्परागत ऊर्जा के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए प्रेरित करते है। यही हमे दीर्घकालिक *टिकाऊ विकास* तथा *ऊर्जा सुरक्षा* प्रदान कर सकता है। इस प्रकार पर्यावरण सरक्षण एव ग्रामीण क्षेत्रो मे विकेन्द्रीकृत ऊर्जा आवश्यकता के कारण इसका विशेष महत्व है।

8 3 गैरपरम्परागत ऊर्जा स्रोत एव सभाव्यता

ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोतो मे व्यापक सभावनाएँ परिलक्षित हो रही हैं। इसका विश्लेषण दो स्तरो पर करना अपेक्षित है पहला *राष्ट्रीय स्तरपर* एव दूसरा *जनपदीय स्तरपर*। इससे तुलनात्मक रूप से जनपद मे गैर परम्परागत स्रोतो की सभाव्यता का आकलन हो जाएगा।

(क) राष्ट्रीय स्तर पर गैरपरम्परागत ऊर्जा सभाव्यता

भौगोलिक दृष्टि से भारत गैर परम्परागत ऊर्जा के विकास की सम्भावना से परिपूर्ण है। इस सम्बन्ध मे किए गए विभिन्न ऊर्जा स्रोतो के आकलन के क्रम मे यह पाया गया है कि मैदानी भागो मे *सौर, जल* तथा *वायु ऊर्जा* के असीमित भडार है। ये निम्नवत् है–

(अ) कृषि उत्पादो से ऊर्जा

देश मे प्रत्येक वर्ष कृषि उत्पादो से लगभग 30 करोड़ टन बेकार पदार्थ निकलते हैं, जिनसे बड़ी मात्रा मे ऊर्जा उत्पादित किया जा सकता है।

(ब) पवन ऊर्जा

यदि हम पवन ऊर्जा को कम अनुमानित करके देखे तो भी इस स्रोत से देश मे 20 000 मेगावाट पवन ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

(स) लहर ऊर्जा

भारत की 1 600 किमी लबी तट रेखा है जहॉ समुद्र की लहरो से 40 000 मेगावाट बिजली प्राप्त हो सकती है।

(द) सौर ऊर्जा

भारत मे प्रतिदिन प्रतिवर्ग मीटर 5–7 किलोवाट/घटा सौर ऊर्जा प्राप्त होती है। सौर ऊर्जा को सौरतापीय उपकरणो और प्रणालियो से सीधे ताप ऊर्जा मे बदला जा सकता है।

(इ) भूतापीय ऊर्जा

इसकी प्राप्ति पृथ्वी की सतह से 10 किमी गहराई तक की उष्णता से होती है। भूतापीय द्रव्य का तापमान 130 डिग्री से0 होने की स्थिति मे बिजली बनाने के लिए इस ऊर्जा का प्रयोग हो सकता है। भारत मे भूतापीय ऊर्जा की प्राप्ति की व्यापक सभावनाऍ है क्योकि देश मे गर्म भूगर्भीय स्रोत वाले 340 स्थान है।

अभी देश मे कुल ऊर्जा उत्पादन का 3 प्रतिशत (3 400 मेगावाट) गैरपरम्परागत नवीकरणीय स्रोतो से प्राप्त हो रहा है। इसमे पवन ऊर्जा के अतर्गत समुद्रतटीय क्षेत्रो मे 43 मेगावाट बिजली तैयार करने की क्षमता विकसित कर ली गई है। समुद्री ऊर्जा के अतर्गत *केरल* के *विझिगम* मे 1 500 मेगावाट क्षमता का सयत्र लगाया गया है। इससे वर्ष के 10 महीने 75 किलोवाट के औसत से बिजली उत्पादित की जा सकती है। सौर ऊर्जा के अतर्गत देशभर मे अब तक 10 000 पानी गरम करने की घरेलू प्रणालियॉ 5,000 औद्योगिक व्यावसायिक प्रणालियॉ 2 25 लाख सौर कुकर 10 000 सौरस्टिल ओर 200 सौरकुटी (सोलर हट) लगाई गई है। भारत के कुल ऊर्जा उत्पादन मे गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतो के योगदान को वर्ष 2012 तक 10 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुसधान और विकास कार्यो को लयबद्ध करना भी एक उचित तथा सार्थक कदम होगा।

(ख) जनपद (देवरिया) स्तर पर गैर परम्परागत ऊर्जा सभाव्यता

गैरपरम्परागत ऊर्जा विकास की सभाव्यता जनपदीय स्तर पर काफी अधिक है। यहॉ *सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा* एव *जल ऊर्जा* के अलावे कृष्य प्रधानता के कारण लाखो टन कृषि उत्पाद बेकार पदार्थ के रूप मे निकलते है, जिनसे ऊर्जा उत्पादन सभव है। धान अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख फसलो मे है। धान की भूसी से भी ऊर्जा उत्पादन की पर्याप्त सभाव्यता है। जनपद मे पॉच चीनी मिले (प्रतापपुर गौरीबाजर भटनी, देवरिया एव बैतालपुर में) स्थापित हैं। गन्ने की खोई से ऊर्जा

उत्पादन का प्रयोग सफल हो चुका है। अत इससे अध्ययन क्षेत्र मे ऊर्जा उत्पादन किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र समतल मैदानी क्षेत्र है और उर्वर मृदा के कारण कृषि सघनता भी उच्च है। लगभग 89 प्रतिशत कर्मकार कृषि क्षेत्र मे ही लगे है जबकि गॉवो मे औसतन 11 05 घटे ही बिजली उपलब्ध होती है। इससे कृषि कार्य मुख्यत सिचाई प्रभावित होती है। क्षेत्र मे भूमिगत जलस्तर काफी ऊँचा है तथा पवन ऊर्जा की भी पर्याप्त सभाव्यता है। अत पानी निकालने सिचाई तथा अन्य कार्यो के लिए पवन ऊर्जा का उपयोग किया जा सकता है। पशुधन के मामले मे क्षेत्र सम्पन्न है। अत जिन परिवारो के पास अधिक पशु है, वे बायोगैस सयत्र की सहायता से ऊर्जा की जरूरत को पूरा कर सकते है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र गैर परम्परागत ऊर्जा के विकास की सभावना से परिपूर्ण है। जरूरत है इन ससाधनो का वैज्ञानिक ढग से अधिकाधिक दोहन करके विकास की गति बढाने के लिए उपयुक्त रणनीति बनाने की। विशेषकर इस लाभदायक पहलू को ध्यान मे रखते हुए कि इसके उत्पादन और वितरण मे पर्यावरण प्रदूषण के खतरे नही है। दूसरी बात यह है कि सयत्रो की निर्माण लागत को निकाल दिया जाए तो गैर परपरागत ऊर्जा की उत्पादन लागत नगण्य रहती है।

8 4 ग्रामीण क्रियाकलापो मे गैरपारम्परिक ऊर्जा का उपयोग

सूर्य पवन पशुमल जैविक पदार्थो कूडा–कचडा आदि से बेमोल मिलने वाली इस ऊर्जा का उपयोग ग्रामीण जनजीवन से जुडे विभिन्न खेतिहर और गैर–खेतिहर कार्यो मे किया जा सकता है। जिन ग्रामीण क्रियाकलापो मे इस ऊर्जा का उपयोग मुख्य रूप से हो सकता है वे हैं–

* पेयजल की पपिग
* लघुस्तर पर खेतो की सिचाई
* घरेलू व पथ प्रकाश व्यवस्था
* सामुदायिक केन्द्रो मे प्रकाश व्यवस्था
* भोजन पकाना आदि।

अध्ययन क्षेत्र मे 28 प्रतिशत गॉव अभी भी बिजली से वचित हैं। इससे इनका विकास रुका हुआ है। ये गॉव दूरदराज मे बसे होने तथा अपनी जटिल भौगोलिक स्थिति के कारण परपरागत ग्रिड बिजली द्वारा अभी तक प्रकाशित नही किए जा सके है। इन गॉवो मे *सौर फोटोवोल्टिक पद्धति* से सामुदायिक और पथ प्रकाश की व्यवस्था को सयोजित और सभव किया जा सकता है। इस पद्धति के जरिये सीधे सूर्य की किरणो से ऊर्जा का उत्पादन करके उसे सग्रहीत कर लिया जाता है जिसका जरूरत के मुताबिक उपयोग किया जाता है। इसमे केबलो की भी कोई खास जरूरत नही पडती क्योकि इसके जरिये ऊर्जा का उत्पादन स्थान विशेष पर ही हो जाता है।

परन्तु गॉवो मे जीवन स्तर सुधारने और सौर विद्युत या अन्य गैर परम्परागत ऊर्जा के उपयोग मे सबसे बडी बाधा है ग्रामीणो को इसके लिए प्रोत्साहित करना। अत ग्रामीण स्तर पर पहले गैर परम्परागत ऊर्जा के लाभ एव उपयोग की जानकारी देना अनिवार्य है। इसके लिए अनेक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन भी अपेक्षित लाभ पहुँचा सकता है।

8 5 एकीकृत ग्रामीण ऊर्जा कार्यक्रम

देश के विशाल भूभाग मे बसी ग्रामीण जनता की रोजमर्रा की ऊर्जा सम्बन्धी जरूरतो को पूरा करने तथा गैरपरम्परागत स्रोतो से प्राप्त ऊर्जा को ग्रामीण विकास सम्बन्धी कार्यो के लगाने के लिए केन्द्र सरकार ने *एकीकृत ग्रामीण ऊर्जा कार्यक्रम* का सूत्रपात किया है। राज्य जिला और खण्ड स्तर पर उपयुक्त गैरपरम्परागत ऊर्जा परियोजनाओ को विकसित करना तथा इस सदर्भ मे जरूरी सस्थानिक अनुरूपता को नियोजत करना इस कार्यक्रम के जरिये सम्भव हो रहा है। ग्राम पचायतो गैरसरकारी सगठनो तथा अन्य क्षेत्रीय सस्थाओ को साथ जोडने के परिणाम स्वरूप यह कार्यक्रम ग्रामीण ऊर्जा के क्षेत्र मे अधिकतम जन भागीदारी को प्रोत्साहित करने मे भी सफल हुआ है।

8 6 समन्वित विकास के अन्य पहलू

अध्ययन क्षेत्र का समन्वित विकास इस क्षेत्र मे उपलब्ध साधनो, यहॉ के निवासियो की आवश्यकताओ महत्वाकाक्षाओ उनके तकनीकी कौशल और पर्यावरण बोध पर निर्भर है। यहॉ के प्राकृतिक उपहारो का साधन के रूप मे मूल्य तभी बढेगा जब लोगो को उनके उपयोग का ज्ञान हो जायेगा। ऐसे अनेक उदाहरण है जहॉ सभाव्य साधन विशाल मात्रा मे उपलब्ध हैं किन्तु उपयोगिता के ज्ञान के अभाव तथा आर्थिक कारणो से उनका विकास नही हो पाया है या पर्यावरणीय पहलू की अनदेखी कर विकास के प्रयास हुए जिसका दुष्परिणाम अब सामने आने लगा है। इस दृष्टि से जनपद के समन्वित विकास के लिए कई स्तरो और कई दिशा मे सार्थक पहल की अपेक्षा है। प्रस्तुत अध्याय मे दिशाओ को स्पष्ट करने का प्रयास हुआ है पर उनमे कितना और किस तरह की कार्ययोजना होनी चाहिए इसके लिए प्रत्येक क्षेत्र मे व्यापक शोध की आवश्यकता है।

उपर्युक्त सन्दर्भ मे अध्ययन क्षेत्र के समन्वित विकास के लिए सबसे पहले वन एव पर्यावरण का मानव जीवन मे महत्व को जनपद की जनता को समझना होगा। अध्ययन क्षेत्र आरम्भ मे अरण्य प्रदेश था। प्राकृतिक एव पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकूलता के कारण यह क्षेत्र *देवो* एव *ऋषियो* की तपोस्थली के लिए आकर्षण का केन्द्र बना, जिससे यह प्रदेश *'देवारण्य प्रदेश'* हुआ। परन्तु बाद के कालावधि मे तीव्र जनसख्या वृद्धि के फलस्वरूप कृषि भूमि एव आवास हेतु भूमि की बढती मॉग के कारण तीव्र गति से वनो का ह्रास हुआ। फलस्वरूप यह *'देवारण्य प्रदेश'– 'देवरिया'*

हो गया। इसमे से *अरण्य* निकल गया और ये *अरण्य* अब केवल बाग–बगीचो तक ही सिमट कर रह गये हैं।

देवारण्य के *देवरिया'* मे इस रूपान्तरण से अनेक पर्यावरणीय एव पारिस्थितिकीय समस्याओ का जन्म हुआ है। इनमे सर्वप्रमुख समस्या बाढ सूखा मृदाअपरदन एव प्रदूषण की है। अध्ययन क्षेत्र का दक्षिणी भाग *राप्ती* एव *घाघरा* के बाढ से प्रत्येक वर्ष आक्रात रहता है तो उत्तरी एव उत्तरी–पश्चिमी भाग मे ग्रीष्म काल मे सिचाई हेतु नहरो मे जल का अकाल पड जाता है। विद्युत आपूर्ति भी समयबद्ध न होने से परिणाम दु खद हो जाता है। वनो के न रहने से वर्षा का जल सीधे बहकर छोटी नदियो एव तालाबो से होते हुए बडी नदियो *(राप्ती घाघरा)* मे चला जाता है और अपने साथ भारी मात्रा मे मृदा अपरदित कर ले जाता है। इससे जहाँ नदियो मे अवसाद के निरन्तर जमा होते रहने से तली उथली हो रही है, जिससे बाढ के पानी का विस्तार दूर तक के क्षेत्रो मे हो रहा है वही कृषि भूमि के उपरी परत के अपरदित होकर बह जाने से उर्वरता भी प्रभावित होती है। फलस्वरूप कृषि उत्पादन कम होता है।

इस प्रकार वन क्षेत्र घटने से परिस्थितिकीय सतुलन अव्यवस्थित हो रहा है। वन नष्ट होते है तो जल नष्ट होता है पशु–पक्षी नष्ट होते है। पर्यावरण चक्र अव्यवस्थित होता है जिसका दुखद परिणाम सूखा, अकाल बाढ बढता तापमान और दुषित वायु है। वन वर्षा की प्रवृत्ति को भी प्रभावित करते हैं। वर्षा की कमी से भूजल स्तर घट रहा है जिससे मिट्टी सूख रही है और पेड पोधे नष्ट हो रहे है। अत वनो के कटाव पर रोक एव वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

जल (सतही जल एव भूमिगत जल समेत) का प्रमुख स्रोत वर्षा ही है। अध्ययन क्षेत्र मे औसत 100–150 सेमी वार्षिक वर्षा होती है। कुल वर्षा का 75–80 प्रतिशत *ग्रीष्मकालीन मानसून* के दौरान *जून* से *सितम्बर* के मध्य होता है परन्तु इसमे भी अनियमितता एव अनिश्चितता बनी रहती है। वर्तमान वर्ष (2002) मानसून काल मे वर्षा न हाने से खरीफ की फसल पर बुरा प्रभाव पडा है। वर्षा की इस प्रवृति से जल उपलब्धता भी प्रभावित होती है। वन न होने से वर्षा का ये जल बहकर निकल जाता है और हम सूखा तथा बाढ की विनाश लीलाएँ देखते ही रह जाते है।

भारत मे 70 प्रतिशत जल प्रदूषित है। इसके घातक प्रभाव से मानव, पशु–पक्षी और हरे–भरे खेत सभी प्रभावित हैं। नदियो झीलो जलाशयो के साथ–साथ भूमिगत जल भी प्रदूषण की चपेट मे आ गया है। भूजल का स्तर भी उत्तरोत्तर नीचे की ओर जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे भी यही प्रवृत्ति है। यहाँ अनियत्रित सिचाई पद्धति अधाधुध रासायनिक खाद एव कीटनाशक प्रयोग से न सिर्फ जल बल्कि मृदा भी प्रदूषित हो रही है। प्रदूषित जल मे प्राय भौतिक रासायनिक तथा जैविक अशुद्धियाँ होती है जिससे वह कई रागो का कारण बन जाता है। एक आकलन के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के 90 प्रतिशत रोग दूषित जल के कारण ही होते हैं। इस प्रकार जल

प्रदूषण की समस्या राष्ट्र के जीवन और स्वास्थ्य के साथ जुडी है। इसके लिए यदि जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड मे पेयजल के नि शुल्क परीक्षण तथा उसके उपचार की व्यवस्था की जा सके तो लोगो को बहुत राहत मिलेगी।

उपर्युक्त समस्याओ के सन्दर्भ मे अध्ययन क्षेत्र के समन्वित विकास हेतु ऐसी योजनाओ तथा कार्यक्रमो को क्रियान्वित करने की जरूरत है जिससे हमारी जनशक्ति पशुशक्ति तथा भूमि वन जल नदी जलाशय सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा खनिज ऊर्जा तथा जैविक ऊर्जा जैसे प्राकृतिक ससाधनो का पूर्ण विकास एव उपयोग किया जा सके। इसके लिए प्रथमत वन एव जल सरक्षण अनिवार्य है। इस हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं–

(1) नदियो के किनारे–किनारे जहाँ तक सभव हो हरे–भरे वृक्षो की पटटी का विस्तार किया जाना चाहिए। यह हरी पटटी प्रदूषित जल एकत्र कर उनका शोधन कर सकती है और नदी मे दूषित जल के प्रवाह को रोकने मे सहायता कर सकती है। इससे मिटटी तथा जल सरक्षण मे सहायता मिलेगी।

(2) नदियो नहरो तालाबो रेलवे लाइनो झीलो सडको आदि के किनारे ऐसे वन वृक्षो का विस्तार किया जाना चाहिए जो मिटटी तथा जल के सरक्षण मे सहायक हो जिनसे लकडी ईधन खाद्य तथा चारा भी उपलब्ध किया जा सके।

(3) किसानो द्वारा खेतो के बीच की मेड ऊँची करके उसके दोनो ओर मिश्रित वृक्ष लगाए जा सकते है।

(4) अध्ययन क्षेत्र मे 4 37 प्रतिशत भूमि (11 023 हेक्टेयर) परती एव बजर है। इसके लिए किसानो को इसके 30 प्रतिशत क्षेत्र पर वन वृक्ष उद्यान तथा स्थायी वनस्पति का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्राकृतिक पशुजनित खाद तथा जल पहुँचाकर बजर भूमि को धीरे–धीरे वनस्पतियो से भरापूरा किया जा सकता है। वन जल सरक्षण एव जल के शुद्धिकरण मे भी सहायता करते है।

(5) गाँवो मे प्राकृतिक जलाशयो का जीर्णोद्धार कर उसके किनारे वृक्षारोपण किया जाय तथा ग्राम पचायतो को जलाशयो तथा वन वृक्षो के सरक्षण की जिम्मेवारी दी जाय।

(6) ग्राम पचायतो तथा नगर पालिकाओ द्वारा प्रत्येक गाँव तथा नगर मे काँच पॉलीथीन तथा धातु के टुकडे निश्चित स्थानो पर एकत्र करने के लिए योजनाओ का निर्माण एव कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।

(7) ग्रामीण क्षेत्रो मे फ्लश शौचालयो के लिए पक्के गढे का निर्माण किया जाय एव इन्हे कम्पोस्ट पिट के साथ जोडा जाय। इससे जल–मल से कम्पोस्ट बनाने की प्रक्रिया सतत् चलती रहेगी। इससे भूमि तथा जल के प्रदूषण पर नियत्रण भी किया जा सकता है।

(8) प्रत्येक हैडपम्प के साथ जल निकासी के लिए पक्की नाली का निर्माण किया जाना चाहिए।

जल प्रदूषण एव जल सकट की समस्या से निपटने के लिए सरकार ने *1 अप्रैल 2002* को *नई राष्ट्रीय जल नीति* का प्रारूप राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत किया है। इससे जल सबधित समस्याएँ हल करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया जा सकेगा। राष्ट्रीय जल नीति मे वर्षा के जल सग्रहण तथा सदुपयोग पर अत्यधिक बल दिया गया है। केन्द्रीय जलनीति के आधार पर राज्य सरकारे अपनी कार्य–योजनाओ सहित राज्य–स्तरीय जलनीतियॉ भी बना सकेगी।

अध्ययन क्षेत्र के समन्वित विकास के लिए सबके लिए आवास सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। बुनियादी न्यूनतम सेवाओ की उपलब्धता की स्थिति की समीक्षा करने के लिए वर्ष 1996 मे आयोजित मुख्यमत्रियो के सम्मेलन मे *सात बुनियादी न्यूनतम सेवाये* निर्धारित की गई थी जो इस प्रकार है–

1– प्राथमिक स्वास्थ्य उपचर्या

2– प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण

3– सुरक्षित पेयजल

4– सभी आवासहीन परिवारो को आवास सम्बन्धी सरकारी सहायता

5– पोषाहार

6– सभी गॉवो और व्यक्तियो को आपस मे सडको द्वारा जोडना और

7– गरीबो की ओर ध्यान केन्द्रित करते हुए सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुचारू बनाना।

इस प्रकार न्यूनतम सेवाओ मे *आवास* एक महत्वपूर्ण अग है। अध्ययन क्षेत्र की अधिकाश ग्रामीण बस्तियॉ कच्चे एव झोपडी के रूप मे है। आर्थिक कारणो से इनकी मरम्मत तक नही हो पाती है। अत सरकार द्वारा इनके पुराने मकान की मरम्मत एव नये मकान के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना चाहिए। जिन मकानो मे शौचालय नही है उनमे इसके निर्माण के लिए भी वित्तीय मदद की आवश्यकता है। प्रत्येक गॉव मे नाली की सुविधा गलियो मे खडजा तथा सफाई कर्मी की नियुक्ति भी अपेक्षित है। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण गॉवो मे सामुदायिक भावना मे वृद्धि है। इसके द्वारा भी सफाई नाली तथा सडक अव्यवस्था से मुक्ति पायी जा सकती है। अधिकाश ग्रामीण समस्याएँ नगरो की नकल करने से उत्पन्न हो रही है। अत गॉवो मे सुविधाओ का विस्तार एव विकास इस प्रवृत्ति पर अकुश लगाएगा।

ग्रामीण आवास की गभीरता के मद्देनजर सरकार ने 1998 मे एक *राष्ट्रीय आवास और पर्यावासी नीति* की घोषणा की जिसका उद्देश्य गरीबो और वंचितो को लाभ पहुँचाना तथा सभी

के लिए आवास उपलब्ध कराना है। सरकार *10वी पचवर्षीय योजना* अवधि (2002–2007) के अत तक आवासहीनता की स्थिति को समाप्त करने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए वचनबद्ध है। इसके लिए एक व्यापक कार्ययोजना का क्रियान्वयन चल रहा है जिसमे निम्नलिखित घटक शामिल है

* *इदिरा आवास योजना*
* *ऋण सहसब्सिडी योजना*
* *ग्रामीण आवास और पर्यावरण विकास के लिए ग्रामीण निर्मिति केन्द्र*
* *ग्रामीण विकास मत्रालय द्वारा 'हडको' को दिए जाने वाले इक्विटी सहयोग मे वृद्धि*
* *समग्र आवास योजना,*
* *ग्रामीण आवास और पर्यावरण के लिए राष्ट्रीय मिशन।*

कार्यक्रम के फोकस को अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु वर्ष 2002–2003 से ग्रामीण आवास की सभी स्कीमो को (समग्र आवास योजना को छोडकर) मिलाकर *'इन्टीग्रेटेड रूरल हाउसिग स्कीम'* के अतर्गत कर दिया गया है।[1]

अध्ययन क्षेत्र मे आवास निर्माण के लिए 1985–86 से ही *इदिरा आवास योजना* चलन मे है। इसके द्वारा 2001 तक जनपद मे 3 438 आवासो का निर्माण किया जा चुका है तथा 2001–2002 के दौरान 1 758 आवासो का निर्माण किया गया। 13 758 आवास 50 प्रतिशत तक पूर्ण कर लिए गये थे।[2] *इदिरा आवास योजना* के अतर्गत ग्रामीण क्षेत्रो मे निवास करने वाले गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियो को नि शुल्क आवासीय इकाई प्रदान की जाती है जिसमे मुक्त बधुआ मजदूर अनुसूचित जाति/जनजाति के परिवार, दैवी आपदा प्रभावित परिवार गरीबी की रेखा के नीचे के परिवारो का चयन प्राथमिकता के आधार पर किया जाता है। स्वच्छ शौचालय और धुँआरहित चूल्हे इदिरा आवास योजना का अभिन्न अग हैं।

जनपद मे आवास निर्माण के लिए एक और योजना *'क्रेडिट कम सब्सिडी फॉर रूरल हाउसिग कार्यक्रम'*[3] के नाम से चल रही है। इसमे ग्रामीण क्षेत्रो मे गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले निवासियो को आवास हेतु ऋण प्रदान की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र मे ग्रामीण आवास के उपर्युक्त कार्यक्रमो से अभी तक आवास सम्बन्धी समस्या का निराकरण नही हो पाया है। इस योजना के क्रियान्वयन मे सबसे बडी बाधा अधिकारियो एव बिचौलियो के द्वारा उत्पन्न की जाती है। या तो उचित पात्र का चयन नही हो पाता या आवास निर्माण या मरम्मत के लिए स्वीकृत राशि का उपयोग अन्यत्र हो जाता है। इदिरा आवास के निर्माण मे एक बात और देखने को मिली कि उसमें बालू–सीमेन्ट का अनुपात भी सही नही रखा जाता जिससे उसकी मजबूती सदेहास्पद हो जाती है। अत योजनाओ के सही ढग से

क्रियान्वयन पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

आमतौर पर नगरीकरण को विकास का प्रतीक माना जाता है। परन्तु अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ मे विकास को नगरीकरण से नही मापा जाना चाहिए। क्योकि नगरीकरण स्वय एक समस्या है। वह दिन दूर नही जब नगरो से गॉवो की ओर परालय होगा। नगरो के *स्लम एरिया'* मे रहने वाले लोगो से देवरिया के गॉवो मे रहने वाली जनजातियॉ अधिक खुशहाल है। वर्तमान मे सुख की अनुभूति एव विकास कार्यक्रमो से खुशहाली मे लगातार वृद्धि होना ही समन्वित विकास है।

देवरिया जनपद मे खेलकूल एव मनोरजन के साधनो का अभाव है। खेलकूद को प्रोत्साहन देकर प्राचीन मठो किलो मदिरो तथा प्राकृतिक स्थलो को सडको से सम्बद्ध कर इस उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है। विकासखण्ड स्तर पर खेल–प्रतियागिताओ के आयोजन से भी चारित्रिक विकास एव मनोरजन के उद्देश्य की पूर्ति होगी। भारतीय सस्कृति मे मात्र भौतिक सुविधाओ मे वृद्धि ही समन्वित विकास नही है बल्कि सामुदायिक भावना उच्च्य चरित्र तथा वर्ग–देष की भावना का अभाव भी समन्वित क्षेत्र–विकास की सकल्पना को पूर्ण करते है।

समतल मैदानी भू–भाग होते हुए भी जनपद की मृदा सरचना, तथा अन्य भौगोलिक विशेषताओ मे विकासखण्ड स्तर पर विविधता है ससाधनो के वितरण मे असमानता है। इसके लिए क्षेत्रीय स्तर पर नियोजन अपेक्षित है जबकि समाग नियोजन प्रणाली अपनायी जा रही है। इससे क्षेत्रीय असतुलन उत्पन्न हो रहा है। इस विकास प्रक्रिया से आत्मनिर्भरता समाप्त होती जा रही है तथा निर्भरता बढती जा रही है। इसे समुचित विकास नही कहा जा सकता है। उपर्युक्त सभी विकास खण्डो मे उनके ससाधनो के अनुरूप विकास प्रक्रिया शीघ्र आरम्भ करने की आवश्यकता है। अर्थात् हमे अपने विकल्पो से ही विकास करना चाहिए तभी समुचित एव आत्मनिर्भर विकास किया जा सकता है। यहॉ के अरण्यो मे रहने वाले सत बिना किसी भौतिक सुविधा के सम्पूर्ण विश्व की सवेदना रखते थे। क्या आज का भौतिक युग तथा तथाकथित विकसित विश्व उन्हे पिछडा कह सकता है?

किसी भी क्षेत्र की जनसख्या को उसका सभाव्य ससाधन माना जाता है। इसमे उनकी सख्या और गुणवत्ता दोनो ही सम्मिलित हैं। लोगो की गुणवत्ता मे उनकी कार्य क्षमता उत्पादकता वैज्ञानिक एव प्रौद्योगिकी कौशल सास्कृतिक मूल्य एव उसके सामाजिक एव राजनीतिक सगठन को सम्मिलित करते हैं।

सख्या की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र सम्पन्न है बस व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। इसके लिए एक साथ अनेक दिशाओ मे लगातार एकजुट होकर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया मे परिवार, समाज तथा विद्यालय जैसी सामाजिक सस्थाऍ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इनके प्रभावी भूमिका पर शोध के लिए विस्तृत क्षेत्र खुला है।

समन्वित क्षेत्र–विकास के लिए कुछ अन्य लक्ष्य ऐसे है जिन्हे प्राप्त करना अनिवार्य है। ये लक्ष्य है– सबमे कर्तव्य परायणता तथा कार्य के प्रति निष्ठाभाव पैदा करना स्त्रियो को शिक्षित कर उनकी क्षमताओ का विकास करना श्रमिको की उत्पादकता बढाने के लिए विज्ञान प्रौद्योगिकी तथा ऊर्जा का उपयोग करना आदि। इस प्रकार लक्ष्य स्पष्ट है लेकिन उसे किस प्रकार प्राप्त किया जाय तथा किस प्रकार उपयोग किया जाय? शोध का विषय है।

अत अध्ययन क्षेत्र के समन्वित विकास के लिए विकास की व्यूह रचना इस प्रकार करनी होगी जिससे न केवल सभी विकासखण्ड एक दूसरे के पूरक हो जॉय बल्कि *आत्म निर्भर विकास'* ऐसा हो कि सम्पूर्ण गॉव न्यायपचायत एव विकासखण्ड एक ही माला मे पिरोए हुए प्रतीत हो। इस उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयास एव व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। कई अन्य कारक भी है जो जनपद के समन्वित विकास के लिए आवश्यक हैं परन्तु अनेक कारणो से उन्हे प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की विषय वस्तु मे सम्मिलित नही किया गया है। अत अध्ययन क्षेत्र (देवरिया जनपद) के समन्वित विकास के लिए व्यापक शोध की आवश्यकता है जिसमे भूगोलविदो के साथ अर्थशास्त्रियो समाजशास्त्रियो वैज्ञानिको तथा पर्यावरणविदो से सहयोग अपेक्षित है।

References

1 *'कुरुक्षेत्र अक्टूबर–2002 पृ0 33–34*

2 *मुख्यमत्री की साप्ताहिक समीक्षा से सम्बन्धित 33–बिन्दुओ का प्रगति विवरण फरवरी–2002 देवरिया।*

3 *'जनचेतना'–2000 जिला ग्रामीण विकास अभिकरण देवरिया पृ0 26*

✱📖✱

सारांश

सारांश

क्षेत्र विशेष मे स्थित ऐसा केन्द्र जो क्षेत्र के निवासियो को वस्तुएँ एव सेवाएँ प्रदान करता है ***'सेवाकेन्द्र'*** कहलाता है। अपने सम्पूरक क्षेत्र की सेवावृत्ति ही सेवाकेन्द्र का प्रमुख आधार है। सेवाकेन्द्र के लिए 1931 मे *मार्क जेफरसन* ने *Central Place* शब्द का प्रयोग किया जबकि *क्रिस्टालर* ने इसके समानार्थक *'Zentralort'* शब्द का उपयोग किया। सेवाकेन्द्र चूँकि अपने प्रदेश के केन्द्र होते है और प्राय लगभग केन्द्रस्थ भी होते है इसीलिए उनको *'केन्द्रस्थल'* भी कहते है। लेकिन कोई भी सेवाकेन्द्र अपने प्रदेश के ठीक–ठीक केन्द्र मे ही स्थित हो ऐसा अनिवार्य नही है। सेवाकेन्द्र नगरीय केन्द्र ही नही होते बल्कि अपने चतुर्दिक क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान करने वाली ग्रामीण बस्तियॉ भी सेवाकेन्द्र हो सकती हैं। कुछ अपवादो को छोडकर समस्त नगरीय केन्द्र सेवाकेन्द्र होते है परन्तु समस्त सेवाकेन्द्रो को नगर नही कहा जा सकता। सेवाकेन्द्रो के लिए उसके चतुर्दिक कुछ न कुछ क्षेत्र होने आवश्यक हैं जहॉ वे अपनी सेवाओ को प्रदान करते हैं। सेवित क्षेत्र के अभाव मे सेवाकेन्द्रो की कल्पना भी नही की जा सकती। किसी सेवाकेन्द्र को घेरते हुए उस समूचे क्षेत्र को उसका सेवा प्रदेश कहते है जो अपनी विनिमयात्मक आवश्यकताओ या सेवाओ के लिए पास मे स्थित लगभग उसी स्तर के अन्य केन्द्रो की अपेक्षा इस केन्द्र पर अधिक निर्भर रहता है। सेवाकेन्द्र एक बहुकार्यात्मक केन्द्र होता है जिसमे स्थित भिन्न–भिन्न कार्यों के अपने अलग–अलग प्रदेश होते हैं। इस प्रकार सेवा प्रदेश भी बहुकार्यात्मक सकेन्द्रीय प्रदेश होता है। केन्द्र के किसी एक कार्य का प्रदेश एक कार्यात्मक सकेन्द्रीय प्रदेश होता है। किसी केन्द्र के सभी कार्यों के सभी ऐसे प्रदेशो को सयुक्त रूप से एक साथ देखने पर या एक दूसरे के ऊपर प्रत्यारोपित करने पर एक ऐसा *'समान्य सेवा प्रदेश'* बन सकता है जिसमे दिए हुए केन्द्र का कुल प्रभुत्व या नियत्रण पास के प्रतिस्पर्धा करते हुए केन्द्र की तुलना मे अधिक होता है। ऐसे ही सामान्य सेवा प्रदेश को सम्बन्धित सेवाकेन्द्र के सेवा प्रदेश के रूप मे जाना जाता है।

सेवाकेन्द्र के सन्दर्भ मे अपनी *'केन्द्र स्थल परिकल्पना'* के माध्यम से *क्रिस्टालर* ने 1933 मे बताया कि सभी तरह से एक समाग क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो का वितरण परस्पर बराबर दूरी पर प्रोत्साहित होगा एव उनका सेवा क्षेत्र षटभुजाकार होगा जिसके परिधि पर कम महत्व के छ सेवाकेन्द्र होगे। इस प्रकार सेवाकेन्द्रो का विकास विभिन्न पदानुक्रमो मे होता है। इनमे निम्नस्तरीय पदानुक्रम वाले सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति पास–पास होती है तथा उनके द्वारा सेवित प्रदेश छोटा होता है। इसके विपरीत उच्चस्तरीय पदानुक्रम वाले सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति दूर–दूर होती है तथा उनके सेवा प्रदेश बडे होते हैं। विभिन्न क्षेत्रो मे उच्चस्तरीय एव निम्नस्तरीय सेवाकेन्द्रो के मध्य अन्योन्याश्रिता पायी

जाती है जिससे वे एक दूसरे के विकास एव सम्पोषण मे सहायक होते है। सेवाकेन्द्रो की अन्योन्याश्रितता तथा उनके मध्य पदानुक्रम स्थापित करने हेतु *क्रिस्टालर* ने कई पद–सोपान बताया एव बताया कि इसमे आनुपातिक सम्बन्ध होता है। इस अनुपात को उन्होने *'K'* मूल्य नाम दिया तथा विभिन्न दशाओ मे *'K'* के तीन मूल्य बताये। एव इसके आधर पर तीन प्रतिरूपो की व्याख्या की–

1 'K' = 3 बाजार सिद्धान्त

2 'K' = 4 परिवहन सिद्धान्त

3 'K' = 7 प्रशासकीय सिद्धान्त

क्रिस्टालर की परिकल्पना से प्रेरित होकर विभिन्न विद्वान किसी क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो की अवस्थिति प्रतिरूप तथा सेवा प्रदेश के विकास मे इनके प्रभाव' के विश्लेषण की ओर उन्मुख हुए।

विकास के प्रेरक तत्व सेवाकेन्द्रो पर सग्रहित रहते हैं। इन्ही तत्वो से सेवा क्षेत्र मे विकास सचरित होता है। इस प्रकार सेवाकेन्द्रो पर सग्रहित कार्यों एव सेवाओ द्वारा सेवा क्षेत्रो मे धनात्मक आर्थिक एव सामाजिक परिवर्तन को *विकास'* कह सकते हैं। दूसरे शब्दो मे वाछनीय दिशा मे नियोजित गुणात्मक परिवर्तन लाने के उपाय को विकास कहते है। विकास की धारणा सामाजिक–सास्कृतिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक और भौगोलिक परिस्थिति के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र मे भिन्न–भिन्न पायी जाती है। विकास एक सम्मिश्र अवधारणा है। किसी क्षेत्र के विकास मे कृषि उद्योग शिक्षा स्वास्थ्य परिवहन सचार उर्जा आदि विभिन्न क्षेत्रो मे प्रगति को शामिल किया जाता है। सामान्यत विकास सतत् होता है परन्तु जब विकास त्वरित, आकस्मिक एव अप्रत्यासित होता है तब उसे *क्राति* कहते हैं। वर्तमान समय मे विकास की सकल्पना *टिकाउ विकास* या *सविकास (इकोडेवेलपमेन्ट)* हो गयी है। अर्थात् पर्यावरण को बिना क्षति पहुँचाए विकास करना। दूसरे शब्दो मे *सविकास* या सधृत विकास का उद्देश्य है– *मानव समाज की भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति को बिना भावी पीढियो की भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति की क्षमता को किसी प्रकार नुकसान पहुँचाए सुनिश्चित करना।*

प्राकृतिक पर्यावरण प्रौद्योगिकी और सस्थाये आर्थिक विकास के तीन आधारभूत प्राचल हैं जिनके द्वारा विकास की दिशा तथा स्तर निर्धारित होता है। किसी क्षेत्र के विकास के लिए *पेरॉक्स* ने 1955 मे *'विकास ध्रुव सकल्पना'* का प्रतिपादन किया। *बोडविले* ने इसे भौगोलिक परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत किया। *पेरॉक्स* के अनुसार किसी क्षेत्र मे विकास एकाएक प्रकट नही होता है अपितु वह कुछ सीमित केन्द्रो पर विभिन्न रूपो मे दृष्टिगत होता है तथा उसका प्रभाव अनेक रूपो मे अनेक माध्यमो द्वारा फैलता है। विकास की इस प्रक्रिया मे क्षेत्रीय लोगो की आवश्यकताएँ पूरी होने की क्षमता छिपी होती है। प्रस्तुत अध्ययन मे विकास के लिए इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए विभिन्न सेवाकेन्द्रो की इसमे भूमिका को ऑकने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का नामकरण ऐतिहासिक काल मे इसकी भौगोलिक एव सास्कृतिक महत्ता के आधार पर हुआ है। आरम्भ मे यह क्षेत्र घने जगलो (अरण्य) से आवृत था जिसको चीरते हुए उत्तर से दक्षिण की ओर *छोटी गडक* एव दक्षिणी भाग मे *सरयू (घाघरा)* प्रवाहित होती है। इस कारण यह क्षेत्र देवो एव ऋषियो के आकर्षण का केन्द्र बना जिससे यह प्रदेश *देवारण्य* के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी देवारण्य से *देवरिया* की उत्पत्ति हुयी है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र का पौराणिक एव ऐतिहासिक महत्व है। यह कभी भगवान श्री राम के पुत्र *कुश* के राज्य क्षेत्र का भाग था जिनकी राजधानी *कुशीनगर* मे थी। अहिल्यापुर भागलपुर (*भार्गवपुर* आरम्भिक नाम भृगु ऋषि के नाम पर) रुद्रपुर सोहनाग आदि पौराणिक महत्व के स्थान आज भी विद्यमान है।

ऐतिहासिक काल मे यह क्षेत्र *मल्लो* के अधीन था बाद मे कोशल राज्य का अग बना। इस पर क्रमश *महापद्मनद* एव *चन्द्रगुप्त मौर्य* ने भी शासन किया। इस भूमि पर *अनन्त महाप्रभु* एव *देवरहा बाबा* ने तप एव ध्यान साधना किए तो *बाबा राघवदास* जैसे देश का सपूत इसी भूमि से अग्रेजो से लोहा लेने के लिए खडा हुआ। इस प्रकार अतीत काल से ही यह क्षेत्र ऐतिहासिक एव सास्कृतिक विरासत मे अत्यन्त गौरवशाली रहा है। विश्व मे शील क्षमा एव करुणा का सन्देश देने वाले देवदूतो की परम्परा रही हो या सत्य–अहिसा जैसे सतत् मानवीय मूल्यो के उपदेशको की बात अथवा अपरिग्रह अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे सामाजिक विचारधारा का प्रचार–प्रसार रहा हो, महान सन्त परम्परा एव गरिमामयी ऐतिहासिक धरोहरो हेतु यह धरती सदैव से ही नितान्त वैभवशाली रही है।

अध्ययन क्षेत्र (देवरिया जनपद) उत्तर प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी छोर पर 26^0 6 और 27^0 18 उत्तरी अक्षाशो एव 83^0 29 से 84^0 26 पूर्वी देशान्तर के मध्य 2 389 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर विस्तृत है। इसके उत्तर मे कुशीनगर दक्षिण मे मऊ एव बलिया, पूर्व मे बिहार राज्य तथा पश्चिम मे गोरखपुर जनपद अवस्थित हैं। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद *पॉच तहसील* एव *पन्द्रह विकास खण्डो* मे विभक्त है। इसका क्षेत्रफल प्रदेश के क्षेत्रफल का लगभग 1 प्रतिशत (0 99) प्रतिशत है। 1801 से 1946 तक देवरिया *गोरखपुर* मे सम्मिलित था। 1946 से 1994 तक इसमे वर्तमान *कुशीनगर जनपद* भी समाहित था। 1994 मे ही इसके 54 6 प्रतिशत क्षेत्रफल के साथ *कुशीनगर* नामक नये जनपद का निर्माण हुआ।

भौतिक पृष्ठभूमि के अतर्गत अध्ययन क्षेत्र जलोढ निक्षेपो द्वारा निर्मित 72 मीटर औसत ऊँचाई (समुद्र तल से) वाला समतल मैदान है। उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर सामान्य ढाल के अनुरूप इसमे *छोटी गण्डक राप्ती घाघरा नदियॉ* प्रवाहित होती हैं। क्षेत्र के उत्तर–पूर्व मे नवीनतम जमाव से निर्मित *भाट क्षेत्र,* पश्चिम मे प्राचीनतम जलोढ़ निर्मित *बॉगर क्षेत्र* तथा दक्षिण मे पतली पटटी के रूप मे *कछारी क्षेत्र* का विस्तार है। अपवाह प्रतिरूप को पश्चिम मे प्रवाहित *राप्ती नदी तत्र* मध्य मे प्रवाहित *छोटी गण्डक नदी तत्र* एव दक्षिण–पूर्व मे प्रवाहित *घाघरा नदी तत्र* के अतर्गत रखा जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी भाग मे बाढ एक स्थायी विपदा है। इसकी देवरिया तहसील

बाढ से सर्वाधिक प्रभावित तहसील है जिसके 21 प्रतिशत गॉव बाढ से आक्रात रहते है। क्षेत्र की सरचना सामान्यत जलोढ है परन्तु इसके विभिन्न भागो मे गहराई के अनुसार बालू कणो सिल्ट क्ले और ककडो का विभिन्न अनुपात पाया जाता है जिसका निक्षेप *प्लीस्टोसीन युग के चतुर्थ कल्प* से लेकर *आधुनिक काल (होलोसीन)* तक हुआ माना जाता है।

यहॉ की जलवायु *उष्ण–आर्द्र मानसूनी* है। औसत वार्षिक तापमान 26 4⁰ से एव वर्षा का वार्षिक औसत 153 सेमी है। वर्षा का 85 से 90 प्रतिशत तक *ग्रीष्मकालीन मानसून* से प्राप्त होता है। वर्ष मे तीन प्रमुख ऋतुऍ पायी जाती है– *वर्षा शीत* और *ग्रीष्म*।

उर्वर मृदा अनुकूल जलवायु, समतल भूमि एव सतत् प्रवाही नदियो के कारण क्षेत्र प्राचीनकाल से ही मानव बसाव का केन्द्र रहा है। 1901 मे देवरिया की जनसख्या 7 4 लाख थी जो बढकर 1991 मे 44 4 लाख तक पहुँची। 1994 मे जनपद के विभाजन के पश्चात् वर्तमान (2001) मे इसकी जनसख्या 27 30 लाख रह गयी है। 1971 मे जब *प्रदेश का* जनघनत्व 300 था तब *जनपद* का घनत्व 595 था। 2001 मे *प्रदेश* और *जनपद* का घनत्व बढकर क्रमश 689 और 1077 हो गया। इस प्रकार जनपद मे घनत्व मे वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। आज जनपद की 90 प्रतिशत जनसख्या गॉव मे तथा मात्र 10 प्रतिशत नगरो मे रहती है। जबकि *प्रदेश* और *देश* की क्रमश 20 8 प्रतिशत और 28 प्रतिशत जनसख्या नगरीय है। क्षेत्र का लिगानुपात 1901 मे 1011 था जो 100 वर्षों बाद 2001 मे 1003 बना हुआ है, परन्तु 0–6 आयु वर्ग की जनसख्या मे हजार लड़को पर लड़कियो की सख्या मात्र 964 ही है जो एक चिन्तनीय प्रवृत्ति को रेखाकित करता है। जनपद स्तर पर अनेक साक्षरता प्रयासो के फलस्वरूप वर्तमान मे क्षेत्र की साक्षरता 59 84 प्रतिशत है। पुरुष साक्षरता 76 31 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 43 56 प्रतिशत है। जनसख्या का वितरण क्षेत्र मे असमान है। उत्तर–मध्य एव पश्चिमी क्षेत्र मे *उच्च जनसख्या* पश्चिम तथा मध्य–पूर्व मे *मध्यम–उच्च जनसख्या* तथा दक्षिण–दक्षिण–पूर्व मे *कम जनसख्या घनत्व* पाया जाता है।

कृषि अध्ययन क्षेत्र का प्रमुख कार्य है। 80 3 प्रतिशत भू–भाग पर कृषि कार्य किया जाता है तथा कुल कर्मकारो का 80 प्रतिशत भाग कृषि कार्य मे सलग्न हैं। जनपद का *सकल कृषित क्षेत्र* 3 14 532 हेक्टेयर है। *कृषि सघनता* 157 4 है। इसके 50 प्रतिशत क्षेत्र पर *खरीफ,* 48 3 प्रतिशत पर *रबी* एव 1 57 प्रतिश क्षेत्र पर *सब्जियो* की कृषि की जाती है। 0 12 प्रतिशत क्षेत्र गन्ना के अतर्गत हैं। सिचाई के प्रमुख साधन *नलकूप* हैं। इससे 81 71 प्रतिशत भागो पर सिचाई होती है। *नहरी* सिचित क्षेत्र 17 63 प्रतिशत है।

उद्योग–धन्धो की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यन्त पिछडा है। कुटीर उद्योग, लघुस्तरीय उद्योग आदि से सम्बन्धित कारखाने विभिन्न स्थानो पर स्थापित हैं। वृहद् उद्योगो क अतर्गत चीनी उद्योग आता है जो *प्रतापपुर गौरीबाजार, भटनी देवरिया* और *बैतालपुर* मे स्थापित हैं।

परिवहन तन्त्र मे समतल भू–भाग के कारण सडक एव रेल परिवहन का विकास सुगमता पूर्वक हुआ है।

सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास मे वहॉ की ऐतिहासिक एव भौगोलिक परिस्थितियो का महत्वपूर्ण योगदान होता है। क्षेत्र के भौतिक आर्थिक सामाजिक एव सास्कृतिक कारक सम्मिलित रूप मे इसके उद्भव एव विकास को सम्पन्न करते है। चूँकि सेवाकेन्द्र मानव अधिवासो के अभिन्न अग होते हैं। अत इनका उद्भव–विकास मानव अधिवासो की स्थापना से सबधित होता है। उपर्युक्त कारको के बदलते समीकरणो के साथ सेवाकेन्द्रो के महत्व एव आकार मे वृद्धि होती है अथवा उनका ह्रास होता है। सेवाकेन्द्रो के उद्भव विकास एव वितरण को प्रभावित करने वाले कारको को भौतिक एव मानवीय वर्गों मे बॉटा जा सकता है। *भौतिक कारक* सेवाकेन्द्र के आधार को निर्धारित करते है। इनमे जल की उपलब्धि तथा धरातल का स्वरूप सर्वप्रमुख कारक हैं। सेवा केन्द्र एक मानवीय रचना है तथा प्रशासकीय कारक यातायात मार्ग और आर्थिक विकास का स्वरूप एव अवस्था– ये शक्तिशाली *मानवीय कारक* हैं। ये केन्द्रो के उद्भव एव विकास पर प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार भौतिक तथा मानवीय कारक परस्पर पूरक है। परस्पर समन्वित रूप से कभी पूर्वगामी तो कभी अनुगामी होकर कार्य करते है सेवाकेन्द्रो के उद्भव एव विकास के लिए कुछ अन्य शक्तियॉ भी उत्तरदायी होती हैं जैसे– विनिमय प्रकिया क्षेत्रीय आवश्यकता, प्रशासकीय क्रियाऍ परिवहन सम्बद्धता एव कार्यात्मक आधार।

उपर्युक्त शक्तियो के प्रभाव एव परिणाम स्वरूप ऐतिहासिक काल मे अनेक सेवाकेन्द्रो का जन्म–विकास एव ह्रास हुआ। इनमे कुछ पुरातात्विक स्थलो के रूप मे आज भी दृष्टव्य हैं। ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार इन्हे ***प्राचीनकाल*** के अतर्गत– लार, सोहनाग, खुखुन्दू, साहिया, भागलपुर आदि को, ***मध्यकाल*** के अतर्गत सिधुआ जोबना सलेमपुर मझौली राज रुद्रपुर आदि को रखा जा सकता है। शेष सभी सेवाकेन्द्र ***आधुनिक काल*** मे उद्भुत् हुए। आधुनिक काल मे सेवाकेन्द्रो के विकास मे प्रशासनिक इकाइयो की स्थापना, पक्की सडको का विकास तथा वस्तु निर्माण उद्योग एव व्यापार के विकास ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। ऐतिहासिक कालावधि मे उत्पन्न सेवाकेन्द्रो मे *प्रशासनिक सेवाकेन्द्र* के अतर्गत सहनकोट सुरौली मझौली रुद्रपुर सलेमपुर काहोन को, *व्यापारिक एव यातायात सम्बन्धी सेवाकेन्द्र* के अतर्गत साहिया बैकुण्ठपुर कहॉव खुखुन्दू, भागलपुर बरहज को तथा *धार्मिक सेवाकेन्द्र* के अतर्गत खुखुन्दू, सोहनाग लार, बरहज भरोली तथा बभनी, दीर्घेश्वरनाथ दुग्धेश्वरनाथ आदि को रखा जा सकता है।

प्रत्येक क्षेत्र का अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है जिसका निर्माण न कवल वहॉ प्राप्त ससाधनो द्वारा अपितु वहॉ निवास करने वाले लोगो के द्वारा भी होता है। ससाधनो तथा आर्थिक क्रियाओ के असमानता के कारण ही किसी विशिष्ट क्षेत्र मे विभिन्न स्तरीय सेवाकेन्द्रो का अभ्युदय एव विकास होता है। नगरो का विकास गॉवो से होता है परन्तु सामाजिक–आर्थिक अध सरचना की दृष्टि

से ये ग्रामीण बस्तियॉ नगरो से पिछडी है। इसी कारण गावो से नगरो की ओर जनसख्या का पलायन हो रहा है। इस समस्या का समाधान ग्रामीण बस्तियो की सामाजिक–आर्थिक अध सरचना के विकास मे निहित है। इस प्रकार का क्षेत्रीय विकास सेवाकेन्द्रो के माध्यम से किया जा सकता है जहॉ लगभग सभी आधारभूत सामाजिक–आर्थिक सुविधाओ का केन्द्रीकरण हो। सेवाकेन्द्रो को परिवहन एव सचार माध्यमो से परस्पर गुँथ कर विकास को और तीव्र किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन मे क्षेत्र के विकास मे सेवाकेन्द्रो की भूमिका का आकलन करने एव क्षेत्र के भावी विकास के लिए सेवाकेन्द्रो के माध्यम से व्यूहरचना एव नियोजन प्रस्तुत करने के उद्देश्य से अध्ययन क्षेत्र के ऐसे सभी प्रकार के विकास जनक केन्द्रो को सेवाकेन्द्र कहा गया है जिनका अभिनिर्धारण उनकी विशिष्ट स्थिति एव कार्यों के केन्द्रीकरण के परिणामस्वरूप सेवाकेन्द्रो के रूप मे स्वयमेव हो जाता है। सेवाकेन्द्र की स्थापना एव स्थायित्व उन सामाजिक–आर्थिक कार्यों पर निर्भर करता है जिसके द्वारा समीपवर्ती क्षेत्र को सेवा प्रदान करता है। अत ये केन्द्र परिधीय क्षेत्र से इष्टतम रूप से जुडे होते हे। इन केन्द्रो की सेवाओ का लाभ प्रत्येक जन तक पहुँचे इसके लिए सम्पूर्ण क्षेत्र मे विभिन्न स्तर के सेवाकेन्द्रो का जाल होना चाहिए।

क्षेत्रीय विकास के सन्दर्भ मे सबसे जटिल प्रक्रिया सेवाकेन्द्रो के निर्धारण की है। ऑकडो की अनुपलब्धता इसमे सबसे बडी बाधा है। प्रस्तुत अध्ययन मे अध्ययन क्षेत्र के 2004 बस्तियो मे से *बी एन मिश्र* (1980) द्वारा प्रयुक्त विधि का उपयोग करते हुए कार्यों की *औसत कार्याधार जनसख्या, उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* और *बस्तियो की सम्बद्धता* के माध्यम से सेवाकेन्द्रो का अभिनिर्धारण किया गया है। इसके लिए सर्वप्रथम कार्यो के क्षेत्रीय महत्व औसत कार्याधार मूल्य और उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप के आधार पर 51 केन्द्रीय कार्यों एव सेवाओ का चयन किया गया है जो अध्ययन क्षेत्र मे वितरित बस्तियो द्वारा सम्पादित होते है। *औसत कार्याधार जनसख्या* की गणना *रीड मुञ्च* विधि द्वारा की गयी है। पुन कार्याधार सूचकाक की गणना कर कार्यों के *चार पदानुक्रम* निर्धारित किये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र मे केन्द्रीय कार्यो को सम्पादित करने वाली बस्तियो मे से न्यूनतम 5 केन्द्रीय कार्यों को आधार बनाकर जनपद मे *कुल 47 सेवाकेन्द्रो* को मान्यता प्रदान की गयी है। *उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप* के अतर्गत उपभोक्ताओ के द्वारा उनके आवश्यक सामानो के क्रय–विक्रय हेतु सेवाकेन्द्रो तक सचरण के स्वरूप एव उनकी प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र मे उपभोक्ताओ के सचरण प्रतिरूप के अध्ययन हेतु 150 ग्रामो का सर्वेक्षण कर जनपद के उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप का आकलन किया गया है। इन 150 ग्रामो के प्रतिचयन मे इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है। कि प्रतिचयनित ग्राम लगभग पूरे जनपद का प्रतिनिधित्व करे। सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि उपभोक्ताओ के सचरण का प्रतिरूप उनके द्वारा खरीदे जाने वाले सामानो के प्रकार तथा उनकी आर्थिक स्थिति द्वारा निर्धारित होता है। जनपद मे अधिकतम सचरण 45 किमी के लगभग है। उपभोक्ताओ के सचरण की दृष्टि से देवरिया मुख्यालय *सबसे बडा* सेवाकेन्द्र है। इसके लिए इसकी लगभग केन्द्रीय

अवस्थिति बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है। उपभोक्ता सचरण की दृष्टि से *दूसरे क्रम* के सेवाकेन्द्र– सलेमपुर रुद्रपुर गौरीबाजार पथरदेवा गौराबरहज लार भाटपार भटनीबाजार रामपुर कारखाना भलुअनी बैतालपुर और बनकटा है। देसही देवरिया भागलपुर मझौलीराज एव तरकुलवॉ *तीसरे क्रम* के सेवाकेन्द्र हैं। *चतुर्थ क्रम* के सेवाकेन्द्रो की सख्या क्षेत्र मे 30 है। इनपर केन्द्र से लगभग 4–5 किमी अर्द्धव्यास तक की जनसख्या सचरण करती है। इस प्रकार सचरण की दृष्टि से इनका स्थानीय महत्व ही अधिक है। कार्यों एव सेवाओ के लिए सचरण परिवहन मार्गों द्वारा ही सम्पन्न होता है। अत सेवाकेन्द्र का उद्भव–विकास एव अस्तित्व परिवहनीय सम्बद्धता पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र मे परिवहन के प्रमुख साधन सडक एव रेलमार्ग है। यहॉ राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर ग्रामीण सडको तक के सभी प्रकार पाये जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र मे जनपद के सकल परिवहन मार्गों की लम्बाई एव परिवहन मार्ग विशेष की लम्बाई के आधार पर प्रत्येक प्रकार के परिवहन मार्ग का मूल्य ज्ञात किया गया है। इस क्रम मे राज्य उच्चपथ एव जिलामार्ग का मूल्य ग्रामीण मार्गों से उच्च प्राप्त हुआ है। परिवहन मार्गों के मूल्यो के आधार पर प्रत्येक सेवाकेन्द्रो का सम्बद्धता मूल्य ज्ञात किया गया। इसमे अधिकतम मूल्य 166 तथा न्यूनतम मूल्य 1 प्राप्त हुआ। सेवाकेन्द्रो के निर्धारण मे 3 से ऊँचे मूल्य के सेवाकेन्द्रो का चयन किया गया। सर्वाधिक सम्बद्धता मूल्य देवरिया मुख्यालय का (166) प्राप्त हुआ है। इस प्रकार उपर्युक्त *तीनो आधारो*– औसत कार्याधार जनसख्या, उपभोक्ता सचरण प्रतिरूप एव परिवहनीय सम्बद्धता के आधार पर जनपद मे 47 केन्द्रो को सेवाकेन्द्र के रूप मे मान्यता की पुष्टि हो जाती है। तीनो ही आधारो से इस बात की भी पुष्टि होती है कि *उच्च सूचकाक* उच्च सेवाकेन्द्र एव *निम्न सूचकाक* निम्न सेवाकेन्द्र को प्रदर्शित करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रो के केन्द्रीयता निर्धारण मे कार्यों व सेवित जनसख्या को आधार बनाया गया है। कार्यो के महत्व एव मूल्य की गणना प्रत्येक कार्य के औसत कार्याधार जनसख्या सूचकाक के द्वारा की गयी है। केन्द्रीयता के आधार पर ही सेवाकेन्द्रो का चार पदानुक्रम विनिश्चित किया गया। इस प्रकार प्रथम अनुक्रम मे–1 द्वितीय मे–12, तृतीय मे–4 और चतुर्थ मे–30 सेवाकेन्द्र सम्मिलित हुए। प्रथम स्तर का एकमात्र केन्द्र देवरिया है।

अध्ययन क्षेत्र के सभी चयनित सेवाकेन्द्रो के सेवित क्षेत्र की गणना *रीले (1931)* के *'फुटकर केन्द्राकर्षण नियम' (Law of retail gravitation)* एव *'विच्छेद बिन्दु समीकरण' (Breaking point equation)* के आधार पर की गई है। जहॉ *प्रथम क्रम* के सेवाकेन्द्र *देवरिया* का प्रभाव समूचे जनपद पर फैला है वही सलेमपुर रुद्रपुर गौरीबाजार पथरदेवा बरहज, लार भाटपार भटनी बाजार रामपुर कारखाना भलुअनी बैतालपुर, बनकटा *द्वितीय स्तर* के प्रभावशाली सेवाकेन्द्र है।

अध्ययन क्षेत्र मूलत कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ कुल कार्यशील जनसख्या का 78 76 प्रतिशत भाग कृषि तथा उससे सम्बद्ध कार्यों मे लगा हुआ है। सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल के 80 90 प्रतिशत भाग पर कृषि होती है। कृषि के आधारभूत सघटक मृदा, जल की उपलब्धता, श्रम एव तकनीक उर्वरक

प्रयोग है परन्तु कृषि कार्य मे कुछ ऐसे तत्वो का भी समावेश होता है जो कृषि कार्य मे सहयोग प्रदान करते हैं तथा क्षेत्र मे जिनकी स्थापना से विकास तीव्र होता है। ये तत्व पूर्णत मानवीय है तथा इनकी स्थापना सेवाकेन्द्रो पर ही होती है। इन्ही इकाइयो के माध्यम से सेवाकेन्द्र सेवा क्षेत्र को अपनी सेवाये प्रदान करते हैं कृषि विकास के इन उत्प्रेरक तत्वो मे बीज गोदाम/उर्वरक डिपो ग्रामीण गोदाम कीटनाशक डिपो शीतभण्डार कृषि सेवाकेन्द्र मण्डी समिति पशुचिकित्सालय पशुसेवा केन्द्र कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र सहकारी समितिया एव वित्तीय सस्थाएँ प्रमुख हैं। इन इकाइयो की विभिन्न केन्द्रो पर स्थापना का कृषि विकास पर प्रभाव–*कृषि प्रतिरूप उत्पादन उत्पादकता गहनता शस्य साहचर्य फसलचक्र पशुपालन–मत्स्यपालन का कृषि के साथ सयोजन* आदि के रूप मे परिलक्षित होने लगा है।

अध्ययन क्षेत्र के फसल प्रतिरूप वितरण के लिए *कालिक पक्ष* को अपनाया गया है। क्योकि इसमे स्थानिक प्रतिरूप का स्वत समावेश हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के फसल प्रतिरूप मे 1971–2001 के तीस वर्षों मे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। 1971–72 मे जहाँ खरीफ सर्वप्रमुख फसल थी और इसमे धान एव गन्ना की सर्व प्रमुख भूमिका थी वही 2001 मे सम्पूर्ण खरीफ फसलो के प्रतिशत क्षेत्र मे गिरावट हुयी परन्तु धान के अतर्गत प्रतिशत क्षेत्र लगभग समान बना रहा। 1971–72 से 2001 तक के कृषि विकास कालावधि मे फसल प्रतिरूप *विविधीकरण* से *विशेषीकरण* की ओर उन्मुख हुआ है।

विगत 30 वर्षों मे कृषि उत्पादकता मे भारी वृद्धि हुयी है। सर्वाधिक वृद्धि क्रमश *मक्का* (1561 प्रतिशत) *ज्वार* (718 प्रतिशत) *बाजरा* (380 प्रतिशत) मे हुयी। क्षेत्र की प्रमुख फसलो– धान गेहूँ, गन्ना मे ये वृद्धि अपेक्षाकृत कम हुयी।

अध्ययन क्षेत्र मे 1971–72 मे *शस्य गहनता* 116 98 थी तथा एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र *शुद्ध कृषित क्षेत्र* का 31 प्रतिशत था जबकि 2001 मे *शस्य गहनता* बढकर 155 63 हो गयी। इस समय एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का शुद्ध क्षेत्र से प्रतिशत 55 63 था।

अध्ययन क्षेत्र के *शस्य सयोजन* की गणना *दोई* के सूत्र के आधार पर की गई है। 1971–72 मे *चावल* क्षेत्र की प्रमुख फसल थी *गेहूँ, गन्ना* का प्रतिशत भी उच्च था। पूरे क्षेत्र मे तीनो ही फसलो का साहचर्य था। 2001 तक आते–आते ये साहचर्य परिवर्तित होकर मात्र *गेहूँ और धान* का (दो फसली) रह गया। ये क्षेत्र के कृषि विशिष्टीकरण की ओर सकेत करता है। विकासखण्ड स्तर पर तीन फसली साहचर्य वर्तमान मे कवेल देसही देवरिया और रामपुर कारखाना मे ही पाया जाता है। बाकी सभी विकास खण्डो मे दो फसली साहचर्य है। गौरीबाजार और पथरदेवा मे ये साहचर्य *चावल और गेहूँ* के रूप मे है तथा शेष सभी मे *गेहूँ और चावल* के साथ।

1971–72 मे अध्ययन क्षेत्र के किसान परपरा और अनुभवाधारित फसल चक्र अपनाते थे। जिसमे फसलों की विविधता होती थी। क्षेत्र के विभिन्न भागो मे ये चक्र मृदा प्रकार और सिचाई

सुविधा से नियत्रित था। वर्तमान मे कृषक परपरा के आधार पर नही बल्कि वैज्ञानिकता एव लाभ को ध्यान मे रखकर फसल चक्र अपना रहे है। इसमे विशिष्टीकरण के प्रभाव के कारण फसल चक्र सीमित फसलो तक ही सिमट कर रह गया हे। ये फसल चक्र– *धान–गेहूँ, मक्का–आलू, मक्का–तोरिया–गेहूँ, धान–गेहूँ–गन्ना* आदि के रूप मे पाया जाता है।

पशुपालन का विकास विविधीकृत कृषि अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अग होता हे। 1993 मे क्षेत्र मे कुल 7 98 121 पशु थे। इसमे *गौजातीय* (38 4 प्रतिशत) *महिषवशीय* (17 91 प्रतिशत) पशुओ की प्रमुखता थी। 1997 तक सभी प्रकार के पशुओ की सख्या मे भारी कमी हुयी है। सर्वाधिक कमी *भेडो* एव *गौजातीय* पशुओ की सख्या मे (क्रमश 42 68 प्रतिशत एव 42 15 प्रतिशत) हुई है।

अध्ययन क्षेत्र के कृषक की सहनशीलता उल्लेखनीय तथ्य है। लगातार बाढ–सूखा का शिकार होने के बावजूद कृषक देव–अधीन कृषि कार्य करने मे लगे है। क्षेत्र की समृद्धि बढाने के लिए समन्वित फसल पशुधन मत्स्यपालन तथा बागवानी जैसे उद्यमो के जरिये कृषि मे विभिन्नता लाकर कृषि आमदनी बढानी होगी। चूँकि कृषि विकास के बिना अध्ययन क्षेत्र की गरीबी को दूर करने की कल्पना ही नही की जा सकती। अत कृषि विकास को केवल और अधिक अनाज उपजाने के साधन के रूप मे ही नही लेना है बल्कि आमदनी बढाने और रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने के माध्यम के रूप मे भी लेना है। कृषि विकास नियोजन के लिए भूमि–सुधार कृषि–यन्त्रीकरण पशुधन एव डेयरी विकास दलहन एव तिलहन विकास औद्योगिक फसलो का विकास मिश्रित खेती, शुष्क भूमि कृषि खरपतवार नियन्त्रण सिचाई सुविधाओ का विस्तार तथा कृषि रसायनो एव उर्वरको के प्रयोग पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त वित्तीय ऋण उपलब्ध कराने बचत तथा को प्रोत्साहन देने के लिए बैकिग सुविधाओ के विकास की भी आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक पिछडा हुआ क्षेत्र है। यहाँ पर गिनी–चुनी मात्र कुछ औद्योगिक ईकाइयाँ है। चूँकि जनपद *सिन्धु–गगा मैदान* के जलोढ निक्षेपो तथा *राप्ती, छोटी गण्डक* एव इनकी शाखाओ द्वारा निर्मित कृषि प्रधान मैदानी क्षेत्र है, साथ ही औद्योगिकरण मुख्यत क्षेत्र मे प्राप्य ससाधनो एव ऊर्जा उपलब्धता पर निर्भर करता है और क्षेत्र प्राकृतिक ससाधन की दृष्टि से निर्धन है परन्तु कृषि क्षेत्र मे समृद्ध है। अत यहाँ मूलत कृषि आधारित उद्योग ही प्रोत्साहित हुए। औद्योगिक पिछडेपन की दृष्टि से शासन द्वारा इस जनपद को *'सी' श्रेणी* मे रखा गया है।

अध्ययन क्षेत्र मे वृहद् उद्योग के अतर्गत *चीनी उद्योग* को रखा जा सकता है। यह उद्योग क्षेत्र का प्राचीनतम उद्योग है। 18 वी शदी मे यहाँ गुड तथा खाडसारी उद्योग विकसित थे जिसका केन्द्र *रामपुर कारखाना* था। *बरहज* चीनी के गोदामो के लिए प्रसिद्ध था। 20 वी शताब्दी के तीसरे दशक मे जनपद मे चीनी उद्योग के बडे–बडे कारखानो की स्थापना के साथ खाडसारी उद्योग नष्ट हो गया। पूरे अध्ययन क्षेत्र मे चीनी उद्योग हेतु अनुकूल स्थितियाँ सुलभ हैं। क्षेत्र मे गन्ना की उच्चतम पैदावार है घनी जनसख्या सस्ते श्रमिक उपलब्ध कराती है तथा ईधन के रूप में खोइया का उपयोग

होता है। देवरिया मुख्यालय की *उत्तर–पूर्व रेलवे* पर अवस्थिति तथा विकसित सड़क परिवहन जाल के कारण चीनी के निर्यात एव व्यापार के कारण इसे आदर्श स्थिति प्राप्त है। वर्तमान समय मे जनपद मे चीनी उद्योग सकट के दौर से गुजर रहा है। चीनी उद्योग को सरकार द्वारा अनिवार्य लाइसेसिग से मुक्त करने (1998) तथा जनवरी 2000 से लेवी व खुली बिक्री अनुपात 40 60 से घटाकर 30 70 किये जाने के बावजूद उद्योग की समस्या बढती ही जा रही है। चीनी गोदामो मे ही पडा हुआ है तथा किसानो के गन्ने का भुगतान भी नही हो पा रहा है।

कृषि–कृषक एव उद्योग की इस परस्पर सम्बद्धता के कारण चीनी उद्योग की इस समस्या का दुष्प्रभाव समूचे कृषि प्रतिरूप मे गन्ना के अतर्गत क्षेत्र का ह्रास कृषक का गिरता आय स्तर एव अतत ह्रासोन्मुख आर्थिक एव सामाजिक विकास के रूप मे दिख रहा है। क्षेत्र की प्रमुख चीनी मिले प्रतापपुर गौरीबाजर भटनी देवरिया एव बैतालपुर मे स्थित हैं।

अध्ययन क्षेत्र लघु उद्योग मे भी पिछडा हुआ है। इसके अतर्गत भी कृषि पर आधारित उद्योग ही मुख्य रूप से विकसित है। इनमे राइस मिले एव आटा चक्की सर्वप्रमुख हैं। ये उद्योग विभिन्न सेवाकेन्द्रो पर स्थापित हैं। दफ्ती एव कागज उद्योग की दो इकाइयॉ गौरी बाजार विकासखण्ड मे तथा एक–एक इकाइयॉ देवरिया एव लार मे स्थापित हैं। गन्ने की खोई एव पुआल इसके प्रमुख कच्चा माल हैं।

जनपद के लगभग सभी सेवाकेन्द्रो पर ग्रामीण बाजारो मे तथा बडे ग्रामो मे कुटीर एव ग्रामीण उद्योग विकसित है। इसके अलावे विभिन्न विकास खण्डो मे मत्स्य पालन उद्योग का भी विकास किया जा रहा है। अध्ययन क्षत्रे मे श्रम के बाहुल्य तथा पूँजी के अभाव को देखते हुए कुटीर उद्योगो को विकसित करने की आवश्यकता है। जनपद कृषि फल एव पशुधन मे सम्पन्न है परन्तु वित्तीय अनुप्लब्धता की समस्या है। अत समुचित वित्त प्रबन्धन द्वारा इनपर आधारित उद्योगो को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। क्षेत्र आरभिक काल मे आध्यात्मिक एव धार्मिक क्षेत्र रहा है। सम्बन्धित स्थल आज भी पर्यटको के आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। इन केन्द्रो पर अवस्थापनात्मक सुविधाओ का विस्तार एव विकस कर जनपद पर्यटन उद्योग मे अग्रणी भूमि निभा सकता है।

परिवहन तत्र आर्थिक विकास की रीढ है सेवाकेन्द्रो से सेवाओ एव कार्यो का सचरण परिवहन मार्गों के सहारे ही चतुर्दिक क्षेत्र मे सचरित हो पाती है। परिवहनीय दृष्टि से जिस सेवाकेन्द्र की सम्बद्धता जितनी ही अच्छी होती है उसका सेवाक्षेत्र तथा पदानुक्रम उतना ही ऊँचा होता है। अत परिवहन तत्र वह मार्ग जाल है जिससे होकर विकास प्रवाहित होता है। अध्ययन क्षेत्र मे विकास के मुख्य प्रेरक तथा ससाधनो के प्रमुख सयोजक तत्व परिवहन एव सचार का अपेक्षाकृत अभाव है। परिवहन के प्रमुख साधन सडके एव रेलवे है। जनपद मे 111 किमी लम्बी इकहरी ब्राडगेज की रेलवे लाइन है। क्षेत्र के औद्योगिक विकास मे इसकी विशेष भूमिका है। चीनी उद्योग की सभी इकाइयॉ रेलमार्ग के किनारे ही स्थापित हैं। जनपद के 10 विकासखण्डो मे रेलमार्ग का विस्तार है। सर्वाधिक

विस्तार *सलेमपुर* एव *भटनी* विकासखण्ड मे है। जनपद मे कुल 19 रेलवे स्टेशन (हाल्ट सहित) है।

क्षेत्र के समतल भू–भाग के कारण सडके सबसे प्राचीन एव महत्वपूर्ण परिवहन मार्ग है क्योकि इनसे सभी सेवाकेन्द्रो को सम्बद्ध किया जा सकता है। क्षेत्र मे राष्ट्रीय राजमार्ग से लेकर राज्य उच्चमार्ग मुख्य जिलामार्ग अन्य जिलामार्ग तथा पी डब्लू डी की सडके हैं। पक्की सडको की कुल लम्बाई 1940 किमी है।

प्रस्तुत अध्ययन मे सडक घनत्व की गणना दो प्रकार से की गयी है–

1– विकासखण्ड स्तर पर प्रति 1 000 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर तथा

2– 1 00 000 की मानक जनसख्या पर (विकासखण्ड स्तर पर)।

प्रथम आधार पर सर्वाधिक घनत्व *देवरिया सदर* विकासखण्ड मे तथा न्यूनतम *भलुअनी* विकासखण्ड मे है। इस दृष्टि से क्षेत्र का उत्तरी आर पूर्वी क्षेत्र सम्पन्न है जबकि दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्र अपेक्षाकृत कम घनत्व के क्षेत्र है। *दूसरे आधार* पर *देवरिया सदर* सर्वाधिक घनत्व एव *भलुअनी* न्यूनतम घनत्व वाला विकासखण्ड है। अध्ययन क्षेत्र मे सडक घनत्व एव विकास मे प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। क्षेत्र के पूर्वी एव दक्षिणी भाग जो बाढ से प्रभावित रहते हैं। कम घनत्व वाले और कम विकसित है। पक्की सडको के विकास द्वारा इनके क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सडक अभिगम्यता के मापन के लिए पक्की सडको को आधार बनाया गया है। इससे प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार जनपद का 52 13 प्रतिशत क्षेत्र सडक मार्ग द्वारा अभिगम्य है। सर्वाधिक अभिगम्यता *भाटपाररानी* विकासखण्ड मे (83 76 प्रतिशत) है। *भलुअनी* मे न्यूनतम मात्र 29 23 प्रतिशत गॉव ही सडको द्वारा अभिगम्य है। भाटपाररानी देसही देवरिया, भागलपुर रामपुर कारखाना रुद्रपुर और लार विकास खण्डो मे अभिगम्यता जनपद औसत से ऊँची है।

अध्ययन क्षेत्र मे सम्बद्धता को तीन माध्यमो से तीन स्तरो पर ज्ञात किया गया है।

प्रथम– परिवहनीय सम्बद्धता– *देवरिया* सेवाकेन्द्र का सम्बद्धता मूल्य सर्वाधिक (55 33) है। उसके बाद क्रमश सलेमपुर (46 00) गौरी बाजार (38 0), बैतालपुर (31 16) आदि सेवाकेन्द्रो का स्थान है। न्यूनतम मूल्य *घाटी* का (1 00) है।

द्वितीय– *सेवाकेन्द्रो की सम्बद्धता–* इसे *'कनेक्टिविटी मैट्रिक्स'* के आधार पर ज्ञात किया गया है। जनपद का सबसे सम्बद्ध सेवाकेन्द्र *देवरिया* है जो प्रत्यक्षत 13 सेवाकेन्द्रो से सम्बद्ध है। इसके बाद क्रमश सलेमपुर, रामपुर कारखाना रुद्रपुर, गौरीबाजार आदि हैं। सबसे कम सम्बद्धता भटनी बनकटा और पथरदेवा सेवाकेन्द्र की मात्र 1 है।

तृतीय– मार्गजाल की सम्बद्धता– इसके अतर्गत अध्ययन क्षेत्र मे पक्की सडको के जाल के सन्दर्भ मे प्रमुख बिन्दुओ की सख्या– 43 बाहुओ की संख्या 115 तथा असम्बद्ध ग्राफ की सख्या 16

है। इन बिन्दुओ एव बाहुओ के माध्यम से सडक जाल सम्बद्धता को प्रदर्शित करने वाले *अल्फा बीटा* तथा *गामा निर्देशाको* की गणना की गयी है। अध्ययन क्षेत्र के सडक जाल का *अल्फा निर्देशाक–* 0 69 है *बीटा निर्देशाक–* 2 67 है तथा *गामा निर्देशाक–* 0 93 है,

सडक सम्बद्धता के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मे सडक सम्बद्धता तथा अधिगम्यता औसत से अच्छी है परन्तु यह केवल पक्की सडको पर ही आधारित है। इस सम्बद्धता मे क्षेत्रीय स्तर पर काफी भिन्नता मिलती है। सम्बद्धता मे सबसे बड़ी बाधक नियतकालिक बाढ है।

अध्ययन क्षेत्र के यातायात प्रवाह का मापन सडको पर चलाने वाले व्यक्तिगत तथा सरकारी बसो के माध्यम से किया गया है। प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार जनपद का सबसे व्यस्ततम मार्ग *सलेमपुर– देवरिया– गौरीबाजार मार्ग (एस एच –1)* है जो देवरिया को गोरखपुर से सम्बद्ध करता है। इस पर बसो की सर्वाधिक आवृत्ति प्रतिदिन 110 तक है।

अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए वर्तमान पक्की सडको मे सुधार तथा उन्हे चौडा करने की आवश्यकता है। इसके अतर्गत *देवरिया–तरकुलवा मार्ग (एस एच –79),* और *सलेमपुर–देवरिया–गोरखपुर मार्ग (एस एच –1)* को दोहरा करना आवश्यक है। चूँकि ग्रामीण सडके ही ग्रामीण विकास का आधार हैं। अत अध्ययन क्षेत्र की 90 14 प्रतिशत ग्रामीण जनसख्या को सेवाकेन्द्रो से जोडने के लिए सडको का जाल होना आवश्यक है। गॉवो को सेवाकेन्द्रो से सम्बद्ध कर क्षेत्र का बहुमुखी विकास किया जा सकता है।

विकास मे सचार साधनो की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन क्षेत्र की व्यक्तिगत सचार साधनो की स्थिति अच्छी नही है। जहॉ *देश* मे औसत 4,731 लोगो पर एक डाक घर है वही *जनपद* मे 9 892 लोगो पर एक डाकघर है। जनपद के रामपुर कारखाना विकासखण्ड की स्थिति इस दृष्टि से सबसे बुरी है। जहॉ 12 248 व्यक्तियो पर एक डाकघर है। जिले मे तारघर की कुल सख्या मात्र 21 है। सचार के इस युग मे जहॉ देश मे प्रति हजार व्यक्तियो पर 32 टेलीफोन कनेक्शन उपलबध हैं। वही जनपद मे ये उपलब्धता मात्र 2 17 प्रति हजार ही है। यदि जनपद के सभी टेलीफोन एक्सचेज (35) की कुल कनेक्शन क्षमता (31 832) का सम्पूर्ण विकास कर लिया जाय तब भी प्रति हजार टेलीफोन कनेक्शन उपलब्धता मात्र 11 65 ही हो पायेगी जो वर्तमान राष्ट्रीय औसत से 20 35 कम है। पी सी ओ केन्द्र के मामले मे राष्ट्रीय स्तर पर प्रति हजार जनसख्या पर उपलब्धता 26 है। वही जनपद मे ये सख्या 0 24 ही हैं। परन्तु सम्पूर्ण सख्या का 60 9 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्र मे उपलब्ध है, इससे सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति ग्रामीण रूझान व्यक्त होती है।

जनसचार के माध्यमो मे अध्ययन क्षेत्र मे दूरदर्शन चलचित्र समाचार प्रमुख माध्यम है। परन्तु जनपद मे सचार तत्र के विकास मे सबसे बडी बाधा शिक्षा–साक्षरता का अल्प विकास है क्योकि शिक्षा का सचार से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। जनपद मे सचार के विकास के लिए प्राचीनतम माध्यमो (डाक तार आदि) एव नवीनतम तकनीकी माध्यमो (टेलीफोन, कम्प्यूटर इन्टरनेट, दूरदर्शन रेडियो

आदि) का परस्पर समन्वय आवश्यक है क्योकि विकास मे सबके लिए एक सुनिश्चित भूमिका है। इन सभी माध्यमो का विकास कई प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष कारको से अन्तर्सम्बन्धित है जैसे शिक्षा–साक्षरता का विकास सुसम्बद्ध एव अभिगम्य परिवहन तत्र एव बिजली की पर्याप्त उपलब्धता। अत प्रथमत उपर्युक्त सुविधाओ का जनपद मे विकास किया जाय तथा उसके बाद जनसख्या की विभिन्न आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए उपर्युक्त सुविधाओ की क्षेत्र मे स्थापना की जाय।

किसी भी क्षेत्र का विकास दो स्तरो पर प्रतिबिबित होता है– मानवीय विकास स्तर पर तथा क्षेत्रीय विकास के स्तर पर। दोनो क्षेत्रो के विकास स्तर मापन के अपने–अपने प्राचल हैं परन्तु सर्वागीण विकास दोनो के सतुलित विकसित स्वरूप से ही झलकता है। मानवीय विकास के बिना क्षेत्रीय विकास विरोधाभास पैदा करता है जिससे विकास बाधित होता है। उपर्युक्त आधार पर विकास के दो पक्ष हुए–आर्थिक पक्ष और सामाजिक पक्ष। अभी तक विकास के आर्थिक क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रो की भूमिका का विश्लेषण ही किया गया है। जो एकागी है। समन्वित विकास हेतु सामाजिक क्षेत्र के विकास मे सेवाकेन्द्रो की भूमिका के अतर्गत *शिक्षा एव स्वास्थ्य* जैसी सामाजिक सुविधाओ का विश्लेषण किया गया है।

शिक्षा किसी समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। यह हमारी विश्लेषण क्षमता और तर्क बुद्धि का विकास करती है और सही–गलत का निर्णय कर पाने का विवेक पैदा करती है।

2001 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की साक्षरता दर 57 36 प्रतिशत है जबकि जनपद की साक्षरता 59 84 प्रतिशत है। वर्तमान मे प्रदेश मे पुरुष और स्त्री साक्षरता का प्रतिशत क्रमश 76 31 और 43 56 है। इस प्रकार 1991 से 2001 के मध्य जनपद की कुल साक्षरता मे 17 54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। इसमे पुरुष साक्षरता मे 14 91 प्रतिशत एव स्त्री साक्षरता मे 20 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जबकि इस बीच प्रदेश की कुछ साक्षरता मे वृद्धि मात्र 14 94 प्रतिशत ही रही। इसमे पुरुष साक्षरता मे 18 11 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। इस प्रकार जनपद स्तर पर साक्षरता की दृष्टि से एक सार्थक उपलब्धि हासिल करने के बावजूद अभी भी विकासखण्ड स्तर पर इसमे काफी भिन्नता है। 2001 की जनगणना के अनुसार आज भी 15 मे से मात्र 5 विकासखण्डो मे ही साक्षरता जनपद के औसत साक्षरता (59 84 प्रतिशत) से अधिक है। उच्चतम साक्षरता *लार* विकासखण्ड मे (67 7 प्रतिशत) तथा निम्नतम साक्षरता *रुद्रपुर* विकासखण्ड मे (49 7 प्रतिशत) पायी जाती है। अर्थात् इसमे 18 0 प्रतिशत का अतर है।

औपचारिक शिक्षा के अतर्गत जनपद मे जूनियर बेसिक स्कूलो की कुल सख्या 1813 है। इसमे से 55 विद्यालय नगरीय क्षेत्रो मे अवस्थित है। प्रतिलाख जनसख्या के आधार पर स्कूलो की सर्वाधिक सख्या *भागलपुर* मे तथा न्यूनतम सख्या *गौरीबाजार* विकासखण्ड मे है। विकासखण्ड स्तर पर प्रतिलाख जनसख्या पर जूनियर बेसिक स्कूलो की सख्या मे 37 5 तक का अतर है। ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्यालय–जनसख्या अनुपात 1 1131 है, वही नगरीय क्षेत्र मे ये अनुपात 1 3952 है। इस प्रकार

नगरीय क्षेत्रो मे इस सुविधा का अभाव प्रतीत होता है। शहरो मे निजी क्षेत्रक द्वारा स्कूल/कान्वेन्ट स्थापना के लिए यह एक अप्रत्यक्ष कारण है। जनपद मे 413 सीनियर बेसिक स्कूल है। विद्यालय एव जनसख्या अनुपात की दृष्टि से सर्वोत्तम स्थिति *सलेमपुर* एव न्यूनतम स्थिति *देसही देवरिया* की है। प्रतिलाख जनसख्या पर अधिकतम सख्या 34 9 एव न्यूनतम सख्या 11 6 है इसमे 23 3 का अतर है जो न्यूनतम स्कूल सख्या के लगभग दूने के बराबर है। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो की दृष्टि से स्कूल और जनसख्या का ग्रामीण क्षेत्रो मे अनुपात 1 5189 है तथा नगरीय क्षेत्रो मे 1 7245 है। हायर सेकेन्ड्री विद्यालयो की जनपद मे कुल सख्या 203 है। इसमे से 171 ग्रामीण क्षेत्र मे एव 32 नगरीय क्षेत्रो मे अवस्थित थी। प्रतिलाख जनसख्या के हिसाब से सर्वाधिक सख्या *सलेमपुर* मे (14 0) है तथा न्यूनतम सख्या *गौरीबाजार* मे (3 1) हैं। इसमे भी विकासखण्ड स्तर पर भारी अतर है जो 10 9 है। *ग्रामीण क्षेत्रो* मे विद्यालय–जनसख्या अनुपात 1 11622 एव *नगरीय क्षेत्रो* मे ये अनुपात 1 6792 हैं। इस प्रकार इस अनुपात मे ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो मे लगभग दूने का अतर है जो शिक्षा के सतुलित विकास के प्रतिकूल है। उच्च शिक्षा से सम्बन्धित जनपद मे 14 महाविद्यालय है। इनमे दो महिला महाविद्यालय है जो *देवरिया सदर* एव *लार* विकासखण्ड मे स्थिति हैं। जनपद मे *ग्रामीण क्षेत्रो* मे महाविद्यालय एव जनसख्या अनुपात 1 3 31 251 एव *नगरीय क्षेत्रो* मे ये अनुपात 1 27 170 है जो असतुलित है।

जनपद मे शिक्षक एव विद्यार्थियो का अनुपात विभिन्न स्तर के शिक्षण सस्थाओ मे भिन्न–भिन्न है। जूनियर बेसिक स्कूल मे ये अनुपात 1 57 है। ये अनुपात ग्रामीण क्षेत्रो मे 1 54 और नगरीय क्षेत्रो मे 1 135 है। सीनियर बेसिक स्कूल मे ये अनुपात 1 86 है जिसमे ग्रामीण क्षेत्रो मे 1 84 और नगरीय क्षेत्रो मे 1 116 है। हायर सेकन्ड्री स्कूल के स्तर पर यह अनुपात जनपद मे 1 41 है। यह ग्रामीण क्षेत्रो मे 1 48 और नगरीय क्षेत्र मे 1 20 है।

जनपद मे साक्षरता की स्थिति शिक्षण सस्थाओ के प्रतिरूप एव उनकी निश्चित जनसख्या पर उपलब्धता तथा शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात के विश्लेषण के दौरान शिक्षा के क्षेत्र मे कई कमियॉ दृष्टिगत हुयी हैं। जनपदीय साक्षरता राष्ट्रीय साक्षरता औसत से 5 54 प्रतिशत कम है। इसमे स्त्री साक्षरता की स्थिति सबसे चिन्ताजनक है। इस दृष्टि से (स्त्री सा) राष्ट्रीय साक्षरता और जनपदीय साक्षरता का अतर 10 6 प्रतिशत है। जनपद मे जनसख्या के अनुसार शिक्षण सस्थाओ की अपर्याप्तता है। जो शिक्षण सस्थाएँ हैं भी उनमे शिक्षक और विद्यार्थी का अनुपात सतोषजनक नही है। अत अध्ययन क्षेत्र मे शैक्षणिक नियोजन को उपर्युक्त सन्दर्भ मे ही प्रस्तुत किया जा सकता है ताकि शिक्षा का विकास जनपद के विकास मे सहभागी बन सके। इसके अतर्गत दो स्तरो पर नियोजन अपेक्षित है– *पहला*– साक्षरता वृद्धि हेतु चलाए गए विभिन्न अभियानो के सन्दर्भ मे, तथा *दूसरा* विभिन्न शिक्षण सस्थाओ के स्तर पर।

जनपद मे स्वास्थ्य सुविधा का प्रमुख केन्द्र जिला चिकित्सालय है। यहॉ स्वास्थ्य से सम्बन्धित

सभी सुविधाएँ उपलब्ध है। इसके बाद 7 स्थानो पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित है। जनपद मे क्षय रोग का एक कुष्ठ रोग के तीन तथा सक्रामक रोग का एक स्वास्थ्य केन्द्र है।

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाये सामुदायिक विकासखण्ड मे अवस्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो के जरिये प्रदान की जाती है। ग्रामीण जनसख्या का आधुनिक स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली से सम्पर्क का यह पहला स्तर होता है। जनपद मे इनकी सख्या देवरिया मुख्यालय को छोड़कर 71 है। नगरीय क्षेत्र मे 10 केन्द्र स्थित है। इस प्रकार कुल 81 केन्द्र जनपद मे स्थित है। जनपद मे कुल स्वास्थ्य उपकेन्द्रो की सख्या 329 है। इन सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो मे कुल शय्याओ की सख्या 848 है। जनपद मे असहायता प्राप्त तथा आर्थिक सहायता प्राप्त निजी चिकित्सालयो की सख्या क्रमश 2 और 1 है। जनपद मे परिवार एव मातृशिशु कल्याण केन्द्र परिवार नियोजन केन्द्र की कुल सख्या 20 है।

जनपद मे प्रतिलाख जनसख्या पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो का औसत 3 6 है। ग्रामीण क्षेत्रो मे ये औसत 3 5 है जबकि नगरीय क्षेत्र मे 4 6 है। *बरहज* विकासखण्ड मे जनपद मे सर्वाधिक तथा नगरीय क्षेत्र के औसत से भी अधिक 5 1 स्वास्थ्य केन्द्र है। जबकि *भलुअनी* मे न्यूनतम 2 8 स्वास्थ्यकेन्द्र ही एक लाख जनसख्या पर उपलब्ध हैं। जनपदीय औसत से अधिक स्वास्थ्य केन्द्रो की उपलब्धता केवल पथरदेवा रुद्रपुर बरहज भटनी भागलपुर विकासखण्डो मे ही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रो के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वास्थ्य सुविधाओ का अभाव है। हालाँकि शहरो मे पर्यावरण का क्षय अधिक हुआ है। फिर भी ग्रामीण क्षेत्रो मे रोगग्रस्तता का स्तर शहरो के मुकाबले बहुत अधिक है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे जन्म के समय जीवन सभाव्यता शहरो के मुकाबले कम है।

जनपद मे विकासखण्ड स्तर पर चिकित्सको की सर्वाधिक उपलब्धता *भाटपाररानी* एव *सलेमपुर* विकासखण्ड मे प्रतिलाख जनसख्या पर 8 3 है। न्यूनतम उपलब्धता *गौरीबाजार* मे (3 4) है। यहाँ नगरीय क्षेत्रो मे चिकित्सको की उपलब्धता जहाँ 14 7 प्रति लाख जनसख्या पर है वही ग्रामीण क्षेत्रो मे ये सख्या 6 0 ही है अर्थात दूने से भी अधिक का अतर है। प्रतिलाख जनसख्या पर शैय्याओ की सर्वाधिक सख्या *बरहज* विकासखण्ड मे है जबकि *गौरीबाजार* मे न्यूनतम 12 2 शैय्या ही प्रतिलाख जनसख्या पर उपलब्ध है। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रो मे ये उपलब्धता क्रमश 153 6 और 25 8 है। अर्थात् इसमे लगभग 6 गूने का अतर है।

ग्रामीण अचलो मे सार्वजनिक जनस्वास्थ्य रक्षा प्रणाली की असफलता के अनेक कारण हैं। यहाँ न केवल विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य केन्द्रो की अपेक्षित और उपलब्ध सख्या मे अतर है, बल्कि विशेषज्ञ डाक्टरो नर्सों मिडवाइफो रेडियो–ग्राफर फार्मासिस्ट, पुरुष स्वास्थ्य सहायक महिला स्वास्थ्य कर्मियो की अपेक्षित और उपलब्ध सख्या मे भारी अतर है। स्वास्थ्य केन्द्रों मे स्वास्थ्य उपकरणो एव दवाओ का भी अभाव है तथा प्राय ग्रामीण क्षेत्र मे नियुक्त डाक्टर भी शहर मे ही रहना पसद करते है ताकि नागर सुविधाओ का लाभ उठा पाएँ और साथ ही वहाँ निजी प्रैक्टिस कर अतिरिक्त कमाई

भी कर पाएँ।

उपर्युक्त के सन्दर्भ मे स्वास्थ्य सुविधाओ का नियोजन आवश्यक है। इसके लिए 1993 से लागू *राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति* के अनुरूप 1 12 000 की जनसख्या आधार पर 30 बिस्तरो वाले केन्द्र की स्थापना 2001 की जनगणना आधार पर कम से कम 24 होनी चाहिए। इसकी स्थापना कम से कम सभी विकासखण्ड मुख्यालयो पर होनी चाहिए। स्वास्थ्य नीति के अनुरूप ही वर्तमान जनसख्या आधार (2001) पर *91 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र* और *546 स्वास्थ्य उपकेन्द्र* होने चाहिए। जबकि वर्तमान मे इनकी सख्या क्रमश 69 और 329 ही है। इस प्रकार जनपद मे क्रमश *17 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र 22 जनस्वास्थ्य केन्द्र* तथा *217 स्वास्थ्य उपकेन्द्रो* की स्थापना होनी चाहिए। तब जाकर *राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति* के अनुरूप स्थिति होगी। इन केन्द्रो की स्थापना मे परिवहन एव शिक्षा विकास से अछूते अपेक्षाकृत पिछडे क्षेत्रो को वरीयता दी जानी चाहिए।

किसी भी क्षेत्र के विकास का तात्पर्य केवल कुछ सुविधाओ की वृद्धि करना ही नही है वरन् क्षेत्र के समन्वित विकास के लिए ऊर्जा उपलब्धता आवास स्वच्छता प्रौद्योगिकी विकास विकसित मानव ससाधन पर्यावरण सतुलन, मनोरजन के साधन सामाजिक सद्‌भाव, तथा चरित्र निर्माण भी अनिवार्य शर्त है। इनमे क्षेत्र के आर्थिक विकास तथा लोगो के जीवन स्तर मे सुधार के लिए पोषण के बाद ऊर्जा ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। चाहे कृषि कार्य हो उद्योग हो अथवा दैनिक क्रिया–कलाप सबके लिए ऊर्जा उपलब्धता अनिवार्य है।

ग्राम्य प्रधान अध्ययन क्षेत्र मे जहॉ शिक्षा, चिकित्सा, आवागमन दूरसचार आदि सुविधाओ और साधनो का अभाव है वही ऊर्जा की कमी के कारण असहाय किसान अपने जीवनदायिनी कृषि सम्बन्धी कार्यो को भी समय पर पूर्ण नही कर पाते है। अध्ययन क्षेत्र मे ऊर्जा का प्रधान स्रोत आयातित बिजली है। जनपद के 72 प्रतिशत ग्राम विद्युतीकृत हो चुके है, परन्तु विद्युत उपलब्धता का औसत ग्रामीण क्षेत्र मे 11 05 घटे और नगरीय क्षेत्र मे 14 45 घटे ही है। इस प्रकार ऊर्जा के वर्तमान स्वरूप पर क्षेत्र का समन्वित विकास सम्भव नही है। ये स्थिति तब है जबकि 28 प्रतिशत गॉवो मे अभी बिजली ही नही पहुँची है। जनपद के एक मात्र *भटनी* विकासखण्ड मे 93 5 प्रतिशत गॉव विद्युतीकृत हो चुके हैं। जबकि शेष सभी विकासखण्डो मे विद्युतीकरण 80 8 प्रतिशत से भी कम गॉवो मे है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे उर्जा सकट का समाधान गैर परम्परागत उर्जा ससाधनो के विकास मे ही हे। यही हमे *दीर्घकालिक टिकाऊ विकास* तथा *ऊर्जा सुरक्षा* प्रदान कर सकता है। इस प्रकार पर्यावरण सरक्षण एव ग्रामीण क्षेत्रो मे विकेन्द्रीकृत ऊर्जा आवश्यकता के कारण इसका विशेष महत्व है। अध्ययन क्षेत्र मे गैर परम्परागत उर्जा विकास की सभाव्यता बहुत अधिक है। यहॉ *सौर उर्जा पवन उर्जा* एव *जल उर्जा विकास* की पर्याप्त सभाव्यता के अलावे लाखो टन कृषि उत्पाद बेकार पदार्थ के रूप मे निकलते हैं, जिनसे ऊर्जा उत्पादन सभव है। अध्ययन क्षेत्र का भूमिगत जल स्तर काफी ऊपर है तथा वर्ष भर पुरुआ या पछुआ हवाएँ चलती हैं। अत पवन चक्की द्वारा सिचाई सुविधा की पर्याप्त

सभावना है। पॉच चीनी मिलो से हजारो टन खोई निकलता है इसका उपयोग विद्युत निर्माण मे सभव है। पुन धान प्रधान क्षेत्र होने के कारण धान की भूसी से भी विद्युत आपूर्ति की जा सकती हे। जनपद पशुधन मे सम्पन्न है अत बायोगैस सयत्रो के विकास की भी पर्याप्त सभावना है।

अध्ययन क्षेत्र का सर्वांगीण विकास इस क्षेत्र मे उपलब्ध साधनो, निवासियो की आवश्यकताओ महत्वाकाक्षाओ तकनीकी कौशल और लोगो के पर्यावरण बोध पर निर्भर है। यहॉ के प्राकृतिक उपहारो का मूल्य तभी बढेगा जब लोगो को उनके उपयोग का ज्ञान हो जाएगा। अत समन्वित विकास हेतु कुछ अन्य लक्ष्यो को भी प्राप्त करना आवश्यक है जैसे– सबमे कर्तव्यपरायणता कार्य के प्रति निष्ठाभाव स्त्रियो को शिक्षित कर उनकी क्षमताओ का विकास श्रमिको की कुशलता एव उत्पादकता वृद्धि हेतु विज्ञान–प्रौद्योगिकी एव उर्जा का उपयोग आदि। इन उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयास एव व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। ये उद्देश्य किस प्रकार पूरे होगे? इसके लिए व्यापक शोध की आवश्यकता है जिसमे भूगोलविदो के साथ अर्थशास्त्रियो समाजशास्त्रियो वैज्ञानिको एव पर्यावरणविदो सभी का सहयोग अपेक्षित है।

※ *सतीश कुमार सिंह*
शोध छात्र 'भूगोल'
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद।

परिशिष्ट–1

शब्दावली

अर्थव्यवस्था	*Economy*
अध्ययन क्षेत्र	*Study Area*
अपरदन	*Erosion*
अनौपचारिक	*Non-formal*
आकारकीय	*Morphological*
आदान	*Input*
आर्थिक सवृद्धि	*Economic Growth*
आधारभूत उद्योग	*Basic Industry*
आधारभूत कार्य	*Basic Function*
उपभोक्ता उद्योग	*Consumer Industry*
औद्योगिक क्राति	*Industrial Revolution*
कार्यात्मक आकार	*Functional Size*
कार्यात्मक अक	*Functional Score*
कार्यात्मक सूचकाक	*Functional Index*
कार्याधार जनसख्या	*Threshold Population*
कुटीर उद्योग	*Cottage Industry*
केन्द्रस्थल	*Central Place*
केन्द्रीयता	*Centrality*
केन्द्रीयता अक	*Centrality Score*
केन्द्रीयता सूचकाक	*Centrality Index*
केन्द्रीय कार्य	*Central Function*
कृषियोग्य भूमि	*Culturable Land*
कृषित	*Cropped*
कृषिसम्पदा	*Agricultural Resources*
खनन	*Mining*
खनिज अयस्क	*Mineral ore*
खरीफ	*Kharif*
गहन कृषि	*Intensive Agriculture*
गैर आबाद	*Uninhabited*
गृह उद्योग	*House hold Industry*
चकबदी	*Consolidation of Holding*

जलग्रहण क्षेत्र	*Catchment Area*
जलस्तर	*Water Table*
जोत	*Holding*
डेयरी उद्योग	*Dairy Industry*
ढलान	*Gradient*
तालाब	*Tank*
तिलहन	*Oilseeds*
तृतीयक कार्य	*Tertiory work*
नलकूप	*Tube well*
नौ परिवहन	*Navigation*
पदानुक्रम	*Hierarchy*
पर्यटन	*Tourism*
प्रवेशी जनसख्या	*Intry Point Population*
फसल कोटि	*Crop rank*
वृहद् उद्योग	*Large scale Industry*
वृहत् स्तरीय	*Macro level*
भौम जल	*Ground Water*
मध्यम स्तरीय	*Meso level*
लघु उद्योग	*Small scale Industry*
विकास केन्द्र	*Growth Centre*
विकास ध्रुव	*Growth Pole*
विनिर्माण	*Manufacturing*
सपृक्त जनसख्या	*Saturation point Population*
शस्य गहनता	*Crop-Intensity*
शस्य सयोजन	*Crop-Combination*
शुद्ध कृषित क्षेत्र	*Net Swon Area*
सडक जाल	*Road Network*
सड़क सम्बद्धता	*Road Connectivity*
समन्वित	*Integrated*
सहत	*Compact*
सविकास	*Eco-development*
सूचकाक	*Index*
सूक्ष्म स्तरीय	*Micro-level*
सेवाकेन्द्र	*Service Centre*
सेवाक्षेत्र	*Service Area*
सेवित जनसख्या	*Served Population*
शुष्क कृषि	*Dry Farming*
हृदय क्षेत्र	*Heart Land*

परिशिष्ट–2

शब्द सक्षेप (ABBREVIATIONS)

A A A G - *Annals of the Association of American Geographers*

Can Geog - *Canadian Geographer*

C G R - *Calcutta Geographical Review*

Econ Geog - *Economic Geography*

Geog obs - *The Geographical Observer*

Geog Out - *Geographical Outlook*

G R I - *Geographical Review of India*

I G J - *Indian Geographical Journal*

I G U - *International Geographical Union*

I S C A - *Indian Journal of Marketing Geography*

I J M G - *Indian Science Congress Association*

J Mad G A - *Journal of Madras Geographical Asociation*

J Reg Sc - *Journal of Regional Science*

J R S S - *Journal of Royal Statistical Society*

N C A E R - *National Council of Applied Economic Research*

Nat Geog - *National Geographer*

N G J I - *National Geographical Journal of India*

N G S I - *National Geographical Society of India*

P H R - *Pacific Historical Review*

Prof Geogr - *The Professional Geographer*

Scot Geog Mag - *Scottish Geographical Magazin*

T I B G - *Transactions of the Institute of British Geographer*

T I I G - *Transaction of the Institute of Indian Geographers*

U B B P - *Uttar Bharat Bhoogol Parishad/Patrika*

परिशिष्ट–3

(FURTHER READING)

Abder, R , - *'Spatial Organiation' Prentice Hall, Englewood Cliffs, New Jersey, 1967*

Agarwal, S N , - *'Indian Population Problems', Tata McGraw Hill, Bombay-1972*

Ahmed E , - *'Geomorphic Regions of Peninsular India', Journal of Ranchi University, 1/9 1962, pp 1-29*

Ahmad, E , - *'Origin & Evolution of Towns of Uttar Pradesh', Geographical Outlook No 1 1956*

Arora, R C , - *'Development of Agriculture and Allied Sectors- An Integrated Area Approach', New Delhi, 1976 pp 1-9*

Berry, B J L - *'Geography of Market Centres and Retail Distribution', Prentice Hall, 1967*

Bhatia, S S , - *'A Reconsideration of the Urban Concept of the Primate City', I G J 1962*

Bhalla C S , - *'Changing Agrarian Structure in India, A study of the Impact of Green Revolution in Haryana', Meenakshi Prakashan, Meerut 1972*

Bhatt, L S , - *'Regional Planning in India', Statistical Publishing Society, Calcutta, 1972*

Carter, H , - *'The Study of Urban Geography', Edward Arnold London 1977*

Christaller, W - *'Central Place in Southern Germany', Translated by C W Baskin, 1966 New Jersy*

Champion, H G , - *'A Preliminary Survey of Forest Types of India and Burma', Indian Forest Record, New Series, Silviculture, Vol 1, Delhi, 1936*

Carter, H - *'Urban Grade and Sphere of Influence in South West Wales', S G M Vol 71 (1955), pp 43-58*

Chauhan, D S , - *'Studies in the Utilisation of Agricultural Land', Shiv Lal & Co , Agra-1966*

Chandna, R C and

S Manjıt , - 'Introductıon to Populatıon Geography', Concept Publıshıng Company, New Delhı, 1980

Davıes, W K D , - 'Centralıty and Central Place Hıearchy', Urban Studıes

Dubey, B and N Sıngh, - 'Integrated Rural Development', Jeevan Dhara Publıcatıon, Varanası-1985

Dutta, A K , - 'Two Decades of Plannıng-Indı'a An Anatomy of Approach', N G J I Vol XVIII (3-4), 1972, pp 187-205

Frıedman J , - 'Cıtıes ın Socıal Transformatıon, Reprınted ın J Frıedman et al (ed) 1964, Regıonal Development Plannıng- A Reader (1961) pp 343 60

Gadgıl, D R , - 'Dıstrıct Development Plannıng', Gokhale Instıtute of Polıtıcs and Economıcs, Poona, 1967 pp 1-38

Glasson, J , - 'An Introductıon of Regıonal Plannıng-Concept, Theory and Practıce' London, 1978, pp 24-31

Gould, P R , - 'The Development of the Transportatıon Pattern ın Ghana', Illıonıs, 1960 p 132

Government of Indıa, - 'Irrıgatıon and Power Projects', Mınıstry of Irrıgatıon and Power, New Delhı, 1970

Haggerstrand, T , - 'Innovatıon Dıffusıon as a Spatıal Process, Chıcago-1970

Hanson, N M , - 'Growth Centres ın Regıonal Economıc Development', The Free Press, New York

Haggett, p , - 'Locatıon Analysıs ın Human Geography', Arnold, London 1967

Hansen, N M (ed), - 'The Regıonal Economıc Development' The Press, New York-1972

Harvey D , - 'Socıal Justıce and the Cıty', Edward Arnold, London-1973

Johnson, R J , - 'Central Place and the Settlement Pattern', A A A G No 56 1966

Khan S A , - 'An Applıcatıon of the Nearest Neıghbour Analysıs ın the Spacıng of Central Place', Nat Geog , Vol-23, No 2 1988

Kharkwav, S C & Bhatt H P , - 'Rural Central Place ın Central Garhwal Hımalaya', Nat Geog , Vol 13, No 1 1988

Kar, N R , - 'Urban Hıerarchy and Central Functıon Around Calcutta and theır Sıgnıficance', Land Studıes ın Geography, Series B, Human Geog No 24, 1962

Kuznetsov, VI , - *'Economıc Integratıon- Two approaches', Progres Publısh-ers, Moscow, 1975 pp 13-35*

Khan W &
R N Trıpathı, - *'Plan for Integrated Rural Development ın Paurıgarhawal', N I C D Hyderabad 1976*

Mıshra B N , - *'Spatıl Pattern of Servıce Centres ın Mırzapur Dıst U P ', Unpublıshed Thesıs, ın Geography, 1980*

Mıshra, H N - *'The Concept of Umland A Revıew', nat Geog , Vol 6 1971*

Majıd Hussaın,, - *'Crop Combınatıon ın Indıa', Concept Publıshıng Company, New Delhı, 1982*

Mandal R B , - *'Central Place Hıerarchy ın Bıhar Plaın', N G J I , Vol 21 1975*

Mıshra, R P - *'Growth Pole Strategy for Rural Development ın Indıa', J I E G 1970*

Mıshra, R P - *'The Process of Regıonal Development, Theoretıcal Foun-datıon ın Regıonal Development Plannıng ın Indıa', (eds) R P Mıshra et al , Vıkash Publıshıng house, New Delhı 1975*

Mıshra, R P, - *'Local level Plannıng and Development' Sterlıng Publısh-ers, New Delhı-1983*

Mıshra, R P, - *'Dıstrıct Plannıng A Handbook, Concept Publıshıng & Co , New Delhı-1990*

Moseley, M J - *'Growth Centres ın Spatıal Plannıng', Pergaman Press, Oxford 1974*

Myrdol G M - *'Economıcs Theory and Underdevelopment Regıon',London 1975*

Mukherjee, A B , - *'Spacıng of Rural Settlement ın Rajasthan, A Spatıal Analy-sıs', Geog Outlook 1970*

Nıcholson, M , - *'The Envıronmental Revolutıon', Penguın, Harmondsworth, 1972*

Pandey, J N , - *'Role of Central Place ın Integrated Rural Development', I S C A - 1987*

Rao, VL S P, - *'Regıonal Plannıng', Indıan Fınance, Calcutta, 1949*

'Regıonal Plannıng', Asıa Publıshıng House, Bombay, 1963

Scoott P, - *'The Hıerarchy of Central Places ın Tasmanıa', Aust Geog , No 9 1964*

Sen, L K , - *'Plannıng Rural Growth Centres for Integrated Area Development A Study ın Mıryalguda Taluka', N I C D , Hyderabad 1971*

Sen, L K , - *'Growth Centres ın Raıchur An Integrated Area Development Plan for A dıstrıct ın Karnatka', N I C D , Hyderabad 1975*

Sıngh, J & Ved Prakah, - *'Central Place and Spatıal Integratıon- A Crıtıcal Approach' N G J I Vol 21, 1973*

Sıngh L , - *'An Approach for Delımıtatıon of Central Place Regıon- A case Study of Patna Dıstrıct', U B B P, Vol 18, No 1 1982*

Sıngh, O P, - *'Towards Determınıng Hıerarchy of Servıce Centre- A methodology for Central Place Study', N G J I , Vol 17, No 4, 1971*

Sıngh O P, - *'Central Places, Indentıficatıon, Selectıon and Types', U B B P, Vol X, No 3 1974*

Sıngh, H P, - *'Development Pole Theory Revıew and Appraısal', Nat Geog Vol 13, No 2 1978*

Sıngh, J , - *'Transport Geography ın South Bıhar', N G S I, Varanası, 1964*

Sıngh, L R , Savındra, Tıwarı, R C and Srıvastava, R P., 'Envıronmental Management (ed)', Allahabad Geographıcal Socıety, Geog Deptt A U 1983

Sıngh, R N & Sahab Deen , - *'Occupatıonal Structure of Urban Centres of Eastern U P A Case Study of Trade and Commerce', I G J Vol 56*

Tıwarı, R C , - *'Rural Settlement Systems of Pratabgarh Dıstrıct- A Study ın Spatıal Pattern', Nat Geog Vol-17, No 2 1982*

Wadıa, D N , - *'Geology of Indıa (Economıc Mınerals) 5th ed , Mac Mıllan, London, 1965*

Wanmalı, S , - *'Regıonal Plannıng for Socıal Facılıtıes An Examınatıon of Central Place Concept and theır Aplıcatıon.'*